चेतन भगत
comicsmylife.blogspot.in
रैवोल्यूशन 2020
लव.करप्शन.एम्बिशन
comicsmylife.blogspot.in

रेवोल्यूशन 2020

लव. करप्शन. एम्बिशन

चेतन भगत

अनुवादक : सुशोभित सक्तावत

समर्पण

माँ के लिए

वाराणसी के लिए

पवित्र गंगा के लिए

मेरे देश के स्टूडेंट्स के लिए

इनका शुक्रिया

मेरे पाठकों का, उनके प्यार और सहयोग के लिए।

भगवान का, जो हमेशा मेरे साथ हैं।

शाइनी एंटनी का, जो मेरी किताबों की पहली पाठक और संपादक हैं।

अनुभा बग का, इस किताब के लेखन में हर कदम पर उनके सुझावों के लिए। नूतन बेंटे, निहारिका खन्ना, मिशेल परेरा, प्रतीक धवन, जितिन धवन और अनुराग आनंद का, पांडुलिपि पर बेहतरीन टिप्पणियों के लिए।

सौरभ रूंगटा और किशोर शर्मा का, रिसर्च में मदद के लिए।

वाराणसी के अद्भुत, अद्भुत लोगों का।

यात्राओं और बातचीतों के दौरान मुझे मिले उन सभी लोगों का, जिन्होंने अपने देश को अधिक बेहतर ने में मेरी मदद की।

मां रेखा, पत्नी अनुषा, भाई केतन का, मेरी जिंदगी का हिस्सा बनने के लिए। मेरे बेटों इशान और श्याम का, जो मायूसी के लम्हों में मुझसे कहते हैं: 'इट्स ओके, डैडी।'

ट्विटेर और फेसबुक पर मेरी एक्सटेंडेड फैमिली का।

रूपा एंड कंपनी का, मेरी किताबें छापने के लिए।

उन फिल्मकारों का, जिन्होंने मेरी कहानियों को फिल्में बनाने के लिए चुना।

और एक बार फिर, आपका, मेरे प्रिय पाठकों का, एक रेवोल्यूशन की जरूरत महसूस करने के लिए।

प्रस्तावना

'और मैं उम्मीद करता हूं कि न केवल आप बल्कि हमारा पूरा देश उस चिनगारी को जलाए रखेगा। यह कहना सचमुच बड़ा कूल लगता है कि मैं उस देश में रहता हूं, जहां एक अरब चिनगारियां सुलगती हैं। शुक्रिया,' मैंने वाराणसी के तिलक हॉल में अपनी मोटिवेशनल स्पीच खत्म करते हुए कहा।

तालियां और सीटियां इस बात का इशारा कर रहे थे कि अब मुझे यहां से चले जाना चाहिए। सिक्योरिटी वालंटियर्स ने एक ह्यूमन बैरिकेड बनाया और मैं जल्द ही बड़ी आसानी से साथ हॉल से बाहर निकल आया। 'थैंक यू सो मच, सर,' मेरे ठीक पीछे किसी की आवाज सुनाई दी।

मैंने पलटकर देखा। पीछे मेरे मेजबान खड़े थे। 'मिस्टर मिश्रा,' मैंने कहा, 'मैं आप ही को खोज रहा था।'

'प्लीज मुझे गोपाल कहकर बुलाइए,' उन्होंने कहा। 'कार उस तरफ है।'

मैं गंगाटेक कॉलेज के नौजवान डायरेक्टर गोपाल मिश्रा के साथ बाहर चला आया। उनकी ब्लेक मर्सीडीज हमें भीड़ भरे विद्यापथ रोड से फौरन दूर ले गई।

'तो आपने मंदिर और घाट देखे?' गोपाल ने पूछा। 'वैसे भी वाराणसी में मंदिरों और घाटों के सिवा और क्या है।'

'हां, मैं सुबह पांच बजे विश्वनाथ मंदिर और दशाश्वमेध घाट गया था। मुझे इस शहर से प्यार है,' मैंने कहा।

'ओह, बहुत अच्छा। आपको वाराणसी की कौन–सी बात सबसे अच्छी लगी?'

'आरती,' मैंने कहा।

'क्या?' गोपाल हैरान लग रहा था।

'घाटों पर होने वाली सुबह की आरती। मैंने यह नजारा पहली बार देखा। सुबह–सुबह इतने सारे दीये नदी में तैरते चले जा रहे थे। कमाल का दृश्य था।'

गोपाल ने नाक–भौं सिकोड़ी।

'क्या हुआ?' मैंने कहा। 'क्या तुम्हें वाराणसी की आरती सुंदर नहीं लगती?'

'हां, हां, है तो... ऐसी बात नहीं है,' उसने कहा, लेकिन उसने अपनी बात को आगे नहीं बढ़ाया।

'तुम मुझे रमाडा होटल छोड़ दोगे?' मैंने कहा।

'कल सुबह आपकी फ्लाइट है,' गोपाल ने कहा।

'अगर आप आज हमारे यहां डिनर पर आएं तो कैसा रहे?'

'औपचारिकताएं मत कीजिए...' मैंने अपनी बात शुरू की।

'आपको घर आना ही होगा। हम साथ में ड्रिंक करेंगे। मेरे पास दुनिया की सबसे बेहतरीन व्हिस्की है,' उसने कहा।

मैंने अपना सिर हिलाया और मुस्करा दिया। 'थैंक्स गोपाल, लेकिन मैं ज्यादा नहीं पीता।'

'चेतन सर, एक ड्रिंक? मैं भी लोगों को कह सकूंगा कि मैंने 'दि' चेतन भगत के साथ ड्रिंक की है।'

मैं हंस पड़ा। 'इसमें डींगें हांकने जैसा कुछ नहीं है। फिर भी, यदि तुम ऐसा कहना चाहो तो कह सकते हो। इसके लिए वास्तव में मेरे साथ ड्रिंक करने की जरूरत नहीं है।'

'ऐसे नहीं, सर। मैं सचमुच में आपके साथ ड्रिंक करना चाहता हूं।'

मैंने उसकी बेसब्र आंखों को देखा। पिछले छह महीनों में वह मुझे बीस बार आमंत्रित कर चुका था और आखिरकार मुझे आने के लिए सहमति देनी ही पड़ी थी। मुझे पता था कि वह जिद पकड़ सकता था। 'ओके, एक ड्रिंक!' मैंने यह उम्मीद करते हुए कहा कि शायद बाद में मुझे इसके लिए पछतावा न करना पड़े।

'एक्सीलेंट,' गोपाल ने कहा।

गंगाटेक पहुंचने के लिए हम शहर से बाहर दस किलोमीटर दूर लखनऊ हाईवे पर ड्राइव करके पहुंचे। कैम्पस के गेट्स खुलते ही गार्ड्स ने सैल्यूट ठोंका। कार ग्रे रंग के एक बंगले के पास जाकर ठहर गई। बंगले के एक्सटीरियर पर स्टोन वर्क किया गया था, जिसके कारण वह कॉलेज और होस्टल की बिल्डिंग्स जैसा ही दिख रहा था।

हम ग्राउंड फ्लोर पर लिविंग रूम में बैठ गए। लिविंग रूम का दरवाजा बैडमिंटन कोर्ट के आकार के एक लॉन की ओर खुलता था।

'नाइस हाउस,' मैंने भूरे रंग के एक मखमली सोफे पर बैठते हुए कहा। मैंने गौर किया कि लिविंग रूम की छत की ऊंचाई कुछ ज्यादा ही थी।

'थैंक्स। मैंने घर को खुद ही डिजाइन किया है। घर तो कॉन्ट्रेक्टर ने बनाया, लेकिन मैंने हर चीज को सुपरवाइज किया है,' गोपाल ने कहा। वह कमरे के दूसरे कोने पर बने बार काउंटर की ओर बढ़ चला। 'यह एक इंजीनियरिंग कॉलेज डायरेक्टर का बंगला है। आप और आपके दोस्तों ने ऐसे ही एक बंगले पर धावा बोल दिया था ना!'

'तुम्हें कैसे पता?' मैंने कहा।

'सभी जानते हैं। हमने किताब पढ़ी है, फिल्म देखी है।'

हम हंस पड़े। उसने मुझे अच्छी–खासी मात्रा में व्हिस्की से भरा एक क्रिस्टल ग्लास थमा दिया।

'थैंक यू।'

'सिंगल माल्ट, बारह साल पुरानी,' उसने कहा।

'डायरेक्टर का बंगला तो है, लेकिन तुम्हारी कोई बेटी नहीं है,' मैंने कहा। 'तुम्हारी तो अभी शादी भी नहीं हुई है। मैंने इतना नौजवान डायरेक्टर इससे पहले कभी नहीं देखा।'

वह मुस्करा दिया।

'तुम्हारी उम्र क्या है?' मैं उत्सुक था।

'छब्बीस', गोपाल ने कहा। उसकी आवाज में गर्व की हल्की–सी झलक थी। 'लेकिन आपने न केवल इससे अधिक नौजवान डायरेक्टर, बल्कि इससे अधिक अनएजुकेटेड डायरेक्टर भी नहीं देखा होगा।'

'अनएजुकेटेड?'

'मैं कभी कॉलेज नहीं गया।'

'क्या!' मैंने अपने ग्लास में मौजूद आइस क्यूब्स के साथ खेलते हुए कहा। मैं सोच रहा था कि कहीं मुझ पर शराब का असर तो नहीं हो रहा है।

'वेल, मैंने पत्राचार डिग्री नामक मजाक जरूर किया है।'

'वॉव!' मैंने कहा। 'लेकिन इतना बड़ा कॉलेज खोलना कोई मजाक नहीं है।'

'आज इस कॉलेज की सभी बैचेस में सोलह सौ स्टूडेंट्स है, चेतन–जी। सभी एक लाख रुपया सालाना फीस भर रहे हैं। हमारा टर्नओवर ऑलरेडी सोलह करोड़ का हो गया है। और आज आपने एमबीए कोचिंग का शुभारंभ किया है। वह एक और नया बिजनेस है।'

मैंने एक घूंट भरा। स्मूद व्हिस्की ने मेरे गले में मानो आग लगा दी। 'आपके पास बियर है? या वाइन?' मैंने खांसते हुए कहा।

गोपाल का चेहरा उतर गया। मैंने न केवल उसके बिजनेस के असरदार आंकड़ों को नजरअंदाज कर दिया था, बल्कि उसकी व्हिस्की को भी नकार दिया था।

'अच्छी नहीं लगी?' गोपाल ने पूछा। 'यह ग्लेनफिडिच है, चार हजार की एक बॉटल। ब्लू लेबल खोलूं? वह दस हजार की एक बॉटल है।'

'सवाल कीमतों का नहीं है', मैं उसे कहना चाहता था, लेकिन कहा नहीं। 'मैं व्हिस्की नहीं पीता। यह मेरे लिए कुछ ज्यादा ही स्ट्रांग है,' मैंने उसके बजाय यह कह दिया।

गोपाल हंस पड़ा। 'जिंदगी का मजा लीजिए। फाइन व्हिस्की लेना शुरू कर दीजिए। आपका टेस्ट डेवलप होगा।'

मैंने एक और घूंट भरने की कोशिश की और मुंह बना दिया। वह मुस्कराया और मेरी ड्रिंक को हल्का करने के लिए उसमें और पानी उड़ेल दिया। इससे स्कॉच तो बरबाद हो गई, लेकिन मेरे होशोहवास कायम रहे।

'जिंदगी मजा लेने के लिए है। मेरी तरफ देखिए, मैं इस साल चार करोड़ रुपए कमाऊंगा। यदि मैं जिंदगी का मजा न लूं तो फिर कोई तुक ही क्या होगी?'

दुनिया के अनेक हिस्सों में अपनी आमदनी का बखान करना अच्छा नहीं माना जाता, लेकिन भारत में हम अपनी आमदनी के आंकड़े इस तरह सभी से शेयर करते हैं, मानो वह हमारी राशि हो। खासतौर पर तब, जब हमारी आमदनी अच्छी–खासी हो।

ऐसा लग रहा था मानो उसने वह सवाल मुझसे ज्यादा अपने आपसे पूछा था। उसकी गहरी आंखें मुझे बेधती रहीं। वे मुझसे यह मांग कर रही थीं कि मैं उसकी बातों को तवज्जो दूं। लेकिन उसके शरीर की बाकी चीजें – गेहुआ रंग, पांच फीट सात इंच का दरमियानी कद, एक तरफ काढ़े गए बाल – सामान्य ही थीं।

'हां, यकीनन। हमें जिंदगी का मजा लेना चाहिए...' मैंने कहा लेकिन उसने मेरी बात काट दी।

'अगले साल मैं पांच करोड़ कमाऊंगा।'

मैं समझ गया कि अगर मैंने इस आंकड़े पर भी हैरत नहीं जताई तो वह इसी तरह अपनी आमदनी में बढ़ोतरी का पूर्वानुमान लगाता चला जाएगा।

'पांच करोड़!' मैंने झूठमूठ में ही तेज आवाज में कहा।

गोपाल ने खीसें निपोर दीं। शायद वह अपने लिए ऐसी कोई टी–शर्ट चुनता: 'बेबी, ईट दिस, क्योंकि मैंने इसे बनाया है।'

'यह तो कमाल की बात है,' मैं धीमे–से फुसफुसाया। मैं सोच रहा था कि आखिर इस विषय को कैसे बदला जाए। मेरा ध्यान ऊपर जाती सीढ़ियों पर गया। 'ऊपर क्या है?' मैंने पूछा।

'बेडरूम और एक टेरेस। आइए, मैं दिखाता हूं।'

हम ऊपर चढ़े और एक कमरे से होकर गुजरे, जिसमें एक आलीशान किंग साइज बेड था। मैंने टेरेस से सामने का शानदार नजारा देखा।

'यहां बंजर जमीन हुआ करती थी। यह मेरे दादाजी की खेती–बाड़ी की पुरानी जमीन है,' गोपाल ने कहा।
'दस एकड़?' मैंने अनुमान लगाते हुए कहा।
'पंद्रह। हमारे पास पंद्रह एकड़ जमीन और थी,'
गोपाल ने कहा, 'लेकिन हमने कंस्ट्रक्शन के लिए उसे बेच दिया।'
उसने रोशनी में नहाए कैम्पस की पूर्वी दीवार की ओर रोशनी की एक छोटी–सी कतार की ओर इशारा किया। 'वहां देखिए। वहां एक मॉल बन रहा है।'
'आजकल तो भारत के हर शहर में मॉल बनाए जा रहे हैं,' मैंने कहा।
'इंडिया शाइनिंग, चेतन–जी,' उसने कहा और मेरे गिलास से अपना अपना गिलास टकरा दिया।
गोपाल मुझसे चौगुनी अधिक गति से पी रहा था। मैंने अपना पहला गिलास भी खत्म नहीं किया था, जबकि वह अपने लिए पांचवां जाम बना रहा था। 'यू बिग–सिटी टाइप्स। पीते भी केवल स्टाइल के लिए हैं,' जब मैंने अपना गिलास फिर से भरने से इनकार कर दिया तो उसने मुझे छेड़ते हुए कहा।
'मैं वास्तव में ज्यादा नहीं पीता,' मैंने कहा। मैंने घड़ी देखी, रात के दस बज चुके थे।
'आप डिनर कब लेते हैं?' उसने पूछा।
'फिलहाल तो यह आप पर निर्भर करता है,' मैंने कहा, हालांकि मैं मन ही मन चाह रहा था कि वह फौरन खाने के लिए तैयार हो जाए।
'आखिर खाने की जल्दी भी क्या है? दो आदमी, एक एजुकेटेड, दूसरा अनएजुकेटेड, एक–दूसरे के साथ अच्छा वक्त बिता रहे हैं,' गोपाल ने कहा और हवा में अपना जाम लहराया।
मैंने सौजन्यवश सिर हिला दिया। भूख के मारे मेरे पेट में मरोड़ें उठ रही थीं। हम फिर से लिविंग रूम में बैठने के लिए नीचे चले आए।
'क्या आप वाकई प्रोफेसर की बेटी के घर गए थे?'
गोपाल ने पूछा।
मैं मुस्करा दिया। 'प्यार में हम बेवकूफीभरी हरकतें कर बैठते हैं।'
गोपाल जोरों से हंसा। उसने अपनी पूरी ड्रिंक गटक ली और फिर अपना छठा पेग बनाने के लिए आधी खाली हो चुकी बॉटल उठाई।
'प्यार? बेवकूफीभरी हरकतों को तो ख़ैर रहने ही दें, लेकिन प्यार हमारी ऐसी–तैसी कर देता है,' गोपाल ने कहा।
'यह तो पूरी तरह सही नहीं है,' मैंने कहा। 'क्या यही कारण है कि अभी तक कोई मिसेज डायरेक्टर नहीं है?'
गोपाल का हाथ कांपा, लेकिन उसने ड्रिंक बनाना जारी रखा। मैंने सोचा कि क्या मुझे उसे ज्यादा पीने से रोकना चाहिए।
'मिसेज डायरेक्टर!' गोपाल बनावटी हंसी हंस दिया। उसने व्हिस्की की बोतल को कसकर पकड़ लिया।
'ईजी, गोपाल, तुम बहुत तेजी से पी रहे हो। यह खतरनाक है।'
गोपाल ने बोतल कॉफी टेबल पर पटक दी। 'खतरनाक कैसे है? भला मेरे पीछे मेरे लिए रोने वाला कौन है? यदि मैं जी रहा हूं तो मैं मौज–मस्ती करना चाहता हूं, लेकिन यदि मैं मर गया तो किसे परवाह है?'
'तुम्हारे पैरेंट्स?'
गोपाल ने सिर हिलाया। 'दोस्त?'
'कामयाब लोगों के कोई दोस्त नहीं होते,' गोपाल ने दावे के साथ कहा। 'सच है ना?'
उसका आलीशान घर सर्द और तन्हा लगने लगा। मैंने व्हिस्की की बोतल उठाई और उसे फिर बार में रख दिया।
'निराशावादी हो?' मैंने कहा। 'मुझे हैरानी हो रही है, क्योंकि तुम्हारा कैरियर इतनी अच्छी स्थिति में है।'
'क्या अच्छी स्थिति में है, चेतन–जी?' गोपाल ने कहा। वह अब तक पूरी तरह नशे में चूर हो चुका था और ऐसा माना जाए कि अब वह पूरी तरह से ईमानदार था।
उसने एक के बाद एक तेजी से अपनी विशालकाय टीवी, स्टीरियो सिस्टम और हमारे पैरों के नीचे बिछे सिल्क कार्पेट की ओर इशारा किया।
'इस सबका भला क्या मतलब है? मेरी जिंदगी में इन सबके लिए कोई जगह नहीं_'
हमारी बातचीत अब गंभीर हो गई थी। मैंने उसका उत्साह बढ़ाने के लिए उसकी पीठ थपथपाई। 'तो तुमने किताब में मेरी गर्लफ्रेंड के बारे में पढ़ा है। हाऊ अबाउट यू? तुम्हारी कभी कोई गर्लफ्रेंड थी?'
गोपाल ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन वह बहुत हताश नजर आ रहा था। उसने कॉफी टेबल पर अपना गिलास रख दिया।
यह एक नाजुक मसला था, लेकिन यह तो मुझे बहुत देरी से समझ आया।
उसे उबकाई आने लगी।
'आर यू ओके?' मैंने कहा।
वह भागकर रेस्टरूम में पहुंचा। मैंने सुना कि उसे उल्टियां हो रही हैं। समय काटने के लिए मैं डिस्प्ले की आलमारियां देखने लगा। वहां गंगाटेक के बारे में छपी खबरें फ्रेम की हुई थीं, ट्राफियां थीं, कॉलेज में विजिट करने वाले मेहमानों के साथ गोपाल की तस्वीरें थीं। मैंने सोचा कि क्या जल्द ही वहां मेरी तस्वीर भी होगी।
जब वह बीस मिनट बाद भी नहीं लौटा तो मैंने मेड को बुलाया। वह मुझे बाथरूम तक ले गई। मैंने दरवाजे पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं आया। मैं दरवाजे को जोरों से खटखटाने लगा, लेकिन इसका भी कोई फायदा नहीं हुआ।
'लगता है हमें दरवाजा तोड़ना पड़ेगा,' मेड ने कहा। मैं सोचने लगा कि मैं, जो एक कॉलेज के ओरिएंटेशन प्रोग्राम में चीफ गेस्ट बनकर आया था, आखिर कैसे वाराणसी में टॉयलेट्स के दरवाजे तोड़कर उनमें घुसने के प्लान में इनवॉल्व होने वाला हूं। अस्पताल के बिस्तर पर चादरों की सरसराहट से मेरी झपकी टूटी। बिस्तर के सिरहाने रखी घड़ी रात तीन बजे का वक्त बता रही थी। मैं वाराणसी के लंका एरिया में हेरिटेज हॉस्पिटल में गोपाल को ले आया था। अब गोपाल जाग गया था और अपनी कनपटियां सहला रहा था।
उसके हैंगओवर ने मुझे अपने कॉलेज के दिनों की याद दिला दी। बहरहाल, यहां डायरेक्टर ने केवल अल्कोहल के साथ ही मौज–मस्ती की थी, किसी स्टूडेंट के साथ नहीं।
'आप पूरी रात यहां थे?' वह हैरान नजर आ रहा था।
'ऐसा कैसे हो सकता था कि मैं अपने मेजबान को मरने देता,' मैंने कहा।
'आई एम सॉरी, कुछ ज्यादा ही हो गई थी।' गोपाल ने खीसें निपोरते हुए कहा।
'आर यू ऑलराइट?'
'हां, मैं ठीक हूं।'
'नहीं, मैं केवल अभी की बात नहीं कर रहा हूं। क्या तुम पूरी तरह से ठीक हो?'
उसने अपना सिर घुमा लिया और दूसरी तरफ देखने लगा।
'हाऊ इज लाइफ, गोपाल?' मैंने आहिस्ते–से पूछा। उसने कोई जवाब नहीं दिया।
मैं एक मिनट बाद उठ खड़ा हुआ। 'अब मैं चलता हूं, फ्लाइट से पहले मुझे कुछ देर सो लेना चाहिए।' मैं दरवाजे की ओर बढ़ा।
'क्या आपको लगता है कि मैं एक अच्छा इंसान हूं, चेतन–जी?' उसने कहा।
मैं पीछे मुड़ा।
'क्या मैं एक अच्छा इंसान हूं?' उसने फिर पूछा। मैंने कंधे उचका दिए। 'मैं तुम्हें अभी नहीं जानता, गोपाल। तुमने टॉक अच्छे–से ऑर्गेनाइज कराई, मुझे अच्छे–से ट्रीट किया। तुम ठीक ही जान पड़ते हो,' मैंने कहा।
'क्या वाकई आपको ऐसा लगता है?'
'तुमने बहुत कुछ हासिल किया है। टेक इट ईजी। महंगी व्हिस्की भी नुकसानदेह साबित हो सकती है।'
वह मुस्करा दिया और आहिस्ते–से सिर हिलाया।
'अब मैं कम पीऊंगा,' उसने कहा। 'और कुछ?'
'तुम नौजवान हो। प्यार पर अभी से भरोसा करना मत छोड़ो,' मैंने अपनी घड़ी देखते हुए कहा। 'अब मुझे चलना चाहिए। लगभग सुबह की आरती का समय हो गया है।'
'यह उसका नाम है,' उसने कहा।
'मैं ज्यादा समय तक नहीं रुकना चाहता था, लेकिन यह सुनकर मेरे पैर थम गए। 'कौन–सा नाम? किसका नाम?' मैंने पूछा, जबकि मैं अच्छी तरह जानता था कि इससे मेरा कोई सरोकार नहीं है और मुझे जल्द ही यहां से चले जाना है।
'आरती,' उसने कहा।
'आरती कौन? कोई लड़की, जिसे तुम पसंद करते थे?' मैंने अनुमान लगाते हुए कहा।
'पसंद करना सही शब्द नहीं है, चेतन–जी।'
'तुम उससे प्यार करते थे?' मैं मुस्करा दिया।
'वाराणसी के सभी साधुओं और पुजारियों की कल्पना कीजिए और उनकी तमाम पूजा–भक्ति को एक साथ रख दीजिए। मैं उससे इतना ही प्यार करता था।'
मैं इस तुलना को समझ गया। जिज्ञासा ने मेरी नींद उड़ा दी थी। मैंने उससे एक और प्रश्न पूछ लिया:

'क्या वह भी तुमसे प्यार करती थी?'

वह कुछ देर तक सोचता रहा। 'वह न केवल मुझे प्यार करती थी, बल्कि मुझ पर उसका पूरा अधिकार भी था।'

मैंने एक पैर से दूसरे पर अपना वजन शिफ्ट किया। मेरे सामने एक लंबा दिन था और रात को न सोना बहुत अच्छा विचार नहीं कहा जा सकता था। लेकिन मैंने उससे पूछ ही लिया, 'फिर तुम्हारे और आरती के बीच क्या हुआ?'

गोपाल मुस्करा दिया। 'यह कोई इंटरव्यू नहीं है, चेतन–जी। या तो आप बैठकर इस स्टुपिड आदमी की पूरी कहानी सुनिए या चले जाइए। अब यह आप पर है।' उसकी काली आंखें मेरी आंखों से मिली। इस युवा डायरेक्टर में कुछ ऐसा था, जिसमें मेरी दिलचस्पी जाग रही थी। उसकी हैरान कर देने वाली उपलब्धियां, उसका अति आत्मविश्वास, उसकी दुखभरी आवाज या शायद ऐसा इस विचित्र पवित्र शहर के कारण हुआ था कि मैं उसके बारे में और जानना चाहता था। मैंने गहरी आह भरी। उसने अपने पास रखी एक कुर्सी की ओर इशारा किया।

'ओके, मुझे अपनी कहानी सुनाओ,' मैंने कहा और बैठ गया।

'आपको एक और ड्रिंक चाहिए?' गोपाल ने कहा। मैंने उसे आंखें तरेरकर देखा। वह हंस पड़ा। 'मेरा मतलब चाय से था,' उसने कहा।

हमने एक पॉट एक्स्ट्रा हॉट मसाला टी और ग्लूकोज बिस्किट ऑर्डर किया। किसी भी बातचीत के लिए इससे बेहतर और कुछ नहीं हो सकता।

'मैं कहां से शुरुआत करूं?' गोपाल ने कहा।

'आरती से शुरुआत करो। वह लड़की, जिसकी वजह से आज तुम इस हाल में हो।'

'आरती? जिस दिन मैं पहली बार उससे मिला था, उसी दिन उसने मुझे मुश्किल में डाल दिया था,' गोपाल ने कहा।

मैंने अपनी चाय में एक बिस्किट डुबोया और सुनने लगा।

सात साल बाद

1

'लेज़ी पैरेंट्स, आज फिर ब्रेड एंड बटर,' मैं दूसरी कतार में एक नीले प्लास्टिक टिफिन को बंद करते हुए बड़बड़ाया। राघव और मैं दूसरी डेस्क पर चले आए।

'छोड़ो भी, गोपाल। क्लास किसी भी समय फिर से लग सकती है,' राघव ने कहा।

'श्श...'

'मैं पूरी–आलू लाया हूं, हम उसे बांटकर खा सकते हैं। दूसरों का खाना चुराना अच्छी बात नहीं है।'

मैं एक छोटे–से गोल स्टील टिफिन बॉक्स से जूझने लगा। 'इसे कैसे खोलते हैं?'

बॉक्स के फ्लाते लेकिन ज़िद्दी ढक्कन को खोलने के लिए नुकीले नाखूनों की जरूरत होती है, लेकिन वे हम दोनों के पास नहीं थे। हमने वीकली टिफिन चोरी के लिए अपनी सुबह की असेंबली छोड़ दी थी। हमारे पास दस मिनट का और समय था, जिसके बाद बाहर राष्ट्रीय गीत शुरू हो जाता। उसके बाद क्लास 5 सी लग सकती थी। हमें इसी दौरान टिफिन को खोजना, उसे चट कर जाना और वापस रखना था।

'अचार और पराठे हैं,' राघव ने ढक्कन खोलने के बाद कहा। 'तुम्हें चाहिए?'

'रहने दो,' मैंने स्टूडेंट के बैग में स्टील का डिब्बा फिर से रखते हुए कहा। मेरी आंखें एक बैग से दूसरे बैग तक दौड़ रही थीं। 'यह वाला,' मैंने पहली कतार में एक गुलाबी इंपोर्टेड झोले की ओर इशारा करते हुए कहा। 'यह बैग दिखने में महंगा लगता है। इसमें जरूर अच्छा खाना होगा। आओ।'

हम दौड़कर उस बैग की सीट तक पहुंचे। मैंने बार्बी बैग उठा लिया, सामने से उसकी चेन खोली तो मुझे एक लाल, चमकदार, आयताकार टिफिन मिला। कवर पर चम्मच के लिए भी एक कंपार्टमेंट था। 'फैंसी बॉक्स!' मैंने उसका ढक्कन खोलते हुए कहा। इडलियां, चटनी का एक छोटा–सा बॉक्स और चॉकलेट केक का एक बड़ा–सा टुकड़ा। हमारे हाथ जैकपॉट लग गया था।

'मुझे तो केवल केक ही चाहिए,' मैंने केक का बड़ा–सा टुकड़ा उठाते हुए कहा।

'पूरा मत लो। इट्स नॉट फेयर,' राघव ने कहा।

'यदि मैं केवल थोड़ा–सा ही खाऊंगा तो भी उसे पता चल जाएगा,' मैंने त्यौरियां चढ़ाते हुए कहा।

'तो इसे दो भागों में काट दो। एक तुम ले लो और दूसरा छोड़ दो,' राघव ने कहा।

'लेकिन काटूं किससे?'

'किसी रूलर का इस्तेमाल करो,' उसने सुझाया। मैं दौड़कर अपनी डेस्क पर गया, एक रूलर लाया और उसकी मदद से केक को बड़ी सफाई से काट दिया। 'फाइन?' मैंने कहा। 'अब तो खुश हो ना?'

'यह उसका केक है।' राघव ने कंधे उचकाते हुए कहा।

'लेकिन तुम मेरे दोस्त हो,' मैंने कहा। मैंने उसे एक बाइट ऑफर की। उसने मना कर दिया। मैंने घर पर नाश्ता नहीं किया था। मैं केक पर टूट पड़ा। मेरी अंगुलियां आइसिंग में लथपथ हो गईं।

'तुम अपना खुद का टिफिन क्यों नहीं लाते?' राघव ने पूछा।

मेरे मुंह में केक भरा था, इसके बावजूद मैंने जवाब दिया, 'क्योंकि इसका मतलब होगा बाबा के लिए एक्स्ट्रा वर्क। उन्हें पहले ही लंच और डिनर तैयार करने पड़ते हैं।'

'तो?'

'मैं उनसे कह देता हूं कि मुझे भूख नहीं लगती।'

मेरे पिता एक सरकारी स्कूल में पढ़ाते थे। वे सुबह छह बजे घर से निकल जाते थे, यानी मुझसे भी पहले। मैंने अपनी अंगुलियों पर लगी चॉकलेट क्रीम को चाटकर साफ किया। हम राष्ट्रगान सुन सकते थे।

'मैं तुम्हारे लिए टिफिन ला सकता हूं,' राघव ने कहा। वह राष्ट्रगान के लिए उठ खड़ा हुआ और अपने साथ मुझे भी खड़ा कर दिया।

'रहने दो, तुम्हारी मॉम बोरिंग खाना बनाती हैं। रोज–रोज पूरियां,' मैंने कहा।

हमने सुना कि स्टूडेंट्स आपस में बतियाते हुए क्लास की ओर चले आ रहे थे। मैंने बचा–खुचा केक अपने मुंह में ठूंस लिया।

'जल्दी करो, जल्दी करो,' राघव ने कहा। मैंने लाल टिफिन बॉक्स बंद किया और फिर से बार्बी बैग में रख दिया।

'वैसे यहां बैठता कौन है?' राघव ने पूछा। मैं गुलाबी झोले की खोजबीन करने लगा और उसमें मुझे एक नोटबुक मिली, जिस पर भूरे रंग का कवर चढ़ा था। मैंने कवर पर लिखे लेबल को पढ़ा –

'आरती प्रताप प्रधान, विषय – गणित, क्लास 5, सेक्शन सी, उम्र 10, रोल नंबर 1, सनबीम स्कूल।'

'व्हाटेवर। अब हम चलें?' राघव ने कहा। मैंने बैग को फिर से आरती की कुर्सी पर टांग दिया, जहां वह पहले भी टंगा हुआ था।

'चलो,' मैंने कहा। हम दौड़कर अपनी पीछे वाली सीट तक पहुंचे, वहां बैठे और अपना सिर डेस्क के ऊपर झुका लिया। हमने अपनी आंखें मूंद लीं और ऐसा दिखावा करने लगे मानो हमारी तबीयत खराब हो। यह सुबह की असेंबली में शामिल न होने का बहाना था।

क्लास 5, सेक्शन सी के सभी बच्चे भीतर आए और पूरा क्लास रूम दस साल के चार दर्जन बच्चों के शोरगुल से भर उठा।

हमारी क्लास टीचर सिमरन गिल मैडम एक मिनट बाद आईं और पूरी क्लास में खामोशी छा गई।

'मल्टीप्लिकेशन,' उन्होंने बोर्ड पर लिखा, जबकि बच्चे अभी अपनी–अपनी जगह पर बैठ ही रहे थे।

मैं सीधा खड़ा हो गया और गर्दन उचकाकर आरती प्रताप प्रधान, रोल नंबर वन को देखने की कोशिश करने लगा। उसने सफेद स्कर्ट, लाल कार्डिगन पहन रखा था और उसकी चोटियों में रिबन बंधा था। वह अपनी जगह पर बैठ गई। टीचर उसके ठीक सामने थीं।

'ऐं', आरती जोर से चीखी। उसने अपनी सीट पर चॉकलेट में लथपथ एक रूलर उठाया। उसकी स्कर्ट पर चॉकलेट के दाग लग चुके थे। 'ओह माय गॉड!'

आरती की तीखी आवाज ने पूरी क्लास का ध्यान खींचा।

'आरती, बैठ जाओ!' गिल मैडम ने चिल्लाते हुए कहा। उनकी आवाज इतनी तेज थी कि वह पीछे की पंक्ति में बैठे बच्चों को भी कंपा देने के लिए काफी थी। गिल मैडम को शोरगुल पसंद नहीं था, चाहे शोर करने वाली लड़की ने क्यूट चोटियां बना रखी हों।

राघव और मैंने एक–दूसरे को सहमी हुई नजरों से देखा। हम वारदात करने के बाद अपने पीछे सबूत छोड़ गए थे।

'मैडम, किसी ने मेरी सीट पर एक गंदा रूलर रख दिया है। मेरी नई स्कूल ड्रेस खराब हो गई है,' आरती ने सुबकते हुए कहा।

पूरी क्लास हंस पड़ी और आरती की आंखों से आंसू बहने लगे।

'क्या?' टीचर ने कहा। उन्होंने चॉक नीचे रखा, अपने हाथ झाड़े और आरती से रूलर ले लिया।

आरती सुबकती रही। टीचर क्लास में घूमने लगीं। वे जहां–जहां से गुजरतीं, स्टूडेंट्स अपनी सीट में धंसते चले जाते। 'आज चॉकलेट केक कौन लाया था?'

उन्होंने अपनी तहकीकात शुरू कर दी थी।

'मैं लाई थी,' आरती ने कहा। उसने अपना टिफिन खोला और वह समझ गई कि उसी के केक का इस्तेमाल उसी की ड्रेस को बरबाद करने में किया गया है। अब तो उसका रोना–धोना और बढ़ गया। 'कोई मेरा केक खा गया है,' वह इतनी जोर से रोने लगी कि समीप ही लगने वाली क्लास 5 बी भी उसकी आवाज सुन सकती थी।

'पूरा नहीं, आधा केक,' मैं उससे कहना चाहता था।

राघव ने मेरी ओर देखा। 'अपनी गलती कबूल कर लें?' उसने फुसफुसाते हुए कहा।

'पागल हो गए हो क्या?' मैंने उसी तरह फुसफुसाते हुए जवाब दिया।

जब गिल मैडम मेरे पास से होकर गुजरीं तो मैंने फर्श पर नजरें गड़ा दीं। उन्होंने गोल्डन स्लिपर्स पहन रखी थीं, जिसकी स्ट्रैप पर नकली क्रिस्टल लगे थे।

मैंने मुट्ठियां भींच लीं। मेरी अंगुलियां चिपचिपी हो रही थीं।

टीचर फिर से क्लास के आगे वाले भाग में चली गईं। उन्होंने अपने पर्स से एक टिशू निकाला और रूलर को पोंछकर साफ कर दिया। 'जिसने गलती की है वह चुपचाप कबूल कर ले, वरना उसे बहुत सख्त सजा मिलेगी,' उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा।

मैंने ऐसा दिखावा किया मानो कुछ सुना ही न हो और अपनी गणित की नोटबुक खोल ली।

'जी एम कौन है?' टीचर ने पूछा। उन्होंने मेरे नाम के इनिशियल्स पढ़ लिए थे। मैंने उन्हें एक कंपास की मदद से अपने रूलर पर उकेरा था। धत्तेरे की! क्लास में दो जी एम थे। उनमें से एक गिरीश माथुर पहली पंक्ति में बैठता था। वह फौरन उठ खड़ा हुआ।

'मैंने नहीं किया है मैम,' उसने कहा और अपनी गर्दन झुका ली। 'भगवान कसम, मैम।'

टीचर ने उसे तिरछी नजरों से देखा। उनके मन में अब भी शक था।

'मैं गंगा की सौगंध खाकर कहता हूं, मैम,' गिरीश ने कहा और फफककर रोने लगा।

गंगा वाली बात काम कर गई। सभी को उसकी बात पर भरोसा हो गया।

'दूसरा जी एम कौन है? गोपाल मिश्रा!' टीचर ने मेरा नाम पुकारते हुए कहा।
सभी की आंखें मेरी तरफ घूम गईं। टीचर चलकर मेरी डेस्क तक आईं। मैं उठ खड़ा हुआ।
मैंने एक शब्द भी नहीं कहा। न ही टीचर ने कुछ कहा। तड़, तड़ाक! मेरे दोनों गाल झनझना उठे थे।
'खाने की चोरी? तुम चोर हो क्या?' टीचर ने कहा।
उन्होंने मेरी तरफ कुछ इस तरह देखा, मानो मैंने ब्रिटिश क्वीन के म्यूजियम से कोहिनूर हीरा चुरा लिया हो।
मेरा सिर झुका रहा। अब उन्होंने मेरी गर्दन पर एक धौल जमाई। 'मेरी क्लास से दफा हो जाओ!'
मैं अपने पैर घसीटता हुआ क्लास से बाहर चला आया। यहां तक कि पूरी क्लास 5 सेक्शन सी तक की नजरें भी मुझ पर ही जमी थीं।
'आरती, जाओ और बाथरूम में अपना स्कर्ट साफ कर आओ,' गिल मैडम ने कहा।
मैं क्लास के बाहर दीवार से टिककर खड़ा था। आरती अपनी आंखें पोंछते हुए मेरे करीब से गुजरी।
'ड्रामा क्वीन! वह चॉकलेट केक की केवल आधी स्लाइस ही तो थी!' मैंने सोचा।
खैर, तो इसी तरह मेरी, गोपाल मिश्रा की ग्रेट आरती प्रताप प्रधान से पहली मुलाकात हुई। हां, यहां मैं यह जरूर कहना चाहता हूं कि भले ही यह कहानी मेरी है, लेकिन आप मुझे ज्यादा पसंद नहीं करेंगे। आखिर, दस साल का चोर कोई बहुत पसंद करने लायक इंसान होता भी तो नहीं है।
मैं वाराणसी का हूं। मेरी समाज विज्ञान की टीचर कहती हैं कि यह दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है। यह शहर 1200 ईसा पूर्व से ही आबाद है।
वाराणसी का यह नाम दो नदियों वरुणा और असि के नाम पर पड़ा, जो इस शहर से होकर बहती हैं और आगे जाकर गंगा में मिल जाती हैं। अलग-अलग जगहों के लोग मेरे शहर को अलग-अलग नामों से बुलाते हैं, जैसे काशी, बेनारस या बनारस। कुछ लोग वाराणसी को मंदिरों का शहर भी कहते हैं, क्योंकि यहां हजारों की तादाद में मंदिर हैं। कुछ लोग इसे ज्ञान का शहर कहते हैं, क्योंकि वाराणसी में पढ़ाई-लिखाई के कुछ बेहतरीन सेंटर हैं। लेकिन मैं वाराणसी को केवल अपना घर कहता हूं। मैं गदौलिया के करीब रहता हूं, जहां इतना शोरगुल होता है कि यदि आप चैन से सोना चाहते हैं तो इसके लिए आपको अपने कानों में रुई खोंसना पड़ सकती है। गदौलिया गंगा नदी के घाटों के करीब है, इसलिए यदि गदौलिया की घनी आबादी के कारण आपका जीना मुहाल हो जाए तो आप घाट पर जाकर बैठ सकते हैं और गंगा और मंदिरों के शिखरों को निहार सकते हैं। कुछ लोग मेरे शहर को पवित्र, खूबसूरत और आध्यात्मिक भी कहते हैं, खासतौर पर तब, जब विदेशी पर्यटकों के सामने इसकी खूबियां गिनानी हों। कुछ लोग इसे गंदगी से भरपूर भी बताते हैं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि मेरा शहर गंदा है, वास्तव में लोग उसे गंदा बना देते हैं।
खैर, कहते हैं कि जीवन में एक न एक बार वाराणसी की सैर जरूर करनी चाहिए। जबकि हममें से कइयों ने तो अपना पूरा जीवन ही इस शहर में बिता दिया है।
मेरी जेब में एक पेंसिल थी। मैं उससे दीवार पर 5 सी लिखता रहा। इससे मुझे वक्त काटने में भी मदद मिल रही थी और 5 सी लिखने के बाद मैं अपनी क्लास को अधिक आसानी से खोज भी सकता था।
वह टॉयलेट से बाहर आई – उसका चेहरा भीगा हुआ था। ड्रामा-क्वीन जैसे एक्सप्रेशंस अपनी जगह बरकरार थे और उसकी नजरें मुझ पर जमी हुई थीं।
वह क्लास की ओर चली जा रही थी।
जैसे-जैसे वह मेरे करीब आती गई, उसकी नजरें लगातार मुझे घूरती रहीं। 'तुम दीवार चितर रहे हो!'
उसने कहा।
'जाओ, इसकी भी शिकायत कर दो,' मैंने कहा।
'जाओ!'
'तुमने मेरा टिफिन चुराने की हिम्मत कैसे की?'
उसने कहा।
'मैंने तुम्हारा टिफिन नहीं चुराया,' मैंने कहा। 'मैंने केवल तुम्हारे चॉकलेट केक की तीन बाइट खाईं। तुम्हें तो पता भी नहीं चलता।'
'तुम वाकई बैड बॉय हो,' आरती ने कहा।

2

हमारे वकील दुबे अंकल ने चार लड्डुओं का एक छोटा-सा बॉक्स हमारी ओर बढ़ाया।
'मिठाइयां? किस खुशी में?' बाबा ने पूछा।
दुबे अंकल हमारे घर आए थे। उनसे हमारी भेंट बाबा आदम के जमाने की हमारी डाइनिंग टेबल पर हुई।
'तुम्हारी सुनवाई की तारीख निकली है,' दुबे अंकल ने कहा। 'इसमें बहुत वक्त लग गया। मैंने सोचा इसका जश्न मनाया जाए।'
मैंने सोचा कि केक के मुआवजे के तौर पर यदि ड्रामा क्वीन आरती को कुछ लड्डू दे दिए जाएं तो कैसा रहे। वैसे तो मैं एक चॉकलेट केक खरीदकर उसकी डेस्क पर पटक देना चाहता था, लेकिन मेरे पास ऐसा करने के लिए पैसे नहीं थे। मेरे पिता मुझे ज्यादा पॉकेट मनी नहीं देते थे और खुद उनकी पॉकेट में ज्यादा मनी नहीं थी।
मां की बीमारी ने उनकी पूरी बचत का सफाया कर दिया था। मेरी चौथी सालगिरह के दो सप्ताह बाद ही वे गुजर गईं। मुझे उनके या उनकी मौत के बारे में ज्यादा कुछ याद नहीं है। बाबा कहते हैं कि उनकी मौत के बाद उन्हें एक महीने तक उनका दुप ा पहनकर मेरे पास सोना पड़ता था। उनकी मौत के बाद जमीन का विवाद भी शुरू हो गया। इसी कारण दुबे अंकल का हमारे घर में आना-जाना बढ़ गया था।
'आप केवल इसीलिए मिठाई ले आए कि मेरी सुनवाई की तारीख निकली है?' बाबा ने खांसते हुए पूछा। मुकदमे की वजह से उनकी जमीन तो उन्हें वापस नहीं मिल सकी, लेकिन उससे उनकी दमे की बीमारी जरूर और बदतर हो गई थी।
'घनश्याम मामले को अदालत के बाहर ही निपटा देना चाहता है,' दुबे अंकल ने कहा।
मेरे पिता के बड़े भाई घनश्याम ताया-जी ने भी हमारा बेड़ा गर्क कर रखा था। मेरे दादाजी अपने दो बेटों के लिए लखनऊ हाईवे पर तीस एकड़ खेती की जमीन छोड़ गए थे, जिसका बंटवारा दो बराबर के हिस्सों में किया जाना था। दादाजी की मौत के कुछ समय बाद घनश्याम ने बैंक से लोन लिया और बाबा की आधी संपत्ति पर कब्जा जमा लिया। उन्होंने बैंक अफसरों को घूस देते हुए गलत प्लॉट नंबरों के साथ जाली कागजात बना लिए।
घनश्याम ताया-जी ने बिजनेस में कुछ गलत फैसले लिए और अपना पैसा गंवा दिया। बैंक ने हमें एक फोरक्लोजर नोटिस भेजा। बाबा ने इसका विरोध किया तो बैंक ने मेरे पिता और अंकल दोनों पर मुकदमे ठोंक दिए। दोनों भाइयों ने भी एक-दूसरे पर मुकदमा कर दिया। ये सभी मुकदमे बैलगाड़ी से भी धीमी चाल से चलते रहे।
'सेटल?' मेरे पिता ने आगे झुकते हुए पूछा।
मैंने एक लड्डू उठाया और अपनी जेब में रख लिया।
'घनश्याम तुम्हें कुछ नगद पैसा दे देगा। वह जमीन का तुम्हारा हिस्सा ले लेगा और बैंक और कानूनी मुकदमों को तुम्हारे हवाले कर देगा,' दुबे अंकल ने कहा।
'कितना पैसा?' बाबा ने पूछा।
'दस लाख,' दुबे अंकल ने जवाब दिया।
मेरे पिता चुप हो गए। मैंने मौका ताड़कर एक और लड्डू चुरा लिया। मैंने सोचा आरती दो लड्डू पाकर खुश हो जाएगी।
'मैं यह बात तो मानता हूं कि 15 एकड़ जमीन के लिए यह पेशकश बहुत ही कम है,' दुबे अंकल ने अपनी बात जारी रखी। 'लेकिन तुम्हारी संपत्ति पर एक करोड़ का लोन है।'
'यह मेरा लोन नहीं है!' बाबा ने ऊंची आवाज में कहा, जो उनके आम मिजाज से मेल नहीं खाती थी।
'उसने तुम्हारे दस्तावेज बैंक में जमा कर दिए हैं।
तुमने उसे अपने प्रॉपर्टी पेपर्स क्यों दे दिए?'
'वह मेरा बड़ा भाई है,' बाबा ने अपने आंसुओं को थामते हुए कहा। उन्हें जमीन के नुकसान से ज्यादा यह दुख सता रहा था कि उन्होंने अपना भाई खो दिया था।
'यदि तुम्हें और पैसा चाहिए तो मैं उससे बात कर सकता हूं। इस मामले को लंबे समय तक क्यों घसीटें?'
दुबे अंकल ने कहा।
'मैं किसान का बेटा हूं। अपनी जमीन नहीं छोड़ सकता,' बाबा ने कहा। उनकी आंखें लाल थीं। 'जब तक जान में जान है, तब तक जमीन मेरी है। उसे कह दो कि यदि उसे जमीन चाहिए तो पहले मुझे जान से मारना होगा।'
उसके बाद बाबा ने मुझे घूरकर देखा। मेरा हाथ तीसरा लड्डू चुराने के लिए आगे बढ़ रहा था।
'ठीक है, ठीक है, सभी लड्डू ले लो,' दुबे अंकल ने कहा।
मैंने उन दोनों को देखा, मिठाई का डिब्बा उठाया और कमरे से बाहर भाग गया।
मैंने मिठाई के डिब्बे को उसकी डेस्क पर जाकर रख दिया।
'यह क्या है?' उसने तकल्लुफ के साथ मेरी ओर देखा।
'मैंने तुम्हारा केक खा लिया था ना। आई एम सॉरी,' मैंने कहा। मेरे अंतिम शब्द बहुत मध्म थे।
'मुझे लड्डू पसंद नहीं,' उसने घोषणा की।
'क्यों? तुम क्या अंग्रेजन हो?' मैंने कहा।

'नहीं, क्योंकि लड्डू खाने से हम मोटे हो जाते हैं और मैं मोटी नहीं होना चाहती,' उसने कहा।
'तो क्या चॉकलेट केक खाने से हम मोटे नहीं होते?'
'मुझे नहीं चाहिए ये लड्डू,' उसने कहा और लड्डू के डिब्बे को मेरी ओर धकेल दिया।
'ठीक है,' मैंने कहा और डिब्बा अपने पास रख लिया।
'तुमने सॉरी बोला था ना?' आरती ने पूछा।
'हां, बोला तो था।' मैंने रिबन से गुंथी उसकी चोटी को गौर से देखा। वह किसी कार्टून कैरेक्टर जैसी लग रही थी।
'अपॉलॉजी एक्सेप्टेड,' उसने कहा।
'थैंक यू,' मैंने कहा। 'क्या वाकई तुम्हें लड्डू नहीं चाहिए?'
'नहीं, मोटी लड़कियां एयर होस्टेस नहीं बन सकतीं,' उसने कहा।
'तुम एयर होस्टेस बनना चाहती हो?' मैंने कहा।
'हां।'
'क्यों?'
'क्योंकि वे पूरी दुनिया की सैर करती हैं। मैं तरह–तरह की जगहें देखना चाहती हूं।'
'ठीक है।'
'और तुम क्या बनना चाहते हो?' आरती ने पूछा।
मैंने कंधे उचका दिए। 'एक अमीर आदमी,' मैंने कहा।
उसने सिर हिला दिया, मानो उसे मेरी चॉइस ठीक–ठाक लगी हो। 'अभी तुम गरीब हो क्या?'
'हां।'
'मैं तो अमीर हूं। हमारे पास एक कार है।'
'हमारे पास कार नहीं है। ओके, बाय,' मैं जाने के लिए पीछे मुड़ा कि आरती ने कुछ कहा।
'तुम्हारी मां तुम्हें टिफिन बनाकर क्यों नहीं देतीं?'
'मेरी कोई मां नहीं है,' मैंने कहा।
'तुम्हारी मां अब इस दुनिया में नहीं हैं?' उसने पूछा।
'हां,' मैंने कहा।
'ओके, बाय।'
मैं अपनी सीट पर लौट आया, लड्डुओं का डिब्बा खोला और एक लड्डू बाहर निकाल लिया।
आरती मेरे पास आई।
'क्या है?' मैंने पूछा।
'तुम चाहो तो कभी–कभी मेरा टिफिन खा सकते हो। हालांकि ज्यादा मत खाना। और केक या उस जैसी अच्छी ट्रीट्स मत लेना।'
'थैंक्स,' मैंने कहा।
'और इस तरह बखेड़ा खड़ा मत किया करो। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो हम लंच–ब्रेक के दौरान साथ–साथ खा सकते हैं।'
'लेकिन तब तो तुम भूखी रह जाओगी,' मैंने कहा।
'इट्स ओके। मैं डाइटिंग कर रही हूं। मैं मोटी नहीं होना चाहती,' आरती ने कहा।

3

'पहले घर तक मेरे साथ चलो। उसके बाद क्रिकेट ग्राउंड चले जाना,' आरती ने कहा।
हम गंगा पर बोटिंग करने के बाद शाम को घर लौट रहे थे। आरती और मैं पिछले पांच सालों से हर सप्ताह इसी तरह बोटिंग करने जाते थे। अस्सी घाट के नाविक फूलचंद भाई मुझे अपनी नाव दे देते थे। हम एक गली से होकर गुजर रहे थे, जो इतनी संकरी थी कि एक मोटी गाय आसानी से उसमें फंस सकती थी। हम घाटों से सटे एक मुख्य मार्ग पर निकले।
'मुझे पहले ही देरी हो गई है, आरती। राघव मुझ पर बहुत चिल्लाएगा।'
'तो मुझे भी अपने साथ आने दो। मैं घर जाकर बोर नहीं होना चाहती,' उसने कहा।
'नहीं।'
'क्यों?' उसने आंखें झपकाते हुए कहा।
'वहां बहुत लड़के हैं। याद है पिछली बार कितनी सीटियां बजी थीं?'
'मैं हैंडल कर लूंगी,' आरती ने अपने माथे से बालों की लट हटाते हुए कहा।
मैंने उसके खूबसूरत चेहरे को देखा। 'तुम्हें पता नहीं तुम्हें देखकर उन्हें क्या हो जाता है,' मैंने कहा। वास्तव में मैं उससे कहना चाहता था कि तुम्हें पता नहीं तुम्हें देखकर मुझे क्या हो जाता है।
आरती को उसके लुक्स के कारण हमेशा स्कूल टीचर्स की सराहना मिलती थी। लेकिन दो साल पहले जब वह पंद्रह की हो गई तो पूरा स्कूल उसके बारे में बात करने लगा। इस तरह की बातें आम हो गई कि वह सनबीम स्कूल की सबसे खूबसूरत लड़की है, उसे तो फिल्म एक्ट्रेस बनना चाहिए या वह चाहे तो मिस इंडिया के लिए अप्लाई कर सकती है। इनमें से कुछ बातें वे लोग करते थे, जो उसे लुभाना चाहते थे।
आखिर एक सीनियर आईएएस ऑफिसर की बेटी और एक प्रतिष्ठित पूर्व राजनेता की पोती की गुड बुक्स में कौन शामिल नहीं होना चाहेगा? लेकिन हां, आरती के कारण वाराणसी की दिल की धड़कनें जरूर तेज हो गई थीं।
यदि वह सिगरा स्टेडियम क्रिकेट ग्राउंड में चली जाती तो निश्चित ही खेल में खलबली मच जाती।
बल्लेबाज गेंद खेलना भूल जाते, फील्डर्स कैच टपका देते और बेरोजगार बौड़म लड़के उसे देखकर सीटियां बजाने लगते, जिनके कारण यूपी बदनाम हो चुका है।
'मैं काफी समय से राघव से नहीं मिली,' आरती ने कहा। 'चलो, चलते हैं। मैं तुम्हें खेलते हुए देखूंगी।'
'कल ट्यूशंस पर उससे तुम्हारी मुलाकात हो जाएगी,' मैंने रूखेपन से कहा। 'अब घर जाओ।'
'तुम चाहते हो कि मैं अकेले घर जाऊं?'
'एक रिक्शा कर लो,' मैंने कहा।
उसने मेरी कलाई थाम ली। 'तुम अभी मेरे साथ चल रहे हो।' उसने मेरा हाथ पकड़ा और जब तक मैं उसके साथ उसके घर नहीं पहुंच गया, तब तक वह मेरे हाथ को आगे–पीछे झुलाती रही।
मैं उससे कहना चाहता था कि वह अब इस तरह मेरा हाथ न पकड़ा करे। बारह की उम्र तक यह ठीक है, लेकिन सत्रह की उम्र में नहीं। ये अलग बात है कि सत्रह की उम्र में उसका मेरा हाथ पकड़ना बारह की तुलना में मुझे ज्यादा अच्छा लगता था।
'क्या हुआ?' उसने कहा। 'तुम घूर क्यों रहे हो? मैंने तुम्हारा हाथ केवल इसीलिए पकड़ा है कि कहीं तुम भाग न जाओ।'
मैं मुस्करा दिया। हम शोरगुल भरी सड़कों से होकर शांत कैंटोनमेंट इलाके तक चले आए। फिर हम जिला जज प्रताप बृज प्रधान के बंगले पर पहुंचे। वे आरती के पिता थे।
सांझ का आकाश गहरे नारंगी रंग का हो गया था।
यह तय था कि राघव मुझ पर बहुत बिगड़ेगा, क्योंकि खेलने के लिए बहुत समय जाया हो चुका था। लेकिन मैं आरती की बात नहीं टाल सका।
'थैंक यू,' आरती ने बच्चों सरीखी आवाज में कहा।
'भीतर आओगे?'
'नहीं, मुझे पहले ही बहुत देरी हो चुकी है,' मैंने कहा।
हमारी आंखें मिलीं, लेकिन जल्द ही मैंने अपनी आंखें हटा लीं। बेस्ट फ्रेंड्स, बस हम यही थे, मैंने खुद से कहा।
हवा में उसके बाल लहराए और काली लटें उसके चेहरे को हौले–से सहलाने लगीं।
'मुझे अपने बाल कटवा लेने चाहिए। इन्हें मेंटेन करना बहुत मुश्किल है,' आरती ने कहा।
'नहीं, ऐसा मत करना,' मैंने दृढ़ता से कहा।
'मैंने केवल तुम्हारे लिए ही अपने बाल इतने लंबे रखे हैं। बाय।' उसने कहा। मैं सोचने लगा कि क्या वह भी मेरे बारे में अलग तरह से सोचने लगी है।
लेकिन मुझे नहीं पता था कि यह बात उससे कैसे पूछी जाए।
'ट्यूशंस पर मिलते हैं,' मैंने चलते–चलते कहा।

'राघव कश्यप', टीचर ने नाम पुकारा और एक आन्सर–शीट ऊपर उठा दी। राघव, आरती और मैंने दुर्गाकुंड में जेएसआर कोचिंग क्लासेस जॉइन की थी, ताकि हम इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी कर सकें। जेएसआर का नामकरण उसके तीन संस्थापकों मिस्टर झा, मिस्टर सिंह और मिस्टर राय के नाम पर किया गया था और वह एआईईईई (ऑल इंडिया इंजीनियरिंग एंट्रेंस एग्जाम) और आईआईटी जेईई (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी जॉइंट एंट्रेंस एग्जाम) के लिए लगातार मॉक टेस्ट आयोजित करता था। एआईईईई में हर साल देशभर के दस लाख स्टूडेंट्स परीक्षा देते हैं, जो नेशनल इंस्टिट्यूट्स ऑफ टेक्नालॉजी (एनआईटी) के तीस हजार पदों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। इंजीनियर बनने की चाहत रखने वाला हर छात्र यह परीक्षा देता है। मैं इंजीनियर तो नहीं बनना चाहता था, लेकिन बाबा मुझे इंजीनियर बनते देखना चाहते थे और इसीलिए मैंने जेएसआर जॉइन किया था।

राघव चालीस स्टूडेंट्स से खचाखच भरे क्लासरूम से होकर अपनी आन्सर शीट लेने आगे बढ़ा।

'अस्सी में से छियासठ। वेल डन, राघव,' टीचर ने कहा।

'आईआईटी मटेरियल,' एक लड़के ने फुसफुसाते हुए कहा। 'वह सनबीम का टॉपर है।'

मैं साफ तौर पर देख सकता था कि राघव अपने आईआईटीयन पिता के कदमों पर चल रहा है, जो भेल में इंजीनियर हैं। मुझे अस्सी में से पचास नंबर मिले।

यह एक ठीक–ठाक प्रदर्शन था। यह किसी क्रिकेट टीम में बारहवां खिलाड़ी बनने के लिए तो काफी था, लेकिन खिलाड़ी बनने के लिए नहीं।

'फोकस, गोपाल,' टीचर ने कहा। 'तुम्हें अपनी जगह सुरक्षित करने के लिए साठ से ज्यादा नंबर लाने होंगे।'

मैंने सिर हिला दिया। मैं एक अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ना चाहता था। मेरे पिता ने कई सालों से कोई अच्छी खबर नहीं सुनी थी।

'आरती प्रधान!' टीचर ने पुकारा। पूरी क्लास की निगाहें सफेद सलवार कमीज पहने उस लड़की की ओर घूम गईं, जिसके कारण उबाऊ कोचिंग क्लासेस भी अखरती नहीं थीं।

आरती ने अपनी आन्सर शीट ली और खिलखिला दी।

'अस्सी में से बीस नंबर लाना तुम्हें फनी लगता है?'

टीचर ने त्यौरियां चढ़ाते हुए कहा।

आरती ने हथेलियों से अपना चेहरा छुपा लिया और अपनी सीट पर लौट आई। उसकी इंजीनियर बनने की कोई इच्छा नहीं थी। उसने तीन कारणों से जेएसआर जॉइन किया था। पहला यह कि कोचिंग क्लासेस अटेंड करने से उसे अपनी बारहवीं सीबीएसई की पढ़ाई में मदद मिल सकती थी, दूसरा यह कि मैंने भी जेएसआर जॉइन किया था और उसे कंपनी मिल गई थी और तीसरा यह कि ट्यूशन सेंटर उससे फीस नहीं लेता था, क्योंकि उसके पिता शहर के डीएम या डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट बनने वाले थे। वैसे आरती के पिता ईमानदार छवि वाले थे, लेकिन फ्री ट्यूशन लेना बेईमानी के दायरे में नहीं आता था।

'मैंने तो एआईईईई का फॉर्म तक नहीं भरा है,' आरती ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा।

'मेरी एआईईईई रैंक की बुरी गत होने वाली है,' मैंने अपना लेमनेड हिलाते हुए राघव से कहा।

हम नारद घाट के करीब जर्मन बेकरी में आए थे।

यह फिरंगी टूरिस्टों का प्रिय जॉइंट था, जहां गोरे लोग वाराणसी के कीटाणुओं और दलालों दोनों से सुरक्षित महसूस करते थे। वे सैंडविच और पैनकेक्स जैसा फिरंगी फूड खाने के लिए लकड़ी की खपच्चियों वाले बिस्तर पर बैठा करते थे। वाराणसी इफेक्ट देने के लिए दो कुपोषित बूढ़े एक कोने में बैठकर सितार बजाया करते थे, क्योंकि गोरों को सितार सुनते हुए सैंडविच खाना एक सांस्कृतिक अनुभव लगता था।

मैंने कभी इस जगह के बारे में ज्यादा नहीं सोचा।

लेकिन, आरती इसे पसंद करती थी।

'उसने अपने बाल बांधने के लिए जिस तरह से स्कार्फ का इस्तेमाल किया है, वह मुझे अच्छा लगा,'

आरती ने एक महिला टूरिस्ट की ओर इशारा करते हुए कहा। जाहिर है, उसे मेरी एआईईईई से जुड़ी चिंताओं में कोई दिलचस्पी न थी।

'दस और अंक, और उसके बाद यू विल बी फाइन।

रिलैक्स,' राघव ने कहा।

'मेरे और उन दस अंकों के बीच एक लाख स्टूडेंट्स खड़े हैं,' मैंने कहा।

'दूसरों के बारे में मत सोचो। अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो,' उसने कहा।

मैंने धीमे से अपना सिर हिला दिया। जब आप टॉपर होते हैं तो सलाह देना आसान होता है। मैंने कल्पना की कि मैं एक लाख अन्य लो–रैंकर्स के साथ एक समुद्र में हूं और सांस लेने के लिए तड़प रहा हूं। हम डूब रहे थे और भारत के एजुकेशन सिस्टम के लिए बेकार होते जा रहे थे। तीन सप्ताह का समय और था और उसके बाद एआईईईई नाम की सुनामी आने वाली थी।

आरती ने मेरे चेहरे के सामने अपनी अंगुलियां लहराईं। 'नींद से जागो, ड्रीमर, सब ठीक हो जाएगा,' उसने कहा।

'तुम एग्जाम नहीं दोगी?' राघव ने आरती से पूछा।

'हां,' वह खिलखिला दी। 'इसी सप्ताह 'मैं हूं ना' रिलीज हो रही है। आखिर मैं शाहरुख खान की फिल्म कैसे मिस कर सकती हूं? उन्हें एआईईईई पोस्टपोन कर देना चाहिए।'

'वेरी फनी।' मैंने मुंह बना दिया।

'अगर तुम इंजीनियर नहीं बनना चाहती तो फिर तुम आखिर करना क्या चाहती हो?' राघव ने आरती से पूछा।

'क्या कुछ करना जरूरी है? मैं भारतीय नारी हूं।

शादी करूंगी, घर बसाऊंगी और खाना पकाऊंगी। या फिर, नौकरों को खाना पकाने का हुक्म दूंगी।'

यह कहकर वह हंस पड़ी और राघव भी उसकी हंसी में शामिल हो गया।

लेकिन मुझे इसमें कुछ भी हंसने जैसा नहीं लगा। मैं उन लाखों स्टूडेंट्स से अपना ध्यान नहीं हटा पा रहा था, जो इंजीनियर बनना चाहते थे और जिनसे मुझे कुछ ही दिनों बाद भिड़ना था।

'इतने सीरियस क्यों हो रहे हो, गोपाल–जी? मैं मजाक कर रही हूं। तुम तो जानते ही हो कि मैं घर पर नहीं बैठ सकती।' आरती ने मेरा कंधा थपथपाते हुए कहा।

'चुप करो, आरती,' मैंने कहा। 'मुझे पता है कि तुम एयर होस्टेस बनना चाहती हो।'

'एयर होस्टेस? वॉव!' राघव ने कहा।

'दैट्स नॉट फेयर, गोपाल!' आरती ने चिल्लाते हुए कहा। 'तुम दुनिया के सामने मेरे सीक्रेट्स उजागर कर रहे हो।'

'दुनिया नहीं, वह केवल मुझे ही बता रहा है,' राघव ने कहा।

आरती ने मुझे एक डर्टी लुक दी।

'सॉरी,' मैंने कहा।

आरती से मेरा रिश्ता ज्यादा गहरा था। हम राघव को अपना दोस्त मानते थे, लेकिन गहरा दोस्त नहीं।

'तुम वाकई बहुत अच्छी एयर होस्टेस बनोगी,' राघव ने कहा। उसके लहजे में शरारत थी।

'खैर, जो भी हो,' आरती ने कहा। 'जैसे कि डैड मुझे वाराणसी से कहीं जाने देंगे। यहां कोई एयरलाइंस नहीं हैं। यहां केवल मंदिर हैं। शायद, मैं एक टेम्पल होस्टेस बन जाऊं। सर, प्लीज फर्श पर अपना स्थान ग्रहण कीजिए। प्रार्थना शीघ्र ही प्रारंभ होने वाली है।

प्रसाद आपकी सीट तक पहुंचा दिया जाएगा।'

राघव अपना पेट पकड़कर फिर हंस पड़ा। उसका पेट बहुत गठीला था। मुझे ऐसे लोगों से घृणा होती है, जिन्हें प्राकृतिक रूप से सपाट पेट मिला होता है।

भगवान सभी पुरुषों के लिए सिक्स पैक को एक डिफॉल्ट स्टैंडर्ड क्यों नहीं बना देते? क्या फैट जमा करने की पेट के सिवा कोई और जगह नहीं हो सकती?

राघव ने आरती के हाथ पर ताली दी। मेरे कानों की लवें सुर्ख हो गईं। सितार वादकों ने एक द्रुत धुन बजानी शुरू कर दी।

'आरती, तुम भी क्या नॉनसेंस बातें कर रही हो,' मैंने कहा। मेरी आवाज तेज थी। मेरे इर्द–गिर्द मौजूद फिरंगी, जो यहां वैश्विक शांति की तलाश में आए थे, चौकन्ने हो गए।

मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा था कि राघव और आरती एक–दूसरे के फिसड्डी जोक्स का भी मजा ले रहे थे।

राघव ने अपने लेमनेड में स्ट्रॉ को इतनी जोर से चूसा कि ड्रिंक उसकी नाक से बहने लगी।

'ग्रॉस!' आरती ने कहा और दोनों फिर से ठहाका लगाकर हंसने लगे।

मैं उठ खड़ा हुआ।

'क्या हुआ?' राघव ने कहा।

'मुझे जाना है। बाबा मेरा इंतजार कर रहे हैं,' मैंने कहा।

बाबा के खांसने की आवाज में दरवाज़े की घंटी की आवाज डूब गई थी।

'सॉरी, मैं सुन नहीं पाया था,' आखिरकार उन्होंने दरवाजा खोलते हुए कहा।

'आप ठीक तो हैं ना?' मैंने पूछा।

'हां, कुछ खास नहीं। मैंने दाल–रोटी बनाई है।'

'यह भी तो कुछ खास नहीं है।'

मेरे पिता पिछले साल ही साठ साल के हुए थे, लेकिन नॉनस्टॉप खांसी के कारण वे अस्सी के लगने लगे थे। डॉक्टरों ने हाथ खड़े कर दिए थे। हमारे पास सर्जरी के भी पैसे नहीं थे। उनके स्कूल ने उन्हें एक अरसा पहले ही निकाल बाहर कर दिया था। आप दस बार ब्रेक लेकर पचास मिनट की क्लास नहीं पढ़ा सकते। उन्हें पेंशन जरूर मिलती थी, जिसके सहारे हमारे महीने के तीन हफ्ते कट जाते थे।

मैं हमारी डावांडोल डाइनिंग टेबल पर बैठकर चुपचाप खाने लगा।

'एंट्रेंस एग्जाम...' मेरे पिता ने कहना शुरू किया, लेकिन खांसी आ जाने के कारण वे रुक गए। मैं समझ गया वे क्या कहना चाहते हैं।

'मैंने एआईईईई की तैयारियां पूरी कर ली हैं,' मैंने कहा।

'और जेईई?' बाबा ने कहा। एग्जाम की तैयारी करने से भी मुश्किल है परिवार की उम्मीदों पर खरा उतरना।

'मेरे लिए आईआईटी की उम्मीदें मत पा लिए, बाबा,' मैंने कहा। मेरे पिता का चेहरा उतर गया। 'मैं जेईई भी कर लूंगा। लेकिन जरा सोचिए, चार लाख में से केवल तीन हजार का सिलेक्शन...' 'तुम कर सकते हो। तुम ब्राइट हो,' बाबा ने कहा।

बाप का प्यार निश्चित ही अपने बेटे की काबिलियतों का आकलन बढ़ा-चढ़ाकर कर रहा था।

मैंने सिर हिला दिया। मुझे एआईईईई से फिर भी उम्मीदें थीं, लेकिन जेईई से नहीं। मैं सोचने लगा कि क्या बाबा इस बात को समझ पा रहे हैं कि यदि मेरी रैंक लग गई तो मुझे घर छोड़ना पड़ेगा। अगर मुझे एनआईटी अगरतला जाना पड़ा तो क्या होगा? या कहीं सुदूर दक्षिण में?

'इंजीनियरिंग ही सब कुछ नहीं है, बाबा,' मैंने कहा।

'इससे तुम्हारा जीवन सुरक्षित हो जाता है। अब एग्जाम से ठीक पहले मुझसे झगड़ा मत करो।'

'मैं झगड़ नहीं रहा हूं।'

डिनर के बाद बाबा अपने बिस्तर पर लेट गए। मैं उनके करीब बैठ गया और उनका सिर दबाने लगा।

उन्हें खांसी का एक दौरा पड़ा और वे उठ बैठे।

'हमें सर्जरी के बारे में सोचना चाहिए,' मैंने कहा।

'यानी दो लाख रुपए खर्च करने के बारे में?' बाबा ने लेटे-लेटे कहा। उनकी आंखें मुंदी हुई थीं। मैं समझ गया कि इस बारे में बात करना बेकार है।

मैं चुप रहा। मैं इस विषय को छेड़ना नहीं चाहता था। हम जमीन विवाद को एक अरसा पहले ही सुलझा सकते थे, लेकिन अदालती सुनवाइयों ने हमारा जीना मुहाल कर रखा था। जमीन पड़ी-पड़ी बंजर हो रही थी और हमारे पास पैसे नहीं थे।

'तुम ही बताओ, हम पैसा कहां से लाएंगे?' मेरे पिता ने कहा। 'तुम पहले इंजीनियर बन जाओ, अच्छा जॉब हासिल करो। फिर, मैं सर्जरी करवा लूंगा।'

अब मैं चुप नहीं रह सका। 'ताया-जी ने दस लाख रुपए ऑफर किए थे। अभी तक तो बैंक में रखे-रखे ही वह रकम दोगुनी हो गई होती।'

बाबा ने आंखें खोलीं। 'और हमारी जमीन का क्या होता?' उन्होंने कहा।

'वह स्टुपिड जमीन वैसे भी हमारे किस काम की है?'

'इस तरह मत बोलो,' उन्होंने मेरा हाथ धकेलते हुए कहा। 'किसान न कभी अपनी जमीन का अपमान करता है और न ही उसे कभी बेचता है।'

मैंने अपना हाथ फिर उनके सिर पर रख दिया। 'अब हम किसान नहीं हैं, बाबा। हम उस जमीन का कोई उपयोग नहीं कर सकते, क्योंकि आपका अपना भाई...'

'जाओ, और पढ़ाई करो। तुम्हारे इम्तिहान आने वाले हैं।' बाबा ने मेरे कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा।

आधी रात को लैंडलाइन फोन की घंटी घनघनाई। मैंने फोन उठाया।

'मुझे नींद आ रही है, आरती,' मैंने कहा।

'झूठ मत बोलो, तुम रात एक बजे तक नहीं सोते हो।'

'बात क्या है?'

'कुछ नहीं। बस, तुमसे बातें करने को जी किया तो फोन लगा लिया।'

'किसी और से बतियाओ,' मैंने कहा।

'आहा,' उसने कहा। 'मुझे पता है तुम्हें कौन-सी चिंता खाए जा रही है।'

'बाय, आरती,' मैंने कहा।

'अरे, रुको तो। मुझे राघव के कुछ जोक्स फनी लगे। बस इतनी-सी बात है। तुम अब भी मेरे बेस्ट फ्रेंड हो।'

'नहीं उसके जोक्स फनी नहीं थे। और यह बेस्ट फ्रेंड से तुम्हारा क्या मतलब है?' मैंने कहा।

'हम आठ सालों से बेस्ट फ्रेंड हैं, हालांकि तुमने अभी तक मुझे एक भी चॉकलेट केक नहीं दिया है।'

'और राघव?'

'राघव केवल दोस्त है। मैं उससे केवल इसलिए बातें करती हूं, क्योंकि तुम उसके करीबी दोस्त हो,' आरती ने कहा।

मैं चुप रहा।

'अब तो गुस्सा थूक दो, गोपाल। घर पर क्या हाल हैं?' उसने कहा।

'हमेशा की तरह हाल बेहाल है। और तुम कैसी हो?'

'मैं ठीक हूं। डैड चाहते हैं कि मैं एयर होस्टेस बनने की कोई कोशिश करने से पहले अपनी कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर लूं। लेकिन बारहवीं पास करने के बाद भी तो एयर होस्टेस तो बना जा सकता है।'

'कॉलेज जाओ। तुम्हारे डैड सही कह रहे हैं,' मैंने कहा।

'ऐसे मार्क्स के साथ मैं कौन-सा कॉलेज जॉइन कर सकती हूं? मैं राघव और तुम्हारी तरह स्मार्ट नहीं हूं।'

'राघव स्मार्ट है, मैं नहीं,' मैंने उसकी बात सुधारते हुए कहा।

'क्यों? मॉक टेस्ट की वजह से? यू आर सो स्टुपिड,' आरती ने कहा।

'यू आर स्टुपिड।'

'हम दोनों ही स्टुपिड हैं, फाइन? तुमने डिनर कर लिया?'

पिछले पांच साल में उसने हर रात मुझसे यह सवाल पूछा था। मैं उस पर नाराज ही रहना चाहता था, लेकिन ऐसा कर न पाया। 'हां मैंने डिनर कर लिया, थैंक्स।'

'व्हाट थैंक्स? स्टुपिड। चलो अब सो जाओ और एंट्रेंस एग्जाम्स के बारे में मत सोचना।'

'आरती,' मैंने कहा और रुक गया।

'क्या?'

'यू आर वेरी नाइस,' मैंने कहा। मैं इससे बेहतर कोई दूसरी पंक्ति नहीं सोच पाया।

'नाइस हूं या स्टुपिड हूं? या नाइसली स्टुपिड हूं?'

आरती हंस पड़ी।

'मैं तुम्हारे बिना क्या कर पाऊंगा?'

'शट अप, मैं यहीं तो हूं,' उसने कहा।

'अब हम छोटे बच्चे नहीं रहे, आरती,' मैंने कहा।

'ओके, ओके। अब फिर से वह सब मत शुरू कर देना। अब सो जाओ, मेरे ग्रोन-अप मैन।'

'आरती, कम ऑन, तुम हमेशा इस बात को टाल जाती हो...'

'हम बात करेंगे, लेकिन अभी नहीं। तुम्हारे एंट्रेंस एग्जाम्स के बाद।'

मैं चुप रहा।

'जिंदगी को उलझाओ मत, गोपाल। क्या तुम हमारी दोस्ती से ही खुश नहीं हो?'

'हां, खुश तो हूं, लेकिन...' 'लेकिन-वेकिन क्या? गुड नाइट, स्वीट ड्रीम्स, स्लीप टाइट।'

'गुड नाइट।'

'अब इसका कोई फायदा नहीं है,' मैंने मैथ्स की नोटबुक बंद करते हुए कहा।

एग्जाम के एक दिन पहले राघव मेरे घर आया था।

उसने कहा कि हम ट्रायगोनोमेट्री का लास्ट-मिनट रिवीजन करें। मैं इस विषय में कमजोर था। राघव ने टेक्स्टबुक उठा ली।

'तुम सो जाओ, ओके? एग्जाम से पहले आराम करना बहुत जरूरी है। और खूब सारी धारदार पेंसिलें साथ रखना मत भूलना,' उसने कहा।

राघव को जाता देख बाबा किचन से बाहर आए।

'डिनर के लिए रुको,' बाबा ने कहा।

'नहीं आज नहीं, बाबा,' राघव ने कहा। 'गोपाल को रैंक मिलने के बाद मैं एक अच्छी-सी दावत लूंगा।'

4

मुझे रैंक मिली। रैंक मतलब एक पिटी हुई रैंक।

'52043,' मैंने स्क्रीन पर देखा। मैं शिवपुर में राघव के घर आया था। हमने एआईईईई वेबसाइट पर लॉग ऑन किया था।

निश्चित ही मैंने बहुत बुरा स्कोर नहीं किया था।

टेस्ट देने वाले दस लाख स्टूडेंट्स में से मैंने साढ़े नौ लाख को हरा दिया था। बहरहाल, एनआईटी में केवल तीन हजार सीट्स उपलब्ध थीं। कभी-कभी जिंदगी आपके साथ क्रूर मजाक करती है। मैं उन बदनसीबों में से एक था, जिन्होंने अच्छा प्रदर्शन तो किया था, लेकिन पर्याप्त अच्छा प्रदर्शन नहीं किया था।

'5820,' राघव ने कम्प्यूटर मॉनिटर पढ़ते हुए कहा।

राघव के पिता भी कमरे में चले आए थे और वे हमारे पीछे खड़े थे।

'यह क्या है?' मैंने पूछा।

'मेरी रैंक,' राघव ने कहा।

'एक्सीलेंट!' राघव के पिता ने खुशी से चहकते हुए कहा।

राघव मुस्करा दिया। वह इससे ज्यादा रिएक्ट नहीं कर सकता था।

'इससे तुम्हें बहुत सारी चॉइसेस मिल जानी चाहिए,' राघव के पिता ने फख्र से कहा। 'तुम दिल्ली में इलेक्ट्रॉनिक्स कर सकते हो।'

'एनआईटी लखनऊ भी तो है, है ना?' राघव ने कहा। 'घर के और करीब।'

'एआईईईई को छोड़ो, हम जेईई का इंतजार करेंगे,' राघव के पिता ने कहा। उनकी आवाज में उल्लास था।

दोनों बाप-बेटे को यह रियलाइज करने में थोड़ा समय लगा कि कमरे में मैं भी मौजूद हूं। उन्होंने मेरा लटका हुए चेहरा देखा तो चुप हो गए। 'अब मुझे घर जाना चाहिए,' मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

'पचास हजार की रैंक से तुम्हें भी कुछ न कुछ मिलना ही चाहिए, है ना?' राघव के पिता ने कहा, जबकि वे अच्छी तरह जानते थे कि ऐसा नहीं होगा।

वे मुझे ठेस नहीं पहुंचाना चाहते थे, लेकिन मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने अपनी जिंदगी में कभी खुद को इतना छोटा महसूस नहीं किया था। मुझे लगा कि मैं एक भिखारी हूं, जो राजाओं के दरबार में खड़ा है।

'राघव, मैं तुमसे बाद में बात करता हूं,' मैंने कहा और उनके घर से बाहर निकल आया। मैं नहीं चाहता था कि कोई भी मेरे आंसुओं को देखे।

घर के बाहर गली में राघव दौड़ते हुए आया। 'तुम ठीक तो हो ना?' उसने पूछा।

मैं अपने आंसू पी गया और उसकी तरफ मुड़ने से पहले अपना चेहरा अच्छे-से पोंछ लिया। 'मैं ठीक हूं, बडी,' मैं झूठ बोल गया। 'और बधाइयां! एक ट्रीट तो बनती है। लेकिन तुम्हारे डैड सही हैं। असली पार्टी तो जेईई के बाद ही होगी।'

मैं कहता चला जा रहा था कि राघव ने मुझे टोक दिया। 'बाबा ठीक हैं?' उसने पूछा।

मैंने कंधे उचका दिए। मेरा गला रुंध गया, लेकिन मैंने उसे जाहिर नहीं होने दिया।

'मैं तुम्हारे साथ चलूं?' उसने कहा।

'हां, ठीक ही तो है, जब इम्तिहान में पिट जाओ तो एक टॉप रैंकर को अपने पैरेंट्स से मिलवाने ले जाओ', मैंने मन ही मन सोचा।

'डोंट वरी। उन्होंने जिंदगी में इससे भी बदतर चीजों का सामना किया है,' मैंने कहा।

'आज एआईईईई के रिजल्ट आने वाले थे ना? पेपर में तो नहीं हैं,' मेरे घर में घुसते ही बाबा ने कहा। फर्श पर चार अलग-अलग अखबार फैले थे।

'नहीं, अब अखबारों में रिजल्ट नहीं छपते। बाबा, अखबार इस तरह क्यों फैला रखे हैं?' मैंने कहा।

मैं अखबार समेटने के लिए झुका। मैंने यह नहीं बताया कि नतीजे ऑनलाइन उपलब्ध थे।

'तो हमें रिजल्ट कैसे पता चलेंगे? तारीख तो आज की ही थी ना?' उन्होंने कहा।

मैं चुपचाप अखबार बटोरता रहा। मैं उन्हें कह देना चाहता था कि रिजल्ट आने में अभी कुछ वक्त है।

कुछ दिनों की शांति मेरे लिए अच्छी होती, फिर चाहे वह अस्थायी ही क्यों न हो। मैंने उनका बूढ़ा चेहरा देखा। उनकी आंखों के आसपास झुर्रियां थीं, लेकिन उन आंखों में आज एक खास चमक थी।

'एनआईटी लखनऊ चलकर पता लगाएं?' बाबा ने कहा। वे यह पता लगाने के लिए पांच घंटे का सफर करने को खुशी-खुशी तैयार थे कि उनका बेटा लूजर है।

'बाबा!' मैंने झल्लाते हुए कहा।

'क्या?'

'चलिए, लंच तैयार करते हैं।' मैं किचन में चला गया। बाबा आदम के जमाने का हमारा स्टोव छह बार कोशिशें करने के बाद चालू हुआ। मैंने दाल उबालने के लिए बर्नर पर एक कटोरी पानी चढ़ा दिया।

बाबा मेरे पीछे खड़े थे। 'हमें रिजल्ट जानना ही होगा। चलो, चलते हैं,' उन्होंने कहा। जब बुजुर्ग लोग किसी बात की जिद पकड़ लेते हैं तो वे आसानी से नहीं मानते।

'पहले खाना पका लेते हैं,' मैंने कहा। 'जब खाना बन जाएगा, तो मैं आपको बुला लूंगा।'

अपने पैरेंट्स को अपनी नाकामी के बारे में बताना कभी-कभी नाकाम होने से भी ज्यादा तकलीफदेह होता है। मैं अगले एक घंटे तक खाना पकाता रहा। मैं सोचने लगा कि क्या जिंदगी फिर कभी पटरी पर लौट पाएगी। एक स्टुपिड एग्जाम और मल्टीपल चॉइस प्रॉब्लम्स में आधा दर्जन गलतियों ने मेरी जिंदगी को हमेशा के लिए बदल दिया था।

मेरे पिता और मैं चुपचाप खाते रहे। उनकी उम्मीदों से भरी आंखें मुझ पर जमी थीं। अब उनसे खबर छुपाना मुमकिन नहीं रह गया था।

खाने के बाद मैं उनके पास गया। 'बाबा, मुझे रिजल्ट पता है,' मैंने धीमे-से कहा।

'और?' उन्होंने पूछा। उनकी आंखें फैल गई थीं।

'मेरी रैंक 52043 है।'

'यह अच्छी रैंक है?'

मैंने सिर हिला दिया।

'तुम्हें अच्छी ब्रांच नहीं मिलेगी?'

'मैं एनआईटी में नहीं जा पाऊंगा,' मैंने कहा।

बाबा के चेहरे के भाव फौरन बदल गए। उनके चेहरे पर अब वे भाव थे, जिनसे हर बेटा डरता है। वे नजरें, जो कहती हैं, 'मैंने तुम्हें क्या यही दिन देखने के लिए पाल-पोसकर बड़ा किया था!'

ऐसी नजरों को झेलने से तो कनपटी में गोली दाग लेना बेहतर है।

बाबा बेचैनी के साथ उठे और डाइनिंग टेबल के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगे। 'ऐसा कैसे हुआ कि तुम्हें अच्छी रैंक नहीं मिल पाई?'

'वेल, हर किसी को अच्छी रैंक नहीं मिलती, बाबा।

मैं अकेला नहीं, साढ़े नौ लाख और स्टूडेंट्स को अच्छी रैंक नहीं मिली है', मैंने मन ही मन सोचा, लेकिन कहा नहीं।

'अब क्या?' उन्होंने पूछा।

मैंने सोचा कि क्या मुझे कुछ करने के लिए कुछ विकल्प सुझाने चाहिए, जैसे कि – आत्महत्या, हिमालय पर जाकर कठोर तप या फिर मेहनत-मजूरी की रूखी-सूखी जिंदगी?

'आई एम सॉरी, बाबा,' मैंने कहा।

'मैंने तुम्हें और पढ़ाई करने को कहा था,' उन्होंने कहा।

आखिर कौन बाप ऐसा नहीं कहता होगा! वे अपने कमरे में चले गए। आधे घंटे बाद मैं हिम्मत जुटाकर उनके कमरे में गया। उन्होंने अपने सिर पर गर्म पानी की बोतल रखी थी।

'मैं बीएससी कर सकता हूं, बाबा,' मैंने कहा।

'भला उससे क्या फायदा होगा?' उन्होंने कहा।

उनकी आवाज इतनी तेज थी कि लगता नहीं था कि वे बीमार हैं।

'मैं अपना ग्रेजुएशन पूरा करूंगा और फिर नौकरी की तलाश करूंगा। मुझे अनेक मौके मिल सकते हैं,' मैंने कहा। मैं बिना सोचे-समझे बोले चला जा रहा था।

'एक मामूली-से ग्रेजुएट को भला कौन अच्छी नौकरी देता है?' बाबा ने कहा।

करेक्ट, एक मामूली-सा ग्रेजुएट, जिसकी कोई औकात नहीं होती।

'हमारे पास किसी डोनेशन कॉलेज के लिए पैसे नहीं हैं, बाबा,' मैंने उन्हें याद दिलाया।

उन्होंने सिर हिला दिया। कुछ समय बाद वे फिर बोले, 'फिर से कोशिश करोगे?'

बाबा ने कोई बेतुका सुझाव नहीं दिया था, लेकिन उसकी टाइमिंग बहुत गलत थी।

एंट्रेंस एग्जाम ही मुझे खासी मुसीबत दे चुका था।

एक बार फिर कोशिश करने के विचार से ही मुझे तकलीफ होने लगी। 'बस करो, बाबा,' मैंने चीखते हुए कहा। 'यदि आपने जमीन का सेटलमेंट कर लिया होता तो आज हमारे पास एक प्राइवेट कॉलेज के लायक पैसा होता। लेकिन आपने ऐसा नहीं किया, इसलिए मुझे तो मुसीबतें उठानी ही पड़ेंगी।'

बाबा ने अपने माथे पर गर्म पानी की बोतल घुमाई।

वे सिरदर्द के साथ ही मेरे कारण भी तकलीफ में लग रहे थे। 'मेरे कमरे से चले जाओ,' उन्होंने कहा।

'आई एम सॉरी,' मैंने यंत्रवत् कह दिया।

'एग्जाम में फेल होना, अपने पिता पर चिल्लाना, तुम एकदम सही दिशा में जा रहे हो बेटा,' उन्होंने कहा।

उनकी आखें मुंदी हुई थीं।

'मैं कुछ न कुछ जरूर करूंगा। मैं आपको निराश नहीं करूंगा। मैं एक दिन जरूर अमीर बनूंगा,' मैंने कहा।

'अमीर बनना आसान नहीं है। उसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। लेकिन तुम तो मेहनत से जी चुराते हो,' उन्होंने कहा।

मैं उन्हें बताना चाहता था कि मैंने अपनी ओर से खासी मेहनत की थी। आप बिना मेहनत के पचास हजारवीं रैंक हासिल नहीं कर सकते, फिर चाहे उसका कोई भी क्यों मतलब न हो। मैं कहना चाहता था कि मैं भीतर से टूटा हुआ महसूस कर रहा हूं। मैं चाहता था कि वे इस बात को समझ पाएं कि मैं फूट–फूटकर रोना चाहता था और यदि वे मुझे अपने सीने से लगा लेते हैं तो इससे मुझे बहुत अच्छा लगेगा।

'चले जाओ। जिंदगी के ये बचे–खुचे दिन मुझे चैन से बिता लेने दो,' उन्होंने कहा।

मैं अपने कमरे में गया और चुपचाप बैठ गया। इतने सालों में मैंने कभी अपनी मां को मिस नहीं किया था।

लेकिन, एआईईईई रिजल्ट के इस दिन मैं चाहता था कि काश वे मेरे साथ होतीं। मैंने वे छह एक्स्ट्रा प्रॉब्लम्स ठीक न कर पाने के लिए खुद को बहुत कोसा। मैं मन ही मन एग्जाम के दिन को बार–बार दोहराता रहा, जैसे कि मेरा दिमाग समय में पीछे की ओर यात्रा कर सकता है, उसी दिन को फिर से दोहरा सकता है, और मैं वहां जाकर अपनी गलती सुधार सकता हूं। पछतावा – शायद, पछतावे की भावना इंसान के सबसे बड़े मैन्युफेक्चरिंग डिफेक्ट्स में से एक होगी।

हम पछतावा करते रहते हैं, चाहे उसकी कोई तुक न हो। मैं अपने बिस्तर में लेटा सोचता रहा।

आधी रात को मैं लिविंग रूम में आया और आरती को कॉल किया।

'अरे, तुम ठीक तो हो ना?' उसकी आवाज शांत थी।

उसे मेरे रिजल्ट के बारे में पता था। फिर भी उसने कॉल नहीं किया था। उसे पता था कि जब मैं उससे बात करने को तैयार होऊंगा, तभी उसे कॉल करूंगा।

आरती मुझे बहुत अच्छी तरह से समझती थी।

'हम बोट पर बात करेंगे,' मैंने कहा।

'कल सुबह साढ़े चार बजे अस्सी घाट पर,' उसने कहा।

फोन के बाद मैं सोने चला गया। मैं लेटा रहा, लेकिन नींद न आई। मैं बहुत देर तक करवटें बदलता रहा। जब तक मैं बाबा के साथ अच्छे–से बात नहीं कर लेता, मुझे चैन नहीं आने वाला था।

मैं उनके कमरे में गया। वे सो रहे थे। गर्म पानी की बोतल अब भी उनके सिर पर थी।

मैंने बोतल उठाकर एक तरफ कर दी। वे जाग गए।

'आई एम सॉरी, बाबा,' मैंने कहा।

उन्होंने कुछ नहीं कहा।

'आप जो कहेंगे, मैं वो ही करूंगा। यदि आप चाहते हैं तो मैं एक बार फिर कोशिश करूंगा। मैं इंजीनियर बनकर दिखाऊंगा, बाबा,' मैंने कहा।

उन्होंने मेरे सिर पर एक हाथ धर दिया, मानो मुझे आशीर्वाद दे रहे हों। अब मेरे लिए अपनी भावनाओं को थामकर रखना मुमकिन नहीं था। मैं फूट–फूटकर रो पड़ा।

'मैं बहुत मेहनत करूंगा,' मैंने कहा। आंसू मेरे गालों से होकर ढुलक रहे थे।

'गॉड ब्लेस यू। चलो, अब सो जाओ,' उन्होंने कहा।

मैं सुबह साढ़े चार बजे अस्सी घाट जा पहुंचा। मेरा नाविक दोस्त फूलचंद मुझे चप्पू थमाते हुए मुस्करा दिया। इतने सालों में उसने मुझसे कभी एक पैसा नहीं लिया था। मैं उसकी बोट एकाध घंटे के लिए ले जाता था और बदले में उसे चाय और बिस्किट खरीदकर दे दिया करता था। जबकि इतनी देर नाव चलाने के लिए फिरंगी पांच सौ रुपए दे सकते थे।

कभी–कभी मैं फिरंगियों से अंग्रेजी में बतियाने में उसकी मदद कर दिया करता था और वह मुझे दस फीसदी कमीशन दे देता था। हां, मैं इस तरह भी पैसा कमा सकता था। शायद, बहुत ज्यादा नहीं, लेकिन मैं इतना तो कमा ही सकता था कि अपनी रोजी–रोटी कमा सकूं। काश, बाबा यह सब समझ पाते।

'साढ़े पांच तक लौट आना,' फूलचंद ने कहा। 'मेरी एक बुकिंग है। जापानी टूरिस्ट्स।'

'मुझे आधे घंटे से ज्यादा समय नहीं लगेगा,' मैंने वादा किया।

उसने खीसें निपोर दीं। 'तुम लड़की के साथ जा रहे हो, शायद तुम्हें वक्त का पता ही न चले।'

'नहीं, ऐसा नहीं होगा।'

'तुम्हारी उसके साथ सेटिंग है?' फूलचंद ने बोट की रस्सी खोलते हुए कहा। छोटे शहरों में, लड़का और लड़की के आपसी रिश्तों में सभी की दिलचस्पी होती है।

'फूलचंद भाई, मैं आधे घंटे में लौट आऊंगा।' मैंने कहा और बोट पर सवार हो गया।

मेरे रूखे जवाब पर फूलचंद ने त्यौरियां चढ़ा लीं।

'वह स्कूल के दिनों से मेरी क्लासमेट है। मैं उसे आठ सालों से जानता हूं,' मैंने कहा।

वह मुस्करा दिया। सुबह के नीमउजाले में उसके पान के दाग लगे दांत चमक रहे थे।

'मैं जापानी टूरिस्टों से बातचीत कराने में तुम्हारी मदद करूंगा, हम दोनों मिलकर उनसे निपट लेंगे,' मैंने पतवार थामते हुए कहा।

आरती घाट से बीस मिनट आगे नाविकों और साधुओं की नजर से दूर मेरा इंतजार कर रही थी। वह धीमे–से नाव पर चढ़ी। मैं नाव को खेते हुए तट से दूर ले गया।

'चलो, उस तरफ चलते हैं,' उसने पश्चिम दिशा की ओर इशारा करते हुए कहा, जिधर अधिक शांति थी।

पूर्व दिशा में भीड़ भरे दशाश्वमेध घाट पर सुबह की आरती शुरू हो चुकी थी। माना जाता है कि दशाश्वमेध घाट वह जगह है, जहां ब्रह्मा ने दस अश्वमेध यज्ञ किए थे और वह वाराणसी में गंगा तट पर होने वाली सभी धार्मिक गतिविधियों का केंद्र है।

मैं जैसे–जैसे नाव खेता चला गया, घंटियों और मंत्रोच्चार की ध्वनियां पीछे छूटती चली गईं। जल्द ही हम केवल पानी में चल रहे चप्पुओं की ही आवाजें सुन पा रहे थे।

'लाइफ में ऐसा हो जाता है,' आरती ने कहा।

भोर की किरणों के कारण उसके चेहरे पर पीली–सी रंगत थी। वह उसके लाल–केशरिया दुप` से मैच कर रही थी।

मेरी बांहें थकने लगीं। मैंने नाव खेना बंद कर दिया और पतवारें एक तरफ रख दीं। हमारी नाव गंगा नदी के बीच में कहीं खड़ी थी। आरती उठी और मेरे पास आकर बैठ गई। उसके चलने के कारण नाव जरा डगमगाई। हमेशा की तरह, उसने मेरी थकी हुई हथेलियों को अपने हाथों में लिया और उन्हें सहलाने लगी। फिर उसने मेरी ठोढ़ी पकड़कर मेरा चेहरा अपनी तरफ कर लिया।

'मुझे डर लग रहा है, आरती,' मैंने धीमे–से कहा।

'क्यों?'

'मैं जिंदगी में कभी कुछ हासिल नहीं कर पाऊंगा,' मैंने कहा।

'बकवास मत करो,' उसने कहा। 'जो लोग एआईईईई में टॉप रैंक हासिल नहीं करते, क्या वे जिंदगी में कुछ भी नहीं कर पाते?'

'पता नहीं। मुझे लगता है जैसे... जैसे मैं हार गया हूं। मैंने बाबा को निराश किया है।'

'वे ठीक हैं ना?'

'वे चाहते हैं कि मैं एक बार फिर कोशिश करूं। वे मुझे किसी भी कीमत पर इंजीनियर बनाना चाहते हैं।'

'क्या तुम भी इंजीनियर बनना चाहते हो?' आरती ने पूछा।

'मेरे पिता आईएएस में नहीं है। मेरे दादा मंत्री नहीं थे। मैं एक मामूली–से परिवार से हूं। हम खुद से इस तरह के सवाल नहीं पूछते कि हम जीवन में क्या बनना चाहते हैं। हम अपनी रोजी–रोटी अच्छे–से कमाना चाहते हैं। इंजीनियरिंग से ऐसा हो सकता है,' मैंने जवाब दिया।

'कितनी दकियानूसी बातें हैं!'

'अपना पेट भरना कभी आउट ऑफ फैशन नहीं हो सकता, आरती,' मैंने कहा।

वह मुस्कराई और मेरी बांह पर अपना हाथ रख दिया। मैंने उसे बांहों में भर लिया। मेरा चेहरा उसके चेहरे के करीब था।

'क्या कर रहे हो?' आरती ने मुझे धकेलते हुए कहा।

'मैं .. मैं केवल...' 'ऐसा मत करो,' आरती ने कठोरता से कहा। 'तुम हमारी दोस्ती को बर्बाद कर दोगे।'
'मैं तुम्हें बहुत पसंद करता हूं,' मैंने कहा। मैं कहना चाहता था कि मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं, लेकिन मुझमें ऐसा कहने की हिम्मत नहीं थी।
'मैं भी तुम्हें पसंद करती हूं,' उसने कहा।
'तो तुम मुझे चूम क्यों नहीं लेती?' मैंने कहा।
'क्योंकि मैं ऐसा नहीं करना चाहती।' उसने मेरी ओर देखते हुए कहा। 'मुझे गलत मत समझो। तुम कई सालों से मेरे बेस्ट फ्रेंड हो। लेकिन मैं तुम्हें पहले भी कह चुकी हूं ..' वह चुप हो गई।
'क्या?'
'मैं तुम्हें उस तरह से नहीं देखती,' उसने अपनी बात पूरी की।
मैं उससे दूर हट गया।
'गोपाल, प्लीज मुझे समझने की कोशिश करो। तुम पहले ही डिस्टर्ब हो, इसलिए मैं तुम्हें...' 'इसलिए क्या, आरती? तुम मेरी फीलिंग्स को हर्ट नहीं करना चाहतीं? वेल, तुम ऐसा कर चुकी हो।'
मैंने घड़ी देखी। 4.50 हो चुके थे। मुझे नाव लौटानी थी। मैंने फिर से पतवारें उठा लीं। 'चलो तुम्हारे घर चलते हैं,' मैंने कहा। उसने हामी भर दी। घाट पहुंचने तक हम खामोश रहे। फूलचंद हमें देखकर मुस्करा दिया, लेकिन जब मैंने नजरें तरेरकर देखा तो उसकी मुस्कराहट गायब हो गई।
हम नाव से नीचे उतरे।
'तुम आज कुछ समय बाद घर आना चाहोगे?'
आरती ने कहा।
'मुझसे बातें मत करो,' मैंने कहा।
'तुम इडियट की तरह बिहेव कर रहे हो।'
'मैं इडियट ही हूं और तुम यह जानती हो। इसीलिए तो मैं एआईईईई क्लीयर नहीं कर पाया,' मैंने कहा और उसकी तरफ देखे बिना वहां से चला आया।

5

एआईईईई की ही तरह मैं जेईई भी क्लीयर नहीं कर पाया। राघव ने जरूर जेईई क्लीयर की और देश भर में 1123वीं रैंक बनाई। इससे वह वाराणसी में एक मिनी सेलेब्रिटी बन गया। अगले दिन स्थानीय अखबारों में उसके बारे में छपा था। वाराणसी के चार स्टूडेंट्स ने जेईई रैंक की थी, जिनमें से केवल राघव ही ऐसा था, जो वाराणसी में रहता भी था। बाकी के तीन कोटा में रहते थे।
'वे तीनों कोटा क्यों चले गए?' बाबा ने अखबार पढ़ते हुए कहा।
बाबा को अब मेरे नाकाम होने से कोई फर्क नहीं पड़ता था। मेरे द्वारा जेईई रैंक नहीं हासिल करने पर उन्होंने न के बराबर प्रतिक्रिया की।
'कोटा आईआईटी कोचिंग क्लासेस की राजधानी है।
हजारों स्टूडेंट्स वहां जाते हैं,' मैंने कहा।
हर साल एक हजार या दूसरे शब्दों में कहें तो कुल आईआईटी सिलेक्शंस में से एक तिहाई छात्रों के लिए पश्चिमी भारत का यह छोटा-सा शहर ही जिम्मेदार होता है।
'क्या?' बाबा ने कहा। 'ऐसा कैसे संभव है?'
मैंने कंधे उचका दिए। मैं अब एंट्रेंस एग्जाम्स के बारे में बात नहीं करना चाहता था। मुझे बारहवीं में 79 फीसदी मार्क्स मिले थे। मैं इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से बीएससी कर सकता था। पढ़ाई के लिए इलाहाबाद से वाराणसी तक नियमित रूप से 120 किलोमीटर सफर करना कठिन जरूर था, लेकिन मैं इलाहाबाद जाकर भी रह सकता था और सप्ताहांत में बाबा से मिलने आ सकता था।
'राघव कौन-सी आईआईटी जॉइन कर रहा है?'
'पता नहीं,' मैंने कहा। 'बाबा, क्या आप मुझे दो सौ रुपए दे सकते हैं। मुझे कॉलेज एडमिशन फॉर्म खरीदना है।'
बाबा ने मेरी तरफ इस तरह देखा, जैसे मैंने उनके कलेजे में खंजर घोंप दिया हो। 'तुम एआईईईई के लिए एक बार फिर कोशिश नहीं करोगे?' उन्होंने कहा।
'मैं इलाहाबाद यूनिवर्सिटी जॉइन करूंगा और वहां से एक बार फिर कोशिश करूंगा,' मैंने कहा।
'तुम दूसरा कोर्स करते समय तैयारी कैसे कर पाओगे?'
'मैं अपना एक साल बर्बाद नहीं कर सकता,' मैंने कहा और घर से बाहर चला गया।
मुझे राघव से मिलना था। मैंने उसे बधाई तक नहीं दी थी। यह सच है कि जेईई में उसके सिलेक्शन पर मुझे बहुत खुशी नहीं हुई थी। मुझे खुश होना चाहिए था, लेकिन मैं हुआ नहीं। लेकिन, आखिर हम दस साल से दोस्त थे। हमें अपने दोस्तों की खुशियों में शरीक होना चाहिए। बहरहाल, अब वह एक आईआईटीयन होने जा रहा था, जबकि मैं कुछ भी नहीं था। जाने क्यों मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा था। मैंने उसके दरवाजे की घंटी बजाते समय नकली मुस्कराहट का अभ्यास किया।
राघव ने दरवाजा खोला और सीधे मुझे गले से लगा लिया।
'हे, नाइस टु सी यू,' उसने कहा।
'कॉन्ग्रेट्स, बॉस,' मैंने कहा। मेरे होंठ फैल गए और मेरे दांतों को देखा जा सकता था।
'अब मैं कह सकता हूं कि मैं एक सेलेब्रिटी को जानता हूं।'
मैं उसके घर में चला आया। भेल द्वारा दिया गया एक सादा-सा तीन बेडरूम का अपार्टमेंट। डाइनिंग टेबल पर अखबार फैले थे, जिनमें उसके सिलेक्शन की खबरें थीं। राघव के पिता सोफे पर बैठे थे और उनके साथ उनके कुछ रिश्तेदार थे, जो उनसे मिलने आए थे।
वे उन्हें मुबारकबाद देने आए थे। आखिर आईआईटी रैंक बहुत बड़ी उपलब्धि होती है, माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने या स्पेस मिशन में शामिल होने के बराबर।
मिस्टर कश्यप मुझे देखकर दूर से मुस्कराए। शायद यह मेरी कल्पना ही रही होगी, लेकिन उनकी मुस्कराहट देखकर मुझे लगा कि ऐसी मुस्कान अपने से नीचे कद वाले लोगों को दी जाती है। मुझे कोई शक नहीं था कि अगर मुझे भी रैंक मिली होती तो वे खड़े हो जाते और मुझसे हाथ मिलाते। बहरहाल, फर्क तो उससे भी कुछ नहीं पड़ता। राघव और मैं उसके कमरे में चले गए। मैं एक कुर्सी पर बैठ गया और वह बिस्तर पर।
'तो, कैसा लग रहा है तुम्हें?' मैंने कहा। मैं जानना चाहता था कि उन स्टुपिड रैंक्स में से एक हासिल करने पर कैसा लगता है, जो आपको रातोंरात कोयले से हीरा बना देती हैं।
'अनबिलीवेबल,' राघव ने कहा। 'मैंने सोचा था कि मैं शायद एआईईईई क्लीयर कर पाऊंगा, लेकिन जेईई?
वॉव!'
'कौन-सी आईआईटी में जा रहे हो?' मैंने कहा।
'मैं आईटी-बीएचयू जॉइन करूंगा। मुझे अच्छी ब्रांच मिल जाएगी और वह भी वाराणसी में,' राघव ने कहा।
आईटी-बीएचयू यानी बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी का इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी वाराणसी का सबसे प्रतिष्ठित कॉलेज था। वह अपनी भर्ती प्रक्रिया जेईई के मार्फत संचालित करता था। लेकिन उसकी ब्रांड हैसियत आईआईटी के बराबर नहीं थी।
'बीएचयू क्यों?' मैंने कहा।
'मैं पार्ट टाइम जर्नलिज्म भी करना चाहता हूं। यहां के अखबारों में मेरे कॉन्टैक्ट्स हैं,' राघव ने कहा।
जब लोगों को कोई चीज तश्तरी में सजाकर पेश की जाती है तो वे उसकी कद्र नहीं करते। निश्चित ही, राघव के मन में लेखक बनने की इच्छा थी। कुछ अखबारों में उसके कुछ संपादक के नाम पत्र और लेख भी छपे थे। बहरहाल, मुझे उसकी बात बेतुकी लगी।
'तुम एक हॉबी के लिए आईआईटी छोड़ देना चाहते हो?' मैंने कहा।
'जर्नलिज्म मेरी हॉबी नहीं, पैशन है।'
'फिर तुम इंजीनियरिंग क्यों कर रहे हो?'
'डैड के लिए, और क्यों? मैंने उन्हें कहा है कि मैं बीएचयू इसलिए जॉइन कर रहा हूं, क्योंकि मुझे कंप्यूटर साइंस जैसी एक बेहतर ब्रांच मिल जाएगी। तुम उन्हें कुछ मत बताना।'
'राघव, तुम अब भी...' 'राघव!' बाहर से मिस्टर कश्यप के चिल्लाने की आवाज आई।
'सॉरी, मुझे जाना होगा,' राघव ने कहा। 'बाद में मिलते हैं। आरती को भी बुलाना। तुम्हारी मुझ पर एक पार्टी बकाया है।'
वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।
जब लोग कुछ हासिल कर लेते हैं तो वे सेल्फ ऑब्सेस्ड हो जाते हैं।
'जानना चाहते हो अब मैं क्या करने वाला हूं?' मैंने बेपरवाही के साथ कहा।
राघव रुक गया। 'ओह, सॉरी। हां, हां, बताओ ना,' उसने कहा। पता नहीं उसे मेरी बात सुनने में दिलचस्पी थी या वह इसे एक बोझ समझ रहा था।
'इलाहाबाद यूनिवर्सिटी। मैं वहां से एक बार फिर कोशिश करूंगा,' मैंने कहा।
'अच्छा ख्याल है,' राघव ने कहा। 'मुझे पूरा यकीन है कि तुम [illegible] एआईईईई तो जरूर ही।'

जब लोग जेईई क्लीयर कर लेते हैं तो वे 'कम से कम एआईईईई तो जरूर हो' जैसे जुमलों का इस्तेमाल करने लगते हैं।
मैं मुस्करा दिया। 'बाबा चाहते हैं कि मैं फिर से कोशिश करने के लिए पढ़ाई का एक साल भी ड्रॉप कर दूं।'
'हां, तुम ऐसा भी कर सकते हो,' राघव ने कहा।
उसके पिता एक बार फिर चिल्लाए।
'ठीक है, अब जाओ' मैंने कहा। 'अब मैं भी चलता हूं।'
'सी यू, बडी।' राघव ने मेरा कंधा थपथपाते हुए कहा।
'नहीं बाबा,' मैंने कहा। 'मैं कोटा नहीं जाऊंगा।'
बाबा ने मेरी जानकारी के बिना पूरा एक हफ्ता कोटा पर रिसर्च करते हुए बिताया था। 'बंसल एंड रेजोनेंस आर बेस्ट,' उन्होंने कहा।
'आपको कैसे पता?'
'मैं रिटायर्ड टीचर हूं। मैं पता लगा सकता हूं।'
'ग्रेट,' मैंने कहा।
'मैं तुम्हें कोटा भेजने को तैयार हूं। ट्यूशन के लिए सालाना तीस हजार रुपए लगेंगे। लिविंग एक्सपेंसेस में महीने के तकरीबन तीन हजार खर्च होंगे तो बारह महीने का कितना हुआ? तीस हजार प्लस छत्तीस हजार ..' बाबा ने फुसफुसाते हुए कहा।
'छियासठ हजार!' मैंने कहा। 'और एक साल का नुकसान भी। बाबा, आपको क्या लगता है, हम कहीं के राजा–रजवाड़े हैं?'
'मेरे पास चालीस हजार का एक फिक्स्ड डिपॉजिट है, जिसके बारे में मैंने तुम्हें नहीं बताया है,' बाबा ने कहा। 'पिछले तीन सालों में मैं जितनी बचत कर सकता था, उतनी की है। इतना पैसा शुरुआत के लिए काफी है। बाकी के लिए हम कुछ बंदोबस्त करेंगे।'
'तो हमारे पास जो थोड़ा–बहुत पैसा है, उसे हम ट्यूशन पर उड़ा दें? किसी दूरदराज के इलाके में? वैसे, कोटा है कहां?'
'राजस्थान में। दूर है, लेकिन यहां से कोटा के लिए सीधी ट्रेन है। बारह घंटे का सफर है।'
'बाबा, लेकिन मैं कॉलेज जॉइन क्यों नहीं कर सकता? पैसा देना है तो उसके लिए दीजिए। कम से कम मेरे पास डिग्री तो होगी।'
'एक बेकार–सी डिग्री हासिल करने से भला क्या तुक है? और बेहतर कोचिंग के बिना तुम फिर से कोशिश कैसे कर पाओगे? तुम कुछ ही मार्क्स से एक अच्छी रैंक हासिल करने से चूक गए हो। शायद कोटा तुम्हें वे एक्स्ट्रा मार्क्स हासिल करने में मदद करे।'
मैं कन्फ्यूज्ड था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं दूसरी बार भी कोशिश करूंगा, एक साल के लिए अपने शहर से इतनी दूर जाना तो दूर की बात है।
'तुम्हें अपनी ओर से पूरी कोशिश करनी ही होगी।
राघव को देखो। उसकी पूरी जिंदगी अब सेट हो गई है,' बाबा ने कहा।
'राघव को देखो', हां, यह नई दवाई अब वाराणसी के हर बच्चे के गले के नीचे उतारी जा रही थी। 'हम यह अफोर्ड नहीं कर सकते,' मैंने अपने विचारों को एकजुट करते हुए कहा। 'फिर यहां आपका ख्याल कौन रखेगा? इलाहाबाद यहां से पास है। मैं हर हफ्ते यहां आ सकता हूं। आप भी यहां आ सकते हैं ..' 'मैं मैनेज कर लूंगा। वैसे भी घर का ज्यादा काम तो मैं ही करता हूं ना?' बाबा ने कहा।
मैंने आरती के बारे में सोचा। निश्चित ही तौर पर उसने मुझे ना कह दिया था, लेकिन मैं जानता था कि वह मेरी कितनी फिक्र करती है। ऐसा एक भी दिन नहीं जाता था, जब हम आपस में बातें न करें। उसी ने मुझे सुझाया था कि मैं यहां के किसी कॉलेज में जाऊं और मुझे अपने मार्क्स के हिसाब से एक अच्छा कोर्स भी मिल गया था। अब मैं उसे कैसे बताऊंगा कि मैं कोटा जा रहा हूं?
निश्चित ही, मैं बाबा को वाराणसी में रुकने का यह कारण नहीं बता सकता था। 'मैं वादा करता हूं कि मैं अगली बार और ज्यादा मेहनत करूंगा,' मैंने कहा।
'तुम यहां घरेलू कामकाज ही करते रह जाओगे,' बाबा ने अचानक चिल्लाते हुए कहा। 'तुम कोटा जा रहे हो।'
'आपके पास चालीस हजार हैं। बाकी के पैसों का बंदोबस्त कैसे होगा? और हम सफर, किताबों, एंट्रेंस एग्जाम फीस जैसे खर्चों का भी बंदोबस्त कैसे करेंगे?'
मैंने कहा।
बाबा ने मुझे अपनी झुर्रियोंदार तर्जनी दिखाई। उस पर सोने की एक मोटी अंगूठी थी। 'मुझे अब इस बेकार अंगूठी की कोई जरूरत नहीं है,' उन्होंने कहा।
'हमारे पास तुम्हारी मां की भी कुछ ज्वेलरी है।'
'आप कोचिंग क्लासेस के लिए मां की ज्वेलरी बेच देना चाहते हैं?'
'मैंने यह सब तुम्हारी पत्नी के लिए बचा रखा था, लेकिन अगर तुम इंजीनियर बन गए तो तुम उसके लिए खुद ही यह सब खरीद सकते हो।'
'और अगर आपकी तबीयत खराब हो गई, तो क्या होगा, बाबा? हमें यह सब मेडिकल इमर्जेंसी के लिए बचाकर रखना चाहिए।'
'तुम इंजीनियरिंग कॉलेज जॉइन करोगे तो मेरी उम्र दस साल घट जाएगी,' बाबा ने हंसते हुए कहा। वे माहौल को थोड़ा हल्का बनाने की कोशिश कर रहे थे।
मैंने उनके चेहरे को देखा। उनका आगे का एक दांत गायब था, लेकिन उनकी हंसी ही मेरे लिए सब कुछ थी। मैंने कोटा के बारे में सोचा। लगता तो यही था कि कोटा की कोचिंग क्लासेस वाकई एंट्रेंस एग्जाम क्लीयर करने में स्टूडेंट्स की बहुत मदद करती हैं। फिर मैंने दूसरी बातों के बारे में सोचा – कोटा में रहने के लिए जरूरी पैसा, अनिश्चितता, और जाहिर है, आरती से दूरी। 'अपने बाप के लिए तुम इतना नहीं कर सकते?' उन्होंने कहा। 'संभव होता तो मैं भी तुम्हारे साथ कोटा चला जाता, लेकिन मेरे लिए इतना लंबा सफर तय करना कठिन है। फिर हमें अपने इस छोटे–से घर का रखरखाव भी करना होगा।'
'ठीक है, बाबा। यदि मैं कोटा जाऊंगा तो अकेले ही जाऊंगा,' मैंने कहा।
'तुम्हारी मां भी यही चाहती थी कि तुम इंजीनियर बनो।'
मैंने दीवार पर मां की तस्वीर की ओर देखा। वे खुश, सुंदर और युवा नजर आ रही थीं।
'अपने पिता का ख्याल रखना,' मानो वे मुझसे कह रही हों।
'तुम कोटा जाओगे ना?' बाबा ने कहा।
'यदि इससे आपको खुशी मिलती है, तो हां।'
'मेरा बेटा!' बाबा ने मुझे गले लगाया – एआईईईई के नतीजे आने के बाद पहली बार।
'काले वाले दिखाना,' आरती ने दुकानदार को बारह क्लॉथ हैंगर्स का एक सेट दिखाते हुए कहा।
हम नादेशर रोड पर घरेलू सामान की एक दुकान में आए थे, ताकि उन चीजों की खरीदारी की जा सके, जिनकी मुझे कोटा में जरूरत पड़ने वाली थी।
'मैं खरीदारी में तुम्हारी मदद कर रही हूं, इसका यह मतलब नहीं कि तुम्हें वाराणसी से जाता देखकर मुझे खुशी हो रही है,' आरती ने कहा।
'अगर तुम कह दो तो मैं अपना टिकट रद्द करवा दूंगा।'
उसने मेरे गाल पर अपनी हथेली रख दी। 'मुझे बहुत बुरा लग रहा है कि मेरा सबसे अच्छा दोस्त जा रहा है, लेकिन तुम्हारे लिए यही सही होगा।'
उसने हैंगर्स ले लिए। उनकी कीमत पचास रुपया प्रति सेट थी। 'अंकल, मैं टॉवेल्स, सोप डिशेस और ढेरों दूसरी चीजें ले रही हूं। आपको अच्छा डिस्काउंट देना चाहिए।'
दुकानदार ने मुंह बनाया, लेकिन उसने इसे अनदेखा कर दिया।
'थैंक यू फॉर कमिंग। मुझे तो समझ ही नहीं आता कि क्या लेना चाहिए और क्या नहीं,' मैंने उससे कहा।
'तुमने खाना पकाने के बर्तन लिए? भूल गए ना?'
'मैं वहां खाना नहीं पकाऊंगा। टिफिन बुलवा लूंगा।'
आरती ने मेरी बात अनसुनी कर दी। वह बर्तनों वाले सेक्शन की ओर गई और स्टील का एक बड़ा–सा बॉउल उठा लिया।
'इमर्जेंसी के लिए,' आरती ने कहा। 'यदि मैं तुम्हारे साथ कोटा जाती तो तुम्हें रोज अपने हाथ से खाना पकाकर खिलाती।'
उसने अपने गोरे हाथों में चमकदार बर्तन थाम रखा था। मेरे जेहन में यह तस्वीर कौंध गई कि वह मेरे किचन में है और खाना पका रही है। आखिर आरती इस तरह की बातें क्यों करती है? अब मैं उससे क्या कहूं? 'मैं अच्छे–से मैनेज कर लूंगा,' मैंने कहा।
दुकानदार ने बिल बनाया। आरती ने मेरी ओर देखा।
वह जब भी मुझे देखती थी, मैं मंत्रमुग्ध रह जाता था।
वह दिन–ब–दिन और खूबसूरत होती जा रही थी।
एक छोटी–सी लड़की, जो अपनी मां के साथ शॉप पर आई थी, आरती के पास आई। 'क्या आप टीवी पर आती हैं?'
आरती ने अपना सिर हिलाया और मुस्करा दी। फिर वह दुकानदार की ओर मुड़ी। 'अंकल, ट्वेंटी परसेंट डिस्काउंट।' आरती अपने लुक्स को लेकर बहुत सचेत नहीं थी। वह बार–बार आईने में अपनी शक्ल नहीं देखा करती थी, न कभी मेकअप करती थी और यहां तक कि उसके बाल भी उसके चेहरे पर बिखरे रहते थे। लेकिन इससे वह और आकर्षक लगती थी।
'अब चलें?' उसने कहा।
'एक्चुअली।'
'क्या हुआ?'

'तुम जाते–जाते ऐसी बातें कह जाती हो कि अगर मैं भी तुम्हारे साथ कोटा चलती।'

'मैं आ सकती हूं। मैं डैड को कह दूंगी कि मैं भी एक साल रिपीट करना चाहती हूं। यू नेवर नो।' उसने आंख मारते हुए कहा।

मैंने उसकी ओर देखा। मैं उसकी इस बात मे गंभीरता की एक झलक तलाश रहा था। क्या ऐसा मुमकिन होगा?

'रियली?' मैंने उसकी बात पर लगभग भरोसा करते हुए कहा।

'मैं मजाक कर रही हूं, स्टुपिड। मैंने तुम्हें बताया था ना। मैंने अग्रसेन कॉलेज में साइकोलॉजी ऑनर्स के लिए एनरोल किया है।'

'मैंने सोचा कि..' 'तुम इतने बुद्धू क्यों हो?' वह यकायक ठहाका लगाकर हंस पड़ी।

'क्या कहा...?' मैंने कहा। उसने मेरे गाल खींचे।

'ओह,' मैंने कहा और खुद को संभाला।

जाहिर है, वह किसी सूरत में कोटा नहीं आ सकती थी। मैं कोई बुद्धू इंसान नहीं हूं। मैं चीजों को समझता हूं। लेकिन, आरती मेरे सोचने–समझने की ताकत को कमजोर बना देती थी। जब मैं उसके साथ होता था तो कुछ सोच नहीं पाता था।

मैंने सामान उठाया। मैंने देखा कि वह दुकानदार को पैसे दे रही है।

'रुको,' मैंने कहा। 'पैसे मैं दूंगा।'

'रहने दो। चलो, चलते हैं,' उसने कहा। उसने मेरी कोहनी थामी और मुझे दुकान से बाहर ले आई।

'कितना हुआ?' मैंने अपना वॉलेट संभालते हुए कहा।

उसने मेरा वॉलेट लिया और मेरे शर्ट की पॉकेट में खोंस दिया। फिर उसने मेरे होंठों पर एक अंगुली रख दी।

आखिर लड़कियां ऐसे कन्फ्यूज करने वाले सिग्नल्स क्यों देती हैं? उस दिन बोट पर उसने मुझे दोटूक जवाब दे दिया था, इसके बावजूद वह ये बोरिंग क्लॉथ हैंगर्स खरीदने के लिए मेरे साथ दुकान तक आई और मुझे पे भी नहीं करने दिया। वह दिन में तीन बार मुझे फोन कर पूछती है कि मैंने खाना खा लिया है या नहीं? क्या वह वाकई मेरी फिक्र करती है?

'तुम सिगरा पर नए डोमिनो ट्राय करना चाहोगे?' उसने कहा।

'घाटों पर चलें?' मैंने कहा।

'घाटों पर?' उसने कहा। वह चौंकी हुई थी।

'वाराणसी से जाने से पहले मैं उसकी मौजूदगी के अहसास को पूरी तरह जी लेना चाहता हूं।'

हम ललिता घाट की सीढ़ियों की ओर बढ़ चले।

दाईं ओर भीड़ भरे दशाश्वमेध की तुलना में यह घाट ज्यादा शांत रहता है। हम एक–दूसरे के आमने–सामने बैठ गए और सांझ के सूरज के साथ गंगा को रंग बदलते देखते रहे। हमारे बाईं ओर मणिकर्णिका घाट पर कभी न बुझने वाली चिताओं की लपटें नजर आ रही थीं। इस घाट का नाम शिव के कर्ण–कुंडलों के नाम पर रखा गया है। कहते हैं एक बार नृत्य के दौरान शिव के कर्ण–कुंडल यहां गिर गए थे। इस स्थान को शवदाह के लिए सबसे पवित्र माना जाता है।

उसने मेरी कोहनी को धीमे–से थामा। मैंने आजू–बाजू देखा। कुछ टूरिस्टों और साधुओं के अलावा यहां कुछ स्थानीय लोग भी थे। मैंने अपनी कोहनी छुड़ा ली।

'क्या हुआ?' उसने कहा।

'ऐसा मत करो। यह ठीक नहीं है। खासतौर पर तुम्हारे लिए।'

'क्यों?'

'क्योंकि तुम लड़की हो।'

उसने मेरी कोहनी पर चपत लगाते हुए कहा, 'तो क्या हुआ?'

'लोग बातें करते हैं। वे उन लड़कियों के बारे में अच्छी बातें नहीं करते, जो घाटों पर लड़कों की कोहनियां थामकर बैठी रहती हैं।'

'हम केवल बहुत अच्छे दोस्त हैं,' उसने कहा।

मुझे इस वाक्य से नफरत थी। मैं उसे बताना चाहता था कि उसकी जिंदगी में मेरी क्या जगह है, हालांकि मैं हमारे रिश्ते में कड़वाहट भी नहीं घोलना चाहता था। 'लेकिन अब मैं जा रहा हूं,' मैंने कहा।

'तो? हम टच में रहेंगे। एक–दूसरे से बात करेंगे।

हम नेट पर चैट भी कर सकते हैं। कोटा में सायबर कैफे हैं, है ना?'

मैंने सिर हिला दिया।

'ऐसे उखड़े–उखड़े मत नजर आओ,' उसने कहा।

हमने दूर मंदिरों की घंटियां बजते सुनीं। शाम की आरती शुरू होने वाली थी।

'तुम्हारी प्रॉब्लम क्या है?' मैंने कहा।

'कौन–सी प्रॉब्लम?'

'हमारे बारे में। दोस्ती से आगे हमारे रिश्ते के बारे में?'

'प्लीज, गोपाल। फिर नहीं।'

मैं चुप हो गया। हम दूर से शाम की आरती देखते रहे। दर्जनभर पुजारी बड़ी–बड़ी दीपबत्तियां लिए एक सुर में इस तरह गा रहे थे, जैसे गायक पृष्ठभूमि में गुनगुनाते हैं। पुजारियों के आसपास सैकड़ों टूरिस्ट थे।

वाराणसी के घाटों की आरती को आप चाहे जितनी बार देख लें, वे हमेशा आपको सम्मोहित कर लेती है, मेरे पास बैठी आरती की तरह। उसने मोरपंखिया सलवार–कमीज और मछली के आकार की चांदी की ईयररिंग्स पहनी थीं।

'मैं उस तरह से महसूस नहीं करती, गोपाल,' उसने कहा।

'मेरे बारे में?'

'किसी के भी बारे में। और मुझे हम दोनों के बीच का यह रिश्ता अच्छा लगता है। क्या तुम्हें नहीं अच्छा लगता?'

'मुझे भी अच्छा लगता है। लेकिन अब मैं जा रहा हूं। अगर हम कोई कमिटमेंट करते तो क्या यह अच्छा नहीं होता?'

'कमिटमेंट? गोपाल, अभी हमारी उम्र ही क्या है!'

वह हंस पड़ी। फिर वह उठ खड़ी हुई। 'चलो, तुम्हारी यात्रा शुभ रहे, इसके लिए नदी में दीये बहाते हैं।'

बात बदलने में लड़कियों का कोई सानी नहीं है।

हम नदी की ओर चले गए। उसने पांच रुपए में छह जलते हुए दीयों का एक सेट खरीदा। उसने एक दीया मेरी ओर बढ़ाया। फिर उसने एक दीया नदी में बहा दिया। मेरा हाथ थामे हुए उसने कहा, 'चलो तुम्हारी कामयाबी के लिए साथ–साथ प्रार्थना करते हैं।'

'जो तुम चाहते हो, कोटा में वह तुम्हें मिले,' उसने आंखें बंद करते हुए कहा।

मैंने उसकी ओर देखा। जो मैं वास्तव में चाहता था, वह कोटा में नहीं था, उसे तो मैं यहां वाराणसी में अपने पीछे छोड़े जा रहा था...

कोटा

6

कोटा पहुंचने के लिए मुझे खचाखच भरी द्वारका एक्सप्रेस में 23 घंटे सफर करना पड़ा।

मैंने विनीत को ईमेल किया था। विनीत वाराणसी का लड़का था, जिसने पिछला साल कोटा में बिताया था।

मैंने कोचिंग क्लासेस के बारे में जानकारी हासिल की।

बंसल एंड रेजोनेंस सबसे जानी–मानी कोचिंग क्लास थी। बहरहाल, वे स्टूडेंट्स की स्क्रीनिंग खुद अपने टेस्ट से करते थे। यदि मैं बंसल एंड रेजोनेंस में दाखिल होने में कामयाब नहीं हो पाता तो कोटा में उससे कमतर और अनेक कोचिंग क्लासेस थीं, जिनमें मेरे जैसे लूजर्स पढ़ाई कर सकते थे।

बहरहाल, कोचिंग क्लास खोजने से पहले मुझे रहने की जगह का बंदोबस्त करना था। विनीत ने मुझे पेइंग गेस्ट सुविधा वाले कुछ घरों के बारे में बताया था। मैंने रेलवे स्टेशन से एक ऑटो पकड़ा और कहा, 'बंसल क्लासेस के पास महावीर नगर में गायत्री सोसायटी बिल्डिंग चलो।'

ऑटो कोटा की धूलभरी सड़कों पर दौड़ता रहा। वह भारत के किसी भी अन्य छोटे शहर जैसा लग रहा था, जहां बहुत ट्रैफिक और प्रदूषण होता है और टेलीकॉम, अंडरवियर और कोचिंग क्लासेस के जरूरत से ज्यादा होर्डिंग्स होते हैं। मैं सोचने लगा कि आखिर इस जगह में ऐसा क्या खास था। आखिर यह शहर दुनिया की सबसे प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा पास करने में हजारों विद्यार्थियों की कैसे मदद कर पाता है?

'आईआईटी या मेडिकल?' ऑटो ड्राइवर ने पूछा।

उसके बाल सफेद थे और उसके दांतों के रंग से मेल खाते थे।

मैं समझ गया कि कोटा में क्या खास था। यहां के सभी लोगों को एंट्रेंस एग्जाम्स के बारे में जानकारी होती है।

'आईआईटी,' मैंने कहा।

'बंसल बेस्ट है। लेकिन उनकी एंट्रेंस एग्जाम अगले हफ्ते शेड्यूल्ड है।'

'तुम्हें यह सब पता है?' मैं ड्राइवर के नॉलेज से हैरान था।

वह हंस पड़ा। उसने पीछे मुड़ते हुए कहा, 'मेरी पूरी फैमिली एजुकेशन बिजनेस में है। मेरी वाइफ टिफिन बिजनेस चलाती है। तुम्हें टिफिन की जरूरत है?'

मैंने सिर हिला दिया।

'मेरा नाम शंकर है। मैं अलवर से हूं,' उसने कहा।

उसने ग्रीज में सना अपना हाथ आगे बढ़ाया।

मैंने उससे जरा–सा हाथ मिलाया। 'मैं गोपाल हूं, वाराणसी से।'

उसने मुझे टिफिन सर्विस के लिए एक बिजनेस कार्ड दिया। दिन में दो बार के खाने के लिए पंद्रह सौ रुपया प्रतिमाह।

'आपके खान–पान की चिंता हमें करने दीजिए। आप केवल पढ़ाई कीजिए, एग्जाम बहुत कठिन है।'

'कौन–सा एग्जाम?' मैंने कहा।

'आईआईटी के लिए जेईई। क्या गोपाल भाई, हम इतने अनएजुकेटेड भी नहीं हैं।'

हम गायत्री सोसायटी कंपाउंड पहुंचे। एक जंग लगा लोहे का दरवाजा अपार्टमेंट्स के जर्जर ब्लॉक की पहरेदारी कर रहा था। सफाई करने के मकसद से एक स्वीपर अपनी विशालकाय झाडू की मदद से हवा में धूल का गुबार उड़ा रहा था। मैं बिल्डिंग के एंट्रेंस पर बनी छोटी–सी गार्ड पोस्ट पर गया। भीतर एक वॉचमैन बैठा था।

'किससे मिलना है?' वॉचमैन ने कहा।

'मुझे एक कमरा किराये से चाहिए,' मैंने कहा।

वॉचमैन ने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा। फिर उसने मेरे खचाखच भरे फटे–पुराने दो सूटकेस देखे। एक में कपड़े भरे थे और दूसरे में वे किताबें, जो मुझे जिंदगी में कोई भी मुकाम दिला पाने में नाकाम रही थीं। मेरे कंधे पर लटके झोले में वह सामान था, जो आरती ने मुझे खरीदकर दिया था। मैं उसे मिस कर रहा था। मैं सोच रहा था कि क्या मुझे यहां कोई एसटीडी बूथ मिलेगा, जहां जाकर मैं उसे फोन लगा सकूं।

'आईआईटी या मेडिकल?' वॉचमैन ने खैनी रगड़ते हुए कहा। कोटा के लोग तब तक बाहरी लोगों को अपने यहां नहीं रखते, जब तक वे यह नहीं जान लेते कि वे यहां क्या करने आए हैं।

'आईआईटी,' मैंने कहा। मैं चाह रहा था कि वह अपने लिए निकोटिन का बंदोबस्त करने के बजाय मुझे थोड़ी और तवज्जो देगा।

'फर्स्ट टाइम है या रिपीट कर रहे हो?' वॉचमैन ने अगला सवाल दागा। वह अब भी मेरी ओर नहीं देख रहा था।

'क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?' मैंने कहा। अब मैं खीझ रहा था।

'हां, फर्क पड़ता है,' उसने कहा और अपने मुंह में खैनी उड़ेल दी। 'यदि तुम्हारा फर्स्ट टाइम है तो तुम एक स्कूल भी जॉइन करोगे और अधिकतर समय घर से बाहर रहोगे। लेकिन रिपीटर्स केवल कोचिंग क्लासेस के लिए बाहर जाते हैं। उनमें से कई तो दिनभर सोते रहते हैं। कुछ मकान मालिकों को यह पसंद नहीं है।

इसलिए मुझे सही–सही बताओगे तो मैं तुम्हें सही जगह दिखा सकता हूं।'

'रिपीटर,' मैंने कहा। पता नहीं क्यों यह कहते हुए मेरी नजरें झुक गईं। मेरा ख्याल है कि जब आप किसी एंट्रेंस एग्जाम में फेल हो जाते हैं तो खैनी चबाने वाले वॉचमैन के सामने भी खुद को छोटा महसूस करने लगते हैं।

'हे भगवान, एक और रिपीटर,' वॉचमैन ने कहा।

'कोई बात नहीं, मैं कोशिश करूंगा। पहले मेरी फीस तय कर लेते हैं।'

'क्या?' मैंने कहा।

'मैं महीने भर के किराये का आधा लेता हूं। तुम्हारा बजट क्या है?'

'दो हजार रुपया महीना।'

'बस इतना ही?' वॉचमैन ने कहा। 'चार हजार तक का बजट बनाओ। मैं तुम्हें एक बढ़िया शेयर्ड एयर कंडीशंड रूम दिला दूंगा।'

'मैं इतना खर्च अफोर्ड नहीं कर सकता,' मैंने कहा।

वॉचमैन उपहासपूर्ण तरीके से मुस्कराया, जैसे कि किसी ने किसी पांच सितारा बार में देशी ठर्रा मांग लिया हो।

'क्या?' मैंने कहा। मैं सोच रहा था कि क्या मुझे कोटा में अपनी पहली रात सड़क पर बितानी होगी।

'आ जाओ,' उसने कहा। उसने दरवाजा खोला और मेरे सूटकेस अपने केबिन में रखवा लिए। वह पहले अपार्टमेंट ब्लॉक की सीढ़ियां चढ़कर ऊपर चला गया।

'दूसरे लड़कों के साथ शेयर करोगे? एक रूम है,' वॉचमैन ने कहा।

'कर सकता हूं,' मैंने कहा, 'लेकिन मैं पढ़ाई कैसे करूंगा? मुझे प्राइवेट कमरा चाहिए, चाहे छोटा ही सही।'

सवाल पढ़ाई का नहीं था, मैं अकेला रहना चाहता था।

'ओके, फिफ्थ फ्लोर पर चलो,' वॉचमैन ने कहा।

हम तीन मंजिल और चढ़े। थकान के कारण मैं हांफने लगा। बेहद गर्मी की वजह से भी दिक्कत हो रही थी। 'कोटा बहुत गर्म शहर है, जल्द से जल्द इस मौसम के आदी हो जाओ,' वॉचमैन ने कहा। 'बाहर तो गर्मी के मारे जान ही निकल जाती है। इसीलिए यह घर में घुसकर रहने और पढ़ाई करने के लिए एक अच्छी जगह है।'

हम चौथी मंजिल पर पहुंचे। मैं अब भी हांफ रहा था। लेकिन वॉचमैन लगातार बोले चला जा रहा था।

'तो तुम वाकई पढ़ाई करना चाहते हो या बस यूं ही...' वह कहते–कहते रुक गया।

'बस यूं ही क्या?' मैंने कहा।

'टाइमपास। कई स्टूडेंट्स यहां इसलिए आते हैं, क्योंकि उनके पैरेंट्स उन्हें यहां भेज देते हैं। वे जानते हैं कि वे पास नहीं हो पाएंगे। लेकिन यहां आने के कारण वे कम से कम एक साल तक अपने पैरेंट्स की झिड़कियों से तो मुक्ति पा जाते हैं,' उसने कहा।

'मैं पास होना चाहता हूं और मैं पास होकर ही रहूंगा,' मैंने कहा, उससे ज्यादा अपने आप से।

'गुड। लेकिन यदि तुम्हें बीयर या सिगरेट जैसी चीजों की जरूरत हो तो मुझे बताना। इस हाउसिंग सोसायटी में इस सब की इजाजत नहीं है।'

'तो?'

'जब तक बिरजू तुम्हारा दोस्त है, तुम्हें फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं है।' उसने मुझे आंख मारते हुए कहा।

हमने पांचवी मंजिल पर मौजूद फ्लैट की घंटी बजाई। एक बुजुर्ग महिला ने दरवाजा खोला।

'स्टूडेंट,' वॉचमैन ने कहा।

महिला ने हमें भीतर आने दिया। कमरा दवाइयों और नमी की गंध से भरा था। वॉचमैन ने मुझे वह कमरा दिखाया, जो किराये पर देना था। महिला ने एक स्टोररूम को स्टडी और बेडरूम में कनवर्ट कर दिया था। कमरा इतना छोटा था कि उसमें हम तीन लोग मुश्किल से ही खड़े हो पा रहे थे।

'पढ़ाई के लिए यह परफेक्ट है,' वॉचमैन ने कहा, जिसने शायद अपने जीवन में एक दिन भी पढ़ाई नहीं की होगी। 'यह कमरा ले लो, यह तुम्हारे बजट में भी है।'

मैंने सिर हिला दिया। कमरे में खिड़कियां नहीं थीं।

बुजुर्ग महिला या तो बहरी थी या बदमिजाज, या शायद दोनों ही। पूरे समय उसका मुह बना रहा। मैं यहा नहीं रहना चाहता था। आखिर मैं वाराणसी में क्यों नही पढ़ाई कर सकता था? आखिर इस जगह में ऐसा क्या खास था? मैं जल्द से जल्द कोटा से चले जाना चाहता था।

मैं फ्लैट से बाहर चला आया। वॉचमैन दौड़ा-दौड़ा मेरे पीछे आया।

'यदि तुम ऐसे ही नखरे दिखाते रहोगे तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।'

'तो मैं वाराणसी लौट जाऊंगा,' मैंने कहा।

मैंने सोचा कि यदि मैंने छह और मल्टीपल-चॉइस क्वेश्चस के जवाब दे दिए होते तो मेरी जिंदगी कितनी अलग होती। मैंने राघव के बारे में सोचा, जो शायद इस वक्त बीएचयू कैम्पस में अपना ओरिएंटेशन अटेंड कर रहा होगा। मैंने आरती और हमारी दिली बातचीतों के बारे में सोचा। मैंने बाबा की खराब सेहत और इस कूड़ागाह में मुझे झोंक देने की उनकी दृढ़ इच्छा के बारे में सोचा। मेरा गला रुंध गया। मैं सीढ़ियां उतरने लगा।

'या अपना बजट बढ़ाओ,' वॉचमैन ने मेरे पीछे आते हुए कहा।

'मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे खाने और कोचिंग क्लासेस के लिए भी पैसा बचाना है,' मैंने कहा।

अब हम ग्राउंड फ्लोर पर आन पहुंचे थे। 'पहली बार घर से बाहर निकले हो?' वॉचमैन ने कहा, 'अपनी मा को याद कर रहे हो?'

'वे अब इस दुनिया में नहीं हैं,' मैंने कहा।

'उनकी मौत हाल ही में हुई है?' वॉचमैन ने पूछा।

कुछ लोगों को अजनबियों से दुनियाभर के सवाल पूछना बिल्कुल सामान्य लगता है।

'उनकी मौत चौदह साल पहले हो गई थी,' मैंने कहा।

मैं गार्ड की पोस्ट पर आया और अपने बैग्स उठा लिए। 'थैंक यू, बिरजू,' मैंने कहा।

'अब तुम कहां जाओगे? कोई शेयर्ड रूम ले लो,' उसने अनुरोध करते हुए कहा।

'अभी तो मैं किसी सस्ती-सी होटल में बसेरा बनाऊंगा। मुझे अकेले रहने की आदत है। मैं जल्द ही कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगा।'

बिरजू ने मुझसे सूटकेस लिए और उन्हें नीचे रख दिया। 'मेरे पास एक अच्छा कमरा है,' उसने कहा, 'तुमने जैसा कमरा देखा है, उससे दोगुना बड़ा। उसमें खिड़कियां भी हैं और एक बड़ा पंखा है। एक रिटायर्ड दंपती वहां रहते हैं। वह तुम्हारे बजट में होगा...' 'फिर तुमने वह मुझे पहले क्यों नहीं दिखाया?'

'उसके साथ एक प्रॉब्लम है।'

'क्या?'

'उस घर में किसी की मौत हुई थी।'

'कौन?' मैंने कहा। मेरे लिए यह कोई बड़ी बात नहीं थी। मैं वाराणसी से था, जहां पूरी दुनिया अपने आखिरी दिन बिताने के लिए आती है।

'वहां किराये से रहने वाला एक स्टूडेंट। वह पास नहीं हो सका तो उसने आत्महत्या कर ली। यह दो साल पुरानी घटना है, लेकिन वह कमरा तभी से खाली पड़ा है।'

मैंने कुछ नहीं कहा।

'अब समझे, मैंने तुम्हें पहले उसके बारे में क्यों नहीं बताया था,' बिरजू ने कहा।

'मैं वह कमरा लूंगा,' मैंने कहा।

'वाकई?'

'मैंने तमाम लाशों को जलते और नदी में तैरते देखा है। यदि किसी लूजर ने फांसी लगा ली तो इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।'

वॉचमैन ने मेरे सूटकेस उठा लिए। वह तीसरे फ्लोर पर अगले फ्लैट में चला गया। वहां एक दंपती रहते थे, जिनकी उम्र साठ पार कर चुकी थी। उनका घर चकाचक साफ रहता था। टु-लेट रूम में एक बैड, टेबल, कबर्ड और पंखा था।

'पंद्रह सौ,' मैंने कहा। वॉचमैन ने मुझे डर्टी लुक दी।

बुजुर्ग दंपती ने एक-दूसरे की ओर देखा।

'मुझे पता है यहां क्या हुआ था और मुझे उससे कोई फर्क नहीं पड़ता,' मैंने कहा।

बुजुर्ग व्यक्ति ने सिर हिलाया। 'मैं आरएल सोनी हूं, मैं पीडब्ल्यूडी में काम करता था।' उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

मैंने सख्ती के साथ उनसे हाथ मिलाया। 'मैं गोपाल हूं, आईआईटी रिपीटर। और इस बार मेरा पास होने का इरादा है,' मैंने कहा।

7

मैंने ब्रोशर को बिस्तर पर फेंका और अपने जूते और जुराबें निकाल लिए। मैंने पूरा दिन अलग-अलग कोचिंग स्कूल्स के चक्कर काटते हुए बिताया था। दोपहर के तीन बजे थे और ऐसा लग रहा था जैसे मेरे कमरे में बस आग ही लगने वाली हो।

मिस्टर सोनी ने धीमे-से मेरे कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी। 'तुम्हारा लंच,' उन्होंने कहा और मेरी स्टडी टेबल पर टिफिन रख दिया।

मैंने कृतज्ञता में सिर हिलाया। गर्मी इतनी थी कि खुशी-खुशी अभिवादन करने का जी न हुआ। मैंने अपने रहने और खाने का बंदोबस्त कर लिया था।

बहरहाल, कोटा में मेरी सबसे बड़ी चुनौती, आरती के ख्यालों से जूझने के अलावा, यह थी कि मैं किसी अच्छे स्टडी प्रोग्राम में एनरोल करूं। मेरे पिछले तीन दिन हर कोचिंग स्कूल के चक्कर काटते हुए ही बीते थे। मैंने उन कोचिंग स्कूल्स के इन बुलंद दावों को बर्दाश्त किया कि वे किसी भी उल्लू के पट्ठे को आईआईटीयन बना सकते हैं। मैंने उनके बेहद लचीले (और निश्चित ही बेहद महंगे) फीस स्ट्रक्चर पर नजरें दौड़ाईं। बंसल, रेजोनेंस और कैरियर पाथ हर किसी की टॉप चॉइस लगते थे। इन सभी के अपने खुद के कठिन एंट्रेंस एग्जाम्स थे। वास्तव में अब कोटा में ऐसी छोटी कोचिंग दुकानें भी थीं, जो इन टॉप कोचिंग क्लासेस में दाखिल होने में आपकी मदद कर सकती थीं और वे टॉप कोचिंग क्लासेस किसी इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिल होने में आपकी मदद करती थीं। एक बार वहां पहुंच जाने के बाद आप इंजीनियर बनने के लिए जी तोड़ पढ़ाई करते हैं। निश्चित ही बहुतेरे इंजीनियर एमबीए भी करना चाहते हैं। लिहाजा, कोचिंग क्लास का यही दौर एक बार फिर शुरू हो सकता है। मेरे जैसे हर मामूली भारतीय छात्र को एक अच्छा जीवन बिताने के लिए टेस्ट्स, क्लासेस, चयन और तैयारी के इस पेचीदे भंवर से होकर गुजरना ही पड़ता है। नहीं तो मुझे वॉचमैन बिरजू जैसा कोई जॉब करने या इससे भी सरल शब्दों में कहूं तो मुझसे पहले मेरे कमरे में रहने वाले मनोज दत्त की तरह खुद को फांसी के फंदे पर लटका देने के लिए तैयार रहना होगा।

मैंने पंखा चलाया। यह वही पंखा था, जिस पर लटककर मनोज जीवन के एंट्रेंस एग्जाम से बाहर हो गया था। पंखा गर्म हवा को ही फिर से कमरे में फेंक रहा था।

'घर पर फोन लगाया था?' मिस्टर सोनी ने पूछा।

'हां,' मैंने कहा। मिस्टर सोनी मुझसे दिन में कम से कम दो बार यह सवाल पूछते थे। मुझे लगता है मनोज दत्त अपने घर अक्सर फोन नहीं लगाता होगा और शायद यही उसके अकेलेपन और अवसाद का कारण रहा होगा।

'उन्हें अपने बारे में बताते रहना, ठीक है? तुम्हें अपने पैरेंट्स से ज्यादा कोई प्यार नहीं कर सकता,' मिस्टर सोनी ने कमरे से बाहर निकलते हुए कहा।

मैंने दरवाजा बंद कर दिया और अपनी कमीज निकाल ली। मुझे नाव चलाए दस दिन हो गए थे। मुझे लग रहा था जैसे मेरी बांहें ढीली पड़ गई हों। मैं कसरत करना चाहता था, लेकिन पहले मुझे ढेरों ब्रोशर्स पढ़ डालने थे।

मैंने वास्तव में दिन में दो बार बाबा को फोन लगाया था। वे ठीक ही लग रहे थे। मैंने उन्हें बताया था कि मैंने अगले साल के लिए तैयारी शुरू कर दी है, जबकि मैंने अभी तक किताब भी खोलकर नहीं देखी थी। मुझे इसकी फिक्र भी नहीं थी। मैं जिस भी कोचिंग क्लास को जॉइन करता, वह मुझसे जल्द ही कड़ी मेहनत करवाने वाली थी।

मैं पहले आरती से बात करना चाहता था। मैंने उसे चार बार फोन लगाया था, लेकिन एक बार भी उससे बात न हो सकी। पहली दो बार उसकी मां ने फोन उठाया था। उन्होंने मुझे बताया था कि एक बार तो आरती अपने दोस्तों के साथ बाहर गई थी और दूसरी बार अपने कॉलेज का एडमिशन फॉर्म जमा करने के लिए। मैंने अगले दिन भी उसे दो बार फोन लगाया और इस बार भी दोनों ही बार उसकी मां ने फोन उठाया। मैंने बिना कुछ कहे फोन रख दिया। मैं नहीं चाहता था कि आरती की मां उससे कहे कि आखिर यह लड़का तुम्हें इतनी दूर होने के बावजूद बार-बार फोन क्यों लगाता है? इससे अच्छा असर नहीं पड़ता है। आरती ने कहा था कि वह जल्द ही एक सेलफोन ले लेगी। मैं भी यही चाहता था। ऐसा लगता था कि आजकल हर व्यक्ति के पास सेलफोन है, अमीरों के पास तो निश्चित ही।

आरती के पास मुझे फोन लगाने के लिए कोई नंबर नहीं था। मुझे ही कल फिर कोशिश करनी थी।

मैंने हरे रंग का ब्रोशर उठाया। कवर पर दुनिया के कुछ सबसे बदसूरत लोगों के फोटो थे। ये उस इंस्टिट्यूट के आईआईटी टॉपर्स थे। उन्होंने टूथपेस्ट का विज्ञापन करने वाले मॉडल्स से भी ज्यादा खीसें निपोर रखी थीं, अलबत्ता उनके दांत इतने अच्छे नहीं थे।

चूंकि वक्त जाया करना मेरा सबसे पसंदीदा शौक था, इसलिए मैं शामों को ब्रोशर्स की आपस में तुलना करता रहता था। नहीं, मैं कोर्स मटेरियल, सक्सेस रेट्स या फीस स्ट्रक्चर्स की तुलना नहीं करता था, क्योंकि सभी तो अपने आपको इन क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ बताते थे।

मैं उनके सबसे सफल स्टूडेंट्स की तस्वीरों की तुलना किया करता था, किसके यहां सबसे बदसूरत लड़का है, किसके यहां सबसे क्यूट लड़की है, वगैरह-वगैरह। इस सबका कोई मतलब नहीं था, लेकिन मेरे कोटा में होने का भी तो कोई मतलब नहीं था।

मैंने बंसल का ब्रोशर देखा, जो कि कोटा के इस लोक का अमृत पात्र था। बंसल के कुल स्टूडेंट्स हुआ करते थे। मुझे बंसल का ही इम्तिहान पास करना था। लेकिन, तीन

दिन बाद होने वाले टेस्ट के लिए मेरी न के बराबर तैयारी थी। वास्तव में, अनेक कोचिंग क्लासेस के एग्जाम्स एक हफ्ते के भीतर ही होने वाले थे। अगले एग्जाम्स एक महीने बाद थे। अब मुझे किसी न किसी को जॉइन करना ही था। यदि मैं अब भी कुछ नहीं करता तो मैं मनोज दत्त से भी अधिक तेजी से पागल हो सकता था।

हर इंस्टिट्यूट एप्लिकेशन फॉर्म के लिए हजार रुपए मांग रहा था। चाहे वे आपको सिलेक्ट करें या न करें, चाहे आप जॉइन करें या न करें, फीस चुकानी ही थी।

मेरे पास पचास हजार रुपए थे और बाबा ने मुझसे वादा किया था कि छह महीने बाद वे मुझे और पैसा देंगे। मेरे पास सीमित संख्या में पैसा था, इसलिए मुझे उसे बहुत चुनिंदा तरीके से ही खर्च करना था।

मैंने पाच कोचिंग इंस्टिट्यूट्स को शॉर्टलिस्ट किया ण् बंसल, कैरियर पाथ, रेजोनेंस, और दो नए व इन तीनों की तुलना में अधिक सस्ते ण् एम–आईआईटी और कैरियरइग्नाइट।

एम–आईआईटी के ब्रोशर पर लिखा था ण् हम हर स्टूडेंट के इस लोकतांत्रिक अधिकार में विश्वास करते हैं कि उसे कोचिंग मिले, इसलिए हम एंट्रेंस एग्जाम्स नहीं लेते। यानी इसका मतलब यह था कि एम–आईआईटी श्रेष्ठ कोचिंग क्लासेस की श्रेणी में शामिल नहीं था। अगर वे अपने ब्रोशर पर यह लिखते तो भी चलता 'यदि आपके पास नगद रुपया है तो आपका स्वागत है।'

मैंने अपनी बाकी की शाम उबाऊ और दोहराव से भरे फॉर्म्स भरते हुए बिताई। मैं खुद को यह कहते हुए प्रेरित करता रहा कि मैं डिनर से पहले एक बार फिर आरती से बात करने की कोशिश करूंगा।

शाम सात बजे मैं ईवनिंग वॉक के लिए बाहर निकल आया। सड़कें उन पढ़ाकू स्टूडेंट्स से भरी पड़ी थीं, जो ताजा हवा की अपनी रोजमर्रा की खुराक लेने बाहर निकल आए थे।

मुझे एक एसटीडी बूथ नजर आया।

'हैलो?' मिस्टर प्रधान की रौबदार आवाज सुनाई दी।

मैंने फौरन फोन काट दिया।

एसटीडी बूथ का मीटर जरा–सा घर्राया।

'तुम्हें पे करना पड़ेगा,' दुकानदार ने उखड़े हुए ढंग से कहा। मैंने सिर हिला दिया।

मुझे किसी से बातें करने की जरूरत महसूस हो रही थी। मैं बाबा को सुबह फोन लगा चुका था। मैंने राघव को कॉल किया।

'राघव, मैं बोल रहा हू। गोपाल। कोटा से,' मैंने कहा। मैंने अंतिम शब्द को कोमलता से कहा था।

'गोपाल! ओह, वॉव, हम तुम्हारे बारे में ही बातें कर रहे थे,' राघव ने कहा।

'मेरे बारे में? रियली? किसके साथ?' मैंने कहा।

'आरती यहा है। तुम कैसे हो, मैन? कोटा में कैसा लग रहा है? वी मिस यू।'

'आरती तुम्हारे यहा है?' मैंने उलझन भरे मन से पूछा।

'हां, वह चाहती थी कि मैं कोर्स चुनने में उसकी मदद करूं। वह साइकोलॉजी को लेकर मन नहीं बना पा रही है।'

आरती ने बीच में राघव से फोन झपट लिया।

'गोपाल! कहां हो तुम?'

'कोटा में, और कहां। मैंने तुम्हें फोन लगाया था,' मैंने कहा। मैं उससे पूछना चाहता था कि वह राघव के यहा क्यों आई है। बहरहाल, यह मुझे बातचीत शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका नहीं लगा।

'फिर तुमने बाद में फोन क्यों नहीं लगाया? मेरे पास तुम्हें कॉल करने के लिए कोई नंबर तक नहीं है,' उसने कहा।

'मैं अपने लैंडलॉर्ड से पूछूंगा कि क्या मैं उनके फोन पर अपने कॉल्स रिसीव कर सकता हूं। घर कब जाओगी? मुझे तुमसे बात करना है।'

'अभी बोलो ना। क्या बात है?'

'अभी मैं कैसे बात कर सकता हूं?'

'क्यों?'

'तुम राघव के साथ हो,' मैंने कहा।

'तो?'

'तुम राघव के यहा क्या कर रही हो?'

'कुछ नहीं। बस यूं ही।'

जब लड़कियां 'बस यूं ही' जैसे गोल–मोल शब्दों का इस्तेमाल करती हैं, तो उसके कारण हमें सीधे–सीधे कुछ चिंताएं होने लगती हैं। या शायद ऐसा न हो, मेरा दिमाग ही कुछ ज्यादा सोच रहा हो।

'मुझे अपने लिए एक कोर्स चुनना है। साइकोलॉजी करूं या बीएससी होम साइंस?' उसने कहा।

'तुम क्या करना चाहती हो?' मैंने कहा।

'मैं एयर होस्टेस बनने से पहले अपना ग्रेजुएशन पूरा कर लेना चाहती हूं। मैं केवल इसीलिए यह कर रही हूं। मुझे एक सीधा–सरल कोर्स चाहिए।'

'ओह, तो एयर होस्टेस बनने के तुम्हारे इरादे अभी भी बरकरार हैं,' मैंने कहा।

'वेल, राघव कहता है कि हमें इतनी जल्दी सपने देखना नहीं छोड़ देना चाहिए। शायद बीएससी होम साइंस ज्यादा बेहतर होगा, है ना? यह कुछ–कुछ हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री से मिलता–जुलता है। या मुझे अग्रमेंन छोड़कर होटल मैनेजमेंट जॉइन कर लेना चाहिए?'

मैं चुप रहा। राघव उसे सलाह–मशविरा दे रहा है?

आखिर वह है कौन? कैरियर काउंसलर? या एक सड़ियल जेईई रैंक हासिल कर लेने भर से उसे प्रवचन देने का लाइसेंस मिल गया है?

'बोलो ना, गोपी,' आरती ने कहा। 'आई एम सो कन्फ्यूज्ड।' फिर मैंने उसकी दबी हुई खिलखिलाहट सुनी।

'क्या बात है?' मैंने कहा।

'राघव एक एयर होस्टेस की नकल कर रहा है।

उसके पास टें भी है,' उसने मजे लेते हुए कहा।

'मैं तुम्हें बाद में फोन लगाता हूं,' मैंने कहा।

'ओके, लेकिन बताना जरूर कि मुझे कौन–सा कोर्स लेना चाहिए,' उसने कहा। अब उसकी आवाज जरूर कुछ गंभीर लग रही थी।

'राघव से पूछो, वह बेहतर स्टूडेंट है,' मैंने कहा।

'कम ऑन, गोपी। तुम नॉनसेंस बातें कर रहे हो।'

'हम तब बात करेंगे, जब तुम अकेली होओगी,' मैंने कहा।

'कल इसी समय मुझे फोन लगाना।'

'ओके, बाय।'

'बाय,' आरती ने कहा।

'आई मिस यू,' मैंने कहा। शायद मुझे यह कहने में एक पल की देरी हो गई थी। मुझे जवाब में केवल एक क्लिक की आवाज सुनाई दी।

मैं अपने कमरे पर लौट आया, जहां मेरा डिनर टिफिन और ब्रोशर्स मेरी राह देख रहे थे। मैं सोचने लगा कि आरती राघव के यहां है और हंसी–ठट्ठा कर रही है। मेरे भीतर कुछ सुलगने लगा।

मैंने उखड़े मन से एक ब्रोशर उठाया। शेविंग किट से एक ब्लेड निकाली, आईआईटी–सिलेक्टेड स्टूडेंट्स के कवर चित्र काटे और उन्हें पुर्जा–पुर्जा कर दिया।

बंसल क्लासेस वाराणसी के छोटे–से अपार्टमेंट में लगने वाले मामूली ट्यूशन सेंटर्स जैसी कतई नहीं लगती थी।

वह किसी इंस्टिट्यूट या बड़े कॉर्पोरेट ऑफिस जैसी लगती थीं। मैं उसकी विशालकाय लॉबी में खड़ा रहा और सोचता रहा कि अब मुझे आगे क्या करना चाहिए। मेरे इर्द–गिर्द स्टूडेंट्स और टीचर्स की गहमागहमी थी और वे सभी बहुत व्यस्त नजर आ रहे थे, मानो वे स्पेस में सैटेलाइट्स लॉन्च करने जा रहे हों। कोटा की अनेक अन्य कोचिंग क्लासेस की ही तरह यहां के स्टूडेंट्स की भी खास यूनिफॉर्म थी।

यहां दिल्ली के वे अमीर बच्चे थे, जिनके पैरेंट्स उन्हें इतनी पॉकेट मनी देते थे, जितना पैसा मेरे पिता सालभर में कमा पाते होंगे। दूसरी तरफ, मेरे जैसे वाराणसी से आए लूजर्स थे, जिनके पास न तो यहा होने के लिए पर्याप्त पैसा था, न पर्याप्त अक्ल।

लेकिन कपड़ों की समानता का यह मतलब नहीं था कि बंसल में सभी स्टूडेंट्स को समान माना जाता था।

यहां भी एक किस्म की वर्ग प्रणाली थी, जिसका आधार यह था कि एंट्रेंस एग्जाम क्रैक करने के आपके अवसर कितने उजले हैं।

एडमिशन ऑफिस में बैठे एक व्यक्ति ने मुझसे फॉर्म लिया। 'हाई परफॉर्मर?' उसने पूछा।

मैं सोचने लगा कि आखिर कोई व्यक्ति इस तरह के सवाल का क्या जवाब दे सकता है। 'एक्सक्यूज मी?'

'यदि आपके बारहवीं में 85 प्रतिशत से अधिक अंक हैं, या यदि आपकी एआईईईई में 40 हजार तक की रैंक है तो आपको 30 प्रतिशत का डिस्काउंट मिलता है,' उसने मुझे

समझाया।

'मुझे 79 प्रतिशत अंक मिले थे और मेरी एआईईईई रैंक थी 52043,' मैंने कहा।

'ओह, तब तो आपको फुल–रेट प्रोग्राम के लिए अप्लाई करना होगा,' एडमिशन ऑफिसर ने कहा। मैंने कभी नहीं सोचा था कि एआईईईई रैंक इस तरह सीधे–सीधे डिस्काउंट के पैसों में भी बदल सकती है।

'मुझे डिस्काउंट नहीं मिल सकता?' मैंने कहा। मैं सोच रहा था कि क्या यहां मोल–भाव करने से बात बन सकती है।

'यह इस पर डिपेंड करता है कि एंट्रेंस एग्जाम में आपका प्रदर्शन कैसा है,' ऑफिसर ने कहा और मेरे फॉर्म पर ठप्पा लगा दिया। उसने मुझे एंट्रेंस एग्जाम के लिए एक रिसीप्ट–कम–एडमिट कार्ड दिया।

'क्या मुझे आपके एंट्रेंस एग्जाम के लिए पढ़ाई करने की जरूरत होगी?' मैंने कहा।

'अब दो दिन में तुम भला क्या पढ़ लोगे? खैर, तुम्हारे मार्क्स देखकर लगता नहीं कि तुम बहुत ब्राइट स्टूडेंट हो। मैं तो यही सुझाव दूंगा कि तुम किसी दूसरे इंस्टिट्यूट में अप्लाई करो,' उसने जवाब दिया।

'थैंक्स, मैं ऐसा ही करूंगा,' मैंने कहा।

ऑफिसर ने आसपास देखा कि कहीं कोई उनकी बातें तो नहीं सुन रहा। फिर उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'मेरे कजिन ने हाल ही में एक इंस्टिट्यूट खोला है। मैं तुम्हें वहां फिफ्टी परसेंट डिस्काउंट दिला सकता हूं।'

मैं चुप रहा। उसने मुझे एक विजिटिंग कार्ड थमा दिया –

'ड्रीम आईआईटी'।

'पैसा क्यों बर्बाद करना? कोर्स मटेरियल तो वही है।

मेरा कजिन एक्स–बंसल फैकल्टी है।'

मैंने कार्ड का मुआयना किया।

'लेकिन इस बारे में किसी को मत बताना, ओके?'

उसने कहा।

दूसरे इंस्टिट्यूट्स में भी मुझे ऐसी ही घटनाओं का सामना करना पड़ा। सफल जेईई कैंडिडेट्स, जो वांटेड आतंकवादियों जैसे लग रहे थे, की स्टाम्प–साइज्ड तस्वीरों से लदी–फदी दीवारें मुझे हर जगह नजर आईं।

मैंने यह भी पाया कि प्रतिष्ठित इंस्टिट्यूट्स 'रिपीटर्स' के बारे में कुछ ज्यादा ही हो–हल्ला करते थे। आखिर, रिपीटर्स एक बार नाकाम हो चुके थे और इंस्टिट्यूट्स अपने आंकड़ों पर पलीता नहीं लगाना चाहते थे। टॉप इंस्टिट्यूट्स दावा करते थे कि वे एक साल में पांच सौ तक स्टूडेंट्स को आईआईटी भिजवाते हैं। निश्चित ही, ये इंस्टिट्यूट्स यह कभी नहीं बताते हैं कि वे दस हजार स्टूडेंट्स को एनरोल करते हैं, जिनमें से केवल पांच सौ ही कामयाब हो पाते हैं। इसका मतलब यह था कि सिलेक्शन का अनुपात महज पांच फीसदी ही था। बहरहाल, जेईई का ओवरऑल सिलेक्शन रेशियो दो फीसदी से भी कम का था और कोटा इंस्टिट्यूट्स उससे बेहतर प्रदर्शन करने का दावा करते थे। कैंडिडेट्स की प्री–स्क्रीनिंग औसत से अधिक सिलेक्शन का एकमात्र कारण हो सकती थी। खैर, देशभर से आए मेरे जैसे स्टूडेंट्स तो यू भी उनके इर्द–गिर्द मंडराते रहते थे और अपने एडमिशन फॉर्म्स सबमिट करने के लिए कतार लगाकर खड़े रहते थे।

एम–आईआईटी और कैरियरइग्नाइट के यहां कम स्टूडेंट्स थे। वास्तव में उन्होंने तो मुझे स्पॉट पर ही ऑफर दे डाले और कैरियरइग्नाइट ने तो बीस फीसदी डिस्काउंट का भी प्रस्ताव रखा।

'डिस्काउंट केवल तभी एप्लिकेबल होगा, जब आप तत्काल साइन अप करें, अगली बार आने पर नहीं,' आक्रामक सेल्समैन–कम–एडमिशन–इन–चार्ज ने मुझसे कहा।

'लेकिन मैंने अभी तक अपना मन नहीं बनाया है,' मैंने कहा।

'तुम बंसल जाने की कोशिश कर रहे हो, है ना?'

उसने कहा और मुझे इस तरह देखा, मानो उसे सब कुछ पता हो।

मैं चुप रहा।

'मैं एक्स–बंसलाइट हूं,' उसने कहा।

'क्या कोटा में कोई ऐसा व्यक्ति है, जो एक्स–बंसलाइट न हो?' मैंने कहा और वहां से बाहर चला गया।

8

'गोपाल! तुम्हारी आवाज सुनकर बहुत अच्छा लगा,' आरती ने कहा। वह मुझे एक सेकंड में ही पहचान गई थी। इससे मुझे अच्छा लगा।

'गो टु हेल, तुम्हें मेरी कोई परवाह नहीं है,' मैंने कहा।

'हाऊ स्टुपिड। मुझे तुम्हारी परवाह है। लेकिन पहली बात तो यही कि क्या तुम्हारे पास कोई ऐसा नंबर है, जिस पर तुम्हें फोन लगाया जा सके?'

'हां है,' मैंने कहा और उसे मेरे मकान मालिक का नंबर दे दिया। 'लेकिन इस पर ज्यादा कॉल मत करना।

हफ्ते में दो बार से ज्यादा नहीं।'

'तो क्या हुआ? वैसे भी तुम्हारे कॉल करने वाली अकेली मैं ही तो होऊंगी, है ना?' आरती ने कहा।

'हां। खैर, क्या चल रहा है? मुझे तो यहां बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा।'

'क्या वाकई वहां इतना बुरा लग रहा है? तुमने पढ़ाई शुरू की?' उसने पूछा।

'नहीं, अभी मैं नहीं कर सकता। उन्हीं किताबों को फिर से शुरू करना कठिन है। शायद कोचिंग क्लास जॉइन करने के बाद मुझे मोटिवेशन मिले।'

'मुझे वहां होना चाहिए था, मैं तुम्हें मोटिवेट करती,' वह हंस पड़ी।

'ऐसे मजाक मत करो।'

'सब ठीक हो जाएगा, गोपी। बस एक और कोशिश।

यदि तुम इस बार कामयाब हुए तो तुम्हारा कैरियर बन जाएगा।'

'आई मिस यू,' मैंने कहा। मेरी कैरियर जैसी बेकार की चीजों में कम दिलचस्पी थी।

'ओह,' उसने कहा। मेरे इस तरह एकदम से यह कह देने से वह कुछ–कुछ चकित थी। 'मैं भी तुम्हें मिस करती हूं।'

'मेरा कोई नहीं है, आरती,' मैंने कहा।

'ऐसा मत कहो। बाबा हैं। राघव, मैं... हम तुम्हारे बारे में बहुत बातें करते हैं।' उसकी आवाज मध्म पड़ती गई।

'हम कपल क्यों नहीं बन सकते?'

'प्लीज वह सब फिर से मत शुरू करो। हम पहले ही उस बारे में काफी बातें कर चुके हैं,' उसने कहा।

'क्यों नहीं? तुम कहती हो कि तुम मुझे मिस करती हो, मेरी परवाह करती हो, फिर?'

'मैं तुम्हारी बहुत परवाह करती हूं, लेकिन उस तरह से नहीं। एनीवे, हमें अपने–अपने कैरियर पर फोकस करना है। तुम वहां हो। मैं यहां हूं।'

'यदि मेरी कोई गर्लफ्रेंड होती तो कम से कम मैं उससे बात तो कर पाता। मैं बहुत अकेलापन महसूस करता हूं, आरती,' मैंने कहा।

'गोपाल, तुम होमसिकनेस महसूस कर रहे हो। तुम मुझसे जिस बारे में चाहे बात कर सकते हो। या हम चैट कर सकते हैं।'

'इंटरनेट पर?' मैंने देखा था कि मेरे घर के आसपास कुछ सायबर कैफे हैं।

'हां। अपना जीमेल आईडी बनाओ। मेरा आईडी है – फ्लाइंगआरती/जीमेल.कॉम। मुझे इनवाइट करो।'

'फ्लाइंग आरती।' मैं हंस पड़ा।

'शट अप।'

मैं और जोर से हंस पड़ा।

'कम से कम इससे तुम्हारा मूड तो अच्छा हुआ,' उसने कहा।

'मेरे प्रपोजल के बारे में सोचना,' मैंने कहा।

'कोई प्रपोजल नहीं है। और अब कॉल्स पर अपना पैसा मत बर्बाद करो। हम शाम को चैट कर सकते हैं।

मैं तुम्हें अपनी लाइफ के बारे में बताऊंगी और तुम अपने बारे में बताना। ओके?'

'ओके। हे, लिसन। मुझे कोई जाना–माना लेकिन महंगा इंस्टिट्यूट जॉइन करना चाहिए या कोई नया लेकिन सस्ता?'

'जो तुम्हें सबसे अच्छा लगे,' आरती ने जवाब दिया।

'एंड नाऊ, बाय। डिनर टाइम।'

मुझे कोटा आए एक हफ्ता हो चुका था और मैं अपने लिए कुछ फैसले ले चुका था। पिछली बार तो यह कि मैं बंसल एग्जाम क्लीयर नहीं कर सका। मैं उनके अलग पत्राचार पाठ्यक्रम

मुझे उम्मीद थी कि वह मुझसे कुछ देर और चैट करने को कहेगी, केवल एक रूखा–सूखा ओके भर नहीं कह देगी। लेकिन उसने तो मुझसे यह भी नहीं पूछा कि मैंने डिनर किया या नहीं . ल्लाड्ंगआरती: तुमने डिनर कर लिया?

गोपालकोटाफैक्टरी: अभी नहीं। घर जाकर कर लूंगा।

ल्लाड्ंगआरती: कूल!

जब लड़कियां कुछ छुपाने की कोशिश करती हैं तो वे लड़कों की तरह बात करने लगती हैं और 'कूल' जैसे एक्सप्रेशंस का उपयोग करने लगती हैं।

गोपालकोटाफैक्टरी: हाऊ अबाउट यू?

ल्लाड्ंगआरती: राघव मुझे ट्रीट दे रहा है। लेकिन केवल अपने ही कैंटीन पर। चीपो!

गोपालकोटाफैक्टरी: तुम अब तक एक्साइटेड लग रही हो।

उसने कोई जवाब नहीं दिया। जब कोई चैट पर आपको जवाब नहीं देता तो हर मिनट एक घंटे के बराबर लगने लगता है। पांच लंबे मिनटों बाद उसने आखिरकार कुछ लिखा।

ल्लाड्ंगआरती: व्हाट?

मैंने सोचा कुछ देर उसे भी इंतजार कराया जाए।

लेकिन, मैं दस सेकंड से ज्यादा देर तक खुद को रोक नहीं सका।

गोपालकोटाफैक्टरी: कुछ नहीं।

ल्लाड्ंगआरती: ओके, एनीवे। राघव भी यहां है। वह हाय कह रहा है।

मुझे जल्दी से खाकर घर पहुंचना होगा। बाद में चैट करते हैं। XOXO ....

मुझे पता नहीं था कि XOXO का क्या मतलब होता है। X का मतलब माना जाता है हग्स और O का मतलब माना जाता है किसेस। मुझे नहीं लगता आरती का यही मतलब रहा होगा।

उसने लॉग आउट कर दिया। मेरे पास बीस मिनट का इंटरनेट टाइम बाकी था। मैंने इन बीस मिनटों का इस्तेमाल वही करने के लिए किया, जो सायबर कैफे आने वाले अधिकतर लड़के करते हैं – या तो ऑफिशियल आईआईटी वेबसाइट पर सर्फ करना या पोर्न देखना। मेरे ख्याल से लड़के कोटा में ये दो चीजें ही सबसे ज्यादा चाहते थे। कोचिंग सेंटर्स कम से कम इनमें से एक को पाने में आपकी मदद कर सकते थे।

9

आरती का जन्मदिन आने तक मैं कोटा में तीन महीने बिता चुका था। पहली बार मैं एक क्लास टेस्ट में टॉप 25 परसेंटाइल तक पहुंचने में कामयाब रहा था।

बैंसल–जी ने मुझे बधाई दी। मेरे केमिस्ट्री स्कोर में बीस अंकों की बढ़ोतरी हो चुकी थी। अलबत्ता मिस्टर पुली को फिजिक्स में मेरा औसत प्रदर्शन नहीं भाया। शिशिर सर, जिन्हें परम्यूटेशन गुरु के नाम से भी जाना जाता था, मेरी सीट के पास आकर कुछ सेकंड के लिए रुके। वजह – मेरे मैथ्स के मार्क्स में भी दस फीसदी अंकों की बढ़ोतरी हुई थी।

फिजिक्स क्लास में बैठते ही मैंने आन्सर–शीट अपने बैग में रख ली। मैंने तीन सौ सीट वाले इस लेक्चर रूम में चारों तरफ देखा। मिस्टर पुली हाथ में माइक थामे बोल रहे थे। जब भी उन्हें लगता कि क्लास का ध्यान उनकी ओर नहीं है, वे माइक थपथपा देते।

मुझे अब भी एक लंबा सफर तय करना था।

आईआईटी सीट के लिए कॉन्फिडेंट महसूस करने के लिए कैरियर पाथ में कम से कम टॉप–फाइव परसेंटाइल तक पहुंचना जरूरी था।

'आईआईटी सीट हासिल करना कोई मजाक नहीं है,' मिस्टर पुली ने कहा, अलबत्ता ऐसा किसी ने भी नहीं कहा था कि वह मजाक है।

एक हायपर–काम्पीटिटिव क्लास में अपना परसेंटाइल बढ़ाना आसान नहीं है। आपको आईआईटी को पूरी तरह से जीना पड़ता है।

हर क्लास टेस्ट के टॉप बीस स्टूडेंट्स को रॉयल ट्रीटमेंट दिया जाता था। उन्हें जेम्स कहा जाता था और यह टाइटिल अब भी मुझसे दूर था। जेम्स का मतलब होता था 'ग्रुप ऑफ एक्स्ट्रा मेरिटोरियस स्टूडेंट्स'।

जेम्स वे अल्ट्रा–गीक्स होते थे, जो सेक्स करने के बजाय फिजिक्स की प्रॉब्लम्स सुलझाने को प्राथमिकता देते थे और जिनके लिए मौज–मस्ती का मतलब था पीरियॉडिक टेबल को रट लेना। कैरियर पाथ अपने इन जेम्स का बहुत ध्यान रखता था, क्योंकि उनमें जेईई की टॉप सौ रैंक्स क्रैक करने की क्षमता होती थी और इस कारण वे कैरियर पाथ के लिए विज्ञापनों की तरह थे। जेम्स को बहुत अहमियत दी जाती थी, ठीक वैसे ही, जैसे हम कल्पना कर सकते हैं लक्स साबुन के अधिकारियों द्वारा अपनी ब्रांड एंबेसेडर कैटरीना कैफ को दी जाती होगी।

मैं अभी जेम्स बनने के करीब नहीं पहुंचा था।

बहरहाल, टॉप–25 परसेंटाइल भी अच्छी स्थिति थी। मैं आरती से यह शेयर करना चाहता था। साथ ही मैंने उसे कहा था कि उसे जन्मदिन विश करने वालों में सबसे पहला नाम मेरा ही होगा।

आधी रात के करीब मैं एसटीडी बूथ पर गया। 11. 58 पर मैंने फोन उठाया और उसका नंबर घुमाया। मुझे बिजी सिगनल मिला। मैंने फिर कोशिश की, लेकिन घ ंटी नहीं बजी। मैंने पांच बार कोशिश की, लेकिन लाइन लगातार इंगेज थी।

'दूसरे कस्टमर्स को भी कॉल करने दीजिए,' शॉपकीपर ने कहा।

गनीमत थी कि लाइन में केवल एक ही व्यक्ति खड़ा था। वह एक स्टूडेंट था और गुवाहाटी में अपनी मम्मी को हैप्पी बर्थडे विश करने का इंतजार कर रहा था। उसका कॉल 12.05 बजे खत्म हुआ। मैं इत्मीनान से इंतजार करता रहा।

उसके बाहर निकलते ही मैं फौरन भीतर घुसा और आरती को फिर कॉल किया। लाइन अब भी बिजी थी।

अनेक बार कोशिश करने के बाद शॉपकीपर ने मुझे सहानुभूति के साथ देखा। उसने मुझे कहा कि 12.30 पर उसे अपनी दुकान बंद करना होगी। मैं दो–दो मिनट के अंतराल से बार–बार कोशिश करता रहा, लेकिन कामयाब नहीं हुआ।

पता नहीं क्यों, मैंने राघव के घर पर फोन लगाने का सोचा। चूंकि शुक्रवार की शाम थी, इसलिए मुझे पता था कि राघव वीकेंड के लिए घर पर ही होगा। मैं नंबर डायल करने से पहले पलभर को झिझका। जाहिर है, यदि इतनी रात को फोन की घंटी घनघनाती है तो इससे पूरा घर डिस्टर्ब हो जाएगा। बहरहाल, मैंने नंबर लगाया और मेरा शक सही निकला। लाइन बिजी थी।

मैंने बार–बार राघव और आरती के नंबर लगाने की कोशिश की, लेकिन मैं कामयाब नहीं हो पाया।

आरती के लिए मेरी गुड विशेस खत्म हो गईं और रोमांच गुस्से में बदल गया।

आखिर राघव को उसे आधी रात को विश करने की क्या जरूरत आन पड़ी? और क्या बर्थडे विशेस में इतना समय लगता है?

शॉपकीपर ने मेरी बूथ विंडो थपथपाई। 'यदि मैंने दुकान और देर तक खुली रखी तो पुलिस मुझे परेशान करने लगेगी।'

'क्या आप मुझे बता सकते हैं कि इस वक्त एसटीडी बूथ कहां खुले होंगे?' मैंने कहा।

'रेलवे स्टेशन,' शॉपकीपर ने कहा और बत्ती बुझा दी।

उस समय कोई भी ऑटो–रिक्शा वाला कम दाम पर रेलवे स्टेशन जाने को तैयार नहीं था। लेकिन यदि मैं दौड़ लगाता तो आधे घंटे में पांच किलोमीटर की दूरी तय कर सकता था।

रात एक बजे मैं कोटा स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर एक पर पहुंचा। पांच किलोमीटर जॉगिंग करने के कारण मैं हांफ रहा था। इस समय भी स्टेशन पर चहल–पहल थी। एक ट्रेन आई और जनरल–कोटा पैसेंजर्स सीट पाने के लिए दौड़ पड़े।

मुझे एक एसटीडी बूथ मिला और मैंने आरती को कॉल लगाया। इस बार फोन की घंटी बजी। मैंने गहरी सांस ली। उस समय मेरा मिजाज बहुत अच्छा नहीं था।

बर्थडे गर्ल के फोन उठाने पर मैं अपने आपको नियंत्रित रखना चाहता था।

'हैलो?' डीएम प्रधान की आवाज आई।

'हैलो, अंकल? अंकल, गोपाल,' मैं बिना जाने–बूझे कहने लगा, हालांकि मुझे फोन रख देना था। लेकिन इतनी कोशिशें करने के बाद मेरे लिए आरती से बात करना बहुत जरूरी हो गया था।

'ओह, येस। होल्ड ऑन,' उन्होंने कहा और आरती को पुकारा।

आरती फोन के पास आई। मैं उसके पिता के साथ उसकी बातचीत सुन सकता था।

'फोन पर कितना बात करोगी? तुम्हारे दोस्तों के फोन तो रुकने का नाम नहीं लेते,' उसके पिता ने बड़बड़ाते हुए कहा।

'ये मेरा बर्थडे है, डैड,' आरती ने कहा और फोन उठा लिया।

'हैप्पी बर्थडे, आरती,' मैंने कहा। मैं कोशिश कर रहा था कि मेरी आवाज से रोमांच झलके।

'हे, गोपाल! थैंक्स। दैट्स सो स्वीट ऑफ यू। तुम मुझे विश करने के लिए इतनी रात तक जागते रहे?' उसने कहा।

'मैं इतनी रात तक जागने के अलावा पांच किलोमीटर दौड़ा भी हूं और अब मुझे फिर लौटकर जाना है', मैं उसे कहना चाहता था, लेकिन कहा नहीं।

'मैं एक घंटे से तुम्हें कॉल करने की कोशिश कर रहा था।'

'रियली?' आरती ने कहा।

'हां, लाइन बिजी थी। तुम किससे बातें कर रही थीं?

मैं तुम्हें सबसे पहले विश करना चाहता था,' मैंने कहा।
'ओह, मेरे कजिन्स, वही जो अमेरिका में हैं। वहां मेरी आंटी रहती हैं ना?'
उसकी आवाज जरूरत से ज्यादा ही बेपरवाह लग रही थी। आरती भूल गई कि मैं उसे आठ साल से जानता था। मैं बड़ी आसानी से समझ सकता था कि वह कब झूठ बोल रही है और कब सच।
'वे इतनी दूर से एक घंटे तक बात करते रहे?'
'एक घंटा क्या? मैंने उनसे केवल दो मिनट बात की। शायद मैंने फोन ठीक से नहीं रखा होगा। लीव इट। तुम कैसे हो? काश तुम भी यहां होते।'
'वाकई?'
'हां, ऑफ कोर्स! मैं तुम्हें मिस करती हूं,' आरती ने कहा। उसकी आवाज इतनी ईमानदार थी कि यह विश्वास करना कठिन लग रहा था कि दस सेकंड पहले उसने मुझसे झूठ बोला था।
'यदि तुमने फोन गलत रख दिया था तो फिर उसे अब किसने ठीक कर दिया?'
'गोपाल! मुझसे इस तरह पूछताछ मत करो। आई हेट दिस। आज मेरा बर्थडे है।'
'और तुमने अपने बर्थडे के दिन झूठ बोला?'
'क्या?'
'हमारी दोस्ती की कसम खाकर कहो कि राघव ने कॉल नहीं किया था?' मैंने कहा।
'क्या?' आरती ने कहा। उसकी आवाज तेज थी।
'कसम खाऊं? हमारी उम्र क्या है? दस साल?'
'उसने फोन लगाया था ना? तुम उसी से बात कर रही थीं। तुम दोनों के बीच आखिर चल क्या रहा है?'
'इट्स माय बर्थडे। क्या तुम इसे इतना स्ट्रेसफुल बनाना चाहते हो?'
'तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।'
'बहुत देर हो चुकी है। डैड आसपास मंडरा रहे हैं।
कल नेट पर चैट करें? मेरे कॉलेज के बाद?'
'मेरी क्लासेस हैं,' मैंने कहा।
'संडे। संडे को चैट करते हैं, दोपहर में, ओके?'
'आरती, मेरे साथ ईमानदारी से पेश आने की कोशिश करो। मैं ईमानदारी को बहुत अहमियत देता हूं,' मैंने कहा।
'ऑफ कोर्स। ओके, बाय नाऊ। डैड मुझे डर्टी लुक्स दे रहे हैं। ईमानदारी से!'
'बाय,' मैंने कहा।
मैं लौटकर वापस चला आया, अपनी रुलाई रोकता हुआ।
'संडे तक इंतजार करो', मैंने खुद को दिलासा देते हुए कहा।
वह संडे को ऑनलाइन नहीं आई। मैंने साइबर कैफे में दो घंटे गुजारे। बारह के एक और एक के दो बज गए। आप इससे ज्यादा समय तक पोर्न नहीं देख सकते।
मैंने इतनी एक्स-रेटेड क्लिप्स डाउनलोड कर ली थीं कि मैं अब उनसे एक वीडियो लायब्रेरी खोल सकता था। अब मैं उसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता था।
एक छोटा-सा वादा निभाना भी कितना मुश्किल साबित हो रहा था! मैंने उससे बातें करने के लिए संडे तक का बेसब्री से इंतजार किया था। समय भी उसी ने तय किया था, मैंने नहीं। मैं अपने गुस्से का इजहार करना चाहता था, लेकिन मुझे कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था।
मैंने झल्लाहट में कंप्यूटर के सीपीयू को ठोकर मारी।
उसकी बिजली गुल हो गई।
'तुम क्या कर रहे हो?' साइबर कैफे का मालिक दौड़ता हुआ मेरे पास आया।
'सॉरी, मेरे साथ टेम्पर प्रॉब्लम है। मैं इस प्रॉब्लम को दुरुस्त करने की कोशिश कर रहा हूं,' मैंने कहा और बाहर चला गया।
मैं एसटीडी बूथ पर गया और उसके घर फोन लगाया। इस बार उसकी मां ने फोन उठाया।
'गुड आफ्टरनून, आंटी। गोपाल हियर।'
'हैलो, गोपाल,' आरती की मां ने रूखेपन से कहा।
उनके पतिदेव भले ही डीएम हों, लेकिन उनमें अपने पति से भी ज्यादा एटिट्यूड था।
'आंटी, आरती घर पर है?'
'वह तो सुबह ही राघव के साथ कानपुर चली गई।'
'कानपुर?' मैं हैरान रह गया। वह वाराणसी से तीन सौ किलोमीटर दूर राघव के साथ गई थी।
'हां, आईआईटी कानपुर में कोई फेस्टिवल है। राघव डिबेटिंग टीम में है। वह भी पार्टिसिपेट कर रही है।
सिंगिंग, शायद।'
'ओके,' मैंने कहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अब इससे ज्यादा और क्या पूछूं।
'कोई खास बात थी?' आरती की मां ने पूछा।
'कोई खास बात नहीं। वे आज रात तक लौट आएंगे ना? रास्ता सेफ नहीं है,' मैंने कहा।
'ऑफ कोर्स। वह सरकारी गाड़ी में गई है। उसके साथ सिक्योरिटी गार्ड भी है।'
मैं आरती के इर्द-गिर्द अपने खुद के सिक्योरिटी गार्ड्स तैनात कर देना चाहता था।
'थैंक्स, आंटी,' मैंने कहा।
'ओके। खूब पढ़ाई करो। तब तुम भी एक प्रॉपर कॉलेज में होओगे और राघव की तरह मजे कर सकोगे।'
'येस, आंटी,' मैंने कहा और फोन रखने से पहले एक प्रॉपर कॉलेज जॉइन करने के लिए अपनी निष्ठा एक बार फिर जाहिर की।
मैंने अपना बटुआ टटोला। मेरे महीनेभर के एक हजार रुपयों के बजट में से अब महज सौ रुपए बचे थे। नवंबर का महीना पूरा होने में अब भी दस दिन बाकी थे। मैंने कॉल्स पर इतना पैसा खर्च करने के लिए खुद को बहुत कोसा।
मैंने खुद से कहा कि अब मैं उसकी परवाह नहीं करूंगा। अब वही मुझे कॉल या मेल करेगी। लेकिन अगले ही पल मैं फिर उसके बारे में सोचने लगा। मेरी अपने आप से पागलों जैसी बातचीत होने लगी।
'वह उसके साथ डेटिंग नहीं कर रही होगी। उसने मुझे कहा था कि वह किसी रिलेशनशिप के लिए तैयार नहीं है। और यदि है, तो वह मुझे ही चुनेगी', मिस्टर आशावादी गोपाल ने कहा।
बहरहाल, मिस्टर निराशावादी गोपाल यह बात मानने को तैयार नहीं थे।
'तो क्या हुआ यदि राघव दिखने में मुझसे बेहतर है, लेकिन आरती इतनी सतही लड़की नहीं है। मैं उसे कितने सालों से जानता हूं', मिस्टर आशावादी ने फिर अपनी बात रखी।
'लेकिन राघव का भविष्य कितना उजला है', मिस्टर निराशावादी ने कहा।
'लेकिन क्या वह किसी लड़के को केवल जेईई रैंक के आधार पर चुनेगी? वह लड़की है, कोई वाहियात इंस्टिट्यूट नहीं', मिस्टर आशावादी ने फिर कहा।
'उसको वह एक मजेदार इंसान लगता है', मिस्टर निराशावादी ने कहा।
'लेकिन उसको तो सर्कस के जोकर्स भी मजेदार लगते हैं', मिस्टर आशावादी ने कहा।
मेरे भीतर मौजूद ये दोनों रुकने का नाम नहीं ले रहे थे और उनके कारण मेरा सिर दुखने लगा। लड़कियों को कभी इस बात का अंदाजा नहीं हो सकता कि उनके व्यवहार का लड़कों पर क्या असर पड़ता है।
मुझे आरती से बात करनी ही थी।
मेरा गुस्सा फिर उफनने लगा। मैं दौड़कर कोटा स्टेशन पहुंच जाना चाहता था और बिना रिजर्वेशन वाराणसी पहुंच जाना चाहता था। मैं मैनेजर-जी या मेरे परसेंटाइल या स्टूपिड कैरियर पाथ के बारे में कुछ नहीं सोच रहा था।
यदि राघव ने आरती के साथ कुछ किया, तो मैं उसे जिंदा नहीं छोड़ूंगा।
घर पहुंचने पर मैंने छह बार डोरबेल बजाई।
'सब ठीक तो है ना?' अंकल ने कहा।
'जो भी हो, मैं फांसी के फंदे पर नहीं लटकने वाला, ओके?' चिल्लाने से तनाव कम करने में मदद मिलती है।

'क्या?' उन्होंने कहा। वे मेरी बात से शॉक्ड थे।
'सॉरी,' मैंने कहा। आप अपने मकान मालिक के साथ इस तरह बात नहीं कर सकते।
मैं पूरी रात नहीं सो सका। मैं उसके बारे में इतना सोचने के लिए अपने आपको कोस रहा था।
वह झूठी है, डिच्चर है और पत्थरदिल लड़की है, मैंने अपने आपसे पचासों बार कहा।
लेकिन मैं उसे अपने ख्यालों से दूर नहीं कर पा रहा था। प्यार, यकीनन, एक वाहियात चीज है!

10

अगले दिन क्लास में एक सरप्राइज टेस्ट था, जिसमें मैंने बहुत बुरा प्रदर्शन किया। जब मैं केमिस्ट्री के एक आसान सवाल का भी जवाब नहीं दे पाया तो बैलेंस-जी ने मुझे झिड़क दिया। लेकिन मुझे इसकी परवाह नहीं थी। मैं उस लड़की से सीधी बात करना चाहता था।
क्लास खत्म होते ही मैं साइबर कैफे पहुंच गया।
वह ऑनलाइन नहीं थी। मुझे समझ नहीं आया कि क्या करूं। उसे एक बार फिर कॉल लगाना तो अपने उतावलेपन को जाहिर करना होगा।
कैरियर पाथ में मेरा यह हफ्ता बहुत खराब गुजरा था। मेरे रिजल्ट्स अस्सीवें परसेंटाइल पर जा पहुंचे थे, जिसका मतलब था कि सौ में से अस्सी स्टूडेंट्स ने मुझसे बेहतर प्रदर्शन किया था। कैरियर पाथ के पास एक ऐसा सॉफ्टवेयर था, जो किसी स्टूडेंट के प्रदर्शन में अधिकतम सुधार या अधिकतम गिरावट को दर्ज कर लेता था। मेरे प्रदर्शन में अधिकतम गिरावट पाई गई।
'यह एक्सेप्टेबल नहीं है,' शिशिर सर, जो पम्पूटिशन गुरु और कैरियर पाथ के पार्टनर थे, ने कहा।
'आई एम सॉरी, सर,' मैंने कहा।
'आई होप, तुम बुरी सोहबत में नहीं पड़ गए हो।'
'मेरा कोई दोस्त ही नहीं है तो बुरी सोहबत का सवाल ही नहीं उठता,' मैंने सच ही कहा।
'यदि दोस्त नहीं हैं तो जल्दी से कुछ दोस्त बना लो,' शिशिर सर ने कहा। 'कोटा में अपना जीवन अच्छे-से बिताने के लिए तुम्हें कुछ दोस्तों की जरूरत होगी।'
मैंने शिशिर सर की ओर देखा। वे युवा थे और उनकी बात में सच्चाई लग रही थी। 'मैं जानता हूं वह कितना कठिन है। आखिर मैं भी तो कोटा का ही प्रोडक्ट हूं।'
संडे को मैं फिर सायबर कैफे गया। हमेशा की तरह, कोई ईमेल नहीं था। बहरहाल, पांच मिनट बाद ही वह ऑनलाइन नजर आई।
मेरे भीतर के एक हिस्से ने मुझे उससे बात करने से मना किया था, लेकिन इसके बावजूद बातचीत की शुरुआत मैंने ही की।
गोपालकोटाफैक्टरी: हाय।
उसने दो मिनट तक कोई जवाब नहीं दिया। मैंने एक और हाय भेजा।
फ्लाइंगआरती: हाय गोपाल।
उसने मुझे गोपी कहकर नहीं पुकारा था। मुझे यह नॉर्मल नहीं लगा।
गोपालकोटाफैक्टरी: तुम अपसेट हो?
फ्लाइंगआरती: आई एम फाइन।
जब कोई लड़की आई एम फाइन कहती है, खासतौर पर कैपिटल एफ के साथ, तो इसका मतलब किसी जहाज के लिए 'आगे आइसबर्ग है' के निशान जैसा होता है।
गोपालकोटाफैक्टरी: क्या हम चैट कर सकते हैं?
फ्लाइंगआरती: यदि तुम मुझ पर चीखो-चिल्लाओ नहीं तो।
गोपालकोटाफैक्टरी: यदि मैंने उस दिन ऐसा किया था तो आई एम सॉरी।
मैं इसके साथ ही यह भी जोड़ देना चाहता था कि पिछले संडे उसने चैट पर मुझे डिच कर दिया था। मैं यह भी पूछना चाहता था कि वह राघव के साथ आईआईटी कानपुर क्यों गई थी। लेकिन, यदि मैं उससे ये बातें पूछता तो वह मेरी बातों का कोई जवाब नहीं देती और यह सबसे बुरा होता। मेरे लिए सबसे जरूरी यह पता करना था कि उसके भीतर क्या चल रहा है।
गोपालकोटाफैक्टरी: तुम्हें मेरी टेम्पर प्रॉब्लम के बारे में पता है ना। हालांकि मैं अपने आपमें सुधार लाने की कोशिश कर रहा हूं।
फ्लाइंगआरती: इट्स फाइन। अपॉलॉजी एक्सेप्टेड।
मुझे यह बात अजीब लगी कि उसे मैंने सॉरी कहा, जबकि वास्तव में उसे मुझसे सॉरी कहना चाहिए था।
क्या कभी कोई लड़की भी कोई गलती करती है? खैर, इंटरनेट पर चैटिंग के साथ सबसे अच्छी बात यह है कि हम अपने को काबू में रखकर बात कर सकते हैं।
मैंने गहरी सांस ली और एक सामान्य-सा सवाल टाइप कर दिया।
गोपालकोटाफैक्टरी: और, क्या चल रहा है?
जब हम संदेहों से घिरे हों, तो हमें ऐसे ही सवाल पूछने चाहिए, जिनका केवल एक मतलब न हो।
फ्लाइंगआरती: कुछ खास नहीं। कॉलेज में समय का पता ही नहीं चलता। मैंने कुछ नए दोस्त भी बनाए हैं। लेकिन ज्यादा नहीं।
गोपालकोटाफैक्टरी: कोई खास दोस्त?:-) मैंने अंत में सोच-समझकर स्माइली लगाई थी। इससे मेरे सवाल के पीछे छिपी जिज्ञासा और गुस्सा दोनों छुप गए।
फ्लाइंगआरती: कम ऑन, गोपी।
तो, अब वह मुझे मेरे निकनेम से पुकारने लगी थी।
उसका मूड अच्छा हो रहा था।
गोपालकोटाफैक्टरी: इट्स ओके। बताओ ना। नहीं बताओगी? तुम्हारे बेस्ट फ्रेंड का नाम?
फ्लाइंगआरती: पता नहीं। तुम बहुत अपसेट हो जाते हो।
मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। मैं एक बार में एक अक्षर ही टाइप कर पा रहा था।
गोपालकोटाफैक्टरी: बताओ ना। मैं सुनना चाहता हूं।:-):-):-)
मैंने इतनी सारी स्माइली इसलिए लगा दीं, ताकि वह बात करने में कंफर्टेबल महसूस करे।
फ्लाइंगआरती: वेल, कोई खास है।
मुझे लगा जैसे जंग लगे लोहे का एक खंजर मेरे सीने में घोंप दिया गया हो। लेकिन मैंने अपने दर्द को छुपाया और टाइप किया।
गोपालकोटाफैक्टरी::-) फ्लाइंगआरती: तुम उसे जानते हो।
गोपालकोटाफैक्टरी::-) फ्लाइंगआरती: वास्तव में, तुम उसे बहुत अच्छी तरह जानते हो।
गोपालकोटाफैक्टरी: कहो ना, कौन है?:-) फ्लाइंगआरती: मिस्टर बीएचयू, और कौन?
खंजर अब मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े कर दे रहा था।
मैंने अपने दांतों को कसकर भींच लिया।
गोपालकोटाफैक्टरी: रियली?:-) मैं खुद से कह रहा था: गहरी सांसें लेते रहो, स्माइली लगाते रहो।
फ्लाइंगआरती: हां, वह पागल है। यमला पगला राघ_ ा्व!!! उसने मुझे फंसा ही लिया।
गोपालकोटाफैक्टरी: तो .. तुम दोनों एक-दूसरे के करीब हो?
फ्लाइंगआरती: कुछ-कुछ।
अब मैं स्माइली नहीं लगा पा रहा था।
गोपालकोटाफैक्टरी: कुछ-कुछ का मतलब?
फ्लाइंगआरती: अरे, ऐसे सवाल मत पूछो।
गोपालकोटाफैक्टरी: तुमने वह सब कर लिया है?
फ्लाइंगआरती: हाऊ चीप, गोपी। नहीं, अभी नहीं।
गोपालकोटाफैक्टरी: मतलब?
फ्लाइंगआरती: मतलब, आलमोस्ट... ओह, मुझे एम्बैरेस मत करो।
गोपालकोटाफैक्टरी: व्हाट द फक?
फ्लाइंगआरती: एक्सक्यूज मी???
गोपालकोटाफैक्टरी: मैं तो समझता था तुम्हारी इन सब बातों में दिलचस्पी नहीं है।
फ्लाइंगआरती: किन बातों में?
गोपालकोटाफैक्टरी: तुम कहती थीं कि तुम केवल फ्रेंडशिप ही चाहती हो। मेरे साथ। किसी के भी साथ।
फ्लाइंगआरती: मैंने ऐसा कहा था क्या? पता नहीं।

बस, सब कुछ होता चला गया।

गोपालकोटाफैक्टरी: सब कुछ बस यूं ही कैसे होता चला गया? क्या तुमने बस यूं ही अपने कपड़े उतार दिए थे?

मेरा टेम्पर लेट आया था और अब मेरा रिमोट कंट्रोल उसी के हाथ में था।

फ्लाइंग आरती: वॉच योर लैंग्वेज।

गोपालकोटाफैक्टरी: क्यों? तुम क्या कोई भली सावित्री हो? यू आर बिहेविंग लाइक अ स्लट।

उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने अपनी बात जारी रखी।

गोपालकोटाफैक्टरी: क्या तुम मुझे बता सकती हो क्यों? क्या इसीलिए, क्योंकि उसके पास जेईई रैंक है?

फ्लाइंग आरती: शट अप, गोपाल। मेरा और उसका रिश्ता बहुत खास है।

गोपालकोटाफैक्टरी: रियली? ऐसा कौन-सा खास रिश्ता है? क्या तुमने उसे ब्लो जॉब दिया? कहां पर? उसके होस्टल में या कानपुर में?

उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैं समझ गया कि मैं कुछ ज्यादा ही कह गया था। खैर, आप चैट पर भेजी किसी लाइन को अन-डू नहीं कर सकते। और मैं उससे फिर माफी नहीं मांगना चाहता था।

मैं उसके जवाब का इंतजार करता रहा।

तीन मिनट बाद मेरी स्क्रीन पर एक मैसेज फ्लैश हुआ — फ्लाइंगआरती इज ऑफलाइन।

मैंने अपनी स्क्रीन रिफ्रेश की। मुझे एक और नोटिफिकेशन मिला — फ्लाइंगआरती इज नो लॉन्गर अ कॉन्टैक्ट।

उसने मुझे अपनी फ्रेंड लिस्ट से निकाल दिया था।

'तुम्हें और वक्त चाहिए?' कैफे ओनर ने मुझसे पूछा।

'नहीं, अब इसकी कोई जरूरत नहीं होगी,' मैंने कहा।

जिस दिन आरती ने मुझसे कॉन्टैक्ट खत्म कर दिया, उसी दिन से मैंने अपनी रोज की प्रैक्टिस शीट्स पर काम करना बंद कर दिया। अब मैं माइबार कैफे भी नहीं जाता था। अब मैं हर रात को अपने घर के बाहर सड़क पर चमन चाय वाले के यहां बैठा रहता था।

एक हाथ में चाय के प्याले और दूसरे में वर्कशीट्स थामे स्टूडेंट्स लकड़ी की मेजों पर बैठे रहते थे। लेकिन मैं अपने साथ कोई रीडिंग मटेरियल लेकर नहीं जाता था। मैं बस वहां बैठा-बैठा वक्त काटता रहता, चाय पीता रहता और आने-जाने वाले लोगों को ताकता रहता था।

और एक दिन मेरे पास इतने पैसे भी नहीं बचे कि मैं उस दुकान पर कुछ ऑर्डर कर सकूं।

'आई एम सॉरी,' मैंने दुकान मालिक चमन से कहा, 'मैं कल तक पैसों का बंदोबस्त कर लूंगा।'

तभी एक अजनबी व्यक्ति आगे बढ़ा और उसने दुकानदार को दस रुपए थमा दिए। 'चिल', उसने मुझसे कहा।

'ओह, थैंक्स,' मैंने कहा।

'बंसल?' उसने चेंज लेते हुए पूछा?

'कैरियर पाथ,' मैंने कहा। 'मैं तुम्हें कल पे कर दूंगा। मैं अपना वॉलेट घर भूल आया था।'

'रिलैक्स,' उसने कहा और अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। 'मेरा नाम प्रतीक है। मैं रायपुर से हूं।'

अपने खुरदुरे चेहरे के कारण वह आईआईटी एस्पिरेंट से ज्यादा आर्टिस्ट लग रहा था। 'रिपीटर?' प्रतीक ने पूछा।

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी।

'क्विटर,' उसने कहा।

'मतलब?'

'कोटा को आजमाकर देख लिया। बात नहीं बनी।

लेकिन अब भी दिमागी सुकून के लिए यहीं भटक रहा हूं।'

मैं हंस पड़ा। 'मेरी एआईईईई में 50 हजारवीं रैंक थी। मैंने सोचा यदि मैं एक बार फिर कोशिश करूं तो शायद बात बन जाए।'

'क्या वाकई तुम ऐसा करना चाहते हो?' प्रतीक ने कहा।

मैं चुप रहा। हम दुकान के बाहर लकड़ी के स्टूलों पर बैठ गए।

'तुम्हें देखकर लगता है कि तुम भी जल्द ही एक क्विटर बनने वाले हो,' उसने कहा।

'मैं ठीक हूं। बस जरा मायूसी है। कैरियर पाथ का अगला इंस्टॉलमेंट ड्यू है, लेकिन अब मेरे पापा के पास ज्यादा पैसा नहीं है।'

'तो वापस लौट जाओ,' प्रतीक ने कहा। उसने सिगरेट जलाई और मुझे ऑफर की। मैंने मना कर दिया।

'मैं ऐसा नहीं कर सकता। पापा की सारी उम्मीदें मुझ पर टिकी हैं। वे कहीं से पैसा उधार लेकर मुझे भिजवाएंगे।'

प्रतीक ने अपना सिर झुका लिया और सिगरेट का धुंआ उगलने लगा।

'मैं टॉप-25 परसेंटाइल तक पहुंच गया था,' मैंने कहा। मैं अपने कोटा में होने को जस्टिफाई करना चाह रहा था।

'पहुंच गए थे यानी? तुम तो अब भी कोर्स कर रहे हो ना?'

'पिछले कुछ हफ्तों में मेरे प्रदर्शन में गिरावट आई है।'

'क्यों?'

'कुछ खास नहीं,' मैंने चाय की चुस्की ली।

प्रतीक ने अपनी चाय खत्म की और एक और प्याले का ऑर्डर दिया। 'लड़की का चक्कर है?' उसने पूछा।

'मैं तुम्हें अभी जानता भी नहीं। मैं तुम्हारे दस रुपए चुका दूंगा, लेकिन अब मेरी जांच-पड़ताल मत करो,' मैंने कहा।

'चिल, मैन, मैं केवल बात कर रहा हूं।' वह हंस पड़ा और मेरा कंधा थपथपाया।

मैं चुप रहा। मेरे जेहन में बोट पर बिताए उन लम्हों की तस्वीरें तैरने लगीं, जब आरती मेरे साथ हुआ करती थी। मैं किस तरह पतवार खेया करता था। वह किस तरह उसके बाद मेरी हथेलियों को सहलाया करती थी।

यह याद करके मैं अपने हाथ मलने लगा।

आई हेट हर, बट आई मिस हर।

प्रतीक ने एक भी शब्द कहे बिना दो सिगरेटें फूंक दीं।

'हां, लड़की का ही मामला है,' मैंने अनमने 'उसने तुम्हें छोड़ दिया?' उसने खीसें निपोरते हुए कहा।

'नहीं, वह कभी मेरी नहीं थी।'

'ऐसा हो जाता है। हम लूजर्स हैं। हमें चीजें आसानी से नहीं मिलतीं। मार्क्स, रैंक्स, गर्ल्स – हमारे लिए कुछ भी पाना आसान नहीं है।'

'हां, हर कोई हमें गया-गुजरा समझता है, फिर चाहे कोटा की कोचिंग क्लासेस हों या हमारे शहर की कोई बदमाश लड़की,' मैंने कहा।

'बदमाश लड़की, ऐं? तुम तो मजेदार इंसान जान पड़ते हो?' प्रतीक ने हाई-फाइव करते हुए कहा।

'अब मुझे घर चले जाना चाहिए।'

'हमारा कोई घर नहीं होता। हम हवा में लटके हुए हैं। कोई घर नहीं, स्कूल नहीं, कॉलेज नहीं, जॉब नहीं।

बस कोटा।' उसने आंख मारते हुए कहा।

प्रतीक रेजोनेंस में पढ़ता था और वह सेकंड-टाइम रिपीटर था। वह पहली बार भी क्विटर बन चुका था और इस बार भी वह कोटा से जाने का पूरा मन बना चुका था। हम दोस्त बन गए। हर रात चमन चाय वाले के यहां हमारी मुलाकात होती।

लेकिन एक दिन ऐसा लगा कि शायद चाय का सहारा काफी नहीं था। मिस्टर पुरी ने मुझे अपनी क्लास से निकाल बाहर कर दिया था।

'अगर उन्होंने तुम्हें बाहर जाने को कह दिया तो क्या हुआ? यह कोई रियल कॉलेज तो है नहीं,' प्रतीक ने कहा।

'मुझे झपकी लग गई थी। लेक्चर बड़ा बोरिंग था,' मैंने कहा।

वह हंस पड़ा।

'मैंने आज उन्हें उनका दूसरा इंस्टॉलमेंट भी दे दिया, इसके बावजूद वे मेरे साथ ऐसा सलूक कर रहे हैं,' मैंने कहा।

'चिल, आज हमारा काम केवल चाय से नहीं चलेगा।' प्रतीक उठ खड़ा हुआ। हम चाय की दुकान से बाहर चले आए।

'हम कहां जा रहे हैं?'

'मेरे घर,' उसने कहा।

प्रतीक का रूम देखकर लगता नहीं था कि वह कोटा के किसी हार्डवर्किंग रिपीटर का रूम है। किताबों से ज्यादा तादाद बीयर की बोतलों की थी। पेन से ज्यादा सिगरेट के बट्स थे।

दीवारों पर रेजोनेंस के सर्कुलर्स के बजाय अधनगी लड़कियों के पोस्टर्स थे।

'तुम तो यहां वाकई सेटल डाउन हो गए हो,' मैंने कहा।

'नहीं, अगर मैं वाकई यहां सेटल हो सकता तो हो ही जाता। लेकिन इस साल के बाद मेरे पैरेंट्स मुझे पैसे नहीं देने वाले,' उसने कहा। उसने अपने कबर्ड से ओल्ड मोंक की एक बोतल निकाली। उसने मेरे लिए नीट रम की एक ड्रिंक बनाई। उसका स्वाद बहुत खराब था।

'इस साल के बाद क्या करोगे?' मैंने पूछा।

'कुछ नहीं। बस मेरे पैरेंट्स असलियत से वाकिफ हो जाएंगे। दोनों टीचर्स हैं। मैं उम्मीद करता हूं पिछले दो सालों में अपनी जिंदगी की आधी सेविंग्स मुझ पर खर्च कर देने के बाद वे यह समझ ही जाएंगे कि उनका बेटा किसी भी एंट्रेंस एग्जाम को क्रैक नहीं कर सकता।'

'यदि तुम मेहनत करो तो तुम कर सकते हो,' मैंने कहा और अपनी ड्रिंक को अपने से दूर ही रखा।

'नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता,' प्रतीक ने ठोस तरीके से कहा। 'सिलेक्शन रेट तीन प्रतिशत से भी कम है। हममें से अधिकांश स्टूडेंट्स इन टेस्ट्स को भी ट्रैक नहीं कर सकते। लेकिन आखिर यह बात हमारे पैरेंट्स को कौन समझाए? एनीवे, अपनी ड्रिंक एक ही शॉट में खत्म कर दो।'

रम का स्वाद किसी गर्म और कड़वी दवाई की तरह था। मैंने जैसे–तैसे उसे अपने गले के नीचे उतारा। मैं आरती को भुला देना चाहता था। कभी–कभी किसी बुरे अहसास को एक और बुरे अहसास से ही रिप्लेस किया जा सकता है।

मैंने एक और ड्रिंक मांगी और उसके बाद एक और।

जल्द ही आरती का ख्याल मुझे इतना परेशान नहीं कर पा रहा था।

'तुम उसे प्यार करते थे?' प्रतीक ने कहा।

'प्यार क्या होता है?'

'प्यार वह होता है, जो आईआईटी एग्जाम क्लीयर करने पर आपके पैरेंट्स आपके लिए महसूस करते हैं,' उसने कहा।

हमने हाई–फाइव किया। 'मेरे ख्याल से मैं उसे प्यार ही करता था,' मैंने थोड़ी देर से कहा।

'कितने समय तक?' उसने एक सिगरेट सुलगा ली।

'आठ साल।'

'होली शिट! क्या तुम दोनों की मुलाकात अस्पताल में पैदा होने के बाद ही हो गई थी?' प्रतीक ने कहा।

मैंने सिर हिला दिया। अगले तीन घंटे तक मैं उसे अपनी एकतरफा प्रेमकहानी के बारे में बताता रहा। उस दिन से, जब मैंने उसका टिफिन चुरा लिया था, उस दिन तक, जब उसने आखिरी बार मेरे हाथों को सहलाया था और फिर हाल ही में जब उसने मुझे अपनी कॉन्टैक्ट लिस्ट से निकाल बाहर कर दिया था।

प्रतीक चुपचाप सुनता रहा।

'तो, तुम्हें क्या लगता है? कुछ कहो,' मैंने कहा।

मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि वह अभी तक जाग रहा था।

'तुम जब तक चाहे बातें कर सकते हो, मैन!' उसने बची–खुची रम भी मेरी ड्रिंक में उड़ेल दी।

'सॉरी,' मैंने सकुचाते हुए कहा। 'क्या मैं तुम्हें बोर कर रहा था?'

'इट्स ओके। उसे भूलने की कोशिश करो। उसे विश करो कि वह उस जेईई वाले लड़के के साथ खुश रहे।'

'मैं उसे नहीं भूल सकता। जिस दिन से उसने मुझसे बात करना बंद कर दिया, तबसे मैंने एक दिन भी पढ़ाई नहीं की है।'

'डोंट वरी। तुम्हें और कोई लड़की मिल जाएगी। हर लड़के को कोई न कोई लड़की मिल ही जाती है। लास्ट रैंकर्स को भी। तुम्हें क्या लगता है इंडिया की इतनी बड़ी आबादी बस ऐसे ही है?'

'मैं कभी शादी नहीं करूंगा,' मैंने कहा।

'फिर क्या करोगे? अपने हाथ से ही शादी कर लोगे?' प्रतीक ठहाका लगाकर हंस दिया।

लड़के किसी काम के नहीं होते। वे रिलेशनशिप्स के बारे में बात करने की अपनी नाकाबिलियत को ऊटपटांग जोक्स के पीछे छुपाने की कोशिश करते हैं।

'अब मुझे चलना चाहिए,' मैंने कहा।

उसने मुझे रोका नहीं। वह फर्श पर पड़ा था और इतना थक चुका था कि उसमें अपने बिस्तर तक जाने की भी हिम्मत नहीं रह गई थी। मैं बाहर निकलने को हुआ कि वह पीछे से चिल्लाया, 'जिंदगी पर अपनी पकड़ ढीली मत करो, मैन।'

पकड़। हां, यह सही शब्द है। इन एंट्रेंस एग्जाम को क्रैक करने की ट्रिक यही है कि हम उन पर अपनी पकड़ बना लें। इसके लिए एक गेमप्लान जरूरी है।

हम किन विषयों में मजबूत हैं, किनमें कमजोर हैं। क्या हम टीचर्स के साथ मिलकर उन कमजोरियों को दुरुस्त कर रहे हैं? क्या हम मॉक–टेस्ट्स में अपनी तरक्की का आकलन कर रहे हैं? क्या हम दिनभर एग्जाम के सिवाय और कुछ नहीं सोचते हैं? क्या हम जल्दी–जल्दी नहाते और खाना खाते हैं ताकि हमारे पास पढ़ाई करने का और समय हो? यदि इन सभी सवालों का जवाब हां है, तभी हम कह सकते हैं कि हमारी पकड़ मजबूत बनी है। कामयाब होने का बस यही एक तरीका है। निश्चित ही, हम उन कुछ टैलेंटेड स्टूडेंट्स में से भी एक हो सकते हैं, जिन्हें कामयाब होने के लिए ज्यादा पढ़ने की जरूरत नहीं होती।

लेकिन हमारे पैरेंट्स के मीडियोकर जीन्स के कारण हममें से अधिकतर इस तरह के टैलेंटेड स्टूडेंट्स नहीं होते। कितनी अजीब बात है कि ऐसे सड़े हुए जीन्स डोनेट करने वाले हमारे पैरेंट्स को ही यह समझने में सबसे ज्यादा वक्त लगता है कि उनका बेटा आइंस्टाईन का क्लोन नहीं है।

मेरी पकड़ से दूरी बना लेने के कम से कम तीन महीनों तक ऐसा ही रहा। प्रतीक मेरा नया और इकलौता दोस्त बन गया था। मैं क्लासेस अटेंड करता था, लेकिन हैंगओवर के कारण मेरे लिए बेंजीन स्ट्रक्चर्स या रेडियोएक्टिव आइसोटोप्स को समझना कठिन हो गया था। मैं प्रैक्टिस शीट्स पर काम करने की कोशिश करता था, लेकिन फोकस नहीं कर पाता था। टीचर्स अब मुझे क्विटर मानने लगे थे और उन्होंने मुझ पर ध्यान देना बंद कर दिया था। मैं एक सकर–स्टूडेंट बन गया था, उन नाउम्मीद स्टूडेंट्स में से एक, जिन्हें केवल इसीलिए आने की इजाजत दी जाती थी, क्योंकि उन्होंने कोचिंग सेंटर को इसके पैसे चुकाए थे।

एक और मुसीबत थी। मेरा खर्चा बढ़ गया था, क्योंकि अब मुझे रम के लिए भी पैसे चुकाने पड़ते थे।

प्रतीक ने मुझे कुछ समय तक ट्रीट दी, लेकिन उसके बाद उसने मुझसे कहा कि मैं अपने हिस्से के लिए पे करूं। मैं जानता था कि आखिरी इंस्टॉलमेंट के पैसे चुकाने के लिए बाबा ने उधार लिया था और अब उनके पास बिल्कुल पैसा नहीं था। बहरहाल, मेरे पास और कोई विकल्प नहीं रह गया था।

एक रात मैंने एसटीडी बूथ से अपने घर फोन लगाया।

'सॉरी बाबा, मैं पिछले हफ्ते फोन नहीं लगा पाया,' मैंने कहा।

'ठीक है। तुम मन लगाकर पढ़ाई कर रहे हो ना?'

बाबा ने कहा। उनकी आवाज बहुत कमजोर लग रही थी।

'बाबा, एक छोटी–सी प्रॉब्लम है,' मैंने कहा।

'क्या?'

'मुझे कुछ नई किताबें चाहिए। मैथ्स के लिए उनसे अच्छी कोई किताबें नहीं हैं।'

'तुम उन्हें किसी से ले नहीं सकते क्या?'

'मुश्किल है,' मैंने कहा। 'सभी अपनी किताबें अपने पास ही रखना चाहते हैं।'

बाबा चुप हो गए। मैं भी चुप रहा और एक साथ इतने सारे झूठ बोल देने के बाद दम लेने की कोशिश करता रहा।

'कितने पैसे चाहिए?'

'दो हजार। इंपोर्टेड किताबें हैं।'

'ओके।'

'आपके पास पैसा है, बाबा?'

'एक हफ्ते में भेज दूं?'

'आपने कितना लोन लिया है, बाबा?' मैंने कहा।

'पचास हजार,' उन्होंने कहा। मैंने तुम्हें तीस हजार भेज दिए थे, लेकिन घर की छत दुरुस्त कराने के लिए मुझे भी कुछ पैसों की जरूरत थी।

'और आपके मेडिकल बिल्स?'

'अस्पताल का मुझ पर बीस हजार रुपए का कर्ज चढ़ चुका है।'

'यानी आपको वैसे भी कुछ और पैसा उधार लेना ही था?'

'शायद।'

'जो चाहे, भेज दीजिए। अब मैं चलता हूं, यह महंगा कॉल है,' मैंने कहा। मैं इस मुश्किल इम्तिहान को जल्द से जल्द खत्म कर देना चाहता था।

'तुम सिलेक्ट तो हो जाओगे ना, गोपी?'

'हां, हां, मैं हो जाऊंगा।'

मैंने रिसीवर नीचे रख दिया। मुझे बहुत बुरा लग रहा था। मैंने तय किया कि और मेहनत से पढ़ाई करूंगा।

मैं फिर से 25 परसेंटाइल में जगह बनाऊंगा और फिर टॉप 5 तक भी जाऊंगा। मैंने तय किया कि मैं पूरी रात पढूंगा। लेकिन, मुझे रम की तलब भी लग रही थी।

जल्द ही मेरा निश्चय कमजोर साबित हुआ। मैं प्रतीक के घर गया और रात का अधिकतर वक्त वहां गुजार दिया। मुझे कोई भी चीज पढ़ाई करने के लिए तैयार नहीं कर पा रही थी। फिर मेरा जन्मदिन आया।

11

मेरा जन्मदिन मेरे कोटा आने के पांच महीने बाद आया था। मैंने इसे कोई स्पेशल डे नहीं माना था और मैंने सोचा था कि मैं रोज की तरह क्लासेस अटेंड करूंगा।

लेकिन, मेरी बर्थडे वाली रात मिस्टर सोनी ने मेरे दरवाजे पर दस्तक दी।

'कोई फोन पर है और तुम्हारे बारे में पूछ रहा है।'

उनकी नींद में डूबी हुई आवाज सुनाई दी।

'इस वक्त कौन होगा?' मैंने कहा। मैं हैरान था।

'बाबा?'

'कोई लड़की है,' मिस्टर सोनी ने कहा। 'और हैप्पी बर्थडे, बाय द वे।'

'थैंक्स,' मैंने कहा और फोन उठा लिया। आखिर कौन हो सकता था? मैंने सोचा। कैरियर पाथ की कोई टीचर? क्या मैंने कुछ गलत कर दिया था?

'हैप्पी बर्थडे, गोपाल।' आरती के अद्भुत शब्द मेरे कानों में इस तरह पड़े, जैसे कोटा की गर्म दोपहर में बारिश हो जाए। मेरे भीतर भावनाएं उफन रही थीं।

मेरी खुशी का कोई पारावार न था।

'आरती?' मैं अपने आंसुओं को नहीं रोक सका और वे मेरे गालों पर ढुलक पड़े।

'तो तुम अब भी मेरी आवाज पहचानते हो? मैंने तो सोचा था कि मैं कुछ देर गेसिंग गेम खेलूंगी। हम बात कर सकते हैं? मैं तुम्हें डिस्टर्ब तो नहीं कर रही?'

मैं आरती से बातचीत करने के इस दृश्य की हजारों बार कल्पना कर चुका था। मैंने सोचा था कि यदि उसने मुझे कभी फोन लगाया तो मैं उसके साथ रूखा व्यवहार करूंगा, जैसे कि मुझे कोई परवाह न हो कि वह कौन है और क्या है। या मैं ऐसा दिखावा करूंगा कि मैं बहुत व्यस्त हूं। निश्चित ही, वह तमाम ड्रेस रिहर्सल एक झटके में हवा हो गई। 'नहीं, नहीं, आरती,' मैंने कहा। 'तुम मुझे बिल्कुल डिस्टर्ब नहीं कर रही हो।'

मैंने कई महीनों से इससे बेहतर महसूस नहीं किया था। आखिर बर्थडे साल में एक बार ही क्यों आता है?

'तो, बर्थडे पर कुछ खास करने का इरादा है?'

आरती ने कहा।

'नॉट रियली। शायद किसी दोस्त के साथ डिनर पर जाऊं।'

'दोस्त? डेट, क्यों?' उसने अपनी चिर–परिचित शरारती आवाज में कहा।

'प्रतीक। वह लड़का है,' मैंने कहा।

'ओह, ओके,' आरती ने कहा। 'दैट्स नाइस।'

'मुझे पिछली बार की चैट के लिए खेद है।'

वह चुप रही।

'मुझे वे सारी बातें नहीं कहनी थीं। लेकिन तुमने कॉन्टैक्ट ही बंद कर दिया...' 'आज तक मुझसे किसी ने इस तरह बात नहीं की।'

'आई एम सॉरी।'

'इट्स ओके। एनीवे, आज तुम्हारा बर्थडे है। मैं नहीं चाहती कि तुम खराब महसूस करो।'

'राघव कैसा है?' मैंने कहा। मैं अपने आपको रोक नहीं पा रहा था। मैं उनके रिलेशनशिप स्टेटस के बारे में जानने के लिए बेकरार था।

'वह अच्छा है। उसने बीएचयू में अपना पहला सेमेस्टर पूरा कर लिया है।'

'तब तो वह मजे कर रहा होगा।'

'नहीं, उतना नहीं। इन फैक्ट, अब वह कैम्पस की मैग्जीन का संपादन करता है। वह उसी के बारे में बात करता रहता है।'

'दैट्स ग्रेट,' मैंने कहा। उसने मुझे अभी तक उन दोनों के रिश्तों के बारे में नहीं बताया था। मैं भी पिछली बार की तरह बहुत उतावला नजर नहीं आना चाहता था।

'वह बहुत बेहतरीन इंसान है, गोपाल। तुम्हें देखना चाहिए कि वह दुनिया के लिए कितना कुछ कर गुजरना चाहता है।'

मुझे इस बात से कोई सरोकार नहीं था कि राघव दुनिया के लिए कितना कुछ कर गुजरना चाहता था। मैं बस यही चाहता था कि वह दुनिया के एक इंसान को मेरे लिए छोड़ दे। 'मैंने तो कभी नहीं कहा कि वह बुरा व्यक्ति है,' मैंने कहा।

'गुड, और मैं उसके साथ खुश हूं। यदि तुम एक दोस्त के रूप में मेरी फिक्र करते हो तो तुम्हें इसे स्वीकार करना चाहिए।'

'क्या हम दोस्त हैं?' मैंने पूछा।

'यदि हम दोस्त नहीं होते तो क्या मैं तुमसे अभी बातें कर रही होती?' उसने कहा।

मैं उसे बताना चाहता था कि उसने मुझसे पिछले तीन महीनों से बात नहीं की थी। खैर, यदि लड़कियों के सामने उनके द्वारा कही गई बात से उलट सबूत पेश किए जाएं तो वे बहुत अपसेट हो जाती हैं।

'येस, आई गेस,' मैंने कहा और चुप हो गया। फिर मैंने कहा। 'तो हम बातें कर सकते हैं?'

'हां, बशर्ते तुम मुझे अनकंफर्टेबल महसूस न कराओ।

और...'

'और क्या?'

'राघव और मेरे रिश्ते को एक्सेप्ट कर लो।'

'क्या मेरे पास कोई और चॉइस है भी?' मैंने कहा।

'दैट्स द पॉइंट। मैं चाहती हूं कि तुम खुशी–खुशी इसे एक्सेप्ट कर लो। यदि तुम्हें अपने सपनों की लड़की मिल जाए तो मुझे भी बहुत खुशी होगी।'

तो ये ही बात थी, राघव उसके सपनों का लड़का था।

जंग लगा चाकू मेरे भीतर और गहरे धंसने लगा।

मुझे समझ नहीं आया कि क्या कहूं। 'मैं एक्सेप्ट करता हूं,' मैंने थोड़ी देर बाद कहा। मैं एक बार फिर उससे दूर नहीं होना चाहता था। उससे बातचीत बंद होने के बाद कोटा में मेरी जिंदगी नर्क जैसी हो गई थी।

'कूल, क्योंकि मैं तुम्हें मिस करती हूं,' उसने कहा, 'एक दोस्त की तरह।' उसने इस आखिरी वाक्य को जोर देकर कहा।

लड़कियां हमेशा इस तरह की बातें करती हैं। वे यह ध्यान रखती हैं कि उनके द्वारा कही गई बात के आधार पर बाद में उन्हें मुश्किल में न डाला जा सके।

जैसे कि यदि मैं उसे कहता, 'तुम्हीं ने तो कहा था कि तुम मुझे मिस करती हो,' तो वह तपाक से कहती, 'लेकिन मैंने यह भी कहा था कि एक दोस्त की तरह मिस करती हूं!' जैसे कि हम किसी अदालत में हों।

लड़कियों को समझ पाना मुश्किल है। मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि कैरियर पाथ के जेम्स भी लड़कियों को समझने में नाकाम साबित होते।

'यू देयर?' उसने पूछा और मेरे विचारों का सिलसिला टूट गया।

'हां,' मैंने कहा।

'ओके, अब मुझे जाना है। हैप्पी बर्थडे अगेन!'

'थैंक यू, बाय। मैं तुमसे बात करूंगा या चैट करूंगा...' मैंने कहा और रुक गया।

'मैं तुम्हें बाद में चैट में एड कर लूंगी,' वह हंस पड़ी।

'सॉरी अगेन,' मैंने कहा।

'डोंट बी स्टुपिड, बर्थडे बॉय। यदि तुम यहां होते तो मैं तुम्हारे गाल खींच लेती,' उसने कहा।

तो, उसने एक बार फिर वही हरकत कर डाली – इस तरह की प्यारभरी बातों से मुझे कंफ्यूज करना। वह मुझे पसंद करती थी या नहीं? अरे हां, उसका प्यार तो राघव है, मैंने खुद को याद दिलाया।

'चैट सून,' उसने कहा और फोन रख दिया।

मैं इतना अच्छा महसूस कर रहा था कि मेरी डेस्क पर रखी फिजिक्स सॉल्यूशंस गाइड भी मुझे सायक लग रही थी। मैं पढ़ाई करना चाहता था। मैं जीना चाहता था।

कैरियर पाथ इस बात को कभी नहीं समझ पाएगा कि मैं एक बार फिर उसकी मोस्ट–इम्पूव्ड लिस्ट तक कैसे पहुंचा। आरती ने फिर से मन लगाकर पढ़ाई करने में मेरी बहुत मदद की थी। शायद, चैट में उसका यह पूछ लेना ही काफी होता था कि 'आज तुम्हारा दिन कैसा गया?' मुझे भी यह अच्छा लगता था कि मैं उसके लिए जवाबदेह हूं और मैं उसे बताता था कि मेरा दिन कितना अच्छा बीता। मैं उसे क्लास में पढ़ाए जाने वाले इक्वेशंस, टीचर्स द्वारा मुझे दिए जाने वाले फीडबैक (खास तौर पर पॉजिटिव फीडबैक) और मेरे द्वारा देर रात तक पढ़ाई करने के बारे में बताता था।

कहीं न कहीं, मैं अब भी उसे इंप्रेस करना चाहता था। मैंने ख्याल कभी नहीं छोड़ा कि वह अपना मन बदल सकती है। मेरे भीतर के मिस्टर आशावादी ने हार नहीं मानी थी।

शायद, वह चैट पर कभी मुझे बताए कि राघव के साथ उसकी बन नहीं रही है, या शायद वह किस तरह मुझसे अपने बॉयफ्रेंड से भी ज्यादा लगाव महसूस करती है।

बहरहाल, उसने ऐसी कोई बात नहीं की। हालांकि कभी–कभी ऐसा जरूर लगता कि वह ऐसा कुछ कहने ही वाली है। एक बार उसने मुझे बताया कि राघव बहुत अडियल है। राघव ने अपने कॉलेज की मैग्जीन की पब्लिकेशन डेडलाइन के कारण उसे दो बार मूवी डेट के लिए डिच कर दिया था। मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता था कि कोई लड़का आरती के साथ 0होने का मौका कैसे गवा सकता है। किसी स्टुपिड मैग्जीन की डेडलाइन तो छोड़ो, मैं आरती के लिए कैरियर पाथ का मॉक–टेस्ट भी छोड़ सकता था।

लेकिन मैंने उसे यह नहीं कहा। मुझे अपनी जगह पता थी। मैं, जो कभी राघव से अपनी तुलना नहीं कर सकता था।

एक शाम मैंने चैट पर उसे अपनी क्लास परफॉर्मेंस के बारे में बताया।

गोपालकोटाफैक्टरी: तो मैं 20वें नंबर तक पहुंच गया हूं।

फ्लाइंगआरती: 20वां क्या?

गोपालकोटाफैक्टरी: क्लास में मेरा परसेंटाइल।

इसका मतलब है कि 80 फीसदी क्लास ने मुझसे खराब प्रदर्शन किया। यह मेरा अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है!

फ्लाइंगआरती: वॉव! कूल!

गोपालकोटाफैक्टरी: हालांकि मुझे अब भी एक लंबा सफर तय करना है।

फ्लाइंगआरती: तुम अपनी मंजिल जरूर हासिल कर लोगे। तुम्हारे पास समय है।

गोपालकोटाफैक्टरी: समय तो खैर ज्यादा नहीं है।

जेईई और एआईईईई दो महीने से भी कम समय बाद हैं।

फ्लाइंगआरती: यू विल बी फाइन।

गोपालकोटाफैक्टरी: आई होप सो। कोर्स के बीच में मैं थोड़ा पिछड़ गया था।

फ्लाइंगआरती: कैसे?

गोपालकोटाफैक्टरी: बस यू ही। लैक ऑफ फोकस।

एनीवे, मैं अब जल्द से जल्द कोटा से चले जाना चाहता हूं।

फ्लाइंगआरती: मैं जानती हूं... मुझे भी तुम्हें देखे लंबा समय हो गया है। मिस यू।

गोपालकोटाफैक्टरी: क्या वाकई?

फ्लाइंगआरती: ऑफ कोर्स। देखो, राघव ने मुझे 'चक दे इंडिया' दिखाने का वादा किया, लेकिन नहीं दिखाई। यदि तुम यहां होते तो मैं तुम्हारे साथ फिल्म देख सकती थी।

गोपालकोटाफैक्टरी: तुम मेरे साथ फिल्में देखने चलोगी?

उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने पांच मिनट वेट किया।

गोपालकोटाफैक्टरी: ???

गोपालकोटाफैक्टरी: यू देअर?

उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैं सोचने लगा कि मैंने कहीं कोई गलत बात तो नहीं कह दी। मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। पांच मिनट बाद मैंने फिर लिखा।

गोपालकोटाफैक्टरी: हे, यू अपसेट? यदि मैंने कुछ गलत कह दिया तो उसके लिए सॉरी... तुम्हें... फ्लाइंगआरती: हे, सॉरी...

फ्लाइंगआरती: बॉयफ्रेंड का फोन आया था। माफी मांग रहा था। उसका काम पूरा हो गया है। हम मूवी देखने जा रहे हैं!!

गोपालकोटाफैक्टरी: ओह, दैट्स ग्रेट।

फ्लाइंगआरती: तुम क्या कह रहे थे... वेट। ऑफ कोर्स, जब तुम लौट आओगे तो हम साथ–साथ फिल्में देख सकते हैं। और तुम सॉरी क्यों बोल रहे हो?

गोपालकोटाफैक्टरी: कुछ नहीं। बस मुझे लगा कि... फ्लाइंगआरती: रिलैक्स। ओके, अब मुझे तैयार होना है।

गोपालकोटाफैक्टरी: फाइन।

फ्लाइंगआरती: मैं इतना खूबसूरत दिखना चाहती हूं कि वह मेरे चेहरे से नजरें न हटा पाए। नहीं तो वह हमारी डेट पर भी अपने आर्टिकल्स की प्रूफ रीडिंग करता रहेगा।

गोपालकोटाफैक्टरी: ओके। अब मुझे भी पढ़ाई करनी चाहिए।

फ्लाइंगआरती: दो महीने और। फिर हम सब मिलकर खूब मौज–मस्ती करेंगे।

गोपालकोटाफैक्टरी: येस। थैंक्स।

फ्लाइंगआरती: बाय। XOXOXOX और फ्लाइंगआरती ने लॉग आउट कर दिया।

मैं धीमे कदमों से चलता हुआ घर लौट आया।

आखिर मेरी जिंदगी में किताबों के अलावा और कुछ नहीं रह गया था। मैंने कोशिश की कि मैं थिएटर में एक–दूसरे का हाथ थामे राघव और आरती की कल्पना न करूं। मैं सोचने लगा कि क्या मुझे आरती से बातचीत जारी रखनी चाहिए। लेकिन, मुझे निराशा की वह गर्त याद आती थी, जिसमें मैं उससे पिछली बार बातचीत बंद होने के बाद पड़ गया था। पूरी तरह नर्वस ब्रेकडाउन होने से तो यही बेहतर है कि दिल पर छोटी–मोटी चोट पड़ती रहे।

कैरियर पाथ के इंस्ट्रक्टर्स ने हमें कहा था कि हम रात आठ बजे ही सो जाएं। यह जेईई एग्जाम से पहले की शाम थी। हमारी आखिरी क्लास में मोटिवेशनल स्पीचेस हुईं। बैंसल–जी ने महात्मा गांधी से लेकर मुहम्मद अली तक के उदाहरण दिए। ये वे लोग थे, जिन्होंने मुश्किल हालात का सामना करने के बावजूद कभी हार नहीं मानी। मैंने हवा में मुहम्मद अली की तरह मुक्का लहराया और गांधी की तरह सधे हुए कदमों से इंस्टिट्यूट से बाहर चला आया। मेरा मकसद था दुनिया के सबसे कठिन एंट्रेंस एग्जाम्स में से एक को क्रैक करना। घर जाते वक्त मैंने दो लोगों को फोन लगाया, जो मुझे गुड लक विश कर सकते थे।

'मेरे गोपी, मेरी बेस्ट विशेश हमेशा तुम्हारे साथ हैं।

कल तुम्हारे पास एक मौका है कि तुम अपने परिवार के नाम को मशहूर बना सकते हो,' बाबा ने कहा।

'थैंक यू बाबा,' मैंने कॉल की अवधि कम रखते हुए कहा।

फिर मैंने आरती का नंबर घुमाया।

'हैलो?' एक पुरुष स्वर ने मुझे चौंका दिया। वह आवाज उसके पिता जैसी नहीं लग रही थी।

'क्या मैं प्लीज आरती से बात कर सकता हूं?' मैंने कहा।

'श्योर, आप कौन बोल रहे हैं?' उस व्यक्ति ने पूछा।

'गोपाल।'

'हाय, गोपाल। इट्स राघव,' उस व्यक्ति ने कहा।

मेरे हाथ से फोन लगभग छूटकर गिर पड़ा। 'राघ_ाव?' मैंने कहा। मैंने लगभग एक साल से उससे बात नहीं की थी।

मुझे नहीं पता था कि राघव को आरती और मेरे बारे में कितना पता था। खासतौर पर उससे हुई मेरी झड़प और फिर उसके बाद हमारी बातचीत फिर शुरू होने के बारे में। मैंने अपने लहजे को न्यूट्रल ही बनाए रखा।

'बीएचयू में कैसा लग रहा है?'

'अभी तक तो सब ठीक है। बीएचयू किसी भी दूसरे कॉलेज जैसा ही है। बस यहां बेहतर सुविधाएं हैं। तुम कैसे हो?'

'कल जेईई है। तुम अंदाजा लगा सकते हो।'

'पता है। मेरा कॉलेज भी एक सेंटर है। तुम तब से यहां एक बार भी नहीं आए?'

'आखिरी मिनट तक मेरी क्लासेस चलती रहीं। फिर, कल से मेरा एआईईईई फाइनल रिफ्रेशर भी शुरू हो रहा है।'

'मुझे तो खुशी है कि मैं इस सब से पार पा चुका,' राघव ने हंसते हुए कहा। वह मुझे चिढ़ाना नहीं चाहता था, लेकिन मुझे बुरा लगा। जब कोई व्यक्ति इनडायरेक्टली भी आपके कमजोर हिस्से पर चोट करता है तो दर्द होता है।

'उम्मीद करता हूं कि मैं भी जल्द ही इससे पार पा जाऊं,' मैंने कहा।

'तुम उसे क्रैक कर लोगे। आरती ने मुझे बताया था कि तुम्हारी पढ़ाई अच्छी चल रही है।'

तो वे दोनों मेरे बारे में बात करते हैं, मैंने सोचा।

'किसी फ्रंट पेज पर छिंट करता है। फिर किस्मत का भी साथ मिलना चाहिए।'

'सच बात है,' राघव ने कहा।

एक मिनट तक अजहज-सी खामोशी पसरी रही। यह उसकी गलती थी, क्योंकि वह यह भूल गया था कि मैंने आरती से बात करने के लिए फोन लगाया था।

'तो, आरती है?'

'अरे हां, एक सेकंड होल्ड करो।'

मुझे उसकी खिलखिलाहट सुनाई दी। मैंने सोचा कहीं राघव ने मेरे बारे में कोई जोक तो नहीं सुनाया।

'हे! बेस्ट ऑफ लक, जेईई बॉय,' आरती ने कहा।

'थैंक यू। मुझे इसकी जरूरत है।'

'मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करने विश्वनाथ मंदिर गई थी,' आरती ने कहा।

'वाकई?'

'हां। और मैं इस आलसी राघव को भी अपने साथ ले गई थी,' उसने कहा और फिर हंस पड़ी। 'हम अभी-अभी लौटे हैं... हे, राघव स्टॉप... स्टॉप... होल्ड ऑन, गोपाल।'

जैसे कि मैंने उनके इस प्राइवेट हंसी-ठट्ठे को सुनने के लिए यह लॉन्ग डिस्टेंस कॉल लगाया हो। मैंने सुना कि आरती राघव से कह रही थी कि वह उसकी नकल न करे, लेकिन शायद राघव के पास करने के लिए कोई और बेहतर काम न था।

'हैलो?' मैंने साठ सेकंड्स के बाद कहा।

'हे, सॉरी,' आरती ने अपने आपको संभालते हुए कहा। 'ओके, अब मैं उसे अपने से दूर कर सकी हूं।

गोपी, तुम एग्जाम सेंटर पर सुपर-कॉन्फिडेंट होकर जाओगे, प्रॉमिस?'

'हां,' मैंने किसी आज्ञाकारी बच्चे की तरह कहा।

जब वह मुझसे इस तरह अधिकार के साथ बात करती थी तो मुझे अच्छा लगता था।

'मैं चाहती हूं कि तुम यह महसूस करो कि तुम जिंदगी में जो चाहे हासिल कर सकते हो। क्योंकि मैं जानती हूं तुम ऐसा कर सकते हो,' आरती ने कहा।

'मैं तुम्हें नहीं हासिल कर सकता', मैं उससे कहना चाहता था। इसके बावजूद, मुझे अच्छा लगा कि उसने बिग टेस्ट से पहले मेरा हौसला बढ़ाया। 'एआईईईई खत्म होते ही मैं सीधे वाराणसी की ट्रेन में सवार हो जाऊंगा।'

'हां, हम भी तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। जल्दी आना। रिजल्ट आने पर हम साथ मिलकर तुम्हारी जीत का जश्न मनाएंगे।'

'हां, यदि मैं जीत सका तो,' मैंने कहा।

'ऐसे मत सोचो। ऐसा सोचो कि तुम पहले ही जीत चुके हो,' आरती ने कहा, 'मेरे लिए।'

उसकी यह बात मेरे लिए दुनिया की सबसे खूबसूरत बात थी। हां, मैं जीतना चाहता था, उसी के लिए! शहर बदल गया था, लेकिन कोटा का जेईई एग्जाम सेंटर मुझे पिछले साल जैसी ही फीलिंग दे रहा था।

पैरेंट्स टैक्सी-लोड्स और ऑटो-लोड्स में आ रहे थे।

कुछ अमीरजादे एयरकंडीशनड कारों से आए थे। माएं अपने बच्चों के लिए पूजा-पाठ कर रही थीं, और यह विडंबना ही है कि इस पूजा-पाठ के ठीक बाद उनके बच्चों को विज्ञान में अपनी महारथ दिखानी थी। मेरे साथ मेरे परिवार का कोई व्यक्ति न था। मुझे परवाह भी नहीं थी। माथे पर तिलक और मुंह में दही से फर्क नहीं पड़ता। एक बार भीतर दाखिल होने के बाद आपको देशभर में एग्जाम दे रहे पांच लाख स्टूडेंट्स में से निन्यानवे फीसदी से कड़ा संघर्ष करना पड़ता है।

मेरी शुरुआत अच्छी हुई। मैंने कुछ शुरुआती प्रॉब्लम्स आसानी से सुलझा लीं। बीच में दिक्कतें आने लगीं। इनमें से कुछ सवाल उन चैप्टर्स के थे, जिन्हें तब पढ़ाया गया था, जब मैं शराब के नशे और निराशा की गर्त में हुआ करता था। कुछ प्रॉब्लम्स पर मैं उलझ गया। मुझे लगता था कि मैं उन्हें सॉल्व कर लूंगा और उनसे जूझते हुए मैंने दस मिनट बर्बाद कर दिए। मेरे ख्याल से मेरी प्रॉब्लम यह है कि मैं किसी भी चीज को आसानी से छोड़ नहीं सकता। जेईई में दस मिनट बहुत मायने रखते हैं। मैंने अपने आपको दिमागी रूप से लताड़ा और अगली प्रॉब्लम को सॉल्व करने में भिड़ गया। घंटी बजने से पहले मैं हर संभव प्रॉब्लम्स सॉल्व करता चला गया।

एग्जामिनर ने मुझसे मेरा पेपर छीन लिया, जबकि मैं उसे विनती कर रहा था कि वह मुझे आखिरी जवाब लिख लेने दे। उस एक प्रश्न को छोड़ने भर से मुझे 500 रैंक का नुकसान हो सकता था, बहरहाल... जेईई खत्म हो चुका था!

'एग्जाम कैसा रहा?' शाम को बाबा ने मुझसे पूछा।

मैंने एक ईमानदार जवाब देने की कोशिश की।

'पिछली बार से बेहतर।'

'गुड। लेकिन अभी रिलैक्स मत करो। एआईईईई पर पूरा ध्यान लगाओ।'

'जी हां,' मैंने कहा।

आरती से मैंने थोड़ी देर चैट की। जैसा कि जाहिर था, उसने मुझे फिर से हौसला दिलाया। कॉलेज में उसकी पढ़ाई में बाधा आने वाली थी। उसके पैरेंट्स ने अमेरिका में उसकी आंटी से मिलने के लिए एक फैमिली ट्रिप का प्लान बनाया था।

'यदि मैं कॉल या चैट नहीं कर पाई तो मैं तुम्हें शिकागो से ईमेल करूंगी,' उसने कहा। उसने मुझे एआईईईई के लिए गुड लक विश करते हुए कुछ मेल्स भी भेजे।

आरती ने मुझे यह भी बताया कि राघव की छुट्टियां चल रही थीं और वह किसी लोकल अखबार में इंटर्निंग कर रहा था।

'राघव के पिता इस बात से बहुत खुश नहीं हैं कि उनका इंजीनियर बनने वाला बेटा अखबार में काम कर रहा है। लेकिन मैं कहती हूं भला इसमें गलत ही क्या है?' आरती ने अपने एक ईमेल में लिखा।

जब मेरे ये दोस्त इंटरनेशनल हॉलीडे मना रहे थे और अपनी पसंद का काम कर रहे थे, तब मैं एआईईईई कर रहा था। एग्जाम्स अच्छे-से हुए, पिछली बार से कहीं बेहतर। बहरहाल, यह एक स्पीड-बेस्ड टेस्ट है। आप कभी नहीं बता सकते कि दूसरे लोगों की तुलना में आपने वाकई अच्छा प्रदर्शन किया है या नहीं। सत्तर फीसदी सवाल कर देने का मतलब होता है कि आप लकी हैं। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैंने पिछली बार से अच्छा प्रदर्शन किया है। खैर, मैंने अपनी आन्सर शीट सबमिट की और पैकिंग करने के लिए दौड़कर अपने घर पहुंचा। मुझे एक ट्रेन पकड़नी थी। मैं कोटा में अपनी सजा पूरी कर चुका था।

प्रतीक मुझे स्टेशन पर ड्रॉप करने आया। उसने कंपार्टमेंट में भारी बैग्स चढ़ाने में मेरी मदद की।

'तुम रायपुर कब जाओगे?' मैंने कहा।

'जब वे लोग मुझे लेने आएंगे,' प्रतीक ने बेपरवाही के साथ कहा और हाथ हिलाकर मुझे विदा दी।

वाराणसी

12

स्टेशन पर केवल वाराणसी के नजारे और गंध ही मेरा स्वागत करने पहुंचे। मैंने अपने आने के बारे में किसी को नहीं बताया था। मैं नहीं चाहता था कि बाबा स्टेशन तक पहुंचने के लिए ऑटो–रिक्शा पर पैसा खर्च करें। उन्होंने मुझे बताया था कि हम पर जो कर्ज और उसका ब्याज चढ़ा था, वह डेढ़ लाख के बराबर था।

लोन देने वाले तीन फीसदी प्रतिमाह की दर से ब्याज ले रहे थे।

'तुम एक अच्छा कॉलेज जॉइन करोगे तो हमें स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से सस्ती दरों पर लोन मिल जाएगा,' बाबा ने मुझसे कहा था।

मुझे गदौलिया की गंदी और भीड़भरी सड़कें भी खूबसूरत लग रही थीं। अपने शहर की तुलना किसी और कोई जगह से नहीं की जा सकती। लेकिन मैं आरती से मिलने के लिए बेचैन था। वाराणसी का चप्पा–चप्पा मुझे उसकी याद दिला रहा था। लोग मेरे शहर में ईश्वर की मौजूदगी का अहसास करने आते हैं, लेकिन मुझे तो यहां हर जगह वही नजर आती थी।

बहरहाल, मुझे सबसे पहले तो बाबा के पास ही जाना था।

मैंने अपने घर की घंटी बजाई।

'गोपाल!' बाबा मुझे देखते ही चीखे और अपनी दुबली–पतली बांहों में मुझे जकड़ लिया।

'मैंने वाराणसी और अपने घर को बहुत मिस किया, बाबा। मैंने आपको भी बहुत मिस किया।'

घर पहले से भी बेतरतीब नजर आ रहा था। शायद बाबा उसे इससे ज्यादा साफ–सुथरा नहीं रख सकते थे।

मैंने कमरा बुहारने के लिए झाड़ू उठा ली।

'अरे रुको, तुम एक साल बाद आए हो, यह क्या कर रहे हो?' बाबा ने मेरे हाथ से झाड़ू छीन ली।

हमने लंच में पतली पीली दाल और रूखी–सूखी चपातियां खाईं। लेकिन घर का बना खाना बहुत अच्छा लग रहा था। मेरे पिता ने पिछले काफी समय से किसी से बातचीत नहीं की थी, इसलिए वे मुझसे खूब देर तक बतियाते रहे।

'केस की हालत पहले जैसी ही है। घनश्याम तो सुनवाई पर भी नहीं आता है। मेरे ख्याल से उसे लगता है कि मैं जल्द ही मर जाऊंगा। उसके बाद चीजें उसके लिए बहुत आसान हो जाएंगी,' उन्होंने कहा।

'आप क्या बातें कर रहे हैं, बाबा?'

'वह सही है। आखिर मेरे शरीर की गाड़ी और कितने दिन चल सकती है?' उन्हें यह कहते–कहते खांसी का दौरा पड़ा।

'आपको कुछ नहीं होगा। मैं वकील से बात करता हूं।'

'कोई फायदा नहीं है। मेरे पास उसे देने के लिए पैसा नहीं है। वह भी अब मेरे फोन नहीं उठाता है।

यह सब भूल जाओ। तुम्हारे एंट्रेंस रिजल्ट्स कब आ रहे हैं?'

'एक महीने बाद,' मैंने अनमने पहले आरती को कॉल करना चाहिए या अपने हाथ धो लेने चाहिए।

मैंने जूठे हाथों से ही उसका नंबर घुमा दिया।

'हैलो?' उसने कहा।

'आज शाम नाव पर सैर करना चाहेंगी, मैडम?' मैंने कहा।

'गोपाल! तुम आ गए? कब आए?'

'एक घंटा पहले। हम कब मिल सकते हैं?' मैंने कहा। 'आज शाम घाटों पर?'

'येस, श्योर। अरे रुको। नहीं यार, मुझे राघव के कॉलेज जाना है। चाहो तो तुम भी साथ चल सकते हो।'

'नो थैंक्स।'

'क्यों नहीं? वह तुम्हारा भी तो दोस्त है।'

'मैं पहले तुमसे मिलना चाहता हूं।'

'हम रास्ते में बात कर लेंगे। मैं डैड की गाड़ी भिजवा रही हूं। ओके?'

मेरे पास कोई चारा नहीं था। मैं उसे देखने के लिए एक और दिन इंतजार नहीं कर सकता था।

'राघव माइंड तो नहीं करेगा?'

'उसे तो बहुत खुशी होगी। आज उसके लिए एक खास दिन जो है।'

'खास दिन?'

'मिलने पर तुम्हें बताऊंगी। वॉव, तकरीबन एक साल हो गया ना?'

'तीन सौ पांच दिन,' मैंने कहा।

'कोई बहुत पढ़ाकू बनकर लौटा है। सी यू।'

जब आप लाल बत्ती वाली किसी सरकारी सफेद एंबेसेडर गाड़ी में बैठते हैं, तो आपको पॉवर का अहसास हो जाता है। ट्रैफिक क्लीयर हो जाता है, पुलिस वाले न जाने क्यों आपको सलाम ठोंकते हैं, और आप सोचने लगते हैं कि क्या आपको सिविल सर्विसेस में नहीं होना चाहिए था?

कार मुझे डीएम के बंगले तक ले गई। पॉश कैंटनमेंट एरिया में दो एकड़ इलाके में बसी इस प्रॉपर्टी का ड्राइव–वे सर्पिलाकार था।

'आरती मैडम से कहना कि मैं कार में ही वेट कर रहा हूं,' मैंने ड्राइवर से कहा।

मैं उसके पैरेंट्स के साथ कोटा और आने वाले एंट्रेंस एग्जाम रिजल्ट्स के बारे में बात नहीं करना चाहता था।

उसकी गुलाबी सलवार–कमीज दूर से ही दिखाई दी।

जब वह करीब आई तो मैंने उसका चेहरा देखा। उसने लिप ग्लॉस के अलावा और कोई मेकअप नहीं किया था। पिछले तीन सौ पांच दिनों में मैंने इससे खूबसूरत कोई और चेहरा नहीं देखा था। उसने कार का दरवाजा खोला तो मैं अपनी भावनाओं पर काबू पाने की कोशिश करने लगा।

'हाय, आरती,' मैंने कहा।

'अरे इतने फॉर्मल क्यों हो रहे हो? यहां आओ,' आरती ने कहा और मुझे गले लगा लिया। उसका सितारेदार दुपट्टा मेरे सीने में चुभा और उसकी खुशबू मेरे जेहन में बस गई। 'राघव के कॉलेज,' उसने ड्राइवर से कहा और वह समझ गया।

'सो, हाऊ इज लाइफ? तुम्हें वापस आकर अच्छा नहीं लग रहा?' उसने कहा।

'यह मेरे लिए बहुत खुशी का दिन है। उम्मीद करता हूं अब मुझे कभी वाराणसी छोड़ने को मजबूर नहीं होना पड़ेगा।' मैंने उत्साह से कहा।

'बशर्ते तुम्हें आईआईटी न जाना पड़े,' उसने आंख मारते हुए कहा।

मैं कोई जवाब नहीं दे पाया।

'क्या? तुम आईआईटी के लिए तो वाराणसी छोड़ दोगे ना?'

मैंने खुद को संभाला। 'ऐसा तो है नहीं कि सब कुछ मेरे ही हाथों में हो। एनीवे, राघव के लिए आज का दिन खास क्यों है?'

'उसने कॉलेज की मैगजीन की शक्ल–सूरत ही बदल दी है। आज उसका नया इश्यू लॉन्च होने वाला है।'

'वह बी–टेक कर भी रहा है या नहीं? मुझे केवल उसकी मैगजीन के बारे में ही सुनने को मिलता है।'

आरती हंस पड़ी। गॉड, मैंने उसकी इस हंसी को कितना मिस किया। मैं उसकी हंसी को रिकॉर्ड करके बार–बार बजाना चाहता था।

'वह बी–टेक कर तो रहा है,' उसने मुस्कराते हुए कहा। 'हालांकि मैं उसे नकली इंजीनियर कहकर भी बुलाती हूं।'

'उसकी न्यूजपेपर इंटर्नशिप कैसी चल रही है?'

'नॉट बैड। हालांकि वे उसे ज्यादा लिखने का मौका नहीं देते। उन्हें लगता है कि उसके आर्टिकल्स...' वह सही शब्द की तलाश करने लगी, 'बहुत रेडिकल और अलग हैं।'

हम लंबे–चौड़े बीएचयू कैम्पस में दाखिल हो गए।

मैनिक्योर्ड लॉन्स और बिल्डिंगों के बेहतरीन रखरखाव के कारण वह किसी और देश की जगह लग रही थी।

खासतौर पर अगर वाराणसी के बाकी हिस्सों से उसकी तुलना की जाए तो।

'जी–14 हॉल,' आरती ने ड्राइवर से कहा।

हम पांच सौ सीटों वाले ऑडिटोरियम में दाखिल हुए, जो कि खचाखच भरा था। स्टेज पर नई मैगजीन के कवर का एक बड़ा–सा बैनर टंगा हुआ था।

राघव ने सब कुछ बदल दिया था – लेआउट, लुक, कंटेंट और यहां तक कि शीर्षक भी। कवर पर लिखा था बीएचयू–केएएमपी यानी भूकंप। मैंने देखा यूनिवर्सिटी के नाम का बहुत स्मार्टनेस के साथ उपयोग किया गया था। मैगजीन की टैगलाइन थी – दुनिया हिला दो!

आरती और मैं दूसरी कतार में बैठे थे। रोशनी मध्म थी और हॉल में संगीत गूंज रहा था। दर्शक उत्साह में शोर मचा रहे थे।

'राघव बैकस्टेज में है,' आरती ने कहा। 'उसे बहुत सारी चीजें दुरुस्त करनी हैं। वह हमसे बाद में मिलेगा।'

दस स्टूडेंट्स के एक समूह ने मंच संभाला। वे सिर से पैर तक काले लबादे से ढंके थे और उस पर अस्थिपंजरों की आकृति बनी थी। अल्ट्रा–वायलेट लाइट्स चालू हुईं और अस्थिपंजर चमकने लगे।

अब ऑडिटोरियम में माइकल जैक्सन का गाना 'मैन इन द मिरर' गूंजने लगा।

आई एम गॅना मेक अ चेंज फॉर वन्स इन माय लाइफ अस्थिपंजर एक्रोबैटिक डांस करने लगे। दर्शकों ने जोरदार अभिवादन किया। गाना चलता रहा।

इफ यू वाना मेक द वर्ल्ड अ बेटर प्लेस टेक अ लुक एट योरसेल्फ एंड देन मेक अ चेंज 'यह मैगजीन की लॉन्चिंग है या डांस शो है?' मैंने मुंह बिचकाते हुए कहा।

'पहले स्टूडेंट्स को एंटरटेन करो। उनका ध्यान खींचो और फिर हम जो कहना चाहते हैं, वे हमारी बात सुनेंगे,' आरती ने कहा।

'हुंह' मैंने कहा। उसका चेहरा अल्ट्रा वायलेट रोशनी में भीगा हुआ था।

'राघव भी यही कहता है – एंटरटेन एंड चेंज।'

मैंने कंधे उचका दिए। फिर मैंने मुड़कर स्टूडेंट्स को देखा। मैं सोचने लगा कि इनमें से कितनों ने कोटा में समय बिताया होगा। यदि आंकड़ों की ही बात करें तो उनमें से एक तिहाई उसी शहर से होकर आए होंगे, जहां से मैं आज आया था।

मैं अपने को यह सोचने से रोक नहीं पाया कि क्या हॉल की इतनी सारी सीटों में से मैं एक भी नहीं हासिल कर सकता?

अस्थिपंजरों का नाच खत्म हुआ। तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। काला सूट पहने एक लंबा–सा व्यक्ति स्टेज पर आया। 'गुड ईवनिंग, बीएचयू,' उसकी जानी–पहचानी आवाज सुनाई दी।

'यह तो राघव है!' मैंने हैरत से कहा। वह तो पूरी तरह बदल चुका था। मैंने इससे पहले उसे कभी सूट में नहीं देखा था। वह किसी रॉकस्टार जैसा लग रहा था।

उसका सधा हुआ शरीर देखकर लग रहा था कि उसने कॉलेज की स्पोर्ट्स सुविधाओं का भरपूर फायदा उठाया है। उसकी तुलना में मैं कोटा में एक साल बिताने के बाद थुलथुल और ढलती उम्र का नजर आ रहा था।

राघव ने अपनी स्पीच शुरू की।

'यह कोई मामूली कॉलेज नहीं है। आप मामूली स्टूडेंट्स नहीं हो। इसलिए हमारी मैगजीन भी मामूली नहीं हो सकती। लेडीज एंड जेंटलमेन, आई प्रेजेंट – भूकंप!'

स्पॉटलाइट मैगजीन के कवर पर गिरी। दर्शकों ने जोरदार स्वागत किया। आरती ने भी जोर से ताली बजाई। वह बिना पलकें झपकाए स्टेज की ओर निहार रही थी।

'दुनिया बदल चुकी है। हमारे कॉलेज, हमारे शहर, हमारे देश को भी बदलने की जरूरत है,' राघव ने अपनी बात जारी रखी। 'उन्हें कौन बदलेगा? हम।

इसकी शुरुआत हम आज यहां से करते हैं। हम दुनिया को हिलाकर रख देंगे!'

दर्शकों ने फिर जोरदार तालियां बजाईं। वे राघव के शब्दों से ज्यादा उसकी आवाज से उत्साहित थे।

राघव की एडिटोरियल टीम के स्टूडेंट्स ने स्टेज पर भूकंप–भूकंप कहना शुरू कर दिया। दर्शक भी उनके सुर में सुर मिलाने लगे।

'हम वे बातें छापेंगे, जिन्हें छापने की किसी को हिम्मत नहीं होती। वे मसले, जो सीधे–सीधे हमें प्रभावित करते हैं। कोई बकवास नहीं,' राघव ने कहा।

एडिटोरियल टीम नीचे उतरी और मैगजीन की कॉपियां बांटने लगी।

राघव ने अपनी स्पीच जारी रखी। 'हमारी पहली कवर स्टोरी हमारे होस्टल किचंस की हालत के बारे में है। हमारी सीक्रेट टीम वहां गई और तस्वीरें खींचकर लाई। जरा देखिए, आपका खाना कैसे तैयार किया जाता है।'

मैंने भूकंप के पन्ने पलटाए। तस्वीरों में दिख रहा था कि किचन के फ्लोर पर कॉकरोच हैं, मिठाइयों पर मक्खियां भिनभिना रही हैं और मेस में काम करने वाले अपने पैरों से आटा गूंथ रहे हैं। सभी स्टूडेंट्स में घृणा की लहर दौड़ गई।

'छि:,' आरती ने तस्वीरें देखते हुए कहा। 'अब मैं बीएचयू में कभी कुछ नहीं खाने वाली।'

'भूकंप हमारे कॉलेज को बदलकर रख देगा। ये तस्वीरें डायरेक्टर को भेज दी गई हैं,' राघव ने कहा।

'लेकिन यह मत समझिएगा कि भूकंप केवल गंभीर बातें ही करता है। हमने ढेर सारे जोक्स, कहानियां और कविताएं भी छापी हैं। हमने डेटिंग करने से लेकर रेज्यूमे बनाने तक की टिप्स भी दी हैं। हैप्पी रीडिंग।

लॉन्ग लिव बीएचयू!'

राघव के स्टेज से चले जाने के एक मिनट बाद तक स्टूडेंट्स तालियां बजाते रहे।

राघव ने आरती की ओर स्टेनलेस स्टील की एक प्लेट बढ़ाई, जिसमें ब्रेड की दो स्लाइस थीं। 'बटर टोस्ट।

यह क्लीन है, मैं प्रॉमिस करता हूं,' उसने उससे कहा।

हम कार्यक्रम खत्म होने के बाद बीएचयू कैंटीन में आए थे। आरती ने सैंडविच को डरते–डरते उठाया।

'कैंटीन ठीक है। प्रॉब्लम्स होस्टल के किचन में है,' राघव ने कहा। 'और अब वह भी साफ हो जाएगा।

गोपाल, खाओ।'

मैंने एक प्लेन पराठा ऑर्डर किया था। मैं उसे धीरे–धीरे खाता रहा। राघव ने आरती की सैंडविच उठाई और उसे एक कौर खिलाया। वह मुस्करा दी। मैं जल–भुन गया।

'तुम्हें कोटा कैसा लगा?' राघव ने मुझसे पूछा।

'हमारे यहां कोटा से ढेरों स्टूडेंट्स हैं।'

'यदि मैं एक अच्छे कॉलेज तक पहुंचने में कामयाब होता हूं, तो कोटा बहुत अच्छा है। अगर नहीं, तो यह दुनिया की सबसे खराब जगह है।'

'तुम कामयाब होओगे। तुम पिछले साल भी लगभग कामयाब हो ही गए थे।' राघव ने दाएं हाथ से अपने मसाला डोसा का एक कौर तोड़ा। उसके बाएं हाथ में भूकंप की एक कॉपी थी।

'तुम बदल गए हो, राघव,' मैंने कहा।

'कैसे?' उसने मेरी ओर देखा।

'यह मैगजीन और यह सब। किसलिए?'

'किसलिए? मुझे ऐसा करना अच्छा लगता है, इसलिए,' उसने कहा।

आरती ने कुछ नहीं कहा। वह बस हमें बातें करते देखती रही। मैं सोच रहा था कि उसके दिमाग में अभी क्या चल रहा है। क्या वह हम दोनों की तुलना कर रही थी? वेल, मैं हर लिहाज से राघव के मुकाबले कुछ नहीं था, सिवाय एक चीज के। उसे ज्यादा प्यार करने के लिहाज से। कोई भी व्यक्ति उसे इतना प्यार नहीं कर सकता था, जितना मैं करता था।

'हम किसी प्रोफेशनल इंजीनियरिंग कॉलेज में मैगजीन एडिट करने नहीं जाते हैं। लोग जी–तोड़ मेहनत करके यहां तक पहुंचते हैं, ताकि एक अच्छा जॉब पा सकें,' मैंने कहा।

'यह तो बहुत संकरी सोच हुई। जो चीजें हमारे आसपास हैं, उनके बारे में क्या? खाना सफाई से नहीं पकाया जाता। लैब्स में बाबा आदम के जमाने की मशीनें हैं। हमारे शहर की ही हालत देख लो। वाराणसी इतनी गंदी क्यों है? हमारी नदियों को कौन साफ करेगा?' राघव की काली आंखें आग उगल रही थीं।

'कम से कम हम तो नहीं कर सकते,' मैंने उसकी बात का विरोध करते हुए कहा। 'हमारे लिए तो अपनी जिंदगी की मुश्किलों से जूझना ही काफी है।'

राघव ने अपनी चम्मच उठाई और मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा, 'मैं इसी एटिट्यूड को बदल देना चाहता हूं।'

'रहने भी दो,' मैंने कहा। 'कोई कुछ नहीं बदल सकता। होस्टल वर्कर्स तुम्हारी मां की तरह खाना नहीं पका सकते। और वाराणसी हजारों सालों से दुनिया का सबसे बड़ा डंपिंग ग्राउंड बना हुआ है। हर कोई यहां अपने पापों को डंप करने आता है। क्या कभी कोई वाराणसी में रहने वाले हम जैसे लोगों के बारे में सोचता है, जो उनके द्वारा छोड़ी गई गंदगी के बीच रहते हैं?'

'बॉय्ज, क्या हम थोड़ा कम सीरियस हो सकते हैं?

मैं बोर हो रही हूं,' आरती ने कहा।

'मैं तो बस..' मैंने कहा।

'वह नहीं सुनेगा। वह जिद्दी है,' आरती ने कहा और राघव की नाक पर चिकोटी काट ली। मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई।

राघव ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और आरती ने उसे थाम लिया। फिर वह उठी और उसकी गोद में जा बैठी।

सभी का ध्यान हमारी ओर खिंच गया तो राघव सेल्फ कॉन्शियस हो गया। इंजीनियरिंग कॉलेजों में आमतौर पर इस तरह प्यार का सार्वजनिक प्रदर्शन देखने को नहीं मिलता। जो लोग प्यार करते हैं, वे कभी–कभी इस बात को समझ नहीं सकते कि वे दुनिया की नजरों में कितने स्टुपिड दिख रहे हैं।

'स्टॉप इट, आरती' राघव ने उसे धकेलते हुए कहा।

'क्या कर रही हो?'

...वह अपनी सीट पर चली गई। 'मिस्टर एडिटर, मुझे अपनी जिंदगी से एडिट मत करो, ओके?' उसने कहा।

मुझे लगा कि मैं उन्हें प्यार करते देखने के लिए ही यहां आया हूं। मैं आरती से इस तरह नहीं मिलना चाहता था। मैं यहां से कहीं दूर भाग जाना चाहता था।

'चलें?' मैंने आरती से कहा।

'श्योर, मुझे भी दस से पहले घर पहुंचना है।'

हमने डिनर पूरा किया और राघव ने बिल चुकाया।
'बाबा कैसे हैं?' राघव ने पूछा।
'बीमार हैं,' मैंने कहा, 'अब उनकी हालत और खराब हो गई है। मुझे लगता है वे मुझसे कुछ छुपा रहे हैं।'
'क्या?' आरती ने कहा।
'उन्हें ऑपरेशन की जरूरत है, लेकिन वे यह बात मानने को राजी नहीं होंगे। वे खर्च बचाना चाहते हैं।'
'यह तो बड़ी अजीब बात है,' राघव ने कहा।
'हां, दस साल पहले हमारे पास उस विवादित जमीन को बेचने का ऑफर था। यदि हम उसे औने-पौने दामों में बेच डालते, तब भी अपना खर्चा निकाल लेते।'
'वह तुम्हारी जमीन है। उसे सस्ते में क्यों बेचना चाहते हो?' राघव ने कहा।
'तुम्हारी बात सुनकर बाबा को खुशी होगी,' मैंने कहा।
हमें आता देखकर ड्राइवर ने कार स्टार्ट कर दी।
उसकी हेडलाइट की रोशनी में पार्किंग में खड़ी गाड़ियां नहा गईं।
'कार में बैठ जाओ, गोपाल। मैं एक सेकंड में आती हूं,' आरती ने कहा।
मैं कार में इंतजार करता रहा। हालांकि मैंने सोचा था कि मैं बाहर झांककर नहीं देखूंगा, लेकिन मैं खुद को रोक नहीं पाया। रंगीन शीशों से मैंने देखा कि वे दोनों एक पेड़ के पीछे गए। फिर उन्होंने एक-दूसरे को बांहों में भर लिया। राघव ने अपना चेहरा उसके चेहरे पर झुकाया। मुझे लगा जैसे मुझे मितली आ जाएगी।
वह पांच मिनट बाद आई। 'ज्यादा देर तो नहीं हुई?'
उसने लापरवाही से पूछा।
मैं चुप रहा। मैंने उससे नजरें नहीं मिलाईं। उसने ड्राइवर से चलने को कहा।
'नाइस इवनिंग, है ना?' आरती ने पूछा।
मैंने सिर हिला दिया।
'कैम्पस बहुत खूबसूरत है ना?' बीएचयू गेट्स से बाहर निकलते ही उसने कहा।
हम चुपचाप बैठे रहे। कार स्टीरियो में म्यूजिक बज रहा था। कैलाश खेर का गाना था, जिसमें टूटे पंखों वाले एक परिंदे के बारे में बताया जा रहा था, जो अब कभी नहीं उड़ सकेगा। गाना टूटे सपनों के बारे में था और इसके बावजूद अल्ला के बंदों से हंसने की उम्मीद कर रहा था।
मैंने एकाध बार नजर बचाकर उसके चेहरे की ओर देखा। उसके होंठों पर अब लिप ग्लॉस नहीं था। न चाहकर भी मैं उन दोनों के और अंतरंग क्षणों की कल्पना करने लगा।
'तुम ठीक तो हो?' आरती ने कहा।
'हुंह? हां, क्यों?' मैंने कहा।
'इतने चुप-चुप क्यों बैठे हो?'
'बाबा के बारे में सोच रहा हूं।'
उसने समझदारों की तरह सिर हिला दिया। लेकिन वह यह बात कभी नहीं समझ सकती थी कि लूजर्स के पास चाहे दिमाग हो या न हो, दिल जरूर होता है।

13

हफ्तों गुजरे और रिजल्ट्स का दिन और करीब आ गया। बाबा मुझसे भी ज्यादा बेचैन नजर आ रहे थे।
एक रात जब मैं उन्हें उनकी दवाइयां देने गया तो उन्होंने पूछा, 'रिजल्ट्स कब आ रहे हैं?'
'अगले हफ्ते,' मैंने कहा।
'आईआईटी?'
'उसके एक हफ्ते बाद,' मैंने कहा।
'यदि तुम आईआईटी तक पहुंचने में कामयाब हो जाओ तो बहुत अच्छा हो, है ना?' बाबा ने कहा।
उनकी आंखों में चमक थी।
मैंने उन्हें एक ब्लैंकेट ओढ़ा दी। 'बाबा, डॉक्टर ने कहा था कि आपको ऑपरेशन की जरूरत है?'
'डॉक्टर्स को ज्यादा बिजनेस चाहिए, और क्या?'
उन्होंने कहा।
'क्या हम घनश्याम ताया-जी से बात करें कि वे हमें जमीन के लिए जितना चाहें पैसा दे सकते हैं?' मैंने कहा।
'कोई फायदा नहीं है। वे नहीं सुनेंगे। वैसे भी, अब इस उम्र में ऑपरेशन करवाकर मैं क्या करूंगा?'
'आप कभी मेरी बात नहीं सुनते, बाबा।' मैंने सिर हिलाया और बत्ती बुझा दी।
'दुनिया खत्म नहीं हो गई है, गोपाल। ऐसा नहीं है,' उसने मेरा हाथ थामते हुए कहा। 'कुछ तो कहो।'
एआईईईई रिजल्ट्स के दिन आरती ने मुझे अपने घर बुलाया था। उसके पास इंटरनेट कनेक्शन था और मेरे द्वारा आग्रह करने के बावजूद वह मुझे अकेले रिजल्ट नहीं देखने दे रही थी।
मुझे उस लम्हे से जुड़ी एक-एक चीज अच्छी तरह याद है। कंप्यूटर टेबल पर लाल और काला एम्ब्रायडर्ड टेबलक्लॉथ, शोर करने वाला छत का पंखा, अनेक सरकारी ट्रॉफियां जो उसके पिता की थीं, काले रंग का लैपटॉप और वह स्क्रीन जिस पर मेरी रैंक दिखाई दे रही थी।
'44,342,' मेरे रोल नंबर के आगे लिखा था।
एक साल तक उन कोर्सेस से जूझने, जिनसे मैं नफरत करता था, एक धूलभरे शहर में अकेले रहने और अपने पिता को कर्ज में झोंक देने के बाद मैं केवल यही साबित कर पाया था कि मैं एक नाकाम आदमी हूं।
मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। मैं रोया नहीं। न ही मुझे गुस्से, डर, खीझ का अहसास हुआ। मुझे केवल इतना ही याद है कि आरती मेरे पास थी और मुझसे बात किए जा रही थी। खैर, मैं उसके शब्दों को समझ नहीं पा रहा था।
मैं इस तरह उठ खड़ा हुआ, जैसे मैं कोई जीवित व्यक्ति नहीं हूं।
'तुम ठीक तो हो ना?' आरती ने मुझे झकझोरते हुए कहा। मुझे लग रहा था कि वह, मैं, कंप्यूटर, पूरी दुनिया ही स्लो मोशन में चल रही है। 'जेईई के बारे में क्या?' उसने पूछा।
'वह तो और बुरा होगा। जेईई का पेपर अच्छा नहीं गया था।'
वह चुप हो गई। आखिर वह कहती भी तो क्या?
'मैं चलता हूं,' मैंने कहा।
'कहां जाओगे?' उसने पूछा। यह सबसे जरूरी सवाल था। हां, आखिर मैं कहां जा सकता था? घर?
और घर जाकर क्या मैं बाबा को यह बताता कि उन्होंने जितना पैसा कर्ज लिया था, वह मुझ पर बर्बाद हो गया है?
'मैं तुम्हारे साथ चलती हूं। मैं बाबा से बात कर सकती हूं।'
मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।
'आर यू श्योर?' उसने कहा।
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। दे भी नहीं सकता था।
तेज कदमों से मैं उसके घर से बाहर चला आया।
'कहां गए थे?' बाबा ने दरवाजा खोलते हुए कहा।
मैं सीधे अपने घर में चला गया। बाबा मेरे पीछे-पीछे चले आए।
'तुम एआईईईई रिजल्ट्स नहीं देखना चाहते?' उन्होंने पूछा।
मैं चुप रहा।
'तुमने कहा था कि आज रिजल्ट्स आएंगे।'
मैंने अब भी कोई जवाब नहीं दिया।
'तुम कुछ बोल क्यों नहीं रहे हो?'
मैंने बाबा की बेचैन आंखों में झांककर देखा।
'बुरी खबर है,' मैंने कहा।
बाबा ने घबराहट के साथ कहा, 'क्या?'

'जो सबसे बुरा हो सकता था, वह हो गया।'

'क्या?'

मैंने कंधे उचका दिए।

'एआईईईई के रिजल्ट्स कब आ रहे हैं?'

'रिजल्ट्स आ गए हैं,' मैंने कहा और लिविंग रूम में चला गया।

'और?' बाबा मेरे पीछे–पीछे चले आए और मेरे सामने आकर खड़े हो गए।

मैंने नजरें झुका लीं। बाबा ने कुछ पलों तक इंतजार किया।

चटाक! मुझे लगा मेरा दायां गाल झन्ना गया है।

उनकी उम्र और हालत को देखते हुए यह बहुत तगड़ा तमाचा था। दस साल में ऐसा पहली बार हुआ था कि उन्होंने मुझ पर हाथ उठाया हो। लेकिन मैं इसी के लायक था।

'कैसे?' बाबा ने कहा। 'तुमने कोटा में कुछ नहीं किया, है ना? कुछ भी नहीं।'

मेरी आंखों में आंसू भर आए और मेरे कान सनसनाने लगे। मैं उन्हें बताना चाहता था कि मैंने रात–रातभर जागकर असाइनमेंट्स किए हैं, दिनभर क्लासेस में बैठा रहा हूं, अपना परसेंटाइल सुधारा है।

इस बार मेरे पास एक बेहतर मौका था। लेकिन महज कुछ मार्क्स के कारण दस हजार रैंक का अंतर आ सकता है।

मैंने कुछ नहीं कहा। मैं बच्चों की तरह रोया, जैसे कि मेरे इस तरह पछताने से ही बाबा बेहतर महसूस करेंगे।

'अब हम पैसा कैसे चुकाएंगे?' बाबा ने कहा।

जितना मैंने सोचा था, वे उससे तेजी से व्यावहारिक सवालों पर उतर आए।

मैं उन्हें बताना चाहता था कि मेरी रैंक सुधरी है।

कैरियर पाथ के टीचर्स कहते थे कि मुझमें संभावना है।

हां, यह सच है कि कुछ समय के लिए मेरा ध्यान भटक गया था और शायद यही कारण रहा कि मैं कामयाब नहीं हो पाया। खैर, कोटा में इतने स्टूडेंट्स थे, वे सभी तो कामयाब हो नहीं पाए हैं। कैरियर पाथ के भी अधिकतर स्टूडेंट्स नाकाम रहे। वास्तव में वाराणसी का विनीत मुझसे पहले कोटा गया था, लेकिन वह भी कामयाब नहीं हो सका। लेकिन मैंने बाबा को यह सब नहीं बताया, केवल मुंह लटकाकर उनके सामने खड़ा रहा।

'क्या सोच रहे हो? शर्म आती है?' उन्होंने कहा और उन्हें खांसी का दौरा पड़ गया। उनका शरीर कांप रहा था और वे बहुत मुश्किल से अपने को संतुलित रख पा रहे थे।

'बैठ जाओ, बाबा,' मैं उन्हें थामने के लिए आगे बढ़ा। उनकी देह गर्म हो रही थी।

'मेरे करीब मत आओ।' उन्होंने मुझे दूर धकेल दिया।

'आपको बुखार है,' मैंने कहा।

'तो यह किसकी वजह से है?' उन्होंने कहा।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूं या क्या करूं। मैं खुद को इस काबिल भी महसूस नहीं कर पा रहा था कि दूसरे कमरे में जाकर उनकी दवाइयां ले आऊं। जब आप किसी इंसान के लिए तकलीफ का कारण बन जाते हैं, तो आप ज्यादा से ज्यादा इतना ही कर सकते हैं कि उसे अकेला छोड़ दें।

'मैं इस सबसे गुजर चुका हूं। द् मस्ट बी सो फक्ड,' विनीत ने मुझसे कहा।

हम अस्सी घाट पर बैठे थे। मैंने विनीत से एक सीक्रेट मीटिंग अरेंज की थी। मैं उसे बहुत अच्छे–से नहीं जानता था। कोटा जानने से पहले मैंने उसे बस कुछ मेल्स किए थे। लेकिन अभी ऐसा लगता था कि मेरे लिए उससे बेहतर साथी कोई दूसरा नहीं हो सकता। हां, आरती मेरे टच में रहती थी, मेरी खैरियत पूछती रहती थी और मेरे साथ बोट राइड पर भी जाती थी। लेकिन मेरे पास उसे कहने को कुछ नहीं था। मैं सोचता था कि गंगा में कूदकर जान दे दूं। राघव से तो मैं अब खुद ही दूर रहने की कोशिश करता था। मैं नहीं चाहता था कि आईटी–बीएचयू का ऐसा कोई व्यक्ति मुझे दिलासा दे, जिसे अपनी डिग्री की कद्र भी नहीं है।

विनीत मेरे जैसा ही मामूली लड़का था और मैं खुद को उसके साथ कंफर्टेबल महसूस करता था। उसने एक प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज जॉइन किया था।

'ताकि मैं लोगों को बता सकूं कि मैं बी–टेक कर रहा हूं,' विनीत ने कहा और हंस पड़ा। 'बस मैं किसी को अपने कॉलेज का नाम नहीं बताता। वैसे भी उसका नाम बहुत कम लोगों ने सुना है।'

मैंने घाट की सीढ़ियों से कुछ पत्थर चुने और उन्हें पवित्र नदी में उछालने लगा।

'यू विल बी फाइन, डयूड,' विनीत ने कहा। 'पूरी तरह फाइन तो नहीं, लेकिन अभी से बेहतर तो हो ही जाओगे।'

'प्राइवेट कॉलेजों में से किसी एक को तुमने कैसे चुना?' मैंने पूछा। इंजीनियरिंग कॉलेज दर्जनों की तादाद में थे और लगता था, जैसे हर हफ्ते नया कॉलेज खुल रहा हो।

'मैं कैरियर फेयर में गया। पूछताछ की। आरएसटीसी दूसरे कॉलेजों से बेहतर लगा। लेकिन मुझे नहीं लगता वह दूसरे कॉलेजों से बहुत ज्यादा अलग है।'

'आरएसटीसी क्या?' मैंने कहा।

'रिद्धि सिद्धि टेक्निकल कॉलेज। कॉलेज मालिकों का इसी नाम से साड़ी का बिजनेस भी है।'

'ओह,' मैंने कहा। मैं साड़ी और एजुकेशन के बीच कोई कनेक्शन बनाने की कोशिश कर रहा था।

'बड़ा बैकवर्ड नाम है ना? इसीलिए हम उसे केवल आरएसटीसी ही कहते हैं। यह ज्यादा कूल लगता है,' विनीत ने खीसें निपोरते हुए कहा।

'क्या इसके बाद जॉब मिल जाएगा?'

'यदि हम लकी हैं तो। सिक्स्टी परसेंट प्लेसमेंट्स हुई हैं। नॉट बैड।'

'यानी फोर्टी परसेंट स्टूडेंट्स का प्लेसमेंट नहीं होता?' मैंने कहा। मैं शॉक्ड था। यह तो कोटा से भी बदतर हो सकता है। अपनी डिग्री पाओ और उसके बावजूद कुछ हाथ नहीं लगा।

'आंकड़ों में हर साल सुधार आ रहा है। फिर, हम कोई जॉब मैनेज भी कर सकते हैं। कॉल सेंटर्स हैं, क्रेडिट कार्ड सेल्स है। दिमाग खुला रखो तो चीजें अपने आप सुलझ जाती हैं।'

'इंजीनियरिंग की पढ़ाई करके कॉल सेंटर जॉइन कर लें?'

'डयूड, इतने शॉक्ड मत होओ। ग्रेट इंडियन एजुकेशन रेस में हम लाखों दूसरे स्टूडेंट्स की तरह लूजर्स हैं। जो मिले उसमें खुश रहो। हां, यदि तुम कोई अमीरजादे हो, तो बी–टेक के बाद एमबीए करो। एक और कोशिश।'

'और यदि अमीरजादे न हों तो?' मैंने कहा।

विनीत ने कुछ नहीं कहा। मैंने थककर सारे पत्थर एक साथ गंगा में फेंक दिए। लो–रैंक्ड स्टूडेंट्स की तरह पत्थर पानी में डूबे और अपने पीछे कोई निशान नहीं छोड़ गए।

'अरे, मुझ पर नाराज मत होओ। ये सिस्टम मैंने नहीं बनाया।' विनीत ने मेरा कंधा थपथपाते हुए कहा। 'तुम जितने दिन तक बेकार बैठे रहोगे, उतना ही बुरा महसूस करोगे। सपना टूट गया। कोई भी कॉलेज जॉइन कर लो। कम से कम तुम दूसरे स्टूडेंट्स के साथ होओगे।'

'दूसरे लूजर्स के साथ,' मैंने कहा।

'अपने जैसे ही लोगों को इस तरह नीची नजरों से मत देखो,' विनीत ने कहा।

उसकी बात सच थी। 'आई एम सॉरी,' मैंने कहा।

'तुम्हारे बी–टेक के लिए कितने पैसे लगते हैं?'

'चार साल की पढ़ाई के लिए हर साल के एक लाख रुपए, होस्टल सहित।'

'फक,' मैंने कहा। 'यदि इसके बाद कोई जॉब मिलता भी है तो इतना पैसा कमाने में ही जाने कितने साल गुजर जाएंगे!'

'पता है। लेकिन फीस पैरेंट्स चुकाते हैं। फिर वे हर जगह जाकर डींगें हांकते हैं कि उनका बेटा इंजीनियर बनने वाला है। तुम भी चार साल तक के लिए झंझट से बच जाते हो। इस बारे में सोचना, यह बुरा तरीका नहीं है।'

'हमारे पास पैसा नहीं है,' मैंने सीधे–सपाट ढंग से कहा।

विनीत उठ खड़ा हुआ। 'तब तो, मेरे दोस्त, तुम्हारी बहुत मुसीबत होने वाली है।'

'जा रहे हो?' मैंने कहा।

'हां, कैम्पस वाराणसी से बीस किलोमीटर दूर है।

चीअर अप। तुमने जिंदगी को सबसे फक्ड–अप स्थिति में देख लिया है, यहां से अब हालात बेहतर ही होंगे।'

मैं भी उठ खड़ा हुआ और अपने ट्राउजर्स से धूल झाड़ने लगा। मुझे घर जाने में डर लग रहा था। बाबा ने तीन दिन से मुझसे बात नहीं की थी।

गदौलिया मेन रोड पहुंचने के लिए हम संकरी विश्वनाथ गली से होकर गुजरे।

'दो हफ्ते बाद डॉ संपूर्णानंद स्पोर्ट्स स्टेडियम में कैरियर फेयर होने वाला है,' विनीत ने कहा। 'वहां जाना। हो सकता है, तुम्हें वहां कुछ सस्ते कॉलेज मिल जाएं।'

'हमारे पास बिल्कुल पैसा नहीं है। हम गले–गले तक कर्ज में डूबे हैं,' मैंने कहा।

'वेल, तब भी एक बार जाने में तो कोई बुराई नहीं है। यदि तुम्हारी एआईईईई रैंक अच्छी है तो तुम्हें डिस्काउंट मिल सकता है, खासतौर पर नए कॉलेजों की ओर से।'

मैं घर चला आया। ताजी हवा में एक घंटा चहलकदमी करने के बाद मैं बेहतर महसूस कर रहा था। मैंने सोचा कि मुझे बाबा से महंगे कॉलेजों के बारे में बात नहीं करनी चाहिए। शायद

मुझे उनसे इस बारे में बात करनी चाहिए कि क्या मैं अब और पैसा खर्च करने के बजाय किसी जॉब के जरिये पैसा कमाना शुरू कर दूं।
लेकिन पहले मुझे उनकी नाराजगी तोड़नी होगी।
मैं उनके कमरे में गया। वे बिस्तर पर लेटे थे।
'मैं जॉब करना चाहता हूं, बाबा। कॉलेज जॉइन करने का फैसला करने से पहले मैं कुछ पैसा कमाना चाहता हूं।'
उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। मैंने अपनी बात जारी रखी, 'मैं समझता हूं कि आप नाराज हैं। आपकी नाराजगी वाजिब है। सिगरा में कैफे कॉफी डे खुलने जा रहा है। यह हाईक्लास कॉफी चेन है। उन्हें स्टाफ की जरूरत है। बारहवीं पास अप्लाई कर सकते हैं।'
मुझे जवाब में केवल पंखे की हल्की घरघराहट ही सुनाई दी।
'मैंने अप्लाई कर दिया है। मैं पूरी जिंदगी तो कॉफी शॉप में काम नहीं करूंगा ना। वे मुझे पांच हजार रुपया महीना देंगे। नॉट बैड, है ना?'
बाबा चुप रहे।
'यदि आप इसी तरह चुप्पी साधे रहे तो मैं मान लूंगा कि आप राजी हैं।'
मेरे यह कहने के बावजूद बाबा चुपचाप लेटे रहे। मैं चाहता था कि वे मुझ पर चिल्लाएं, नाराज हों, लेकिन कम से कम यह खामोशी तो टूटे।
मैं उन पर झुका। 'बाबा, मुझे इस तरह सजा मत दो,' मैंने कहा। मैंने उनकी बांह थामकर उन्हें हिलाया।
उनकी बांह ठंडी और बेजान थी। 'बाबा?' मैंने फिर कहा। उनकी देह अकड़ी हुई लग रही थी।
'बाबा?' और तब जाकर मैं समझ सका कि मैं अनाथ हो चुका था।

14

वाराणसी में होने का एक फायदा यह है कि यहां दाह संस्कार के लिए ज्यादा झंझट नहीं करनी पड़ती। डेथ इंडस्ट्री ही इस शहर को चलाती है। हरिश्चंद्र घाट के इलेक्ट्रिक शवदाह गृह में और दुनियाभर में जाने-माने मणिकर्णिका घाट पर सालभर में 45 हजार से ज्यादा लाशें जलाई जाती हैं यानी एक दिन में सौ से भी ज्यादा। केवल छोटे बच्चों और नाग के काटने से मरने वाले लोगों का दाह संस्कार नहीं किया जाता। आमतौर पर उनकी लाश को सीधे नदी में छोड़ दिया जाता है।
संस्कृत में कहा गया है काश्यां हि मरणान् मुक्तिः, जिसका मतलब है काशी में मरने वाला व्यक्ति सीधे मोक्ष प्राप्त करता है। हिंदू मानते हैं कि यदि उन्होंने काशी में प्राण त्यागे तो वे अपने आप स्वर्ग पहुंच जाएंगे, फिर उन्होंने धरती पर चाहे जितने ही पाप क्यों न किए हों। बड़ी अजीब बात है कि भगवान स्वर्ग में इस तरह की वाइल्ड कार्ड एंट्री देते हैं, लेकिन जो भी हो, कम से कम इससे मेरे शहर की रोजी-रोटी तो चलती है।
स्पेशलिस्ट वन-स्टॉप दुकानों में आपको जलाने की लकड़ियों से लेकर पुरोहितों और मृतक की अस्थियां रखने के लिए बर्तन तक मिल जाते हैं, ताकि मरने वाला व्यक्ति पूरी गरिमा के साथ अपनी अंतिम यात्रा पर निकले। मणिकर्णिका घाट पर दलाल विदेशियों को लुभाते हैं कि वे आकर अंतिम संस्कार देखें और पैसा देकर तस्वीरें खींचें। इससे भी उन्हें अतिरिक्त आय होती है। वाराणसी शायद दुनिया का इकलौता ऐसा शहर होगा, जहां मौत एक टूरिस्ट आकर्षण है।
लेकिन मेरे शहर का मौत से चाहे जो नाता रहा हो, इससे पहले मेरा कभी मौत से वास्ता नहीं पड़ा था।
मुझे अपनी पूरी जिंदगी में कभी किसी मृत देह का सामना नहीं करना पड़ा था। इसलिए मुझे समझ नहीं आया कि बाबा की मृत देह को देखकर पहले-पहल क्या प्रतिक्रिया करूं। मैं रोया नहीं। मैं रो नहीं सकता था। पता नहीं क्यों। शायद, क्योंकि मुझे बहुत गहरा झटका लगा था और मैं भावनात्मक रूप से भीतर से पूरा सूख चुका था। या शायद उनके अंतिम संस्कार के बाद भी मुझे एक और दुखद घटना के लिए तैयार रहना था यानी मेरे दूसरे एंट्रेंस एग्जाम का नतीजा।
शायद क्योंकि मुझे उनके अंतिम संस्कार के लिए बहुत काम करना था या शायद क्योंकि मुझे लगता था कि मैं उनका हत्यारा हूं।
मुझे पहले अंतिम संस्कार और फिर टी पूजा के लिए व्यवस्था करनी थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि किसे बुलाऊं। मेरे पिता के बहुत कम दोस्त थे। मैंने उनके कुछ पुराने स्टूडेंट्स को बुलाया, जो उनसे लगातार संपर्क में बने हुए थे। मैंने हमारे वकील दुबे अंकल को खबर की, किसी अन्य कारण के बजाय व्यावहारिक कारण से अधिक। वकील ने घनश्याम ताया-जी को बताया। ताया-जी ने जीवनभर मेरे पिता का खून चूसा था। लेकिन अब उनका परिवार बहुत सहानुभूति जता रहा था। उनकी पत्नी नीता ताई-जी मेरे घर आईं। उन्होंने मुझे देखा तो अपने हाथ फैलाए और फूट-फूटकर रो पड़ीं।
'इट्स ओके, ताई-जी,' मैंने अपने को उनके चंगुल से छुड़ाते हुए कहा। 'आपको खुद आने की जरूरत नहीं थी।'
'क्या कह रहे हो? पति का छोटा भाई तो बेटे जैसा होता है,' उन्होंने कहा।
जाहिर है, उन्होंने उस जमीन का कोई जिक्र नहीं किया, जो उन्होंने अपने 'बेटे' से हड़प ली थी।
'पूजा कब है?' उन्होंने पूछा।
'मुझे कुछ पता नहीं,' मैंने कहा। 'पहले मुझे अंतिम संस्कार करवाना होगा।'
'वह कौन करेगा?' उन्होंने पूछा।
मैंने कंधे उचका दिए।
'मणिकर्णिका पर दाह संस्कार के लिए पैसे हैं?'
उन्होंने पूछा।
मैंने सिर हिला दिया। 'हरिश्चंद्र घाट पर इलेक्ट्रिक शवदाह गृह ज्यादा सस्ता है,' मैंने कहा।
'इलेक्ट्रिक-विलेक्ट्रिक क्या? वह शवदाह गृह तो वैसे भी टूटा-फूटा रहता है। हम ठीक तरह से अंतिम संस्कार करेंगे। आखिर हम यहां किसलिए हैं?'
जल्द ही, घनश्याम ताया-जी भी अपने सगे-संबंधियों के साथ चले आए। उनके दो बेटे और दो बेटियां थीं।
सभी ने महंगे कपड़े पहन रखे थे। मैं किसी तरह से उनका रिश्तेदार नहीं लगता था। ताया-जी ने आते ही अंतिम संस्कार की पूरी जिम्मेदारी संभाल ली। उन्होंने और नाते-रिश्तेदारों को बुलाया। उन्होंने एक पुरोहित को बुलाया, जिसने अंतिम संस्कार करवाने के लिए दस हजार रुपयों के पैकेज की मांग की। ताया-जी ने उससे मोल-भाव किया और बात सात हजार में तय हुई।
अंतिम संस्कार के लिए भी मोल-भाव करना घिनौना लग रहा था, लेकिन यह करना जरूरी ही था।
ताया-जी ने पुरोहित को पांच-पांच सौ के कड़क नोट थमा दिए।
चौबीस घंटे बाद मैंने मणिकर्णिका घाट पर अपने पिता की चिता को अग्नि दी। हालांकि वे अब इस दुनिया में नहीं थे, फिर भी मुझे लग रहा था कि आग से उन्हें तकलीफ होगी। मुझे याद आया कि जब मैं बच्चा था, तब वे मुझे कैसे स्कूल जाने के लिए तैयार करते थे और मेरे बालों में कंघी करते थे... चिता से धुंआ उठने लगा और आखिरकार मेरी आंखें भर आईं।
मैं सुबकने लगा। आरती और राघव भी अंतिम संस्कार में आए थे। वे मेरे पास चुपचाप खड़े थे।
आधा घंटे बाद अधिकतर सगे-संबंधी जा चुके थे।
आग की लपटें धीरे-धीरे लकड़ियों को निगल गईं। मैं उसे देखता रहा।
मुझे लगा किसी ने मेरा कंधा थपथपाया है। मैंने पीछे मुड़कर देखा। पान के दाग लगे होंठों वाले दो मुस्टंडे मेरे पीछे खड़े थे। उनमें से एक की घनी मूंछें थीं और उसने उन्हें ऊपर की ओर ऐंठ रखा था।
'कहिए,' मैंने कहा।
मूंछों वाले मुस्टंडे ने चिता की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'क्या तुम इनके बेटे हो?'
'हां।'
'इधर आओ,' उसने कहा।
'क्यों?' मैंने कहा।
'इन्होंने मुझसे दो लाख रुपए का कर्ज लिया था।'
'घनश्याम ताया-जी तीन लाख रुपए देना चाहते हैं?,' मैंने दुबे अंकल से कहा। मैं शॉक्ड था।
उन्होंने उन दस्तावेजों के पन्ने पलटाकर देखे, जिन्हें उन्होंने मेरे लिए तैयार करवाया था। 'अगर तुम यहां दस्तखत कर दो तो तुम्हें तीन लाख रुपए मिल जाएंगे।
कर्ज देने वाले तुम्हारे इर्द-गिर्द मंडरा रहे हैं। वे खतरनाक लोग हैं। मैं तुम्हारी मदद करने की ही कोशिश कर रहा हूं।'
मैंने दस्तावेज को देखा, लेकिन मैं उसे समझ न पाया। 'तीन लाख तो बहुत कम हैं। उन्होंने एक अरसा पहले दस लाख का ऑफर दिया था,' मैंने कहा।
'हां, सही है। यह एक अरसा पुरानी ही बात है।
लेकिन तब तुम्हारे पिता ने वे पैसे लिए नहीं। अब वे जानते हैं कि तुम कुछ नहीं कर सकते। और तुम्हें पैसों की सख्त जरूरत है।'
मैं चुप रहा। दुबे अंकल खड़े हो गए। मैं सोचने लगा कि हमारा वकील आखिर किसके पक्ष में है।
'मैं समझ सकता हूं यह तुम्हारे लिए कठिन समय है। इस बारे में सोचना,' उन्होंने कहा।
डॉ. संपूर्णानंद स्पोर्ट्स स्टेडियम में एक बड़े-से टेंट में कैरियर फेयर लगा था। मैं वहां गया।
विनीत ने मुझे वहां जाने को मजबूर कर दिया था।
'वहां जाकर मेरे दोस्त सुनील से मिलना। वह इस आयोजन का [illegible] बारे में पता है।'

मै मुख्य टेंट में घुसा। हजारों स्टॉल्स के कारण वह किसी ट्रेड एक्स्पो जैसा लग रहा था। देशभर के प्राइवेट कॉलेज वाराणसी के स्टूडेंट्स को लुभाने की कोशिश कर रहे थे। कॉलेजों की प्रबधन संस्थाओं के सदस्य चेहरों पर मुस्कराहट लिए खड़े थे। स्टॉल्स के भीतर लगे बैनर्स में कैम्पस की तस्वीरें इस तरह दिखाई गई थीं, मानो वे रियल एस्टेट प्रोजेक्ट्स हों। जिन कॉलेजों की बिल्डिंग अभी बन ही रही थी, उन्होंने कलाकारों की कल्पनाशीलता का सहारा लिया था।

'बनकर पूरा हो जाने के बाद यह उत्तर प्रदेश का सबसे बेहतरीन कैम्पस होगा,' मैंने एक स्टॉल ऑनर को कुछ उत्सुक पैरेंट्स से कहते हुए सुना। लेकिन उसने यह नहीं बताया कि निर्माण के दौरान स्टूडेंट्स को किस तरह कांक्रीट मिक्सचर्स से घिरी कामचलाऊ कक्षाओं में पढ़ाई करनी होगी।

कुछ चलाऊ किस्म के पोस्टरों में कॉलेजों के नाम के साथ ही उनका चिह्न भी था। कॉलेजों के नाम तरह–तरह के थे, लेकिन वे अमूमन देवी–देवताओं या अमीर प्रमोटरों के ग्रांडपैरेंट्स के नाम पर आधारित थे।

हर कॉलेज के चुनिंदा फैकल्टी और स्टूडेंट्स अपने–अपने स्टॉल्स में अपनी संस्थाओं के चमकीले ब्रोशर्स लिए मिलते थे। सभी ने सूट पहन रखे थे और वे इस तरह खीसें निपोर रहे थे, जैसे वे फ्लाइट क्रू के सुप्रशिक्षित सदस्य हों। मेरे जैसे सैकड़ों लूजर स्टूडेंट्स एक स्टॉल से दूसरे तक बेचैनी के साथ आ–जा रहे थे। सत्तर फीसदी स्टॉल्स इंजीनियरिंग कॉलेजों के थे। बाकी के कॉलेज मेडिकल, होटल मैनेजमेंट, एविएशन एकेडमीज और बीबीए जैसे कुछ अन्य कोर्सेस के थे।

मैं श्री गणेश विनायक कॉलेज, या एसजीवीसी के स्टॉल पर दोपहर को पहुंचा। सुनील से मिलने के लिए यही जगह और यही वक्त तय हुआ था।

मैंने एसजीवीसी का ब्रोशर उठाया। कवर पर उसके मुस्कराते हुए स्टूडेंट्स की तस्वीर थी। कोटा के ब्रोशर्स के जेईई टॉपर्स में दिखाए जाने वाले लड़कों से भी ज्यादा खुश ये लड़के और उनकी लड़कियों से भी ज्यादा खूबसूरत ये लड़कियां लग रही थीं। ब्रोशर्स के बैक कवर्स पर इंस्टिट्यूट की सुविधाओं और फैकल्टी का इतना बखान किया गया था कि कोई आईआईटी डायरेक्टर भी शरमा जाए। बुकलेट में मुझे ऑफर किए गए प्रोग्राम्स की एक फेहरिस्त दिखाई दी। एसजीवीसी कंप्यूटर साइंस से लेकर मेटालर्जी तक सभी इंजीनियरिंग कोर्सेस पढ़ाने का वादा कर रहा था।

मैंने पूरा ब्रोशर पढ़ डाला। मैंने संस्थापकों का विजन और मिशन बताने वाले दावे पढ़े। मैंने शिक्षा पर कॉलेज का नजरिया भी पढ़ डाला और यह भी वे कैसे दूसरों से 'हटके' थे। मेरे पास से होकर गुजरने वाले कैरियर फेयर के दूसरे अनुभवी सदस्य मुझे देखकर मुस्करा देते। शायद मैं इकलौता ऐसा व्यक्ति था, जो वास्तव में इन दस्तावेजों को पढ़ रहा था।

सुनील ने मुझे एसजीवीसी के स्टॉल पर इन दस्तावेजों की पढ़ाई में तल्लीन पाया।

'गोपाल?' उसने अनुमान लगाते हुए कहा।

'हुह?' मैंने पीछे मुड़कर देखा। 'सुनील?'

सुनील ने मजबूती से मुझसे हाथ मिलाया। चुग्गीदाढ़ी और धूप का चश्मा उसके चेहरे का एक बड़ा हिस्सा घेरे हुए थे। उसने पर्पल शर्ट और टाइट ब्लैक जीन्स पहनी थी, जिस पर एक बड़ा–सा सिल्वर बकल था। 'व्हाट द हेल आर यू डूइंग?' उसने छूटते ही पूछा।

'ब्रोशर पढ़ रहा हूं,' मैंने कहा।

'आर यू स्टुपिड? फीस और प्लेसमेंट्स पेज पर जाओ। एवरेज सेलेरी देखो, फीस चेक करो। यदि दो साल की इंकम में लागत निकल आती है तो उसे शॉर्टलिस्ट करो, वरना आगे बढ़ो।'

'लेकिन टीचिंग मैथड्स के बारे में क्या? लर्निंग...' 'फक लर्निंग,' सुनील ने कहा और मेरे हाथों से ब्रोशर छीन लिया। मुझे लगा कि उसके हावभाव और बोलचाल टफ है। उसने स्टॉल पर बैठे एक स्टूडेंट से कैलकुलेटर लिया। 'देखो, ट्यूशन के पचास हजार, होस्टल के तीस हजार, और वे तुम्हें जो बेकार की चीजें खरीदने को कहेंगे, उनके लिए मान लो बीस हजार। तो तुम्हें चार साल तक हर साल एक लाख रुपए चुकाने हैं। एवरेज प्लेसमेंट डेढ़ लाख है। फक इट। लेट्स गो।'

'लेकिन...' मैं अभी कैलकुलेशन ही कर रहा था।

'मूव ऑन। यहां सैकड़ों स्टॉल्स हैं।'

हम अगले स्टॉल पर गए। लाल–सफेद बैनर पर लिखा था 'श्री चिंटूमल ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूट्स, एनएच2, इलाहाबाद।' एक छोटे–से नक्शे के जरिये कॉलेज की लोकेशन दिखाई गई थी। कॉलेज इलाहाबाद शहर से तीस किलोमीटर दूर था।

'मैं चिंटूमल नाम वाले किसी कॉलेज में पढ़ने नहीं जा सकता,' मैंने कहा।

'शट अप। तुम्हें अपने कॉलेज का नाम लेने की कोई जरूरत है भी नहीं।' सुनील ने एक ब्रोशर उठाया। चंद सेकंड में ही उसने वह पेज खोज निकाला, जो हमारे काम का था। 'ओके, यहां एक साल में सत्तर हजार का खर्च है। फाइनल प्लेसमेंट एक लाख चालीस हजार। देखो, यह हुई न कुछ समझदारी वाली बात।'

कोई चालीसेक साल का एक थुलथुल–सा व्यक्ति हमारे पास आया।

'हमारा प्लेसमेंट इस साल और बेहतर होगा,' उसने कहा। मेरा नाम ज्योति वर्मा है और मैं स्टूडेंट्स का डीन हूं।

मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी कि कोई डीन अपने कॉलेज का विज्ञापन इस तरह करेगा। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। सुनील ने तपाक से उससे हाथ मिलाया।

'हां, आपकी फीस भी उन लोगों से कम है,' मैंने कहा और श्री गणेश स्टॉल की ओर इशारा किया।

'उनके प्लेसमेंट नंबर्स भी फर्जी हैं। हमारे असली हैं।

हमारे किसी भी स्टूडेंट्स से पूछ लीजिए,' ज्योति ने कहा।

उसने अपने स्टूडेंट्स की ओर इशारा किया। तीन लड़के और दो लड़कियां, जिन्होंने अपने जीवन में पहली बार सूट पहने थे। वे सहमे–सहमे–से मुस्कराते रहे। मैंने चिंटूमल स्टॉल में कैम्पस की तस्वीरों पर नजर घुमाई।

श्री गणेश स्टॉल से एक व्यक्ति मेरे पास आया।

उसने मेरा कंधा थपथपाया।

'जी,' मैंने कहा।

'श्री गणेश से महेश वर्मा। क्या चिंटूमल ने हमारे बारे में कुछ निगेटिव कहा?'

मैंने उसकी ओर देखा। महेश भी चालीसेक साल का और थुलथुल था। वह बहुत कुछ ज्योति वर्मा जैसा ही दिखता था।

'उन्होंने कुछ निगेटिव कहा?' महेश ने फिर पूछा।

मैंने सिर हिला दिया।

'तुम चिंटूमल को कंसिडर कर रहे हो?' उसने कहा।

मैंने हामी भरी।

'श्री गणेश क्यों नहीं?'

'महंगा है,' मैंने कहा।

'तुम्हारा बजट क्या है? शायद हम तुम्हारी कुछ मदद कर सकें,' उसने कहा।

'क्या?' मैंने कहा। मैंने सोचा भी नहीं था कि कॉलेज फीस की भी बार्गेनिंग हो सकती है।

'मुझे अपना बजट बताओ। यदि तुम अभी साइन अप करते हो तो मैं तुम्हें टेन परसेंट डिस्काउंट दूंगा।'

मैंने सुनील की ओर देखा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या कहूं या क्या करूं। सुनील ने मोर्चा संभाल लिया।

'हमें थर्टी परसेंट ऑफ चाहिए। चिंटूमल हमसे इतनी ही फीस ले रहा है,' सुनील ने कहा।

'उनके पास तो एक बिल्डिंग भी नहीं है,' महेश ने कहा।

'तुम्हें कैसे पता?' मैंने कहा।

'वह मेरा भाई है। उसने मुझसे नाता तोड़ लिया और अपना खुद का कॉलेज खोल लिया। लेकिन उसके कॉलेज की रिपोर्ट्स अच्छी नहीं है,' महेश ने कहा।

ज्योति दूर से हम पर नजर बनाए हुए था। तो वे दोनों भाई थे, इसीलिए एक जैसे लग रहे थे।

'हमें उससे कोई मतलब नहीं। तुम तो हमें अपना मैक्जिमम डिस्काउंट बताओ,' सुनील ने कहा।

'मेरे स्टॉल पर चलो,' महेश ने हमें अपने पीछे चलने को कहा।

'रुको,' ज्योति ने हमारा रास्ता रोक लिया।

'क्या है?' मैंने कहा।

'तुम श्री गणेश में क्यों जा रहे हो?'

'वह मुझे डिस्काउंट दे रहा है,' मैंने कहा।

'क्या तुमने मुझसे डिस्काउंट की बात की? क्या मैंने मना किया?' ज्योति ने कहा। उसके चेहरे पर बड़े गंभीर भाव थे। मैंने इससे पहले कभी किसी बिजनेसमैन–कम–डीन को नहीं देखा था। 'महेश भाई, प्लीज मेरे स्टॉल से चले जाइये,' ज्योति ने धौंस देते हुए कहा।

'यह मेरा स्टूडेंट है। हमारी पहले बात हो गई थी,' महेश भाई ने कहा और मेरी कलाई थाम ली। 'आओ, बेटा। तुम्हारा नाम क्या है?'

'गोपाल,' मैंने कहा। इतने में ज्योति ने मेरी दूसरी कलाई थाम ली। 'लेकिन प्लीज मुझे लेकर यह खींचतान बंद कीजिए।'

दोनों भाइयों ने मेरी इस गुजारिश को नजरअंदाज कर दिया।

'मैं तुम्हें बेस्ट डिस्काउंट दूंगा। श्री गणेश में जाकर अपनी जिंदगी मत बरबाद करना। उनके पास लैब्स तक नहीं हैं। ब्रोशर में दिखाई गई तस्वीरें किसी दूसरे कॉलेज की हैं,' ज्योति ने कहा।

'सर, मैं तो यह भी नहीं जानता...' मैंने कहा और सुनील की ओर देखा। वह भी मेरी ही तरह भौंचक नजर आ रहा था।

'शट अप, ज्योति!' अभी तक नर्मी से पेश आ रहे महेश एकदम से गर्म हो गए।

'मेरे स्टॉल में मुझी पर मत चिल्लाओ। चले जाओ यहां से,' ज्योति ने कहा।

महेश ने हम सभी को एक डर्टी लुक दी। और फिर देखते ही देखते उसने चिंटूमल का बैनर फाड़ दिया।

ज्योति का चेहरा उसके कॉलेज के चिह्न जितना ही लाल-सुर्ख हो गया। वह श्री गणेश के स्टॉल पर गया और ब्रोशर्स के बॉक्स को नीचे फेंक दिया।

मैंने स्टॉल से बच भागने की कोशिश की, लेकिन ज्योति ने मेरी कॉलर पकड़ ली।

'रुको, मैं तुम्हें पचास हजार सालाना के रेट पर एक सीट दूंगा।'

'मुझे... जाने... दो...,' मैंने छटपटाते हुए कहा।

महेश तीन लोगों के साथ लौटा, जो दिखने में बॉलीवुड की फिल्मों के गुंडों जैसे लग रहे थे। लेकिन वे फैकल्टी थे। उन्होंने चिंटूमल स्टॉल के सभी बैनर फाड़ने शुरू कर दिए। ज्योति ने भी अपने सिक्योरिटी मेन को हुक्म दिया कि वे जाकर उनसे भिड़ जाएं।

मैं एक बार फिर बच निकलने की कोशिश कर रहा था कि श्री गणेश के एक भाड़े के टट्टू ने मुझे पीछे धकेल दिया। मैं मुंह के बल सफेद शीट से ढंकी लकड़ी की एक टेबल पर जा गिरा। उसमें एक कील बाहर निकली हुई थी, जिससे मेरा गाल कट गया। मेरे चेहरे के एक हिस्से पर खून की लकीर बहने लगी।

मेरे माथे पर पसीने की भी बूंदें थीं। आखिर मैंने पढ़ाई के लिए अपना खून-पसीना एक कर ही दिया था।

सुनील ने उठने में मेरी मदद की। मैंने सफेद शीट पर खून देखा तो मुझे उबकाई आने लगी। हमारे आसपास भीड़ जमा हो गई थी। मैंने कुछ नहीं कहा और वहां से निकल भागा। मैं स्टेडियम से निकला और मुख्य सड़क पर दो सौ मीटर तक दौड़ता रहा।

फिर मैं सांस लेने के लिए रुका। मुझे अपने पीछे सुनील के कदमों की आवाज सुनाई दी।

हम दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े हांफ रहे थे।

'फक,' सुनील ने कहा। 'बाल-बाल बचे।'

फिर हम केमिस्ट के यहां गए, जहां मैंने अपने गाल पर कुछ ड्रेसिंग करवाई।

'चलो, मैं तुम्हें सीसीडी पर ले चलता हूं। वह पिछले हफ्ते ही खुला है,' सुनील ने कहा।

हम सिगरा के आईपी मॉल में कैफे कॉफी डे पर पहुंचे। सुनील ने सौ का एक कड़क नोट देकर दो कोल्ड कॉफी ले लीं। मैं इतने पैसे में पूरा हफ्ता गुजार सकता था।

'यह सब क्या था? ये लोग कॉलेज चलाते हैं?' मैंने कहा।

'वह इलाहाबाद की वर्मा फैमिली थी। वे देसी शराब का धंधा करते हैं। अब उन्होंने कॉलेज भी खोल लिया है।'

'क्या?' मैंने कहा।

'पैसा। प्राइवेट कॉलेजों में खूब पैसा है। फिर इससे सोसायटी में उनका नाम भी ऊंचा होता है। अब वे एजुकेशन सेक्टर के ऊंचे लोग हैं, शराब का धंधा करने वाले नहीं।'

'लेकिन उनका बर्ताव तो गुंडों जैसा ही था।'

'गुंडे ही तो हैं। भाइयों में फसाद हुआ, दोनों ने अपने-अपने कॉलेज खोल लिए, अब वे दोनों एक-दूसरे की टांग खींचते रहते हैं।'

'मैं तो ऐसे कॉलेज में नहीं जा सकता,' मैंने कहा।

'डोंट वरी, हम तुम्हारे लिए एक और कॉलेज ढूंढ लेंगे। हम जमकर बार्गेन करेंगे। आखिर उन्हें भी तो अपनी सीटें भरनी हैं।'

'मुझे तो ऐसी जगहों पर पढ़ाई करने के बारे में सोचकर भी डर लगता है। शराब माफिया कॉलेज चला रहे हैं?'

'हां, नेता, बिल्डर्स, बीड़ी बनाने वाले। जिसे भी काले धंधे का तजुर्बा हो, वह एजुकेशन सेक्टर में अच्छा पैसा कमाता है,' सुनील ने कहा। उसने अपनी स्ट्रॉ निकाली और उसकी क्रीम चाट गया।

'रियली?' मैंने कहा। 'क्या एकेडमिशियंस को कॉलेज नहीं खोलने चाहिए? जैसे कि एक्स-प्रोफेसर्स?'

'पागल हो गए हो क्या? एजुकेशन सेक्टर हर किसी के बस की बात नहीं है। हर कदम पर खाने वाले बैठे हैं,' सुनील ने कहा। मुझसे बातें करते-करते वह अपना एक पैर हिलाने लगा। फिर उसने अपना मोबाइल फोन निकाला। अब सेलफोन्स आम हो चले थे, लेकिन उन्हें अब भी स्टेटस सिम्बल माना जाता था।

सुनील ने किसी को फोन लगाया। ऐसा लग रहा था जैसे जिस व्यक्ति को कॉल किया गया है, वह मुसीबत में हो। 'शांत हो जाइए, चौबेजी। फेयर पर एमएलए शुक्ला-जी का हाथ है। हां, अब तो क्लोजिंग टाइम है।

मुझे दो घंटे का और समय दीजिए... होल्ड ऑन।'

सुनील मेरी ओर मुड़ा। 'ईवेंट्स बिजनेस, ये हमेशा मेरी जान के पीछे पड़े रहते हैं,' उसने दबी आवाज में मुझसे कहा। 'यदि मैं कुछ देर के लिए जाऊं तो बुरा तो न मानोगे? मैं लौट आऊंगा।'

'श्योर,' मैंने कहा।

अब मैं अपनी ड्रिंक के साथ अकेला बैठा था। मैंने लोगों को एक नजर देखा। अमीरजादों ने जरूरत से ज्यादा महंगे डोनट्स और कुकीज खरीदे थे, जिनका मजा वे अपनी व्हिप्ड-क्रीम कॉफी के साथ ले रहे थे।

लेदर जैकेट पहने दो व्यक्ति सीसीडी में आए। मैंने उन्हें पहचान लिया। वे मेरे पिता के अंतिम संस्कार में शरीक हुए थे और उन्होंने मुझसे कर्ज का पैसा मांगा था। उनसे बचने के लिए मैं अपनी सीट पर एक तरफ घूम गया। लेकिन वे मुझे तब तक देख चुके थे। वे मेरे पास चले आए।

'अपने बाप की मौत का जश्न मना रहे हो?' एक ने कहा। उसने अपनी बलिष्ठ भुजा से टेबल पर चाय का एक कप रखा।

'अभी मेरे पास पैसा नहीं है,' मैंने धीमी आवाज में कहा।

'नहीं होगा तो हम तुम्हारे हलक में हाथ डालकर निकाल लेंगे,' मूंछों वाले व्यक्ति ने कहा। उसके दाएं हाथ में कोक की एक कैन थी।

'बशर्ते जो हम निकालें, उसकी कीमत दो लाख के बराबर हो,' चाय वाले गुंडे ने कहा। वे हंस पड़े।

सुनील अपनी बात पूरी करके भीतर आया। मेरे नए मेहमानों को देखकर वह चौंका।

'ये तुम्हारे दोस्त हैं?' उसने पूछा।

मैंने सिर हिला दिया।

'हम इसके बाप के दोस्त हैं,' चाय वाले ने कहा।

'मैंने तुम्हें पहले कहीं देखा है...' सुनील ने कहा।

'यह हमारा शहर है। हम यहां हर जगह हैं,' कोक वाले ने कहा।

'तुम तो एमएलए शुक्ला-जी के लिए काम करते हो ना?' सुनील ने कहा।

'इससे तुम्हें क्या मतलब,' चाय वाले ने कहा। अब उसकी आवाज जरा नर्वस थी।

'मैंने तुम्हें उनके घर पर देखा था। हाय, आई एम सुनील। मैं सनशाइन ईवेंट्स का मैनेजर हूं। हम एमएलए शुक्ला-जी के लिए बहुत काम करते हैं।' सुनील ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

कुछ पलों की झिझक के बाद उन्होंने सुनील से हाथ मिला लिया।

'तुम्हारा दोस्त हमारा कर्जदार है। उसके लिए यही बेहतर होगा कि वह जल्द से जल्द हमारा कर्ज चुका दे। वरना।' चाय वाला बस वरना कहकर रुक गया।

कुछ तो बात को असरदार बनाने के लिए, लेकिन अहम वजह यह थी कि उसे पता नहीं था कि इसके बाद क्या कहना चाहिए।

सुनील और मैं चुप रहे। मूंछों वाले गुंडे ने अपनी बाइक की चाबी से तीन बार टेबल बजाई। फिर हमें एकाध बार घूरकर देखने के बाद वे चले गए।

मैंने राहत की गहरी सांस ली। डर के कारण मेरा चेहरा लाल हो गया था। 'मुझे कॉलेज की कोई जरूरत नहीं, मैं वैसे भी जल्द ही इस दुनिया को अलविदा कहने वाला हूं,' मैंने कहा।

'तुम ठीक तो हो?' सुनील ने कहा। 'मैं कुछ और कॉफी मंगवाता हूं।'

मैं तो चाहता था कि वह और कॉफी के बजाय मुझे कुछ एक्स्ट्रा पैसा देता, लेकिन मैं चुप रहा। कॉफी का दूसरा कप पीते हुए मैंने सुनील को संक्षेप में अपनी कहानी सुनाई – मेरा बचपन, कोटा, मेरी नाकामी और बाबा की मौत।

सुनील ने टेबल पर अपना खाली कप रख दिया।

'तो अब तुम्हारे सिर पर भारी कर्ज चढ़ा हुआ है और उसे चुकाने के लिए तुम्हारे पास कोई जरिया नहीं है?'

उसने दोटूक कहा।

'शायद मेरा घर। लेकिन उसकी कीमत ज्यादा नहीं है। और फिर घर बेचने के बाद मेरे पास सिर छुपाने को भी कोई जगह नहीं रह जाएगी।'

'और प्रॉपर्टी विवाद?'

मैने सुनील को बहुत संक्षेप में ही प्रॉपर्टी विवाद के बारे में बताया था। 'वह एक पुराना विवाद है,' मैंने कहा। मैं इस बात पर हैरान था कि संक्षेप में बताने के बावजूद सुनील का ध्यान उस तरफ चला गया था।

'क्या प्रॉपर्टी है?'

'एग्रीकल्चरल लैंड,' मैंने अनमने ढंग से कहा।

'कहां?' उसने कहा।

'शहर से दस किलोमीटर दूर।'

सुनील की आंखें फैल गईं। 'यह तो काफी पास है।

जमीन कितनी बड़ी है?'

'तीस एकड़। उसमें हमारा हिस्सा पंद्रह एकड़ का है।'

'और तुम्हारे अंकल क्या कह रहे हैं?'

'कुछ नहीं। उन्हे पूरी जमीन चाहिए। उस मामले में पूरा गड़बड़झाला हो चुका है। कई दस्तावेज फर्जी बनाए गए हैं। मुकदमा बारह साल से चल रहा है।'

मैंने अपनी कॉफी खत्म की। 'तो बात ये है कि मेरी ऐसी–तैसी हो चुकी है। शायद वे लोग अपना पैसा वापस लेने के लिए मेरा घर बिकवा दें। कॉफी के लिए शुक्रिया।'

मै जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

'अब तुम क्या करोगे?' सुनील ने पूछा। वह अब भी बैठा हुआ था और सोच में डूबा था।

'मैं एक सड़ियल–सा कॉलेज जॉइन करूंगा और जो जॉब मिले, वह कर लूंगा।'

'रुको, बैठ जाओ,' सुनील ने कहा।

'क्या बात है?' मैंने बैठते हुए कहा।

'मै तुम्हें कुछ सजेस्ट करूंगा। और उसमे तुम्हारी मदद भी करूंगा। लेकिन मुझे अपना हिस्सा चाहिए। बड़ा हिस्सा।'

'हिस्सा?' मैंने कहा। किस बात का हिस्सा, मेरी इस पिटी हुई जिंदगी का?

'तो, टेन परसेंट। डन?' सुनील ने कहा।

'टेन परसेंट किस बात के?'

'जो भी तुम कमाओगे। तुम्हारी कमाई मे टेन परसेंट इक्विटी।'

'कैसी कमाई?' मैंने कहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था।

'तुम एक कॉलेज खोलोगे।'

'क्या?!'

'रिलैक्स,' सुनील ने कहा।

'क्या तुम घाट के साधुओं की तरह भांग का नशा करते हो?' मैंने कहा। आखिर मैं उसकी इन बहकी–बहकी बातों पर कैसे भरोसा कर सकता था?

'देखो, तुम्हारे पास जमीन है। सबसे जरूरी चीज तो वही है। वह भी शहर के पास,' उसने कहा।

'वह अभी मेरे पास नहीं है। अदालत मे मुकदमा सालों से चल रहा है और कोई नतीजा नजर नहीं आ रहा।'

'हम उसे निपटा सकते हैं।'

'हम? हम कौन? और वह एग्रीकल्चरल लैंड है।

उस पर केवल फसल उगाई जा सकती है। यही कानून है,' मैंने कहा।

'हमारे देश में ऐसे भी लोग है, जो कानून से ऊपर हैं,' सुनील ने कहा।

'कौन?' मैंने कहा।

'एमएलए शुक्ला–जी,' उसने कहा।

'शुक्ला कौन?'

'हमारे विधायक रमन लाल शुक्ला। तुमने कभी उनका नाम नहीं सुना क्या?' सुनील ने कहा।

'तुमने फोन पर उनका जिक्र किया था,' मैंने कहा।

'हां। मै उनके आशीर्वाद से बीस ईवेंट्स कर चुका हू। नहीं तो मुझे अधिकारियों की अनुमति कैसे मिलती?

मैं खुद उनका हिस्सा उन तक पहुंचाता हूं। मै तुम्हें भी उनके पास ले जाऊंगा। अपने हिस्से के लिए,' उसने कहा और आंख मारी।

'हिस्सा?'

'हां, हिस्सा। टेन परसेंट। अभी से भूल गए?'

'तुम ये सब क्या बातें कर रहे हो?'

'शुक्ला–जी से मिलते हैं। तुम्हारे पास प्रॉपर्टी के जितने भी पेपर्स हों, ले आना।'

'तुम मजाक तो नहीं कर रहे हो ना?'

'क्या मुझे देखकर ऐसा लगता है कि मै मजाक कर रहा हूं?' सुनील ने कहा।

मैंने उसके जेल किए गए बालों और उनमें विराजित रंगीन सनग्लासेस को देखा। मैंने अपनी धारणा बदल ली।

'तुम चाहते हो कि मै कॉलेज खोलूं? मै तो खुद कॉलेज नहीं गया हूं,' मैंने कहा।

'भारत में जितने लोग कॉलेजों के मालिक हैं, उनमे से अधिकतर खुद कभी कॉलेज नहीं गए है। स्टुपिड लोग कॉलेज जाते हैं। स्मार्ट लोग कॉलेज खरीद लेते हैं,' सुनील ने कहा। 'अगले हफ्ते की मुलाकात तय करते हैं। और याद रखना।'

'क्या?'

उसने अपनी अंगुलियां चटकाईं। 'मेरा टेन परसेंट।'

15

आरती और मैं एक लंबी बोट राइड पर गए। अलसुबह की बयार में उसका हरा दुपट्टा पीछे की ओर उड़ रहा था। 'तुमने कुछ तय किया कि अब आगे क्या करोगे?' उसने पूछा।

'मैं प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज देख रहा हूं।'

'और?'

'वे सभी बहुत महंगे और बहुत बुरे हैं,' मैंने कहा।

मैं कुछ देर के लिए रुका। नाव नदी के बीच में ठहरी हुई थी। मैं सोचने लगा कि क्या आरती मेरे पास आएगी और मेरी हथेलियां सहलाएगी। उसने ऐसा नहीं किया।

'तो? अब क्या?' आरती ने पूछा।

'कोई पत्राचार डिग्री और जॉब।'

'और लोन के बारे में क्या?'

'उसे मैनेज किया जा सकता है। बाबा उसमें से बहुत कुछ सेटल कर चुके थे,' मैं झूठ बोल गया। मैं नहीं चाहता था कि मैं उस पर अपनी मुसीबतों का बोझ डालूं और उसके साथ मुझे जितना वक्त बिताने का मौका मिला है, उसे गंवा दूं।

'गुड। चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा।' वह उठी और मेरे पास बैठ गई। फिर उसने मेरा हाथ अपने हाथों में लिया और जैसे कुछ सोचते हुए मेरी अंगुलियां चटखाने लगी।

'तुम राघव के साथ खुश हो ना?' मैंने पूछा।

मैं उम्मीद कर रहा था कि काश वह कहती नहीं, लेकिन मैं ऐसा दिखावा कर रहा था मानो मैं इससे उलटा चाहता हूं।

'ओह येस।' उसने मेरी ओर देखा। उसकी आंखें चमक रही थीं। 'राघव बहुत अच्छा है।'

मैंने अपना हाथ खींच लिया। वह मेरी निराशा को समझ गई।

'मैंने तो कभी नहीं कहा कि वह अच्छा नहीं है,' मैंने दूसरी तरफ देखते हुए कहा।

'तुम ठीक तो हो?'

'हां,' मैं एक नकली मुस्कराहट मुस्करा दिया। 'और वह कैसा है?'

'उसने अपने पैरेंट्स को कह दिया है कि वह इंजीनियर नहीं [illegible] है।'

'वह ई हैपर है। अब भला वह क्या करेगा?'

'जर्नलिज्म,' उसने कहा। 'उसे जर्नलिज्म से प्यार है।

वह यही करना चाहता है। वह कुछ बदलाव लाना चाहता है। उसने यूनिवर्सिटी की पॉलिटिक्स भी जॉइन कर ली है।'

'टोटली स्टूपिड,' मैंने कहा। मैंने फिर पतवार उठा ली। आरती अपनी जगह पर जाकर बैठ गई।

वापसी के दौरान हम चुप्पी साधे रहे। नदी में पतवार की छपाक की आवाज ही खामोशी को तोड़ रही थी।

आरती के बाल और बड़े हो गए थे और अब वे उसकी कमर तक आने लगे थे। मैं उसकी पलकों का झपकना देखता रहा। लगता था जैसे सुबह का सूर्य उसके भीतर है और उसकी त्वचा से उसकी रोशनी फूट रही है। मैंने उसके होंठों को नजरअंदाज कर दिया।

यदि मैं उन्हें देखता तो मेरे मन में उन्हें चूम लेने की इच्छा जाग जाती।

'अब वह किसी और की है, तुम्हारे जैसे कमअक्ल को भी यह बात अब तक समझ में आ जानी चाहिए।'

हां, मेरा दिमाग इस बात को जानता था, लेकिन दिल इसे मानने को राजी न था।

'आखिर हम बड़े ही क्यों हुए, गोपाल?' आरती ने कहा। 'पहले चीजें कितनी सीधी–सरल हुआ करती थीं।'

मैं इससे पहले कभी किसी विधायक के घर नहीं गया था। दोपहर तीन बजे हम कचहरी क्षेत्र में शुक्ला–जी के लंबे–चौड़े बंगले पर पहुंचे। बाहर पुलिस की जीपें खड़ी थीं और सिक्योरिटी गार्ड्स हर जगह तैनात थे।

सुनील ने गेट पर अपना परिचय दिया तो हमें भीतर जाने दिया गया।

फ्रंट लॉन में अनेक ग्रामीण बैठे थे और विधायक से मिलने की अपनी बारी आने का इंतजार कर रहे थे।

सुनील ने बताया था कि विधायक शुक्ला अकेले ही रहते थे। उनके परिवार के सदस्य अधिकतर समय विदेशों में बिताते थे। उनके दोनों बेटे भी विदेशों में ही पढ़ाई कर रहे थे। विधायक के घर में पार्टी के इतने कार्यकर्ता मौजूद थे कि वह घर से ज्यादा पार्टी का ऑफिस लग रहा था।

सुनील अपने साथ गिरीश बेदी को लाया था, जो कि एक 'अनुभवी एजुकेशन कंसल्टेंट' था। मेरे पास अटैची भरके प्रॉपर्टी के दस्तावेज और अदालती कागजात थे। विधायक के ऑफिस पहुंचने से पहले गार्ड्स ने तीन बार हमारा बैग जांचा।

एक खूबसूरत पॉलिश्ड लकड़ी की मेज पर अधेड़ उम्र का एक व्यक्ति कड़क कलफदार कुर्ता–पायजामा पहने बैठा था। अपनी छोटी–सी तोंद के बावजूद शुक्ला–जी को हैंडसम कहा जा सकता था, खास तौर पर इस बात के मद्देनजर कि वे विधायक थे। उन्होंने हमें बैठने का इशारा किया और सेलफोन पर बतियाते रहे।

'साइंटिस्ट से कहो शुक्ला पहले रिपोर्ट को देखना चाहता है। हां, मेरे लिए उसे देखना बहुत जरूरी है।

गंगा मेरी भी है। येस, ओके, अभी मेरी एक मीटिंग है, बाय।'

विधायक ने हमसे बातचीत शुरू करने से पहले अपनी मेज पर रखी फाइलों का ढेर एक तरफ खिसकाया।

'सुनील, सर। सनशाइन इवेंट्स। हम... हम कैरियर फेयर करते हैं,' सुनील ने कहा। वह हकला रहा था, जबकि वह आमतौर पर बहुत कॉन्फिडेंट रहता था।

'काम की बात बताओ,' शुक्ला–जी ने कहा।

'जमीन का मामला है, सर,' सुनील ने कहा।

'कहां है? कितनी है?' शुक्ला–जी ने कहा। उनकी आंखें फाइलों पर जमी रहीं, लेकिन उनके कान हमारी बातों पर लगे थे। राजनेता किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में कहीं अच्छे से मल्टीटास्किंग कर सकते हैं।

'तीस एकड़। शहर से दस किलोमीटर बाहर लखनऊ हाईवे पर,' सुनील ने कहा।

विधायक लिखते–लिखते रुक गए। उन्होंने नजरें उठाईं।

'किसकी जमीन है?' उन्होंने कहा। उन्होंने अब अपनी फाइल बंद कर दी थी ताकि हमारी बातों पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

'मेरी है, सर,' मैंने कहा। मुझे नहीं पता मैंने विधायक को सर क्यों बोला। 'मेरा नाम गोपाल मिश्रा है।' मैंने अटैची खोली और मेज पर प्रॉपर्टी के दस्तावेज रख दिए।

'और तुम?' शुक्ला–जी ने बेदी से पूछा।

'एजुकेशन कंसल्टेंट है। नए कॉलेजों की डिजाइन बनाने और उन्हें तैयार करने में मदद करता है। अपना आदमी है,' सुनील ने कहा।

'नया कॉलेज?' शुक्ला–जी ने कहा।

'वह एग्रीकल्चरल जमीन है, सर,' सुनील ने कहा।

'आप एग्रीकल्चरल जमीन को एजुकेशनल यूज के लिए परमिशन दिला सकते हैं,' बेदी ने पहली बार अपना मुंह खोला।

'तुम कमउम्र दिखते हो,' शुक्ला–जी ने मुझसे कहा।

'तुम्हारे पैरेंट्स कौन हैं?'

'उनकी मौत हो चुकी है, सर,' मैंने कहा।

'हुम्मम। तो प्रॉब्लम क्या है?' शुक्ला–जी ने कहा।

उनकी अंगुलियां जमीन की लोकेशन शहर के बीच में कहीं खोज रही थीं।

'मेरे अंकल,' मैंने कहा।

'यह नए बन रहे एयरपोर्ट के बहुत करीब है,' शुक्ला–जी ने नक्शा समझते हुए कहा।

'जी हां,' मैंने कहा।

शुक्ला–जी ने अपना इंटरकॉम उठाया। उन्होंने अपने स्टाफ को बोला कि मीटिंग पूरी होने तक उन्हें डिस्टर्ब न किया जाए।

'गोपाल, इस जमीन विवाद के बारे में मुझे विस्तार से बताओ,' शुक्ला–जी ने कहा।

अगले एक घंटे तक मैं उन्हें पूरी कहानी सुनाता रहा। 'और हकीकत यह है कि मुझ पर आपके आदमियों का भी दो लाख रुपए कर्ज है,' मैंने अपनी बात खत्म करते हुए कहा।

'चाय पिओगे? सॉफ्ट ड्रिंक?' शुक्ला–जी ने कहा।

मैंने सिर हिला दिया।

'मेरे आदमियों का तुम पर कर्जा है?' शुक्ला–जी ने पूछा।

'नहीं सर, वे आपके आदमी नहीं हैं,' सुनील ने कहा और मेरे पैरों पर धीमे–से एक ठोकर मारी। 'बेदी सर, इन्हें बताइए कि आप क्या सोचते हो।'

मुझे नहीं पता था कि कर्ज उगाहने वाले विधायक के आशीर्वाद से ही काम करते थे, लेकिन उनसे किसी तरह के ताल्लुकात से इनकार भी करते थे।

'इंजीनियरिंग कॉलेज के लिए इससे बेहतर कोई जमीन नहीं हो सकती, सर,' बेदी ने कहा। 'इसका जो पंद्रह एकड़ का हिस्सा है, वह काफी है।'

'पंद्रह ही क्यों? जब पूरी तीस एकड़ जमीन हो तो हम केवल पंद्रह क्यों लें?' शुक्ला–जी ने कहा।

मैं बेहद भावुक हो गया। जीवन में पहली बार ऐसा हुआ था कि किसी पॉवरफुल आदमी ने मेरा सपोर्ट किया हो। लेकिन मैं यह भूल गया कि विधायक ने 'हम' शब्द का इस्तेमाल किया था।

सुनील मुझे देखकर शातिर ' बिल्कुल ठीक जगह जो लाया था।

'पंद्रह भी काफी है, सर,' मैंने कहा। मैं तो यह भी नहीं समझ पा रहा था कि इतनी जमीन भी कैसे हासिल की जाएगी।

'तीस। बाकी के बारे में बाद में सोचेंगे। जमीन शहर के पास है... एक बार कॉलेज खुल जाए और एयरपोर्ट बनकर तैयार हो जाए तो हम यहां रेसिडेंशियल या कमर्शियल जोन भी बना सकते हैं,' शुक्ला–जी ने कहा।

मैं समझ नहीं पा रहा था कि वे क्या कह रहे हैं, लेकिन मैं इतना जरूर समझ गया था कि उन्हें मुझसे ज्यादा पता है। फिर, वे आखिर मेरे फायदे की ही तो बात कर रहे थे।

'लेकिन हम उतनी जमीन भी कैसे पाएंगे?' मैंने कहा। मेरे अंकल पिछले अनेक सालों से उस जमीन पर कुंडली मारकर बैठे थे।

'ये तुम हम पर छोड़ दो,' शुक्ला–जी ने कहा। 'तुम तो मुझे बस इतना ही बताओ कि क्या तुम एक कॉलेज चला सकते हो?'

'मैं?'

'हां, क्योंकि कॉलेज का चेहरा और नाम तुम्हीं होओगे। मैं तो पीछे से चुपचाप अपना काम करता रहूंगा,' उन्होंने कहा।

'लेकिन कैसे?' मैंने कहा। 'मेरे पास अनुभव नहीं है।

पैसा नहीं है।'

'अनुभव तुम्हें मिस्टर बेदी दे देंगे, और पैसा मैं दे दूंगा। तुम उससे कंस्ट्रक्शन और बाकी के काम कर सकते हो।'

शायद मुझसे कोई गलती हो रही है। आखिर दुनिया अचानक मेरी मदद करने को आमादा क्यों हो गई है?

माजरा क्या है?

सुनील मेरी दुविधा समझ गया।

'शुक्ला–जी सर, यदि आप इसे अपनी टर्म्स बता देते तो अच्छा होता। और हां, आप मेरे लिए भी जो ठीक समझें,' सुनील ने कहा और मेरी तरफ देखकर चापलूसों की तरह खीसें

निपोरने लगा।

'मुझे कुछ नहीं चाहिए। बस कॉलेज खोलो, मेरे शहर का भला इसी में है,' शुक्ला–जी ने कहा।

किसी ने भी उनकी बात पर भरोसा नहीं किया। फिर भी हमें उनका मन रखना ही था। 'सर, प्लीज,' सुनील ने कहा, 'यह तो वाजिब नहीं होगा।'

'अपने टर्म्स के बारे में मैं खुद सोच लूंगा। लेकिन तुम लोग तुम्हारे बारे में बताओ। तुम यह कर लोगे ना?' शुक्ला–जी ने मेरी ओर देखा। मुझे लगा कि उनके इस तरह देखने भर से ही मेरी उम्र दस साल बढ़ गई हो।

मैंने जितना संभव हो सकता था, अपनी झिझक छुपाने की कोशिश की। 'कैसा हो अगर हम जमीन हासिल कर लें और बस उसे बेच दें?' मैंने कहा।

'जिस जमीन पर इतने सारे केस चल रहे हों, उसे बेचना मुश्किल है,' शुक्ला–जी ने कहा। 'जमीन का कब्जा तुम्हें देना एक बात है और उसके लिए नया ग्राहक ढूंढना दूसरी बात।'

'वही तो। हम उन सारे केसेस को कैसे निपटाएंगे?'

मैंने कहा।

शुक्ला–जी हंस पड़े। 'हम केस नहीं निपटाते। हम उन लोगों को निपटा देते हैं, जो केस में शामिल हैं।'

विधायक भले ही हंस रहे हों, लेकिन उनकी आंखों से लग रहा था कि उन्होंने मन बना लिया है। उन्हें देखकर वाकई लगता था कि वे लोगों को निपटा सकते हैं। वैसे भी मैं जमीन हासिल करने से भी ज्यादा अपने रिश्तेदारों को सबक सिखाना चाहता था।

'यदि आप ऐसा कर पाए तो आप जितना चाहे उतना शेयर ले सकते हैं,' मैंने कहा।

'मैं पंद्रह एकड़ लूंगा,' शुक्ला–जी ने कहा। 'मैं वह जमीन तब तक अपने पास रखूंगा, जब तक कि वह एरिया कमर्शियल या रेसिडेंशियल यूज के लिए री–जोन्ड नहीं हो जाता। बाकी की पंद्रह एकड़ जमीन में हम कॉलेज बनाएंगे।'

'कॉलेज में आपको कितनी ओनरशिप चाहिए?' मैंने कहा।

'जितनी तुम देना चाहो। कॉलेज ट्रस्ट है, उसमें कोई प्रॉफिट नहीं है,' शुक्ला–जी ने कहा। उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं थे।

'वाकई?' मैंने हैरानी से कहा।

'हां, सच है,' बेदी ने लंबे समय बाद मुंह खोला।

'हर कॉलेज नॉन–प्रॉफिट ट्रस्ट की तरह होता है। उसमें कोई शेयर होल्डर्स नहीं होते, केवल ट्रस्टी होते हैं।'

'फिर कोई प्राइवेट प्लेयर एक नॉन–प्रॉफिट कॉलेज क्यों खोलना चाहेगा?' मैंने कहा।

बेदी ने पहले तो गहरी सांस भरी और फिर मुझे समझाने लगा। 'वैल, प्रॉफिट होता है। ट्रस्टी ट्रस्ट से कैश निकाल सकते हैं और उसे खर्च बता सकते हैं।

या वे कैश में कोई फीस ले सकते हैं और उसे खाते में दर्ज नहीं कर सकते हैं। या वे किसी कॉन्ट्रैक्टर से कह सकते हैं कि यदि हम तुम्हें कॉन्ट्रैक्ट देंगे तो बदले में तुम हमें क्या दोगे। और भी कई तरीके हैं ..' बेदी बोलता रहा। मैंने उसे रोका। 'एक मिनट। क्या ये सब गैरकानूनी तरीके नहीं हैं?'

सभी चुप हो गए।

थोड़ी देर बाद शुक्ला–जी बोले, 'मुझे नहीं लगता कि यह लड़का हमारे किसी काम का साबित हो सकता है। तुमने मेरा वक्त बरबाद किया।'

बेदी और सुनील ने शर्म से अपना सिर झुका लिया।

ईमानदारी के बारे में मेरी जिज्ञासा के कारण उन्हें शर्मिंदगी झेलनी पड़ी थी।

'आई एम सॉरी। मैं तो बस समझने की कोशिश कर रहा हूं,' मैंने कहा।

'क्या?' बेदी ने कहा। उसकी आवाज से झल्लाहट झलक रही थी।

'क्या तुम मुझे यह बताना चाह रहे हो कि किसी कॉलेज से पैसा कमाने का एकमात्र तरीका यही है कि गैरकानूनी हथकंडों का इस्तेमाल किया जाए? सॉरी, मैं नैतिकता का उपदेश नहीं दे रहा, केवल एक सवाल पूछ रहा हूं।'

'वेल,' बेदी ने कहा, 'वास्तव में कॉलेज पैसा कमाने के लिए नहीं होते।'

'तो फिर कोई कॉलेज खोलना ही क्यों चाहेगा?'

मैंने कहा।

'समाज के भले के लिए, जैसा कि हम राजनेता चाहते हैं,' शुक्ला–जी ने कहा।

मेरे सिवा सभी हंस पड़े। शायद वे मेरी बेवकूफी पर ही हंस रहे थे।

'सुनो, गोपाल,' सुनील ने कहा, 'नियम–कायदे ऐसे ही स्टुपिड होते हैं। अब यह हम पर है कि या तो उनसे बचने का कोई रास्ता निकालें, या बेवकूफों की तरह चुपचाप खड़े रहें। कॉलेज है तो ट्रस्ट भी होगा।

तुम और शुक्ला–जी ट्रस्टी बन जाएंगे। बेदी तुम्हें सब समझा देगा।'

बेदी ने मेरी ओर देखकर इशारा किया कि चिंता मत करो, सब समझा दूंगा। हां, उस आदमी को सिस्टम के बारे में अच्छी तरह पता था और वह यह भी जानता था कि सिस्टम को कैसे झुकाया जाए।

'बेदी बाबू, इस लड़के को यह भी सिखा दो कि ज्यादा कानून–कायदों की बात न करे। नहीं तो वह एजुकेशन का बिजनेस नहीं कर पाएगा,' शुक्ला–जी ने कहा।

'ऑफ कोर्स,' बेदी मुस्करा दिया। 'शुक्ला सर, ट्रस्ट से पैसा निकालना बाएं हाथ का खेल है। आप तो यह बताइए कि तमाम परमिशन और अप्रूवल कैसे मिलेंगे?

हर कदम पर स्पेशल मैनेजमेंट की जरूरत है।'

'यही तो इस लड़के को करना है। मैं तो किसी पिक्चर में नहीं हूं। मैं केवल ट्रस्टी हूं, समाज के भले के लिए,' शुक्ला–जी ने कहा।

'मुझे क्या करना होगा?' मैंने कहा।

'डोंट वरी, मैं समझा दूंगा,' बेदी ने कहा। 'तुम्हें बिल्डिंग प्लान्स के लिए वाराणसी नगर निगम का अप्रूवल लेना होगा, कॉलेज के लिए एआईसीटीई का अप्रूवल लेना होगा। इंस्पेक्शन होगा। हर चीज का ध्यान रखना होगा। स्टैंडर्ड है।'

'रिश्वत देनी होगी?' मैंने कहा।

'श्श्श!' शुक्ला–जी ने घुड़की देते हुए कहा। 'ये बातें यहां मत करो। जो भी बात करनी हो, बाहर जाकर करो। जाओ।'

हम जाने के लिए उठ खड़े हुए।

'एक मिनट रुको, गोपाल,' विधायक ने कहा।

'जी?' मैंने सुनील और बेदी के बाहर चले जाने के बाद कहा।

'क्या तुम यह सब कर पाओगे?' शुक्ला–जी ने कहा, 'मैं अपना वक्त बरबाद नहीं करना चाहता। यदि तुम यह सब नहीं कर सकते तो अभी बता दो।'

मैं कुछ देर सोचता रहा। 'यह आसान तो नहीं है,' मैंने स्वीकारा।

'जिंदगी में बड़ा आदमी बनना कभी आसान नहीं होता,' शुक्ला–जी ने कहा।

मैं चुप रहा।

'तुम बड़ा आदमी बनना चाहते हो या नहीं, गोपाल?'

मैं नीचे देखता रहा। मैंने गौर किया कि विधायक के घर का फर्श इटैलियन मार्बल से बना था।

'या तुम केवल एक मामूली आदमी बने रहना चाहते हो, जिसके दोस्त उससे बहुत आगे निकल गए हों?'

मेरा गला रुंध गया, लेकिन मैंने उसे जाहिर नहीं होने दिया। मैंने नजरें उठाईं।

'तुम्हारी कोई गर्लफ्रेंड है?'

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।

'पता है क्यों? क्योंकि तुम्हारी कोई औकात नहीं है।'

मैंने हामी भर दी। मुझे याद आया कि बीएचयू कार पार्किंग में आरती और राघव ने किस तरह एक–दूसरे को शिद्दत से चूमा था। यदि मैं बीएचयू गया होता और राघव कोटा गया होता, तब भी क्या आरती राघव को ही चुनती? मैंने शुक्ला–जी को देखा। यह आदमी सिर से पैर तक गलत था, लेकिन उसने मुझे एक मौका दिया था। आखिर जिंदगी में हमें इसी बात की तो जरूरत होती है – एक जॉब, एक एडमिशन, एक मौका।

'मैं करूंगा। ऐसा तो है नहीं कि पूरे देश में केवल मैं ही इकलौता ऐसा इंसान हूं, जो रिश्वत देगा,' मैंने कहा। 'लेकिन मैं बहुत बड़ा आदमी बनना चाहता हूं।'

शुक्ला–जी खड़े हुए। वे अपनी मेज के करीब से बाहर निकले और मेरी पीठ थपथपाई। 'तुम तो पहले ही बड़े आदमी बन चुके हो,' उन्होंने कहा, 'क्योंकि तुम्हारे सिर पर अब मेरा हाथ है। अब जाओ, और अपने हरामी अंकल के डिटेल्स बाहर मेरे सेक्रेटरी के पास छोड़ जाओ।'

'और मुझ पर जो आपके लोगों का कर्जा है, उस बारे में क्या?' मैंने कहा।

'दो लाख रुपए? इतने पैसे मेरे लिए कोई मायने नहीं रखते। उसे भूल जाओ,' शुक्ला–जी ने कहा। वे अपनी मेज पर गए और दराज खोली। उसमें से दस हजार रुपयों के दो बंडल निकाले और मेरी ओर उछाल दिए।

'एक सुनील के लिए और एक तुम्हारे लिए,' उन्होंने कहा।

'मेरे लिए क्यों?' मैंने पूछा।

'मेरा कॉलेज चलाने के लिए, डायरेक्टर सर।' उन्होंने खीसें निपोरते हुए कहा।

16

मैंने शुक्ला–जी के दस हजार रुपए रख लिए। कम से कम उससे मैं अपने जरूरी खर्च तो चला ही सकता था। बस मैंने उससे एक बड़ा खर्च किया – मैं ताज गंगा में आरती को डिनर कराने ले गया। यह वाराणसी का सबसे महंगा रेस्टोरेंट था।

'आर यू श्योर?' जैसे ही हम ताज की कॉफी शॉप में घुसे, आरती ने एक बार फिर पूछा। 'हम घाट पर चाट भी खा सकते हैं।'

उसने एक नई–नवेली गहरे नीले रंग की फुल लेंथ ड्रेस पहनी थी, जो उसके सगे–संबंधियों ने अमेरिका से भेजी थी। उसने उस पर मैच के लिए सोने की नकली ज्वेलरी पहन रखी थी, जिसे उसने विश्वनाथ घाट से खरीदा था।

'माय ट्रीट,' मैंने कहा।

वेटर ने आरती के लिए कुर्सी बाहर खींची। उसने उसे थैंक कहा। हम बैठ गए। आरती चॉक्लेट केक खाना चाहती थी, लेकिन वह अपने वेट को लेकर भी चौकस थी। आखिरकार हमने सूप और सलाद लेना तय किया, ताकि मीठे के लिए कैलोरीज बचा सकें।

उसने चम्मच से गर्म सूप हिलाया। 'सॉरी, लेकिन तुम्हारे पास इसके लिए पैसा कहां से आया? बाबा तुम्हारे नाम अच्छी–खासी वसीयत लिख गए हैं क्या?'

मैं हंस पड़ा। 'नहीं, वे मेरे लिए वसीयत में केवल कर्ज लिख गए हैं।'

'फिर?'

'मैं नया बिजनेस शुरू कर रहा हूं।'

'स्मगलिंग?' आरती ने अपना सिर एक तरफ झुकाते हुए पूछा।

'शट अप। मैं एक कॉलेज खोल रहा हूं।'

'क्या?' आरती ने इतनी जोर से कहा कि पूरी कॉफी शॉप ने सुना।

'सॉरी,' उसने धीमे–से फुसफुसाते हुए कहा। 'क्या तुमने वही कहा जो मैंने सुना? तुम एक कॉलेज खोलने जा रहे हो?'

'हां, हमारी उस जमीन पर, जिस पर केस चल रहा है।'

'लेकिन कैसे? उस पर तो तुम्हारे काका का कब्जा है ना? और तुम कॉलेज कैसे बनाओगे?'

'मेरे साथ कुछ पार्टनर्स हैं। बहुत अच्छे पार्टनर्स।'

'कौन?' आरती ने कहा।

'मैं तुम्हें बताऊंगा। अभी हम अपने प्लान को अंतिम रूप दे रहे हैं।'

'रियली?' आरती ने कहा। 'तो तुम इसको लेकर इतने सीरियस हो?'

'हां, शहर के बाहर हमारी पंद्रह एकड़ जमीन है।

यदि हम मामला सुलझा लें और री–जोनिंग करवा लें तो वह जमीन कॉलेज बनाने के लिए परफेक्ट है,' मैंने बेदी की बातें दोहरा दीं।

'वॉव,' आरती ने कहा और खिलखिला दी। 'तुम तो बड़े आदमी बनने जा रहे हो, गोपाल।'

उसने यह बात मजाक में कही थी, लेकिन उससे मुझे हल्की–सी ठेस पहुंची। 'क्यों? क्या तुम्हें नहीं लगता था कि मैं ऐसा कर पाऊंगा?'

'नहीं, मेरा यह मतलब नहीं था,' आरती ने कहा।

'मैं तो बस... सरप्राइज्ड हूं।'

'मुझे जिंदगी में कुछ न कुछ तो करना ही होगा ना।'

'श्योर। तुम कुछ से कुछ ज्यादा ही करोगे। लेकिन तुम्हारे अंकल का क्या होगा?'

'हम उनके साथ हंसी–खुशी सेटलमेंट करने की कोशिश कर रहे हैं,' मैंने कहा।

वास्तव में शुक्ला के आदमी, जिन्होंने मेरे कर्जदारों का मामला सुलझाया था, ने घनश्याम ताया–जी से सेटलमेंट की कोशिशें शुरू कर दी थीं, लेकिन उन्हें हंसी–खुशी वाली कोशिशें कतई नहीं कहा जा सकता था।

वे लोग तीन बार मेरे अंकल के घर जा चुके थे।

पहली बार उन्होंने उनकी नई बॉलकनी में एक बोतल बकरी का खून उड़ेल दिया था। दूसरी बार उन्होंने चाकुओं से उनके घर के सभी सोफों और बिस्तरों को गोद दिया था। तीसरी बार उन्होंने पहली बार अपना मुंह खोला था और आठ लाख रुपए में उनकी विवादित जमीन खरीदने की पेशकश की थी।

लेकिन मैं आरती को ये सब डिटेल्स नहीं बताना चाहता था।

'किस तरह का कॉलेज खोलोगे?' उसने पूछा।

'इंजीनियरिंग।'

'कूल,' आरती ने कहा।

'बड़ा आदमी बनना है तो बड़ी–बड़ी चीजें तो करनी ही पड़ेंगी,' मैंने कहा।

'तुम तो मेरे लिए हमेशा से ही बड़े आदमी रहे हो, गोपाल। पता है क्यों?'

'क्यों?'

'क्योंकि तुम्हारा दिल बहुत बड़ा है।' आरती ने धीमे–से टेबल पर रखा मेरा हाथ सहलाया।

मेरा दिल बड़ा था या छोटा, ये तो पता नहीं, लेकिन उसकी छुअन से वह धक–धक जरूर करने लगा। मैंने फौरन बातचीत का रुख बदला। 'तुम्हारे क्या हाल हैं? कॉलेज में क्या चल रहा है?'

'बो–रि–ग। लेकिन मैं एक एविएशन एकेडमी जॉइन करने वाली हूं।'

'क्या?'

'उसमें मुझे फ्लाइट अटेंडेंट बनने की ट्रेनिंग दी जाएगी। क्लासरूम किसी हवाई जहाज के इंटीरियर जैसा होगा।'

'रियली?' मैंने दिलचस्पी लेते हुए कहा, 'आजकल एजुकेशन में कितना कुछ हो रहा है।'

'हां, लेकिन हममें से कई तो बस स्टूडेंट्स बनकर ही रह जाते हैं। हर कोई कॉलेज नहीं खोल सकता,' उसने मुझे छेड़ते हुए कहा।

मैं मुस्करा दिया। 'अभी मुझे बहुत लंबा सफर तय करना है। मुश्किल राह है,' मैंने कहा।

'तुम तो जिंदगी में इससे भी मुश्किल चुनौतियों का सामना कर चुके हो। तुम जरूर कामयाब होओगे,' आरती ने भरोसे के साथ कहा।

'तुम्हें ऐसा लगता है?' मैंने कहा।

उसने सिर हिलाकर हामी भरी। यह मेरे लिए दुनिया की सबसे बड़ी चीज थी। मैं उससे कहना चाहता था कि क्या वह फिर मेरे साथ डेट करेगी। मुझे ऐसा लग रहा था कि शायद अब वह हां कह सकती है। लेकिन जाहिर है, ये फिल्मी थ्योरियां केवल मेरे दिमाग में ही पक रही थीं।

'राघव कैसा है?' मैंने अपने आपको वास्तविकता के धरातल पर लाते हुए कहा।

'उसके हाल अभी कुछ ठीक नहीं हैं,' उसने कहा।

मुझे हल्की खुशी महसूस हुई। 'रियली? क्यों?' मैंने झूठमूठ की चिंता जताते हुए कहा।

'उसने यूनिवर्सिटी का जनरल सेक्रेटरी बनने के लिए चुनाव लड़ा था, लेकिन वह चुनाव हार गया।'

'ओह,' मैंने कहा। 'क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?'

'उसे पड़ता है। वह इसलिए हार गया, क्योंकि उसने दूसरे होस्टलों के साथ हॉर्स ट्रेडिंग नहीं की। वह ईमानदारी से जीतना चाहता था।'

'लेकिन मुझे तो उसकी हार पर कोई हैरानी नहीं हुई,' मैंने एक गाजर को भाले की तरह उठाते हुए कहा।

'उसका मानना है कि हमें हर जीत ईमानदारी से हासिल करनी चाहिए। नहीं तो, जीतने का फायदा ही क्या?' आरती ने कहा।

'लेकिन जिंदगी के नियम तो कुछ और ही हैं,' मैंने धीमे–धीमे खाते हुए कहा।

'पता नहीं। लेकिन ऐसा होना तो नहीं चाहिए,' आरती ने कहा। 'वह अगले साल फिर कोशिश करेगा।'

'वह कुछ ज्यादा ही काम नहीं कर रहा है?' मैंने कहा।

'अरे हां, बी–टेक कोर्स, मैगजीन और इलेक्शंस के दरमियान वह मेरे लिए मुश्किल से ही वक्त निकाल पाता है।'

'और तुम्हें यह अच्छा लगता है?'

'लगता तो नहीं, लेकिन कोई और चॉइस नहीं है।

यदि इससे उसे खुशी मिलती है तो यही सही।'

हमने अपना डिनर पूरा किया। चॉकलेट केक आया।

उसकी आखें चमक उठी। उसने प्लेट अपनी ओर सरकाई। 'मेरा केक फिर मत चुरा लेना,' उसने कहा और मुस्करा दी।

'राघव कितना लकी है कि तुम उसके साथ हो, आरती,' मैंने कहा।

'थैंक्स,' उसने कहा और जरा-सा शर्माकर मुस्करा दी।

'आरती, क्या मैं तुमसे कुछ पूछ सकता हू?'

'हां,' उसने मेरी ओर देखा, उसकी चम्मच केक के ऊपर उठी हुई थी।

'कुछ नहीं, बस मेरे लिए थोड़ा-सा केक छोड़ देना,' मैंने कहा और बिल के लिए इशारा किया।

आधी रात को मैं दरवाजे की घंटी सुनकर जागा। मैंने अपनी आंखें मसलीं और दरवाजे तक पहुंचा। मैं अब भी आधी नींद में था। बाहर मेरे अंकल, आंटी और उनका बेटा, 30 साल का मेरा कजिन अजय खड़े थे।

'घनश्याम ताया-जी?' मैंने कहा। 'क्या हुआ? प्लीज अदर आइए।'

वे बैठकखाने में एक टूटे-फूटे सोफे पर बैठ गए।

पाच मिनट तक उनके मुह से एक भी शब्द नही निकला।

'आप लोग इतनी रात गए मुझसे मिलने इसलिए तो यकीनन नहीं आए हैं कि आप मुझे मिस कर रहे थे, है ना?' मैंने कहा।

'तुम हमारे साथ ऐसा क्यों कर रहे हो?' अजय फूट पड़ा।

'मैं क्या कर रहा हू?' मैंने कहा। 'आपको पानी चाहिए? या चाय?'

'नहीं,' मेरे अकल ने कहा। 'गोपाल, अपने कर्मों पर ध्यान दो, भगवान तुम्हें देख रहे हैं। तुम्हें एक न एक दिन इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। हमारे साथ ऐसा मत करो।'

'लेकिन मैं कर क्या रहा हूं?' मैंने कहा। आखिर वे इतनी रात गए मेरे घर क्यों आए थे?

'बिट्टू अभी तक नर्सरी स्कूल से घर नही लौटा है,' आंटी ने कहा और फूट-फूटकर रोने लगीं। अब ये लोग पूरी तरह वास्तविक लग रहे थे, बाबा के अंतिम संस्कार में तो ये मगरमच्छों की तरह लग रहे थे।

वे बिट्टू की वजह से मेरे घर आए थे। बिट्टू अजय का चार साल का बेटा था, जिसे मैंने केवल एक बार देखा था (बाबा के अंतिम संस्कार के दौरान उसकी मा की गोद में) और अब वह लापता था।

'अरे, यह तो वाकई बहुत बुरा हुआ है,' मैंने कहा।

'और क्या इसका मेरे कर्म से कोई सबध है?'

'ये उन लोगों की हरकत है, जो जमीन खरीदना चाहते हैं,' मेरे अंकल ने कहा। 'हम जानते हैं वे तुम्हारे साथ हैं।'

'आप लोग क्या बातें कर रहे हैं?' मैंने कहा।

अकल ने दोनों हाथ जोड़ लिए। 'हमारे साथ ऐसा मत करो,' उन्होंने कहा।

'मैं कुछ नहीं कर रहा हू। कुछ लोग मेरे पास भी वह जमीन खरीदने के लिए आए थे। लेकिन मैंने उन्हें कह दिया कि मैं उसे नहीं बेच सकता,' मैंने कहा।

'वाकई?' अजय ने कहा।

'आखिर मैं वह जमीन कैसे बेच सकता हू? वह तो विवादित जमीन है ना?' मैंने कहा।

'लेकिन जो लोग हमारे पास आए थे, वे उस जमीन को खरीदना नहीं चाहते। वे चाहते हैं कि हम बैंक के केस सेटल कर दें, विवाद खत्म कर दें और वह पूरी जमीन तुम्हें दे दें,' अंकल ने कहा।

'दैट्स स्ट्रेंज। तो अब सवाल यह है कि आपके लिए जमीन ज्यादा कीमती है या बिट्टू? करेक्ट?'

'शट अप,' अजय ने कहा। 'हमें पता है कि वह जमीन तुम खरीदना चाहते हो।'

'मेरे पास खाना खरीदने का पैसा नहीं है, जमीन कहा से खरीदूंगा?' मैंने सिर खुजाते हुए कहा।

'वे लोग कौन हैं?' अकल ने पूछा।

'पता नहीं। आप चाहें तो पुलिस की मदद ले सकते हैं,' मैंने कहा, 'लेकिन लगता है शायद वे गुंडे-बदमाश हैं।'

'हमें पुलिस-वुलिस के पास नहीं जाना,' आंटी ने कहा।

'वे लोग कुछ भी कर सकते हैं। बिट्टू छोटा है।

उनके लिए उसकी बॉडी छुपाना कोई मुश्किल काम नहीं होगा। वैसे भी, यह वाराणसी है, यहां डेड बॉडी को बड़ी आसानी से डिस्पोज किया जा सकता है,' मैंने कहा।

अजय सोफे से उठा और मेरी कॉलर पकड़ ली।

'मुझे पता है कि तुम इसमें इनवॉल्व्ड हो। तुम्हारे पिता सीधे-सादे थे, लेकिन तुम टेढ़े हो,' उसने कहा। उसकी आखों से आग बरस रही थी।

'मेरे भाई, कॉलर छोड़ दो, अभी इसी वक्त,' मैंने शात लेकिन ठोस आवाज में कहा।

अजय की मा ने अपने बेटे का हाथ थपथपाया।

उसने मुझे छोड़ दिया।

'वे लोग कितने रुपए दे रहे हैं?' मैंने पूछा।

'आठ लाख,' अंकल ने कहा।

'नॉट बैड,' मैंने कहा।

'यह मार्केट प्राइस के सामने रत्ती भर भी नही है।'

'लेकिन आपने मेरे सामने जितने पैसों की पेशकश रखी थी, उससे तो यह दोगुना से भी अधिक है,' मैंने कहा।

'इसका मतलब तुम इस मामले में इनवॉल्व्ड हो।'

अजय ने मुझे घूरकर देखा।

'घर जाइए, ताया-जी, और ठंडे दिमाग से सोचिए।

हम बिट्टू को जमीन से ज्यादा चाहते हैं।'

'हमारे साथ यह सब क्या हो रहा है?' आंटी ने दरवाजे पर कहा।

'यह सब कर्मों का खेल है। ताया-जी आपको समझा देंगे।' मैंने मुस्कराते हुए दरवाजा बंद कर दिया।

जब बिट्टू तीन रातों तक घर नहीं आया, तब जाकर मेरे रिलेटिव्स को आठ लाख के ऑफर की वैल्यू समझ आई। जैसे ही मिस्टर घनश्याम मिश्रा और मिस्टर अजय मिश्रा ने पेपर साइन किए, मुझे विधायक के ऑफिस से फोन आया।

'शर्मा हियर, पीए टु शुक्ला-जी,' कॉलर ने कहा।

'आज रात एमएलए साहब ने आपको डिनर पर बुलाया है।'

'चीयर्स,' शुक्ला-जी ने कहा। हमने व्हिस्की के गिलास टकराए।

बेदी, सुनील और मैं उनके बड़े-से बैठकखाने में बैठे थे। उसमें तीन अलग-अलग सिटिंग एरिया थे, जिनमें वेलवेट सोफे, कॉफी टेबलें, सजी-धजी लैम्पें और फानूस थे। तीन वेटर नैपकिन-लाइन्ड चायना प्लेट्स में कबाब, नट्स और मिनी-समोसे परोस रहे थे। मैंने देखा कि बैठकखाने की दीवार पर शुक्ला-जी के परिवार के चित्र टंगे हैं।

'ये मेरे बेटे हैं – निखिल और अखिल,' शुक्ला-जी ने कहा। 'दोनों अमेरिका में पढ़ रहे हैं। मैं उन्हें यहा से अभी कुछ समय दूर रखूंगा।'

कुछ लोगों का कहना था कि शुक्ला-जी तलाकशुदा थे। कुछ अन्य का कहना था कि लखनऊ में उनका एक और परिवार है। लेकिन मुझे यह सब जानने में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

'जमीन हासिल करना एक बड़ी कामयाबी है,' बेदी ने कठोरता से कहा। 'लेकिन हमें अब भी एक लंबा सफर तय करना है। हम अगले हफ्ते वीएनएन वालों से मिल रहे हैं। तब तक हमें ट्रस्ट की औपचारिकताएं पूरी कर लेनी चाहिए।'

बेदी ने समझाया कि किस तरह वीएनएन, यानी वाराणसी नगर निगम, हमें हमारे लिए बेहद जरूरी एग्रीकल्चरल-टु-एजुकेशनल लैंड री-जोनिंग परमिट देगी, ताकि हम निर्माण शुरू कर सकें।

'री-जोनिंग जल्द से जल्द करा लो। मैंने आठ लाख रुपए इस बात के लिए नहीं दिए हैं कि उस जमीन पर धान की खेती हो,' शुक्ला-जी ने कहा।

'हम जल्दी से करवा लेंगे,' बेदी ने कहा। 'उन्हें पता है कि इसके पीछे कौन है। आप कोई छोटी-मोटी शख्सियत तो हैं नहीं, सर जी।'

'हां, ये तो है,' शुक्ला-जी ने इस तरह कहा, मानो बेदी कोई बहुत ही जानी-मानी बात दोहरा रहा हो।

'लेकिन हमें वीएनएन का ख्याल रखना होगा, है ना?'

'जी हां, यकीनन,' बेदी ने कहा। 'यह री-जोनिंग है।

इसके बाद जमीन की कीमत पांच गुना बढ़ जाती है।
यह कोई सस्ता सौदा नहीं है।'
'कितने लगेंगे?' शुक्ला–जी ने पूछा।
'ऑफ कोर्स, आपके लिए रेट अलग हैं। मेरे ख्याल से दस लाख लगेंगे।'
'क्या?' शुक्ला–जी ने हैरत से कहा।
बेदी ने जल्दी से एक घूंट में अपनी ड्रिंक खत्म की।
'सर, वह तीस एकड़ जमीन है। एक नॉर्मल आदमी को उसके लिए चालीस देने पड़ेंगे।'
'देखो, इसीलिए मेरे जैसे लोगों के लिए एजुकेशन सेक्टर में आना जरूरी है। आखिर इस देश का क्या होगा?' शुक्ला–जी ने कहा।
'डीएम को भी इसके लिए अनुमति देनी होगी।
लेकिन प्रधान ईमानदार है। वैसे भी, यदि जमीन पर कॉलेज बनाया जा रहा है और वीएनएन की रिकमेंडेशन हो तो वह भी इसे अप्रूव कर देगा।'
'ईमानदार कितना है?' शुक्ला–जी ने कहा।
'इतना ईमानदार तो है ही कि खुद पैसा न ले, लेकिन इतना भी नहीं है कि दूसरों को लेने से रोके।'
'तब ठीक है। यदि तुम ईमानदार हो, तो अपनी ईमानदारी अपने पास रखो,' सुनील ने कहा। वह उस शाम पहली बार कुछ बोला था।
'सुनील,' शुक्ला–जी ने कहा।
'क्या, सर?'
'अब तुम जाओ। मैं तुम्हारे लिए कुछ भिजवाऊंगा।
लेकिन आज से हमें इस प्रोजेक्ट पर ध्यान देना होगा,' शुक्ला–जी ने कहा।
'सर, लेकिन...' सुनील ने कहा।
'तुम्हारा काम पूरा हो गया,' शुक्ला–जी ने कहा और उसे जॉनी वॉकर ब्लैक लेबल की एक बोतल थमा दी।
सुनील समझ गया। उसने बोतल के लिए शुक्रिया अदा किया, इतना झुका, जितनी किसी मनुष्य की रीढ़ इजाजत दे सकती थी, और वहां से चला गया।
'मैं डीएम प्रधान को जानता हूं, उनकी बेटी मेरी दोस्त है,' मैंने शुक्ला–जी से कहा।
'उस मामले में कोई ज्यादा दिक्कत नहीं है। फिर भी, डीएम का आशीर्वाद मिल जाए तो बुरा क्या है,' शुक्ला–जी ने कहा।
'श्योर,' मैंने कहा।
शुक्ला–जी अपने बेडरूम में गए और एक भारी प्लास्टिक बैग लेकर लौटे। उन्होंने वह मुझे दे दिया।
'ये क्या है?' मैंने कहा।
'दस लाख रुपए,' उन्होंने कहा, 'वीएनएन के लिए।'
'दस लाख?' मैंने कहा। उस भारी बैग को थामते समय मेरे हाथ कांप रहे थे। मैंने इससे पहले कभी इतना पैसा देखा या उठाया नहीं था।
'दस लाख केवल एक आंकड़ा है,' विधायक ने कहा। 'बेदी–जी, इस लड़के की मदद करो। और अपने आपकी भी मदद करो। मुझे खाली गिलास पसंद नहीं है।'
'श्योर, शुक्ला–जी,' बेदी ने कहा और वेटर को पुकारा।
'एजुकेशन वाले लोग बस पैसों से ही खुश रहते हैं या उन्हें दूसरी चीजें भी चाहिए?' शुक्ला–जी ने बेदी से पूछा।
'जैसे कि?' बेदी ने पूछा।
'लड़कियां, मौज–मस्ती के लिए। मेरा एक आदमी है विनोद, वह उसका भी बंदोबस्त करवा सकता है,' विधायक ने कहा।
'अच्छा, जरूरत हुई तो आपको बता देंगे। वैसे पैसा आने से उसका बंदोबस्त अपने आप हो जाता है,' बेदी ने कहा।
'गुड।' उन्होंने ट्रैक बदला। 'क्या गोपाल कुछ समय के लिए तुम्हारे ऑफिस से काम कर सकता है? जब तक कि उसका अपना ऑफिस नहीं बन जाता?'
'ऑफ कोर्स, शुक्ला–जी।'
वेटर हमारे गिलास फिर से भरने के लिए दौड़े।
'ट्रस्ट के कागजात तैयार हैं। हम उन्हें इस हफ्ते साइन कर सकते हैं। लेकिन एक सवाल, गोपाल,' बेदी ने कहा।
'क्या?' मैंने कहा।
'कॉलेज का नाम क्या होगा?' बेदी ने कहा।
मैंने इस बारे में तो सोचा ही नहीं था।
'पता नहीं। शायद कोई ऐसा नाम, जिसमें तकनीक पर जोर दिया गया हो।'
'और हमारे शहर पर भी,' शुक्ला–जी ने कहा।
'ताकि मैं वक्त आने पर लोगों से कह सकूं कि मैंने यह उनके लिए किया है।'
'गंगाटेक?' मैंने कहा।
शुक्ला–जी ने मेरी पीठ थपथपाई। 'वेल डन, तुम मुझे पसंद हो, गोपाल। तुम बहुत आगे जाओगे।'
शुक्ला–जी ने खुद मेरा व्हिस्की का गिलास पूरा भर दिया।

17

बेदी ने मेरी डेस्क पर जो दस्तावेज रखे थे, मैं उन्हें पढ़ता रहा। मैं उसके एजुकेशन कंसल्टेंसी ऑफिस के एक एक्स्ट्रा रूम में बैठा था।
'ट्रस्ट बनाने के लिए भी पैसा देना होगा?' मैंने कहा।
'हां, कंपनियों के रजिस्ट्रार को। हर ट्रस्ट को वहां रजिस्टर करवाना जरूरी है,' बेदी ने कहा।
'लेकिन उसके लिए रिश्वत देने की क्या जरूरत है?
हम तो एक नॉन–प्रॉफिट ट्रस्ट खोलने जा रहे हैं,' मैंने कहा।
'हम रिश्वत इसलिए दे रहे हैं, क्योंकि यदि हमने रिश्वत नहीं दी तो रजिस्ट्रार अप्रूवल लटका देगा।' वह खीझ रहा था।
मैंने ठंडी सांस छोड़ी।
'खैर, चालीस हजार से ज्यादा नहीं लगेंगे। अब प्लीज यहां साइन करोगे?' बेदी ने कहा।

अगले दो घंटे तक मैं गंगाटेक एजुकेशन ट्रस्ट के 40 पेज के इंकॉर्पोरेशन डॉक्यूमेंट की सभी छह कॉपियों पर दस्तखत करता रहा। बीच–बीच में मैं अपनी अंगुलियां चटखाता रहा। बेदी मेरे सामने एक के बाद एक दस्तावेज रखता गया।

'ये क्या है?' जब बेदी ने मुझे लेटर्स का एक बंडल थमा दिया, तो मैंने पूछा। हर लेटर के साथ फाइलों का एक सेट अटैच था।
'कॉलेज खोलने के लिए यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन या यूजीसी के नाम तुम्हारी एप्लिकेशंस। इन फाइलों में कॉलेज के डिटेल्स हैं।'
मैं उन फाइलों से भी होकर गुजरा। उनमें कोर्स विवरण, प्रस्तावित सुविधाएं, फैकल्टी हायरिंग प्लान जैसे सेक्शन थे।
'ये स्टैंडर्ड फाइलें हैं और इन्हें इससे पहले की एप्लिकेशंस के आधार पर बनाया गया है,' बेदी ने कहा।
मैंने लेटर्स पर साइन कर दिए। 'अप्रूवल कैसे भेजा जाता है?' मैंने पूछा।
'वे साइट के इंस्पेक्शन की एक तारीख भेजेंगे।
इंस्पेक्शन के बाद निर्माण शुरू करने के लिए एक इन–प्रिंसिपल अप्रूवल देंगे।'
'मेरे ख्याल से हमें इंस्पेक्शन क्लीयर करवाने के लिए भी किसी को पैसे खिलाने होंगे?' मैंने कहा।
बेदी हंस पड़ा। 'तुम तो बहुत जल्दी सीख गए।
यकीनन, हमें उसके लिए भी पैसे खिलाने पड़ेंगे। हर इंस्पेक्टर को एक मोटा–सा बंडल। खैर, सबसे पहले तो हमें इंस्पेक्शन डेट के लिए पैसे देने होंगे। पहला काम पहले।'
मेरी भौंहें तन गईं। 'तुम मजाक तो नहीं कर रहे हो ना?' मैंने कहा।

'नहीं, हर सरकारी काम के लिए पैसा लगता है, खासतौर पर अगर वह एजुकेशन से जुड़ा हो तो। तुम्हें इसकी आदत डाल लेनी चाहिए।' इसके बाद उसने सूची बनाई कि इस देश में बच्चों को पढ़ाने के लिए एक कॉलेज खोलने के लिए कितने लोगों की हथेली गर्म करनी पड़ेगी। यूजीसी के अलावा हमें एआईसीटीई या ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन के लिए भी अप्लाई करना था। इंजीनियरिंग कॉलेजों को वे ही क्लीयर करते थे। इसके अलावा हर प्राइवेट कॉलेज को सरकार की ओर से एक यूनिवर्सिटी एफिलिएशन की भी दरकार होती है। इसके लिए हमें स्टेट यूनिवर्सिटी के कुलपति की अप्रूवल चाहिए थी।

शुक्ला–जी के कनेक्शन और नोटों से भरे एक अच्छे–खासे लिफाफे से काम बन सकता था।

'नहीं तो कुलपति बहुत मुश्किल पैदा कर सकते हैं,' बेदी ने कहा। वह अपने पिछले अनुभवों के आधार पर बोल रहा था।

'और ये यूजीसी और एआईसीटीई के इंस्पेक्टर्स भला कौन हैं?' मैंने पूछा।

'सरकारी कॉलेजों के यूनिवर्सिटी लेक्चरर्स को इंस्पेक्टर बनाया जाता है। जाहिर है, चूंकि यह मोटी कमाई वाला काम है, इसलिए इंस्पेक्टर बनने के लिए लेक्चरर भी घूस देते हैं,' बेदी ने कहा।

'किसे?'

'यूजीसी के सीनियर मैनेजमेंट को, या शिक्षा मंत्रालय में किसी को। खैर, ये उनकी प्रॉब्लम है। हमें अपनी प्रॉब्लम पर ध्यान देना है। प्लीज, शुक्ला–जी को बता दो कि हमें इन सब चीजों के लिए पैसों की जरूरत होगी।'

मैंने सिर हिला दिया।

'और हां, वीएनएन मीटिंग को मत भूलना,' बेदी ने कहा। 'और बैग को तो बिल्कुल ही मत भूलना।'

'मैं तो उससे चंगुल छुड़ाने के लिए बेचैन हूं,' मैंने कहा। 'घर में इतना कैश रखने पर डर लगता है।'

'घबराओ मत,' बेदी ने कहा। 'वीएनएन की एक विजिट के बाद सारा पैसा गायब हो जाएगा।'

हम शाम को छह बजे शहीद उद्यान के सामने स्थित वाराणसी नगर निगम ऑफिस पहुंचे। अधिकारियों ने ही हमें कहा था कि हम ऑफिस का काम खत्म होने के बाद आएं। यदि पैसा मिलने की गुंजाइश हो तो सरकारी अफसर मल्टीनेशनल वालों से भी ज्यादा ओवरटाइम करने को तैयार रहते हैं।

'वेलकम, वेलकम। आई एम सिन्हा,' खाली रिसेप्शन एरिया में एक व्यक्ति ने हमारा अभिवादन किया। वह हमें ऊपर ले गया। हम उस खस्ताहाल इमारत की दूसरी मंजिल पर पहुंचे। डिप्टी–कॉर्पोरेटर सिन्हा शुक्ला–जी को दस सालों से भी अधिक समय से जानता था और उन्हें अपना बड़ा भाई बता रहा था।

'यदि बड़े भैया ऐसा चाहते हैं, तो समझिए कि हो गया,' सिन्हा ने कहा। उसने इस बात का कोई जिक्र नहीं किया कि ऐसा करने के लिए बड़े भैया को छोटे भैया को घूस खिलानी पड़ेगी।

मैंने नक्शे, प्रॉपर्टी के दस्तावेज और हमारी फॉर्मल एप्लिकेशंस निकाल लीं। सिन्हा ने गंभीरता के साथ उनका मुआयना किया और हुम्म–हुम्म करता रहा।

'हम री–जोनिंग के बाद ही काम शुरू कर पाएंगे,' मैंने कहा।

'री–जोनिंग मुश्किल है,' सिन्हा ने कहा। 'इसके लिए ऊंचे अफसरों की अप्रूवल चाहिए।'

'इसमें कितना समय लगेगा?' मैंने कहा।

'तुम कमउम्र दिखते हो,' सिन्हा ने कहा।

'एक्सक्यूज मी?' मैंने कहा।

'अधीरता। यह नौजवानों की पहली कमजोरी होती है। तुम कॉलेज खोलने जा रहे हो, जल्दी किस बात की है?'

'उसमें तो वैसे भी काफी समय लगेगा। लेकिन मैं चाहता हूं कि सभी अप्रूवल्स जल्दी–जल्दी हो जाएं।'

मैंने कहा।

बेदी ने मुझे इशारा करके चुप रहने को कहा। सिन्हा हंस पड़ा।

'तुम्हें तो बिल्डिंग के प्लान का भी अप्रूवल करवाना पड़ेगा ना?' डिप्टी–कॉर्पोरेटर ने कहा।

'हां,' बेदी ने कहा। 'क्या आपके जूनियर अधिकारी उसको हैंडल कर लेंगे?'

'मुझे दस्तावेज भिजवा दो। सब कुछ घर पर ही भिजवाना। सब कुछ,' सिन्हा ने आखिरी शब्दों पर जोर देते हुए कहा।

मैं उसकी बात समझ गया। मैंने प्लास्टिक बैग थपथपाया, जो फर्श पर रखा था।

'मैं यहां कुछ लाया हूं,' मैंने कहा।

'ऑफिस में?' सिन्हा फौरन उठ खड़ा हुआ। 'तुम पागल हो क्या?'

मैं अपने साथ पैसा इसलिए लाया था ताकि उन्हें बता सकूं कि हम काम करवाने के लिए कितने गंभीर थे। मुझे पता था कि वह यहां पैसे नहीं लेगा।

'बेदी सर, इसको कुछ सिखाओ। ये सब कबाड़ा कर देगा,' सिन्हा ने कहा और हमें ऑफिस से बाहर ले आया।

मैंने प्लास्टिक के उस भारी लाल बैग को अपने करीब सटा लिया।

'बाय द वे, कितना पैसा है?' बाहर आने के बाद सिन्हा ने पूछा।

'दस,' मैंने कहा।

'री–जोनिंग और बिल्डिंग प्लान के लिए काफी नहीं हैं,' सिन्हा ने कहा।

'ये कॉलेज है, प्लीज थोड़ा रीजनेबल होइए,' मैंने कहा।

'मैं रीजनेबल ही हूं। लेकिन दस तो बहुत कम हैं।

पंद्रह लगेंगे,' सिन्हा ने कहा।

'शुक्ला–जी के लिए भी कोई कंसेशन नहीं?' मैंने कहा।

'मैं पहले ही अपने रेट से आधा ले रहा हूं,' सिन्हा ने कहा।

'ग्यारह?' मैंने कहा। मैं उससे इस तरह बार्गेनिंग कर रहा था, जैसे मैं कोई टी–शर्ट ले रहा होऊं। जाहिर है, जितने अमाउंट की यहां बात हो रही थी, उसने मुझे सुन्न कर दिया था।

'साढ़े बारह। डन! अब मुझे अपने बड़े भैया के सामने शर्मिंदा मत करो,' सिन्हा ने कहा।

मैंने इसके बाद उससे कोई बहस नहीं की। मुझे बाकी के पैसों का बंदोबस्त करना था।

'तुम अच्छे बार्गेनर हो,' बेदी ने मुझे शुक्ला–जी के घर ले जाते हुए कहा।

'तुम ही इसे फोड़ो,' शुक्ला–जी ने मुझे कॉलेज साइट के एंट्रेंस पर एक नारियल थमाते हुए कहा। उनके आसपास उनके चमचों की भीड़ थी।

भूमिपूजन सेरेमनी के साथ ही निर्माण की शुरूआत हुई। यह दिन देखने के लिए मुझे तीन महीनों तक यहां–वहां दौड़कर दो दर्जन अप्रूवल लेने पड़े थे।

यूजीसी और एआईसीटीई इन–प्रिंसिपल अप्रूवल भी मिल गए थे। अंतिम इंस्पेक्शन कॉलेज खुलने पर होना था।

अभी तो हमारे पास निर्माण शुरू करने की अनुमति थी।

अब बस हमें भगवान का आशीर्वाद चाहिए था।

गनीमत है कि भगवान का आशीर्वाद पाने के लिए नोटों का बंडल देने की जरूरत नहीं थी।

मैंने हाथ में नारियल थामा और इधर–उधर देखा।

आरती अभी तक नहीं आई थी।

'नारियल फोड़ो, बेटा,' शुक्ला–जी ने कहा।

मैं उसका और देर तक इंतजार नहीं कर सकता था।

मेरे ख्याल से इस दिन का उससे ज्यादा महत्व मेरे लिए था।

मैंने यह कल्पना करते हुए नारियल फोड़ा कि वह राघव का सिर है। नारियल फोड़ते समय मेरी अंगुली कट गई। लोगों ने तालियां बजाईं। मैंने कटी हुई अंगुली मुंह में रख ली और खून चूसने लगा।

'गंगाटेक इंजीनियरिंग कॉलेज' – दो मजदूरों ने कीचड़भरी जमीन पर मेटल का एक होर्डिंग लगा दिया।

इस मौके पर मुझे ज्यादा भावुक होना था। आखिर मैंने इस दिन के लिए महीनों तक मेहनत की थी। लेकिन इसके बावजूद मुझे कुछ महसूस नहीं हुआ। शायद इसकी वजह यह थी कि मुझे पता था यह दिन देखने के लिए मुझे कितनी घूस देना पड़ी है। मुझे बिजली कनेक्शन से लेकर कंस्ट्रक्शन साइट लेबर अप्रूवल्स तक के लिए कुल बहत्तर लाख, तेईस हजार और चार सौ रुपए खर्च करने पड़े थे।

शुक्ला–जी ने सौ से अधिक मेहमानों को बुलाया था, जिनमें प्रेस के सदस्य भी शामिल थे। हमने एक कैटरर भी रखा था, जो छोटे सफेद बक्सों में मेहमानों को गर्म समोसे और जलेबियां परोस रहा था।

शुक्ला–जी ने सभी को एक कामचलाऊ मंच से संबोधित किया।

'बस तीन साल, और उसके बाद यह सपना हकीकत बन जाएगा। यह मेरे शहर को मेरी तरफ से एक तोहफा है, जिसके वह काबिल भी है,' उन्होंने कहा।

मैं आगे की कतार में बैठा था। मैं बार–बार मुड़–मुड़कर देखता रहा कि आरती आई है या नहीं।

शुक्ला–जी की स्पीच के बाद प्रेस ने कुछ सवाल पूछे।

उनमें से अधिकतर सवाल सीधे–सरल थे। वे कॉलेज में पढ़ाए जाने वाले कोर्सेस और अन्य सुविधाओं के बारे में थे। बहरहाल, कुछ सख्त पत्रकार उन्हें आड़े हाथों लेने का मौका नहीं चूके।

'शुक्ला सर, क्या आप इस कॉलेज के मालिक हैं?

तो इसमें आपकी हिस्सेदारी कितनी है?' एक पत्रकार ने पूछा।

'मैं ट्रस्टी हूं। मेरी कोई हिस्सेदारी नहीं है। यह एक नॉन–प्रॉफिट संस्था है,' शुक्ला–जी ने कहा।

'जमीन और कंस्ट्रक्शन के लिए कौन फंडिंग कर रहा है?'

'मिस्टर गोपाल मिश्रा यहां मौजूद हैं और वे ही इस जमीन के मालिक हैं। चूंकि मैं यंग टैलेंट को इनकरेज करना चाहता हूं, इसलिए मैंने फंड जुटाने में उनकी थोड़ी मदद भर की है,' शुक्ला–जी ने कहा और एक रूमाल से अपना माथा पोंछ लिया।

'फंड कहां से जुटाया गया?' पत्रकार ने आगे पूछा।

'अलग–अलग हितग्राहियों से। फिक्र मत कीजिए, किसी ने पैसा लगाया ही है, लिया नहीं है। आजकल का मीडिया कितना शक्की हो गया है,' शुक्ला–जी ने कहा।

'सर, गंगा एक्शन प्लान घोटाले में क्या चल रहा है? उसमें आपका नाम आया है,' पीछे की कतार से एक पत्रकार ने पूछा।

'अब वह पुरानी कहानी हो गई है। कोई घोटाला नहीं हुआ था। हमने नदी की साफ–सफाई के लिए पैसा खर्च किया था,' शुक्ला–जी ने कहा।

इस नए विषय ने सभी पत्रकारों को उत्तेजित कर दिया। सभी ने सवाल पूछने के लिए हाथ खड़े कर दिए।

'नो मोर क्वेश्चंस, थैंक यू वेरी मच,' शुक्ला–जी ने कहा।

वे साइट से चले गए। पत्रकार उनके पीछे–पीछे हो लिए। मैं साइट पर ही रहा और यह सुनिश्चित करता रहा कि सभी मेहमानों को रिफ्रेशमेंट्स सर्व किया जाए।

ईंटों, लोहे के सरियों और अन्य निर्माण सामग्रियों से लदा एक ट्रक आया। उसके पीछे लाल बत्ती वाली एक एंबेसेडर कार थी।

आरती कार में से बाहर निकली और मेरी तरफ आई। 'आई एम सो सो सॉरी,' उसने कहा। 'पूजा हो गई?'

'क्या आरती के बिना कभी कोई पूजा हो सकती है?' मैंने जवाब दिया।

वाराणसी
तीन और सालों बाद

18

तेज संगीत और लोगों की बातचीत के शोरगुल के बीच मेरे आने पर किसी का ध्यान ही नहीं गया। हाई–क्लास पार्टियां मुझे नर्वस कर देती हैं और यदि मुमकिन होता तो मैं उस दिन राघव के ग्रेजुएशन की पार्टी से खुशी– खुशी चला जाता। लेकिन मैं वहां केवल इसीलिए गया था, ताकि यह न समझा जाए कि मैं उससे जल रहा हूं।

मुझे वाकई उससे किसी तरह की कोई जलन नहीं थी। तीन महीने बाद मेरा कॉलेज गंगाटेक खुलने वाला था। तीन साल तक दिन–रात मेहनत के बाद आखिरकार मेरा कॉलेज बनकर तैयार था। मुझे जल्द ही फैकल्टी रिक्रूटमेंट के इंटरव्यू लेने थे और एआईसीटीई के इंस्पेक्शन की डेट भी मुझे मिल चुकी थी। ऐसे में बीएचयू की कोई स्टुपिड डिग्री मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती थी, क्योंकि जल्द ही मैं खुद स्टूडेंट्स को डिग्रियां बांटने वाला था।

'हे!' राघव ने जोर से कहा। 'बडी, तुम थे कहां?'

'कंप्यूटर सप्लायर के साथ बात कर रहा था,' मैंने कहा।

ऐसा लगा जैसे राघव ने मेरी बात सुनी नहीं।

'मेरे कॉलेज के लिए। हम वहा एक कंप्यूटर सेंटर चालू कर रहे हैं,' मैंने कहा।

राघव ने अपना हाथ उठाया। 'गुड शो। गिव मी हाई फाइव!'

उसने इतनी जोर से ताली मारी कि मेरा हाथ झनझना गया।

'ड्रिंक चाहिए?,' राघव ने कहा। 'बार वहां है।'

उसने डाइनिंग टेबल की ओर इशारा किया, जहां बीयर, रम और कोक रखे थे। लोग प्लास्टिक ग्लासेस में अपने लिए ड्रिंक बना रहे थे। उस रात राघव के माता–पिता जानबूझकर किसी रिलेटिव के यहां रुक गए थे, ताकि राघव और कॉलेज के दोस्त दिल खोलकर मौज–मस्ती कर सकें।

मैंने नजरें घुमाकर राघव के दोस्तों को देखा। तीस लड़के, जिनमें से अधिकतर ने चश्मे और पुरानी टी–शर्ट पहन रखी थीं और जो जॉब ऑफर्स के बारे में बकबक किए जा रहे थे और केवल तीन लड़कियां, जिनके ड्रेस सेंस को देखकर ही लग जाता था कि वे किसी इंजीनियरिंग कॉलेज की हैं।

मैंने अपने लिए रम और कोक की ड्रिंक्स तैयार कीं।

फिर मैं आइस खोजने लगा। डाइनिंग टेबल पर आइस नहीं थी, इसलिए मैं किचन की ओर बढ़ चला। लंबी चोटियों वाली एक लड़की एक बड़े–से चॉकलेट केक पर मोमबत्तियां सजा रही थी। उसकी पीठ मेरी तरफ थी। केक की डिजाइन गियर–शेप्ड थी और उस पर सफेद मार्जिपन से लिखा हुआ था -- हैप्पी ग्रेजुएशन।

'गोपाल!' आरती ने मुझे देखते ही कहा। मैं फ्रिज से जैसे–तैसे आइस–ट्रे निकाल रहा था।

उसकी आवाज ने मुझे रोमांचित कर दिया।

'हमें मिले शायद,' आरती ने कहा, 'एक साल हो गया होगा?'

मैं वाकई उसके संपर्क में नहीं था। 'हाय,' मैंने कहा।

ऐसा नहीं है कि मैं उससे दूर भागना चाहता था।

लेकिन मुझे उसके संपर्क में बने रहने की कोई तुक भी नजर नहीं आती थी। मुझे लगता था कि मेरे लिए कंस्ट्रक्शन साइट पर मजदूरों पर चिल्लाना उसके मुंह से उसकी डेट्स के बारे में सुनने से ज्यादा फायदेमंद था।

मैंने उसके कॉल्स को नजरअंदाज करना शुरू कर दिया था और जल्द ही वह भी मुझसे दूर हो गई।

'हां, आई एम सॉरी, गलती मेरी ही है,' मैंने कहा।

'मैं साइट पर बहुत बिजी हो गया था।'

उसने मेरे हाथ से आइस–ट्रे ले ली, आइस–क्यूब्स निकालने के लिए उसे मरोड़ा और दो क्यूब्स निकालकर मेरे ग्लास में डाल दिए।

'मैं तुमसे सफाई नहीं मांग रही हूं। मैं समझ सकती हूं कि मैं अब तुम्हारे लिए इंपोर्टेंट नहीं रही।'

'यह सच नहीं है। मेरे पास मेरी साइट थी, तुम्हारे पास राघव था,' मैंने कहा। 'हमारे सामने अपनी–अपनी जिंदगियां थीं और...' 'मेरा बॉयफ्रेंड है, इसका यह मतलब नहीं कि वह मेरी पूरी जिंदगी बन गया है, ओके?' आरती ने कहा।

'वेल, वह लगभग तुम्हारी पूरी जिंदगी जैसा ही है, है ना?' मैंने कहा।

मैंने उसे अपनी ड्रिंक ऑफर की। उसने मना कर दिया। वह फिर केक सजाने लगी।

'ऐसा नहीं है। कोई भी इंसान आपके लिए इतना इंपोर्टेंट नहीं हो सकता कि आपकी पूरी जिंदगी बन जाए।'

'क्या बात है?' मैंने कहा। 'कुछ हुआ क्या?'

'नहीं, नहीं,' उसने कहा। मुझे लगा उसने नहीं कहने में कतई देर नहीं लगाई थी। 'सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा है। राघव ग्रेजुएट हो गया है। उसे इंफोसिस से जॉब का ऑफर है। मेरा एविएशन कोर्स भी जल्द ही खत्म होने वाला है। सब कुछ पहले की तरह मजबूत है।'

'क्या?' मैंने कहा।

'हमारा रिश्ता।'

'हमारा?'

'मेरा और राघव का,' उसने कहा।

'जाहिर है,' मैंने कहा।

उसने राघव के पास ले जाने के लिए केक उठाया।

'मैं अब तुम्हारे टच में रहूंगा,' मैंने कहा।

'दैट वुड बी नाइस। मैं पूरे एक साल से नाव में नहीं बैठी हूं,' उसने कहा और मुस्करा दी।

वही कंफ्यूजिंग हड़बड़ाहट भरी आरती फिर लौट आई थी। आखिर उसकी बातों का क्या मतलब था?

क्या वह हमारी नाव की सैर को मिस कर रही थी?

क्या वह मेरे साथ होने को मिस कर रही थी? क्या वह मुझे उकसाने की कोशिश कर रही थी या वह बस यूं ही बातें बना रही थी? मैं इन्हीं विचारों में डूबा हुआ किचन से बाहर चला आया।

सभी राघव के इर्द–गिर्द खड़े थे। उसके हाथों में चाकू था। आरती उसके पास खड़ी थी। राघव ने केक काटा। सभी ने तालियां बजाई और हूट किया। मुझे लगा कि शायद किसी कॉलेज से ग्रेजुएट होना वाकई बड़ी बात होती है। राघव ने केक का पहला टुकड़ा आरती को खिलाया। आरती ने भी उसे एक टुकड़ा दिया।

जैसे ही राघव ने केक खाने को अपना मुह खोला, आरती ने उसके चेहरे पर केक लगा दिया। सभी ने ठहाका लगाया और तालियां पीटीं। मुझे लगा कि मैं एक ऐसी जगह आ गया हूं, जहां मुझे नहीं आना चाहिए था। आखिर मैं यहां कर क्या रहा हूं? ये लोग मुझे बुलाते ही किसलिए हैं?

'स्पीच! स्पीच!' सभी चाहते थे कि राघव कुछ कहे। आरती ने एक टिशू लिया और उसका चेहरा पोंछ दिया।

'वेल, फ्रेंड्स, आपके ग्रेजुएशन पर आप सभी को कांग्रेच्युलेशन,' राघव ने कहा। 'हमने एक–दूसरे के साथ चार बेहतरीन साल बिताए। अब जब हम जिंदगी में आगे बढ़ रहे हैं तो मुझे पूरा यकीन है कि हमारे दिल में हमारे कैम्पस के लिए हमेशा एक खास जगह बनी रहेगी।'

'हम अब भी साथ ही रहेंगे, ड्यूड,' एक चश्मीश लड़के ने उसे टोकते हुए कहा, 'इंफोसिस में।'

सात स्टूडेंट्स ने अपने गिलास हवा में ऊपर उठाए।

उन सभी को उस सॉफ्टवेयर कंपनी से ऑफर आए थे।

'चीयर्स!' उन्होंने कहा।

राघव चुप रहा। 'एक्चुअली, मैं कुछ अनाउंस करना चाहता हूं,' उसने कहा। 'मैं जॉब नहीं करूंगा।'

'क्या?!' सभी की हैरतभरी आवाज सुनाई दी।

'हां, मैंने यहीं रहने का फैसला किया है,' राघव ने कहा और अपना हाथ आरती की कमर पर लपेट दिया, 'मेरे प्यार के करीब।'

'हां, ठीक है,' आरती ने राघव के गाल से आइसिंग का एक धब्बा पोंछते हुए कहा। 'सभी को सही वजह बताओ।'

'लेकिन यही तो सही वजह है,' उसने खिलखिलाते हुए कहा।

'नहीं,' आरती ने लोगों की ओर मुड़ते हुए कहा, 'मिस्टर राघव कश्यप यहां इसलिए रुक रहे हैं, क्योंकि वे 'दैनिक' में एक रिपोर्टर की तरह जॉइन करना चाहते हैं।'

लोगों में हैरत भरी खुसफुसाहटें दौड़ गईं। राघव ने कॉलेज की [illegible] लिए इंटर्नशिप भी की थी। बहरहाल, बहुत कम लोगों को यह

अंदाजा था कि उसमें इतना साहस होगा कि वह इंफोसिस का जॉब छोड़कर एक अखबार का पत्रकार बनना चाहेगा।
राघव अपने दोस्तों से बतियाने लगा। आरती केक की स्लाइस काटकर सभी को देने लगी। संगीत फिर जोर से गूंजने लगा। मैंने एक और ड्रिंक बनाया। मैं सोचने लगा कि क्या अब मुझे यहां से चल देना चाहिए।
आरती ने मुझे कागज की एक प्लेट पर केक दिया।
मैंने मना कर दिया।
'तो तुम्हारा कॉलेज कब खुल रहा है?' उसने पूछा।
'तीन महीने बाद गंगाटेक के एडमिशंस शुरू हो जाएंगे,' मैंने कहा।
'रियली? कैन आई अप्लाई?' वह हंस पड़ी।
'यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें यूं ही एक डिग्री दे दूंगा। तुम्हें क्लासेस अटेंड करने की भी जरूरत नहीं है,' मैंने कहा।
'रियली?' उसने अपनी एक अंगुली नचाते हुए कहा।
'ठीक है, मुझे राघव की ही तरह इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग की एक डिग्री दे दो। लेकिन मुझे उससे बेहतर मार्क्स चाहिए।'
'श्योर,' मैंने कहा।
वह और जोर से हंस पड़ी। मैंने पिछले चार सालों में आरती को भुलाने की बहुत कोशिशें की थीं, लेकिन इसके बावजूद उसकी एक ही हंसी मेरी सालों की मेहनत को नाकाम कर सकती थी। अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे सब कुछ पहले जैसा ही हो, इस दौरान हमारे बीच कुछ हुआ ही न हो।
लेकिन मुझे जाना था। मैंने धीमे–से फुसफुसाकर कहा, 'अब मुझे चलना चाहिए।'
'क्यों?' उसने कहा, 'तुम अभी–अभी तो आए हो।'
'मैं अपने आपको यहां फिट नहीं महसूस करता।'
'इट्स ओके। मैं भी इन सब लोगों को कहां जानती हूं। सभी नर्ड इंजीनियर्स हैं। चलो, बालकनी में चलते हैं।'
हम राघव की बालकनी में बैठ गए। मैं अपनी ड्रिंक की छोटी चुस्कियां भरता रहा। हवा के कारण आरती के बाल उड़कर मेरे चेहरे पर आ रहे थे। मैं उससे थोड़ा दूर खिसक गया।
'तुमने एविएशन एकेडमी में अपना कोर्स पूरा कर लिया?' मैंने कहा।
'हां, फैकफिन दो माह पहले ही खत्म हो गया था।
मैं सभी एयरलाइंस के लिए एप्लाई कर रही हूं। देखते हैं वे लोग मुझे इंटरव्यू के लिए बुलाते हैं या नहीं,' उसने कहा।
'लेकिन वाराणसी में तो कोई एयरलाइन नहीं है।'
'हां, मुझे दिल्ली या मुंबई जाना पड़ेगा। बेंगलुरु में भी एक नई लो–कॉस्ट एयरलाइन है। डिपेंड करता है।'
'किस पर डिपेंड करता है?' मैंने पूछा।
'इस पर कि मुझे कहां जॉब मिलता है। ऑफ कोर्स, अब चूंकि राघव यहां है, इसलिए मामला कॉम्प्लिकेटेड हो गया है।'
'वह दूसरे शहरों में भी पत्रकार बन सकता है ना?'
मैंने कहा।
'शायद,' उसने अपने बालों को कान के पीछे करते हुए कहा। 'लेकिन उसे वाराणसी पसंद है। उसे इस जगह और यहां की समस्याओं के बारे में पता है।
तुम्हारी ड्रिंक कैसी है? मैं एक सिप ले सकती हूं?'
मैंने उसे अपना ग्लास दे दिया। 'उसे इस 'दैनिक' के जॉब के लिए कितना पैसा मिलता है?' मैंने कहा। मैं जानना चाहता था कि राघव कमा कितना रहा है।
उसने कुछ घूंट पिए और ग्लास अपने पास ही रखा।
'इंफोसिस उसे जितना देता, उसका एक तिहाई,' उसने कहा।
'वॉव, और उसके पैरेंट्स को भी इससे कोई ऐतराज नहीं है?'
'कैसे नहीं होगा! जब उसने उन्हें बताया, तो वे तो आगबबूला हो गए। सवाल पैसों का ही नहीं है, वह अपनी इंजीनियरिंग की डिग्री का कोई इस्तेमाल भी नहीं कर रहा है। वे लोग अब भी अपसेट हैं।'
'तो?'
'तो क्या? उसे किसी बात की कोई परवाह नहीं है।
उसका मानना है कि हर रेवोल्यूशन की शुरूआत घर से ही होती है। समाज केवल तभी बदलता है, जब घर के नियम–कायदे तोड़े जाते हैं।'
'रेवोल्यूशन?' मैंने कहा।
'हां, उसका दिमाग पूरी तरह से उसमें लगा हुआ है।
द ग्रेट इंडियन रेवोल्यूशन। अरे, मैं तो तुम्हारी पूरी ड्रिंक पी गई। आई एम सो सॉरी,' उसने कहा और माफी मांगने के अंदाज में मेरी बांह छू ली।
'इट्स फाइन। मैं एक और बना लूंगा। और तुम उसके कैरियर की चॉइस को लेकर खुश हो?'
'ऑफ कोर्स। मेरा मानना है कि हमें वही काम करना चाहिए, जो हमारा पैशन हो। मैं भी तो ऐसा ही कर रही हूं ना? ये अलग बात है कि एक एयर होस्टेस होना क्रांतिकारी होने जैसा नहीं है, लेकिन फिर भी, वह मेरे मन का काम तो है ही।'
'और यह रेवोल्यूशन एग्जैक्टली किस तरह की होगी?' मैंने झल्लाहट में कहा।
'वेल, राघव को लगता है कि भारत के लोग एक न एक दिन वास्तविक क्रांति करेंगे। वह यही सोचता है।'
'क्यों?'
'उसी से पूछो, वह तुम्हें बताएगा। रुको, मैं हमारे लिए और ड्रिंक्स बना देती हूं।'
वह फिर भीतर चली गई। मैं बालकनी में ही इंतजार करता रहा। मैं घर में मौजूद आत्मतुष्ट सॉफ्टवेयर इंजीनियरों से दूर रहना चाहता था। मैं उस दिन की कल्पना करने लगा, जब मेरे कॉलेज के स्टूडेंट्स को जॉब मिलेगा। मैं सोचने लगा कि क्या कभी बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनियां गंगाटेक में विजिट करने आएंगी।
ऑफ कोर्स, पहले तो हमें एडमिशन शुरू करने होंगे।
वह एक ट्रे लेकर लौटी। उसमें दो ड्रिंक्स के साथ ही एक प्लेट भी थी, जिसमें सैंडविच, केक और आलू चिप्स थीं।
'मुझे लगा तुम्हें भूख लग आई होगी,' उसने कहा।
आरती हमेशा इसी तरह देखभाल करने वाली मां की तरह पेश आती थी।
'थैंक्स,' मैंने अपना ग्लास लेते हुए कहा।
'अब बताओ। तुमने मुझे क्यों भुला दिया?' आरती ने कहा।
'किसने कहा कि मैंने तुम्हें भुला दिया है?' मैंने कहा। हमारी आंखें मिलीं। तीन सेकंड के बाद मुझे असहज लगने लगा। पहले मेरी ही पलकें झपकीं।
'अब मेरे पास मोबाइल फोन है। तुम्हें मेरा नंबर चाहिए?' उसने कहा।
'श्योर,' मैंने कहा। शुक्ला–जी ने मुझे सेलफोन दिया था। हमने एक–दूसरे को अपने नंबर दिए।
'मैं चलकर तुम्हारा कॉलेज देखना चाहूंगी,' उसने कहा।
'उसे खुल तो जाने दो। मैं उसके शुभारंभ पर कार्यक्रम करवाऊंगा,' मैंने कहा।
'क्या यह कॉलेज ही तुम्हारा पैशन है?' उसने पूछा।
'पता नहीं। लेकिन जिंदगी ने मुझे इससे बेहतर मौका कोई दूसरा नहीं दिया।'
'क्या तुम्हारे जीवन में कभी कोई पैशन रहा है, गोपाल? वह एक अद्भुत फीलिंग होती है,' आरती ने कहा।
मैं चुप रहा और उसकी ओर देखता रहा। वही तो मेरा पैशन थी।
'कुछ भी?' उसने पूछा।
'पैसा, मैं खूब पैसा कमाना चाहता हूं,' मैंने कहा।
उसने अपने हाथों को झटक दिया। 'ओह, कम ऑन,' उसने कहा, 'यह पैशन नहीं है, यह एंबिशन है।'
'जो भी हो। चलो अब अंदर चलते हैं।' मैं खड़ा हो गया। मैं नहीं चाहता था कि राघव हमें अकेला देख ले।
'यहीं रहो ना,' उसने मनुहार के अंदाज में कहा और मेरा हाथ खींचकर मुझे नीचे बिठा लिया। 'हम इतने दिनों से नहीं मिले हैं। तुम्हारे जीवन में क्या चल रहा है? तुम्हारी कोई गर्लफ्रेंड है?'
मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।
'तुम्हारी कोई गर्लफ्रेंड होनी चाहिए। प्यार अद्भुत होता है। यह फीलिंग पैशन से भी बेहतर होती है,' उसने कहा।

'प्यार करना केवल तभी अद्भुत होता है, जब वह शख्स भी आपको प्यार करे, जिसे आप प्यार करते हैं,' मैंने कहा, लेकिन यह कहते ही मुझे अफसोस हुआ कि मैंने ऐसा क्यों कहा।

'आउच! यह तो तुमने मुझी पर वार कर दिया।'

'आई एम सॉरी,' मैंने कहा।

'वह बहुत पुरानी बात हो गई है। और राघव और मैं एक-दूसरे के साथ खुश हैं। बहुत खुश।'

'अब हम अंदर चलें?' मैंने कहा।

'यदि तुम चाहो तो अपने लिए भी कोई अच्छी-सी लड़की खोज सकते हो, गोपाल।'

'मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं,' मैंने कहा और दूसरी तरफ देखने लगा।

उसने मेरी ठोडी पकड़ी और मेरे चेहरे को अपनी तरफ घुमा लिया। 'तुम्हारे पास अपना एक कॉलेज होगा, और यदि तकदीर ने मेरा साथ दिया तो मैं ज्यादा से ज्यादा एक फ्लाइट अटेंडेंट बनकर लोगों को चिप्स सर्व करती रहूंगी। तुम एक बेहतर लड़की खोज सकते हो।'

'तुम से भी बेहतर लड़की?' मैंने कहा।

'बिल्कुल,' उसने कहा।

'यह मुमकिन नहीं है, आरती,' मैंने कहा। इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, मैं फिर उठ खड़ा हुआ और पार्टी में चला गया।

मैं राघव के पास गया और उससे कहा कि मुझे एक कांट्रेक्टर से मिलना है, इसलिए मुझे जाना होगा। ऐसा लगा जैसे उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। मैं उसके अपार्टमेंट से बाहर आया और नीचे चला आया। आरती मुझे पुकारती हुई मेरे पीछे चली आई।

मैंने पीछे मुड़कर देखा। 'क्या है?' मैंने कहा।

'कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हारे मन में अब भी मेरे लिए किसी तरह की फीलिंग्स हैं?'

मैंने कसकर थूक निगला। 'कतई नहीं,' मैंने कहा और तेजी से बाहर चला गया।

19

'तुम लोग कितना लंबा ब्रेक लेते हो?' मैं चिल्लाया।

मुख्य कैम्पस भवन के समीप मजदूरों का एक समूह बरगद के एक पेड़ के नीचे बैठा था। 'ढाई बज गए हैं, खाने का समय एक घंटा पहले ही खत्म हो गया है।'

एआईसीटीई के फाइनल इंस्पेक्शन में अब केवल सात दिन बचे थे। क्लासरूम पर एक और बार पेंटिंग की जरूरत थी, लेकिन मजदूरों को फिक्र ही नहीं थी।

'आपका काम हो जाएगा, साहब,' एक मजदूर ने उस अखबार को समेटते हुए कहा, जिस पर वह बैठा था। उसने फटी बंडी और गहरे रंग की गंदी पतलून पहन रखी थी, जिस पर सब तरफ पेंट लगा हुआ था।

'यदि इंस्पेक्टर हमसे नाराज हो गए तो मेरा कॉलेज नहीं खुल पाएगा,' मैंने कहा।

'आपके कॉलेज को भला कौन ना कह सकता है?'

मजदूर उठ खड़ा हुआ।

दूसरे मजदूरों ने भी अपने सामान उठा लिए। उन्होंने अपने-अपने ब्रश उठाए और क्लासरूम्स की ओर चले गए। मैं बरगद के पेड़ के नीचे बैठा रहा। मैं हर दूसरे घंटे में मजदूरों को हांककर उनसे काम कराने के अपने डेली रूटीन से थक चुका था। मैंने मजदूरों के पीछे छूट गए अखबारों पर नजर डाली। एक हेडलाइन ने मेरा ध्यान खींचा – 'वाराणसी को और कॉलेजों की जरूरत है।'

मैंने अखबार उठा लिया। हेडलाइन के नीचे लेखक का नाम था – राघव कश्यप।

लेख में बताया गया था कि किस तरह पिछले दस सालों में वाराणसी में युवाओं की आबादी बेहद बढ़ गई है, लेकिन कॉलेजों की संख्या में इतनी तेजी से बढ़ोतरी नहीं हो सकी है। किस तरह सरकार एजुकेशन को अपनी प्राथमिकता बना सकती है। उसने यह भी कहा था कि सरकार को कॉलेजों को इस बात की अनुमति देनी चाहिए कि वे कानूनी तरीके से मुनाफा कमा सकें, ताकि कॉर्पोरेट्स इस क्षेत्र में प्रवेश करें और शिक्षा की गुणवत्ता सुधारें। भले ही यह लेख राघव ने लिखा था, लेकिन वह मुझे अच्छा लगा। वह लेख मेरे बिजनेस के भले के लिए ही बात कर रहा था।

लेख से अलग से एक बॉक्स भी था, जिसमें वाराणसी में खुलने वाले कॉलेजों की सूची थी। उसमें पांच नाम थे। मैंने देखा उसमें गंगाटेक का नाम भी शामिल था।

'वॉव,' मैंने मन ही मन कहा। मैं रोमांचित था। मैंने इससे पहले कभी गंगाटेक का नाम प्रिंट में नहीं देखा था। मैंने शुक्ला-जी का नंबर घुमाया।

'वेल-डन!' शुक्ला-जी ने कहा। 'अब बस देखते जाओ कि कॉलेज खुलने के बाद हमें कितना प्रचार मिलता है।'

मैं चाहता था कि मैं राघव को फोन लगाऊं और उससे कहूं कि क्या वह मेरे कॉलेज पर अलग से एक लेख लिख सकता है। यदि वाराणसी का कोई प्रतिष्ठित अखबार गंगाटेक के बारे में अच्छी बातें कह रहा हो तो यह हमारी ओपनिंग के लिए बहुत बड़ी बात होती।

लेकिन मेरे पास उसका मोबाइल नंबर नहीं था। मैं बड़ी आसानी से आरती से उसका नंबर ले सकता था, लेकिन मैं उसे कॉल नहीं करना चाहता था। मैं अखबार को कैम्पस बिल्डिंग में ले गया। मेरे ऑफिस में अभी तक फर्नीचर का बंदोबस्त नहीं हो पाया था। मैं प्लास्टिक की एक कुर्सी पर बैठ गया और खुद को याद दिलाता रहा कि मुझे कारपेंटर को बुलाना है।

मैंने अपने फोन कॉन्टैक्ट्स को देखा। आरती का नाम उसमें हमेशा सबसे पहले आता था, क्योंकि उसके नाम में दो 'ए' थे।

'मैं उसे केवल इसीलिए कॉल कर रहा हूं, ताकि राघव का नंबर हासिल कर सकूं,' मैंने उसे फोन लगाने का साहस करने से पहले खुद से कई बार यह कहा।

चार रिंग जाने के बाद उसने फोन उठाया। 'हे, क्वाट अ सरप्राइज,' उसने कहा।

'हाय, कैसी हो?' मैंने कहा। हालांकि मैं उससे इस तरह की बातें नहीं करना चाहता था, लेकिन एकदम से मतलब की बात कहना भी तो ठीक नहीं था।

'बहुत अच्छा तो नहीं महसूस कर रही हूं, बट दैट्स ओके,' उसने कहा। 'तुम कैसे हो? पार्टी में तुमसे बातें करके अच्छा लगा था।'

मुझे लगा कि मुझे उससे पूछना चाहिए था कि वह बहुत अच्छा क्यों नहीं महसूस कर रही है। लेकिन मैंने ऐसा नहीं पूछा। 'अच्छा, सुनो, तुम्हारे पास राघव का नंबर होगा?' मैंने कहा।

'ऑफ कोर्स है। तुम्हें क्यों चाहिए?'

'मैंने आज अखबार में उसका एक लेख पढ़ा।

एजुकेशन के बारे में है। मुझे अच्छा लगा, इसलिए उससे बात करना चाहता था।'

'ओह, श्योर,' उसने कहा। 'वह बहुत खुश होगा।'

उसने मुझे नंबर लिखा दिया।

'थैंक्स, आरती,' मैंने कहा। 'तो बाद में बातें करें?'

'तुम यह नहीं पूछोगे कि मुझे अच्छा क्यों नहीं लग रहा?' उसने कहा।

जब कोई लड़की आपसे यह सवाल पूछे तो आपको हां ही कहना चाहिए। 'बिल्कुल पूछना चाहूंगा, क्या बात है?' मैंने कहा।

'मॉम और डैड नहीं चाहते कि मैं वाराणसी से कहीं जाऊं,' उसने कहा।

'रियली? फिर तुम एयरलाइन में कैसे काम करोगी?'

मैंने कहा।

'वही तो। मैं यहां करूंगी क्या? बोट होस्टेस बनूंगी?'

'उन्हें कंविंस करने की कोशिश करो,' मैंने कहा। मेरे पास और कोई बेहतर समझाइश नहीं थी।

'वे लोग नहीं सुनेंगे। शायद मुझे घर से भागना पड़े।'

'पागल हो गई हो क्या?' मैंने कहा।

'तुम उनसे बात करोगे?' उसने कहा।

'मैं?'

'हां, क्यों नहीं?'

'आखिर मैं हूं कौन? राघव बेहतर रहेगा, है ना?'

मैंने कहा।

'राघव? वह तो खुद नहीं चाहता कि मैं यहां से जाऊं। फिर, वह अपने अखबार में इतना बिजी है, वह तो मुझसे ही नहीं मिल सकता, मेरे पैरेंट्स से क्या मिलेगा।'

'तुम्हारा और कोई अच्छा दोस्त नहीं है? एविएशन एकेडमी से कोई?' मैंने कहा। 'या शायद तुम्हारा कोई फैकल्टी?'

'इसका मतलब तुम नहीं करना चाहते, है ना?' उसने कहा।

'नहीं, मैं बस मुझे बस लगता नहीं कि मैं यह काम करने के लिए सबसे अच्छा व्यक्ति होऊंगा।'

'फाइन,' उसने कहा। लड़कियों की भाषा में 'फाइन' का मतलब 'वॉटेवर' और 'गो टु हेल' के बीच में कुछ होता है।

'ओके, साइट इंजीनियर मुझे बुला रहा है,' मैं झूठ बोल गया। 'मैं तुमसे बाद में बात करूंगा।'

मैंने फोन रख दिया। मैंने अपने फोन का ड्यूरेशन चेक किया। [illegible] मुझे लगा कि मुझे उसे एक बार फिर कॉल करके उसे बताना चाहिए कि

वह किस तरह अपने पैरेंट्स को समझाए। शायद मुझे उसके पैरेंट्स से मिल ही लेना चाहिए। आखिर उसने इतने सारे लोगों में से केवल मुझे ही ऐसा करने को कहा है। मैं री–डायल का बटन लगभग दबा ही चुका था कि मैंने अपने आपको संभाला।

उसके करीब जाकर केवल दुख ही मिलेगा। वह राघव की है और उसकी जिंदगी में मेरे लिए कोई जगह नहीं है, मैंने खुद को झिड़का।

मैंने राघव को फोन लगाया। उसने फौरन फोन उठा लिया।

'हाय, इट्स गोपाल,' मैंने कहा।

'ओह, हाय' उसने कहा। 'वॉट्स अप, बडी? उस दिन पार्टी में आने के लिए शुक्रिया।'

'यू आर वेलकम। नया जॉब कैसा चल रहा है?'

'वे छोटे–मोटे मसलों पर ही सही, लेकिन मुझे लिखने का मौका दे रहे हैं।'

'मैंने आज तुम्हारा लेख पढ़ा। बहुत अच्छा था।'

'तुमने पढ़ा? वॉव। थैंक्स।'

'तुमने अपने लेख में गंगाटेक का नाम लिया, उसके लिए थैंक्स।'

'ओह, वह टेबल तो हमारी रिसर्च टीम ने बनाई थी।

तुम्हारा कॉलेज जल्द ही खुलने वाला है ना?'

'हां, लगभग बनकर तैयार है। तुम एक बार आकर देखना चाहोगे? शायद तुम गंगाटेक पर ही एक पूरी स्टोरी कर सको।'

'हां, कर तो सकता हूं,' राघव ने कहा, उसकी आवाज में झिझक थी। 'हालांकि शायद हमारी पॉलिसी किसी एक कॉलेज के बारे में लिखने की न हो।'

'ओह, तब तो रहने दो,' मैंने कहा। मैं वैसे भी उसका फेवर लेना नहीं चाहता था।

'लेकिन मैं तुम पर एक स्टोरी कर सकता हूं।'

'मुझ पर?'

'हां, वाराणसी का एक नौजवान, जो जल्द ही एक कॉलेज खोलने जा रहा है। यह वाकई दिलचस्प होगा।

और हम उस इंटरव्यू में गंगाटेक के बारे में भी बात कर सकेंगे।'

'मैं तो उस कॉलेज में एम्प्लाई जैसा ही हूं,' मैंने कहा।

'विधायक शुक्ला कॉलेज के वास्तविक मालिक हैं, है ना?' राघव ने कहा।

'हां, वे ट्रस्टी हैं।'

'और कॉलेज बनाने के लिए उन्होंने ही पैसा दिया है?'

'वेल, उन्होंने फंड्स अरेंज किए हैं,' मैंने कहा।

'कहां से?' राघव ने कहा।

मुझे उसकी यह पूछताछ अच्छी नहीं लगी। 'वे बहुत से चैरिटेबल लोगों को जानते हैं,' मैंने कहा। 'खैर, तो तुम मेरा इंटरव्यू करना चाहते हो? ठीक है, यह भी चलेगा।'

'ऑफ कोर्स, मैं करूंगा। तुम कब इंटरव्यू देना चाहोगे?'

'अगले शुक्रवार को मेरे कॉलेज में इंस्पेक्शन होना है। उसके बाद? शायद वीकेंड में,' मैंने कहा।

'श्योर, मिलते हैं। कहां आओगे? 'दैनिक' के ऑफिस में?'

'नहीं, तुम मेरे ऑफिस आ जाओ,' मैंने 'मेरे ऑफिस' पर जोर देते कहा। मेरे पास अब एक बहुत बड़ा ऑफिस है बडी, मैं उसे बताना चाहता था।

'ओह श्योर। तुम्हारा कैम्पस कहां है?'

'शहर से दस किलोमीटर बाहर लखनऊ हाईवे पर।

तुम्हें अपने दाईं ओर एक बोर्ड दिख जाएगा।'

मैं कैम्पस बिल्डिंग से बाहर चला आया। मैंने अपने कॉलेज की तीन मंजिला इमारत को गौर से देखा। एक हफ्ते में हमें उसे ग्रे पेंट कर देना था।

मेरे फोन की घंटी बजी। बेदी का कॉल था।

'येस, बेदी सर,' मैंने कहा।

'मैंने कल इंटरव्यू के लिए सात सॉलिड फैकल्टी मेंबर्स तैयार कर रखे हैं। तुम्हारे पास टाइम है?'

'टाइम तो निकालना ही पड़ेगा। मैं दिनभर साइट पर ही रहता हूं, तुम उन्हें यहां ला सकते हो?'

'बिल्कुल नहीं। हमें उनके घर जाना होगा। उस एरिया में तीन और कॉलेज खुल रहे हैं। उनके पास ऑफर्स हैं। हमें उन्हें फुसलाना होगा,' उसने कहा।

मैंने गहरी सांस ली। हर दिन एक नई चुनौती सामने आ जाती थी।

'ठीक है। मैं शुक्ला–जी के ऑफिस से एक कार अरेंज कर लूंगा,' मैंने कहा।

हम ठीक आठ बजे अशोक नगर में प्रोफेसर एमसी श्रीवास्तवा के घर पहुंच गए। एनआईटी इलाहाबाद से रिटायर्ड इस इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग प्रोफेसर ने हमें सही समय पर पहुंचने की हिदायत दी थी। हम चाहते थे कि हमारा डीन यदि आईआईटी से नहीं तो एनआईटी से तो हो ही। भोपाल के रिटायर्ड एनआईटी प्रोफेसर से हमारी डील तकरीबन फाइनल हो चुकी थी, लेकिन उसे इंदौर में घर के पास एक बेहतर ऑफर मिल गया। प्रोफेसर श्रीवास्तवा एआईसीटीई के गोल्ड स्टैंडर्ड थे और उन्हें तीस साल का तजुर्बा था। सोने की हर चीज की तरह उन्हें भी सस्ते दामों पर नहीं पाया जा सकता था।

'दो लाख रुपया महीना?' मैंने कहा। 'लेकिन हमने तो अभी कॉलेज शुरू ही किया है।'

प्रोफेसर की पत्नी मिसेज श्रीवास्तवा ने नाश्ते के लिए हमें चाय और पोहा सर्व किया। निगोशिएशंस में वे भी शामिल हो गईं। 'श्री अम्मा कॉलेज से भी ऑफर मिला है। डेढ़ लाख रुपए, साथ ड्राइवर सहित एक कार,' उन्होंने कहा।

'मैडम, हम जिस यूनिवर्सिटी से जुड़े हुए हैं, वह हमारी फीस को कंट्रोल करती है,' मैंने कहा। 'फिर हम नए हैं। मुझे यह भी नहीं पता कि एडमिशन कैसे होंगे।'

'यह हमारी प्रॉब्लम नहीं है,' मिसेज श्रीवास्तवा ने कहा। बात तो सही थी।

बेदी बीच में कूद पड़ा। 'आपकी जो भी रीजनेबल जरूरतें हों, हमें बताइए। हम एकोमोडेट करेंगे,' उसने कहा।

'लेकिन हमारे पास लिमिटेड बजट है,' मैंने कहा।

श्रीवास्तवा ने अपनी चम्मच नीचे रख दी। 'तुम कौन हो?' उन्होंने मुझसे पूछा। 'मालिक के बेटे?'

'मैं ही मालिक हूं, गोपाल मिश्रा। कॉलेज मेरे ही हाथ में है,' मैंने कहा।

'और शुक्ला–जी? क्या सारे फैसले वे ही नहीं लेते?'

'वे साइलेंट ट्रस्टी हैं,' मैंने कहा। 'फैसले मैं लेता हूं।'

प्रोफेसर ने मेरी इस गुस्ताखी से हैरान होकर मेरी ओर देखा।

'मिस्टर मिश्रा, डीन बहुत महत्वपूर्ण होता है। मैं एआईसीटीई वालों को जानता हूं। यदि मैं कॉलेज में हूं तो समझो इंस्पेक्शन पूरा हो गया,' श्रीवास्तवा ने कहा।

'एआईसीटीई में हमारी भी सेटिंग है,' मैंने कहा, 'प्लीज, समझने की कोशिश कीजिए। यदि मैं आपको हाई पैकेज दूंगा तो फैकल्टी के दूसरे मेंबर्स भी इतना ही मांगेंगे।'

'मैं अपनी सेलेरी किसी को नहीं बताऊंगा,' उन्होंने कहा।

'इस बात को भला कैसे छुपाया जा सकता है? सारे डिटेल्स तो अकाउंट्स डिपार्टमेंट के पास होंगे,' मैंने कहा।

'कैश में पूरी सेलेरी मत देना,' श्रीवास्तवा ने कहा।

टेबल पर खामोशी पसर गई। उन्होंने फौरन एक सॉल्यूशन बता दिया था। इससे प्रैक्टिकल डीन खोजना मुश्किल था।

'फिर कितना देना होगा?' मैंने कहा।

'फिफ्टी परसेंट? शायद इससे ज्यादा,' उन्होंने कहा।

'इससे मेरा टैक्स भी बचेगा और किसी को मुझसे जलन भी नहीं होगी। इन फैक्ट, मेरी ऑन पेपर सेलेरी तो टीचर्स से भी कम होगी।'

'हमें पता था कि हम सही जगह आए हैं,' बेदी ने कहा।

'फाइन,' मैंने कहा।

हम प्रतिमाह एक लाख कैश और सत्तर हजार चेक से भुगतान करने पर राजी हुए। नए डीन ने फौरन काम शुरू कर दिया। उन्होंने हमारे सामने प्रस्ताव रखा कि वे अन्य फैकल्टी हायर करने में हमारी मदद कर सकते हैं। इन फैकल्टी की सेलेरी तीस से अस्सी हजार रुपया प्रतिमाह तक होगी और यह उनके अनुभव और उनकी डिग्री पर डिपेंड करेगा।

'मैं सेलेरी के अलावा फैकल्टी खोजने की फीस भी लूंगा। हर व्यक्ति पर दस हजार रुपया।'

'डील्स फाइन। आप कब शुरू कर सकते हैं?' मैंने कहा।

'एनीटाइम,' उन्होंने कहा। 'मैं हफ्ते में तीन दिन कैम्पस आऊंगा।'

'तीन दिन?' मैंने कहा। 'आप कॉलेज के डीन हैं, आपके बिना कॉलेज कैसे चलेगा?'

'मैं डीन हूं, इसीलिए तीन दिन। नहीं तो हफ्ते में एक दिन भी काफी है।'

'क्या?' मैंने कहा।

'प्राइवेट कॉलेजों में कौन–सा फैकल्टी रोज पढ़ाने जाता है? डोंट वरी, मैं एआईसीटीई इंस्पेक्टर्स को बोल दूंगा कि मैं रोज आता हूं।'

'लेकिन फैकल्टी को कौन मैनेज करेगा? यह कौन देखेगा कि क्लासेस समय पर लग रही हैं या नहीं या स्टूडेंट्स को ठीक से पढ़ाया जा रहा है या नहीं?' मैंने कहा। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। मुझे नहीं पता था कि कॉलेज का डीन ऐसा होता है।

'यह प्राइवेट कॉलेज है। हम मैनेज कर लेंगे।'

बेदी–जी इसको समझाओ, काम कैसे होता है,' श्रीवास्तवा ने खीसें निपोरते हुए कहा।

बेदी ने अपनी चाय खत्म की और सिर हिलाकर हामी भरी। 'यकीनन, हम टीचिंग अरेंजमेंट्स और बाकी चीजें बाद में देख लेंगे। अभी तो हमारा फोकस इंस्पेक्शन पर है और उसके बाद एडमिशन पर। बाद में सीनियर स्टूडेंट्स फर्स्ट ईयर के स्टूडेंट्स को पढ़ा सकते हैं। ऐसा बहुत से कॉलेजों में होता है।'

मिसेज श्रीवास्तवा ने टेबल साफ की। हम बैठकखाने में चले आए।

'तुम्हारी एडमिशन स्टेटेजी क्या है?' श्रीवास्तवा ने पूछा।

'हम सभी अखबारों में विज्ञापन दे रहे हैं। कैरियर फेयर्स में पार्टिसिपेट कर रहे हैं। और हम स्कूलों और कोचिंग क्लासेस में भी जा रहे हैं,' मैंने कहा।

'स्कूलों में किसलिए जा रहे हो?' उन्होंने पूछा।

'हम स्कूलों में जाकर अपने कॉलेज के बारे में प्रजेंटेशंस देंगे,' मैंने कहा।

'प्रजेंटेशंस से क्या होगा? तुमने प्रिंसिपल्स को फिक्स किया?' श्रीवास्तवा ने पूछा।

'हम कर लेंगे, डोंट वरी,' बेदी ने कहा।

'क्या कर लेंगे?' मैंने कहा। जब बेदी मुझे पहले से कोई चीज नहीं बताता था तो मुझे बहुत गुस्सा आता था।

'मैं तुम्हें समझा दूंगा। अब चलो, हमारी दूसरी मीटिंग्स भी हैं,' बेदी ने कहा और उठ खड़ा हुआ।

'थैंक्स सर, शुक्रवार को मिलते हैं।'

श्रीवास्तवा हमें बाहर छोड़ने आए। 'मुझे अपनी पहली सैलेरी कब मिलेगी?' उन्होंने पूछा।

'मैं घर पर कैश भिजवा दूंगा,' मैंने कहा।

हमें पांच और फैकल्टी प्रॉस्पेक्ट्स से मिलना था।

शुक्ला–जी ने हमें कॉलेज के काम के लिए खासतौर पर एक इनोवा कार दी थी। हम एक रिटायर्ड केमिकल इंजीनियरिंग प्रोफेसर से मिलने मुगलसराय पहुंचे।

'मुझे इस बात से बहुत राहत मिल रही है कि हमने डीन पटा लिया,' कार के हाईवे पर पहुंचते ही बेदी ने कहा।

'मुझे तो वह मिस्टर डीन से ज्यादा मिस्टर डील लग रहा था,' मैंने कहा।

'वह पहले भी प्राइवेट कॉलेजों में काम कर चुका है। उसे पता है कि उसकी डिमांड है। उसकी बातों को दिल पर मत लो,' बेदी ने कहा।

'और स्कूल के प्रिंसिपल्स को 'फिक्स' करने का क्या मतलब था?' मैंने कहा।

'बच्चे स्कूल के बाद कहां जाएंगे, यह बहुत कुछ स्कूलों पर ही निर्भर करता है। कई बच्चे आईआईटी और एनआईटी के लिए कोशिश करते हैं, लेकिन अधिकतर कामयाब नहीं हो पाते। वे बच्चे कहां जाते हैं?'

'कहां?' मैंने पूछा।

'बस यहीं से हमारा काम शुरू होता है। प्राइवेट कॉलेज इंजीनियर बनने का आपका सपना पूरा कर सकते हैं, भले ही आपने एंट्रेंस एग्जाम क्लीयर न किया हो। बस प्रॉब्लम यही है कि आजकल इतने सारे प्राइवेट कॉलेज हो गए हैं कि स्टूडेंट्स के लिए चुनना बहुत मुश्किल साबित होता है।'

मैंने ड्राइवर से कहा कि वह एसी का तापमान और कम कर दे, ताकि बाहर के चालीस डिग्री तापमान का मुकाबला किया जा सके। 'कैसे?' मैंने कहा।

'तब बच्चे स्कूल टीचर्स और प्रिंसिपल्स से राय लेते हैं। आखिर वे और किस पर भरोसा करेंगे?'

'ठीक है,' मैंने कहा। 'तो हम प्रिंसिपल्स से कह देते हैं कि वे हमारे कॉलेज की सिफारिश कर दें?'

'एग्जैक्टली! तुम स्मार्ट हो,' बेदी ने कहा, शायद व्यंग्य में।

'तो क्या हमें उन्हें भी पैसा खिलाना पड़ेगा?' मैंने कहा।

'हां, लेकिन वे कभी इसे घूस खाना नहीं कहते।

इसका एक बड़ा सीधा–सा हिसाब है। हम उन्हें हर एडमिशन का टेन परसेंट हिस्सा कमीशन के रूप में दे देते हैं।'

कमीशन और रिश्वत में अंतर होता है।

'हम टेन परसेंट तो हर किसी को देते हैं ना – कोचिंग क्लासेस, कैरियर फेयर ऑर्गेनाइजर या जो भी कॉलेज चलाने में हमारी मदद करता हो।'

'टेन परसेंट ना,' मैंने कहा।

'तुम मीडिया प्लान के बारे में सोच रहे हो, क्यों?'

उसने कहा।

मेरे विचार मीडिया प्लानिंग से राघव और फिर आरती तक चले गए। कितनी अजीब बात है कि हमारा दिमाग एक चीज से दूसरी चीज इस तरह कनेक्ट करता रहता है और वहीं पहुंच जाता है, जहां वह जाना चाहता है।

बेदी बताता रहा कि हम फर्स्ट बैच के दो सौ स्टूडेंट्स का बंदोबस्त कैसे करेंगे। लेकिन मेरा ध्यान कहीं और चला गया था। मैं कार से बाहर देख रहा था और याद कर रहा था कि राघव की बालकनी में मेरी ड्रिंक पीते समय आरती के बाल कैसे उड़ रहे थे।

जब आप केवल एक ही लड़की के बारे में सोच पाते हों, और वह किसी और की हो, तो जिंदगी बहुत दर्दनाक हो जाती है।

20

मैंने अपने ऑफिस की खिड़की से राघव को कैम्पस में घुसते देखा। मैंने कारपेंटर्स पर चिल्ला–चिल्लाकर सही समय पर मेरी ऑफिस डेस्क और कुर्सियां फिनिश करवाई थीं। यदि विजिटर्स सोफे को छोड़ दिया जाए तो अब मेरा ऑफिस पूरी तरह से तैयार था। एयर कंडीशनर चालू हो गया था। मैंने उसकी कूलिंग को मैक्सिमम कर दिया ताकि राघव को पता चल जाए कि मेरे ऑफिस रूम में एसी लगा है। मैंने अपने आसपास फाइलें बिछा लीं। वह आया और अधखुले दरवाजे पर दस्तक दी।

'येस?' मैंने कहा और ऊपर देखा।

'दो बजे मिलने का समय तय हुआ था ना?' राघव ने कहा। उसने एक सफेद शर्ट और नीली जींस पहन रखी थी।

'हाय, राघव। सॉरी, मैं इतना बिजी रहता हूं कि कभी–कभी मुझे वक्त का ख्याल ही नहीं रहता,' मैंने कहा।

वह मेरे सामने बैठ गया। मैं डायरेक्टर की चेयर पर बैठा था। मैं सोचने लगा कि क्या उसने इस पर ध्यान दिया है या नहीं कि मेरी कुर्सी उसकी कुर्सी से कितनी शानदार और आरामदेह है।

उसने अपना नोटपैड, पेन और कुछ प्रिंटआउट्स निकाले। 'मैंने कुछ रिसर्च की है। मैं कॉलेज के बारे में जो भी जान सका, वह।'

'तुम्हें ज्यादा नहीं मिलेगा। हमारा कॉलेज नया है,' मैंने कहा।

'हां, लेकिन मुझे कॉलेज के एक ट्रस्टी के बारे में बहुत जानकारियां मिलीं। शुक्ला।'

'जाहिर है, वे लोकप्रिय राजनेता हैं। लेकिन वे वास्तव में इस कॉलेज की फंक्शनिंग में इनवॉल्व नहीं हैं।'

'हालांकि वे दूसरी अनेक चीजों में इनवॉल्व हैं।' राघ[illegible] व प्रिंटआउट्स पर सवाल लिखने लगा।

'चाय लोगे?' मैंने कहा।

उसने सिर हिलाकर हामी भरी। मैंने घंटी बजाई। मैंने पियून से पहले ही कह दिया था कि स्पेशल गेस्ट्स को बोन चाइना कप्स में चाय दी जाए। ऐसा नहीं है कि राघव स्पेशल की श्रेणी में आता था, लेकिन मैं उसे जताना चाहता था कि हम अपने मेहमानों को फैंसी कप्स में चाय पिलाते हैं।

उसने मेरे बीस–बाय–अठारह फीट के बड़े–से ऑफिस को देखा। मैं उससे पूछना चाहता था कि क्या उसके अखबार में किसी का ऑफिस इतना बड़ा है, लेकिन मैंने अपने आपको कंट्रोल कर लिया।

मेरे पीछे कैम्पस का एक आर्किटेक्ट मॉडल रखा था, जिस पर उसकी नजर पड़ी। 'मैं इसे देख सकता हूं?' उसने पूछा।

'श्योर,' मैंने कहा और उछलकर खड़ा हो गया।

चलो मैं तुम्हें सारी सुविधाएं दिखाता हूं।

मैंने उसे कैम्पस का लेआउट समझाया। 'यहां होस्टल्स हैं। हम बैचेस बढ़ने के साथ ही रूम्स बढ़ाते जाएंगे। क्लासरूम्स और फैकल्टी ऑफिसेस यहां हैं, मेन बिल्डिंग में, जहां हम अभी हैं। लैब्स एक दूसरी बिल्डिंग में है। लैब के सभी उपकरण इंपोर्टेड हैं।'

'फैकल्टी का रेशियो क्या होगा?' राघव ने जल्दी–जल्दी नोट्स लेते हुए पूछा।

'हम कोशिश कर रहे हैं कि पंद्रह स्टूडेंट्स पर एक से अधिक टीचर न हो,' मैंने कहा, 'जो कि एआईसीटीई के नॉर्म्स से बेहतर है। हम बीएचयू से भी बेहतर कॉलेज बनाना चाहते हैं।'

उसने मेरी ओर देखा।

'हमारा लक्ष्य है, केवल। आखिर कोई और कॉलेज ऐसा है नहीं, जिससे होड़ की जा सके,' मैंने कहा।

उसने मेरी बात के समर्थन में कंधे उचका दिए।

चाय आई। मैंने विपुल को कहा था कि वह कम से कम पांच स्नैक्स सर्व करे। वह चाय के साथ नट्स, बिस्किट्स, समोसे, आलू की चिप्स और कटे हुए फल भी लाया था।

'यह तो चाय नहीं, पूरा नाश्ता है,' राघव ने कहा।

'प्लीज, नाश्ता कर लो। हम इंटरव्यू बाद में जारी रखेंगे,' मैंने कहा।

हम चुपचाप खाते रहे। मैं उससे कॉलेज के अलावा किसी और विषय में बात नहीं करना चाहता था। उसने खाते–खाते अपनी नोटपैड उठाई।

'इस कॉलेज में कितना इन्वेस्टमेंट हुआ है?' उसने पूछा।

'बहुत सारा। इंजीनियरिंग कॉलेज बनाना सस्ता सौदा नहीं है,' मैंने कहा और हंस पड़ा। मैंने उसे कोई भी वास्तविक आंकड़े नहीं बताए।

'फिर भी एग्जेक्टली कितना?' उसने कहा।

'कहना मुश्किल है। मेरी जमीन थी, लेकिन यदि इसको खरीदना पड़ता तो तुम अंदाजा ही लगा सकते हो कि इसके लिए कितनी कीमत चुकानी पड़ती।'

'यह तो एग्रीकल्चरल लैंड है ना?' उसने कहा।

'हां, यह तो तुम जानते ही हो, राघव। बाबा का कोर्ट केस याद है ना?'

'और तुमने यह जमीन अपने रिलेटिव्स से हासिल कर ली?' उसने कहा।

'हां, लेकिन यह इंटरव्यू का हिस्सा नहीं है, ठीक?'

मैंने कहा।

'नहीं है। लेकिन बताओ ना यह एग्रीकल्चरल लैंड री–जोन्ड कैसे हो गया?'

'हमने अप्लाई किया था, वीएनएन ने अप्रूव कर दिया,' मैंने कहा।

उसने नोट्स लेना जारी रखा।

'हमारे यहां हर चीज अप्रूव्ड है,' मैंने शायद बहुत रक्षात्मक होते हुए कहा।

'शुक्ला की वजह से?' उसने पूछा।

'नहीं,' मैंने कुछ–कुछ खीझते हुए कहा। 'क्योंकि हमने प्रोसिजर्स को फॉलो किया था, इसलिए।'

'फाइन। जमीन के अलावा कॉलेज बनने में कितनी लागत आई है?' उसने पूछा।

'शायद मैं अभी इस बारे में नहीं बता सकता।

आखिर यह एक प्रतिस्पर्धात्मक जानकारी होगी। लेकिन हमारे कैम्पस में आने वाला कोई भी आदमी बता सकता है कि यह एक बेहतरीन कैम्पस है।'

'पांच करोड़ से ज्यादा?' उसने बात जारी रखी। मुझे अटकलों के इस खेल में शामिल नहीं होना चाहिए था।

'हां,' मैंने कहा।

'दस से भी ज्यादा?' उसने कहा।

'कितना पैसा लगा है इससे क्या फर्क पड़ता है?'

मैंने कहा।

'पैसा कहां से आया?' उसने पूछा।

'ट्रस्टियों और उनके एसोशिएट्स से।'

'किसके एसोशिएट्स? शुक्ला के या तुम्हारे?' उसने पूछा।

'मैंने अपनी जमीन दी। शुक्ला–जी ने अपने शहर के भले के लिए फंड्स का बंदोबस्त कराया। हम नॉन–प्रॉफिट ट्रस्ट हैं,' मैंने कहा।

'क्या तुम्हें पता है कि विधायक शुक्ला ने फंड्स कहां से अरेंज करवाए?' राघव ने अपनी डायरी से नजर उठाए बिना पूछा।

'नहीं। और मुझे नहीं लगता कि मुझे यह जानना चाहिए। यह उनकी और साथियों की निजी कमाई का पैसा है।'

'क्या तुम्हें पता है कि शुक्ला गंगा एक्शन प्लान घ ोटाले में इनवॉल्व रहा है?' उसने कहा।

'नहीं, राघव। मैं गंगाटेक के अलावा किसी और चीज पर कमेंट नहीं करूंगा। यदि तुम्हें पहले ही सारी जानकारी है तो हम इस इंटरव्यू को यहीं खत्म कर सकते हैं।'

राघव ने अपना पेन रोक दिया। 'आई एम सॉरी।

ठीक है, मेरा काम हो गया। घबराओ मत, मैं बैलेंस्ड पीस ही लिखूंगा।'

'थैंक्स, चलो तुम्हें बाहर तक छोड़ आऊं।'

हम कैम्पस के गेट तक साथ–साथ चले। वह एक पुराने स्कूटर पर आया था, जो उसके पिता का था।

'यदि तुम कहते तो मैं तुम्हें लेने अपनी कार भिजवा देता,' मैंने कहा। 'बाहर बहुत गर्मी है।'

'इट्स फाइन। मुझे बहुत–सी जगहों पर जाना है,' उसने कहा और हेलमेट पहन लिया।

'तुम इंजीनियरिंग को मिस करते हो?' मैंने पूछा। यह मेरा उससे पहला सामान्य सवाल था।

'नहीं तो। मुझे लगता है मैं कभी इंजीनियर बन ही नहीं पाया,' उसने कहा।

मुझे लगा फाइनल पंच मारने का सही समय आ गया है। 'तुम बीएचयू से हो। हमारी फैकल्टी लिस्ट में तुम्हारा नाम होगा तो बहुत अच्छा लगेगा। जॉइन करोगे?' मैंने कहा। हां, मैं उसे अपने यहां रख सकता था। बीएचयू ने भले ही मुझे न लिया हो, लेकिन मैं उनके ग्रेजुएट्स को अपने यहां रख सकता था।

'मैं? फैकल्टी? नो वे। फिर, मेरे पास पहले ही एक जॉब है,' उसने कहा और स्कूटर पर बैठ गया।

'तुम्हें कॉलेज आने की जरूरत नहीं होगी। इंस्पेक्शंस में मेरी मदद करो और फिर बस हफ्ते में एक बार चले आना,' मैंने कहा।

वह अपना स्कूटर चालू करने ही वाला था, लेकिन बीच में ही रुक गया। वह मेरे शब्दों को ध्यान से सुनने लगा।

'हम अच्छा पे करते हैं। शायद तुम्हारे अखबार से ज्यादा,' मैंने जोड़ दिया।

वह मुस्कराया और सिर हिलाकर मना कर दिया।

'क्यों नहीं?' मुझे उसका इतनी आसानी से मना कर देना बुरा लगा था।

'मैं किसी करप्ट एंटरप्राइज का हिस्सा नहीं बन सकता।'

'क्या?'

'यह शुक्ला का कॉलेज है।'

'यह मेरा कॉलेज है,' मैंने उसका विरोध करते हुए कहा।

'मैं जानता हूं कि तुम यह कॉलेज चलाओगे, लेकिन इसके पीछे वही है, है ना?'

'तो? तुम हमें करप्ट कैसे बोल सकते हो? हमारा कॉलेज तो अभी खुला भी नहीं है।'

'यह कॉलेज भ्रष्टाचार से कमाए गए पैसों से बना है।'

'मैंने तीन साल तक जी–तोड़ मेहनत करके यह कॉलेज बनवाया है, राघव। तीन साल, जिनमें रविवार के दिन भी शामिल हैं। तुम इस तरह की बात कैसे कह सकते हो?'

'शुक्ला पर आरोप है कि उसने गंगा एक्शन प्लान में बीस करोड़ रुपयों का घोटाला किया। यह सरकार का पैसा था, जो हमारी नदी की सफाई के लिए दिया गया था।'

'वह केवल एक आरोप था, जो कभी साबित नहीं हो सका,' मैंने कहा।

'उसके बाद उसने कई प्रॉपर्टी इनवेस्टमेंट किए, जिनमें यह कॉलेज भी शामिल है। मुझे तो भरोसा नहीं होता कि तुम ये सारी बातें नहीं देख–समझ पाए।

आखिर एक राजनेता के पास इतना पैसा कैसे हो सकता है? वह तो बहुत ही मामूली घर से आया इंसान है।'

'क्या तुम भ्रष्टाचार को साबित कर सकते हो?' मैंने कहा।

'अभी तो नहीं। लेकिन क्या तुम श्योर हो कि उसने कभी कुछ नहीं किया?' उसने पूछा।

अब मैं खुद को कंट्रोल नहीं कर सका। 'तुम जल रहे हो,' मैंने कहा।

'क्या?'

'तुम इसलिए जल रहे हो क्योंकि मैं अच्छा काम कर रहा हूं। ऐसा होना नहीं चाहिए था, क्यों? आखिर मेरी एआईईईई रैंक तुमसे कम थी। सही है ना, मिस्टर जेईई?'

'ईजी, बडी। यह पर्सनल मैटर नहीं है,' उसने कहा और अपना स्कूटर चालू कर लिया।

'पर्सनल नहीं तो क्या है, मिस्टर रिपोर्टर?'

'यह मेरा काम है कि मैं सच्चाई का पता लगाऊं, बस इतनी–सी बात है।'

इससे पहले कि मैं कोई जवाब दे पाता, वह वहां से चला गया। वह अपने पीछे धूल का गुबार छोड़ गया, जो कि मेरे आंखों में चुभ रहा था। पिछले एक साल में कोई और चीज मुझे इससे ज्यादा नहीं चुभी थी।

एआईसीटीई इंस्पेक्शन का दिन इम्तिहान के दिनों की तरह आया। हमारे बीस फैकल्टी सुबह आठ बजे कैम्पस पहुंच गए थे। स्वीपर्स आखिरी पल तक फर्श बुहारते–साफ करते रहे। आईटी स्पेशलिस्ट्स यह सुनिश्चित करते रहे कि कंप्यूटर रूम में डेस्कटॉप्स ठीक–ठाक काम करते हों। हमने इंस्पेक्शन कमेटी के लिए ताज गंगा में डिनर रखवाया था। शुक्ला–जी ने मुझसे वादा किया था कि वे आएंगे, लेकिन एक अर्जेंट रूरल विजिट के कारण उन्होंने आखिरी समय में अपना कार्यक्रम बदल लिया। मेरे माथे पर पसीने की बूंदें छलक आईं। मैं पांच बार कैम्पस के गेट पर जाकर देख आया था कि इंस्पेक्टर्स अभी तक आए या नहीं।

'सीधे खड़े रहो,' मैंने सिक्योरिटी गार्ड्स पर बरसते हुए कहा, 'और सभी मेहमानों को सैल्यूट करना।'

'रिलैक्स, डायरेक्टर गोपाल,' डीन श्रीवास्तवा ने कहा, 'मैं उन्हें हैंडल कर लूंगा।'

वे लोग ग्यारह बजे आए। अशोक शर्मा, हमारे सबसे जूनियर फैकल्टी मेन बिल्डिंग एंट्रेंस पर बुके लिए इंतजार कर रहे थे।

इंस्पेक्शन कमेटी के हेड ने मुझसे हाथ मिलाया।

'आई एम झुले यादव, एक्स प्रोफेसर ऑफ एनआईटी दिल्ली।'

'आई एम गोपाल मिश्रा, प्रमोटर एंड डायरेक्टर ऑफ द कॉलेज। हमारे डीन श्रीवास्तवा से मिलिए, एक्स डायरेक्टर ऑफ एनआईटी इलाहाबाद,' मैंने कहा।

यादव और श्रीवास्तवा ने एक–दूसरे को इस तरह देखा, जैसे किसी मुकाबले से पहले रिंग में बॉक्सर्स एक–दूसरे का आकलन करते हैं। हम चलकर मेरे ऑफिस पहुंचे और नए सोफों पर बैठ गए, जिनसे वार्निश की गंध आ रही थी।

'एनआईटी इलाहाबाद?' यादव ने कहा। 'आपके यहां इलेक्ट्रिकल में कोई बरूआ हुआ करता था? वह बाद में स्टैनफर्ड चला गया था।'

'हां,' श्रीवास्तवा ने कहा, 'उसे मैंने ही हायर किया था।'

'बरूआ मेरा स्टूडेंट था,' यादव ने कहा और अपनी जांघ पर हाथ मारा।

तभी बिजली गुल हो गई। हम अंधेरे में घिर गए।

आसपास के गांवों में बिजली सप्लाई की दिक्कत थी।

हर दोपहर छह घंटों के लिए बिजली गुल रहती थी।

'हमारे पास जनरेटर है,' मैंने कहा और पियून उसे चालू करने का कहने के लिए बाहर चला गया।

ऑफिस में बैठे मेहमानों का जी घुटने लगा था।

'हमें बाहर चलना चाहिए?' इंस्पेक्शन टीम के एक अधेड़ सदस्य ने कहा।

'लाइट बस चालू होने ही वाली है, सर,' मैंने कहा।

मेरे ऑफिस की ट्यूब–लाइट फड़फड़ाई और बिजली आ गई।

'आपकी मशीनिंग लैब में कितनी लैथ मशीनें हैं?'

एक इंस्पेक्टर ने पूछा।

'आठ,' श्रीवास्तवा ने कहा। 'हम वहां भी राउंड लगाएंगे।'

'श्रीवास्तवा सर, गर्मी में काहे चहलकदमी करें?'

यादव ने कहा।

'आपकी ही टीम के एक सदस्य ने पूछा था, सर,' श्रीवास्तवा ने कहा।

सभी का ध्यान उस इंस्पेक्टर की ओर चला गया, जिसने लैथ मशीन वाला सवाल पूछा था। 'आपकी तारीफ?' श्रीवास्तवा ने पूछा।

'भंसाली,' इंस्पेक्टर ने कहा।

'मिस्टर भंसाली, क्यों न हम मेरे ऑफिस चलें और कोर्स संबंधी बातें करें? बशर्ते आपको प्रमोटर से कोई काम न हो।'

'तुम नौजवान दिखते हो,' भंसाली ने मुझसे कहा।

'मैं नौजवान ही हूं,' मैंने कहा।

'तुम्हारी क्वालिफिकेशंस क्या हैं?' उसने पूछा।

'मैंने यह कॉलेज बनवाया है,' मैंने कहा, 'और मैंने अच्छे से अच्छे फैकल्टी को यहां रखा है।'

'लेकिन...' भंसाली ने कहा, लेकिन श्रीवास्तवा ने उसकी बात को बीच में ही काट दिया।

'जाने भी दीजिए, सर। मैं हर सवाल का जवाब दूंगा,' श्रीवास्तवा ने कहा और उन्हें बाहर ले गए।

जब सभी लोग बाहर चले गए, तो श्रीवास्तवा मेरे ऑफिस में आए। 'भंसाली नया है। लेकिन बाकी छह लोग कुछ नहीं बोलेंगे। लंच आ रहा है ना?'

'हां, कैटरर वहां पहले ही पहुंच चुका है,' मैंने कहा।

'गुड। और पैकेट्स?'

'पैकेट्स?'

'गोपाल, क्या मुझे यह भी समझाना पड़ेगा? यह एआईसीटीई है।'

'ओह,' मैंने कहा। 'आपका मतलब है लिफाफे।

ऑफ कोर्स, वे भी तैयार हैं।'

'गुड। मीठे के बाद उन्हें देना। कितने हैं?'

'यादव के लिए दो लिफाफे। और सब के लिए पच्चीस?' मैंने कहा।

'भंसाली को पचास दो,' श्रीवास्तवा ने कहा। 'और मीठे में क्या है?'

'मूंग की दाल का हलवा,' मैंने कहा।

'माय फेवरिट!' प्रोफेसर श्रीवास्तवा ने कहा और वहां से चले गए।

हमने एआईसीटीई इंस्पेक्शन डिनर के लिए ताज गंगा में एक प्राइवेट रूम बुक कराया था। हमने वहां अपने सभी फैकल्टी और हमारी मदद करने वाले सीनियर सरकारी अधिकारियों को भी बुलाया था। वे लोग अपने परिवार के साथ आए। करीब सौ लोगों की यह पार्टी गंगाटेक की जेब पर पड़ने वाला एक और डाका था।

हमने अभी तक कॉलेज से एक रुपया भी नहीं कमाया था। कंस्ट्रक्शन, इक्विपमेंट, फैकल्टी और ऑफ कोर्स सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देने में अभी तक छह करोड़ रुपए खर्च हो चुके थे।

बहरहाल, ऐसा लगता नहीं था कि शुक्ला–जी को इससे कोई फर्क पड़ा हो।

'चिंता मत करो, हम पैसा रिकवर कर लेंगे,' शुक्ला–जी ने कहा। उन्होंने मुझे सोडे के साथ व्हिस्की दी।

मैंने कमरे को एक नजर देखा। 'हमने इस कमरे में कम से कम तीस लोगों को रिश्वत दी है,' मैंने कहा।

शुक्ला–जी हंस पड़े।

'तो हमने गलत क्या किया? हम तो बस कॉलेज ही खोलना चाहते हैं?' मैंने कहा।

'इट्स ओके,' शुक्ला–जी ने कहा। 'यदि हमारा सिस्टम ही सीधा और साफ होता तो ये प्रोफेसर्स ही अपने कॉलेज खोल लेते। ब्लूचिप कंपनियां और सॉफ्टवेयर फर्म्स कॉलेज खोल लेतीं। लेकिन सिस्टम पेचीदा है, वे लोग नहीं चाहते कि इस सेक्टर में कोई घुसे। यहीं से हमारा काम शुरू होता है।'

'हम पैसा कमाना कब शुरू करेंगे? मुझे आज इंस्पेक्शन के लिए पचास लाख रुपए खर्च करना पड़े।'

'उन्हें और पैसा दो,' शुक्ला–जी ने कहा।

'किसे?'

'इंस्पेक्टर्स को।'

'क्यों?' मैंने कहा। 'श्रीवास्तवा सर कह रहे हैं कि इतना काफी है। हमें एक हफ्ते में अप्रूवल मिल जाएगा।'

'मैं चाहता हूं कि वे न केवल गंगाटेक को हरी झंडी दे दें, बल्कि उसके बारे में अच्छी बातें भी करें,' शुक्ला–जी ने कहा।

'इन राइटिंग?' मैंने कहा।

'हां, जिसका इस्तेमाल हम मार्केटिंग में करेंगे।

दस–दस हजार और दो। मेन आदमी को पचास हजार और दो। पैसों का बंदोबस्त मैं कर दूंगा।'

उन्होंने अपना फोन निकाला और एक कॉल लगाया।

शुक्ला–जी और मैं डिनर बुफे पर गए। हमने अपनी प्लेट में खाना रखा और कमरे के एक कोने में आए।

'पैसा एक घंटे में आ जाएगा,' उन्होंने मुझसे कहा।

'आप मुझ पर इतना भरोसा क्यों करते हैं, शुक्ला–जी। मैं आपका पैसा चुरा भी तो सकता हूं।'

'तुम्हारे आगे–पीछे कोई नहीं है। तुम काहे के लिए पैसा चुराओगे?' उन्होंने कहा।

21

एआईसीटीई का अप्रूवल बिल्कुल सही समय पर आ गया, जैसा कि प्रोफेसर श्रीवास्तवा ने वादा किया था।

अब एडमिशन ओपन करने से पहले हमें एक और आखिरी काम करना था। हमें स्टेट यूनिवर्सिटी का एफिलिएशन चाहिए था। कुलपति मंगेश तिवारी महीनों से हमारी एप्लिकेशन पर कुंडली मारकर बैठे हुए थे।

हम शुक्ला–जी के घर पर थे। 'एफिलिएशन ज्यादा मुश्किल काम नहीं है। हम मार्केट रेट से दोगुना ऑफर कर रहे हैं, लेकिन मंगेश मान नहीं रहा है,' बेदी ने कहा।

'कितना मांग रहा है वो?' शुक्ला–जी ने पूछा।

'बात केवल पैसे की ही नहीं है। वह हम लोगों को पसंद नहीं करता। वह हमारे फोन तक नहीं उठा रहा है,' बेदी ने कहा।

'सॉल्यूशन क्या है?' मैंने कहा।

'कॉन्टैक्ट्स का इस्तेमाल करो। हो सके तो नॉन–पॉलिटिकल कॉन्टैक्ट्स। वह हमारे डीएम का कॉलेज बैचमेट है,' बेदी ने कहा।

'मैं डीएम की बेटी को जानता हूं। मेरी पुरानी दोस्त है,' मैंने कहा।

'वेल, जो बने वो करो। मैं किसी भी हाल में अगले हफ्ते तक एडमिशन ओपन चाहता हूं। हर अखबार में फुल–पेज विज्ञापन दे दो,' शुक्ला–जी ने कहा।

'डोंट वरी, अगले रविवार तक वाराणसी केवल गंगाटेक के बारे में ही बात कर रहा होगा,' मैंने कहा।

मैंने खुद से प्रॉमिस किया था कि आरती को कॉल नहीं करूंगा, लेकिन अब मेरे पास और कोई चारा नहीं था।

'आज तो हमारी किस्मत खुल गई, जो आपने याद किया!' आरती ने चहकते हुए कहा।

'तुम खुश लग रही हो,' मैंने कहा।

'अच्छा? हो सकता है तुम्हारे फोन के कारण। मेरे पास खुश होने की और कोई वजह तो है नहीं।'

'क्यों? क्या हुआ?' मैंने कहा।

'कुछ नहीं। मुझे वाराणसी में ही कोई जॉब ढूंढना पड़ेगा।'

'यह इतनी बुरी बात तो नहीं है।'

'क्या तुम्हारे कॉलेज का अपना कोई हवाई जहाज है?' उसने कहा।

'अभी तो नहीं है,' मैंने कहा। 'लेकिन जिस दिन हमारे पास हवाई जहाज होगा, उसी दिन तुम उसकी कैबिन सुपरवाइजर बन जाओगी।'

वह हंस पड़ी। 'तुम कैसे हो? तुम्हारे कॉलेज में स्टूडेंट्स कब से आना शुरू हो जाएंगे?'

'जब हम इस धरती पर मौजूद हर भारतीय सरकारी अधिकारी को खुश कर लेंगे,' मैंने कहा। 'एक्चुअली, मैंने तुम्हें एक काम से फोन लगाया है।'

'क्या?' उसने कहा।

'मैं तुम्हारे डैड से मिलना चाहता था।'

'रियली? क्यों?'

'हमें स्टेट यूनिवर्सिटी से क्लीयरेंस लेने में थोड़ी मदद चाहिए।'

'तुम उनसे अभी बात करोगे?'

'नहीं, मैं उनसे फेस टु फेस मिलना चाहूंगा,' मैंने कहा।

'क्या तुम मुझसे भी फेस टु फेस मिलना चाहोगे?'

उसने कहा। 'या मैं अब भी तुम्हारी ब्लैकलिस्ट में हूं, जिसे केवल काम पड़ने पर ही याद किया जाता है?'

'ऐसी बात नहीं है। तुम्हारे डैड से मिलने के बाद मैं तुमसे भी मिल लूंगा।'

'ऑफ कोर्स, काम पहले,' उसने कटाक्ष करते हुए कहा।

'मेरे एडमिशंस अटके पड़े हैं, आरती। इट्स अर्जेंट,' मैंने कहा।

'ओके, ओके, फाइन। एक सेकंड रुको, पहले मुझे देख लेने दो कि वे घर पर हैं या नहीं,' उसने कहा।

उसने अपने पिता से बात की और फिर फोन उठा लिया। 'कल सुबह आठ बजे?'

'श्योर,' मैंने कहा। 'सी यू देन।'

'आजकल तो तुम घर आते ही नहीं। आजकल आरती से दोस्ती टूट गई है क्या?' डीएम प्रधान ने कहा।

हम उनके बैठकखाने में बैठे थे। दीवार पर टंगा आरती के दादाजी पूर्व मुख्यमंत्री ब्रज प्रधान का आदमकद पोर्टेट मुझे घूर रहा था। चौड़े चेहरे, चिसेल्ड फीचर्स वाले चुस्त–दुरुस्त और गर्व से भरे डीएम प्रधान मेरे साथ कॉफी की चुस्कियां ले रहे थे।

'ऐसी बात नहीं है, अंकल। लेकिन कामकाज बहुत बढ़ गया है, उसी में व्यस्त रहता हूं,' मैंने कहा।

'मैंने तुम्हारे कॉलेज के बारे में सुना है। उसमें शुक्ला–जी इनवॉल्व्ड हैं ना?' डीएम प्रधान ने कहा।

'हां, और अब हम एडमिशंस से केवल एक कदम दूर हैं,' मैंने कहा और कुलपति तिवारी वाली प्रॉब्लम बताई।

उन्होंने मेरी बात सुनी और कहा, 'लेट मी सी।' फिर उन्होंने अपना सेलफोन निकाला और कुलपति को फोन लगाया।

'तिवारी सर? हेलो, प्रताप प्रधान हियर.. येस, लॉन्ग टाइम। कैसे हो?'

आरती के पिता ने दोपहर में तिवारी के साथ मेरी मुलाकात तय करवा दी।

'बहुत–बहुत शुक्रिया,' मैंने उठते हुए कहा।

'यू आर वेलकम। सुनो, तुमने तिवारी को पैसा दिया है?'

मुझे आरती के पिता से इस बारे में बात करना थोड़ा अजीब लगा, इसलिए मैं चुप रहा।

'मुझे पता है कि एजुकेशन बिजनेस कैसे चलता है।

तिवारी बातें तो बहुत समझदारी की करता है, लेकिन उसे भी अपना हिस्सा चाहिए। लेकिन मैं उम्मीद करता हूं कि तुम लोग मुझे इसमें इनवॉल्व नहीं करोगे।'

'नॉट एट ऑल, सर,' मैंने कहा। 'ऐसे मामलों में तो मैं भी कुछ नहीं करता। मैं केवल कॉलेज का कामकाज देखता हूं।'

'तो इस तरह के सारे काम शुक्ला–जी के लोग करते हैं?' आरती के पिता ने पूछा।

'हां,' मैंने नजरें झुकाए कहा।

'गुड, तब तो तुम मेरे जैसे हो,' उन्होंने कहा।

'प्रैक्टिकल सोच वाले आदमी, जो सारे ऊटपटांग काम दूसरों पर छोड़ देता है।'

मैंने सिर हिलाया और उनके कमरे से निकलने से पहले झुककर उनका अभिवादन किया।

'वन चॉकलेट मिल्क शेक विद आइस्क्रीम, प्लीज,' आरती ने कहा। हम सिगरा के उसी सीसीडी में आए थे, जहां सुनील मुझे कैरियर फेयर में हुए तमाशे के बाद लाया था।

'ब्लैक टी,' मैंने कहा।

उसने एक मॉव चिकन सलवार–कमीज पहन रखा था। यह ड्रेस उसके पिता लखनऊ से उसके लिए लाए थे। उसने अपना सफेद दुपट्टा उतारा और एक तरफ रख दिया।

वेटर ने मिल्क शेक टेबल पर रख दिया। वह ओवरफ्लोइंग गिलास को छुए बगैर स्ट्रॉ से मिल्क शेक पीने लगी। 'मैं अक्सर मिल्क शेक गिरा देती हूं।

इसलिए केयरफुल रहना ही ठीक है,' उसने कहा।

वह अपनी ड्रिंक सिप करती रही। उसके बाल टेबल को छू रहे थे। पूरे कैफे की नजरें उस पर जम गईं।

'हमें इस तरह की कॉफी मीटिंग और करनी चाहिए' उसने कहा, 'हालांकि अभी हममें से कोई भी कॉफी नहीं पी रहा है।'

'मुझे ऐसा नहीं लगता,' मैंने कहा।

'क्यों? तुम्हें मुझसे मिलना पसन्द नहीं?' उसने कहा।

'दस साल से ज्यादा समय से मेरे बेस्ट फ्रेंड रहने के बाद बस इतना ही?'

'राघव हमारे मिलने–जुलने को पसंद नहीं करेगा,' मैंने कहा।

'आखिर साथ बैठकर कॉफी पीने में क्या गलत है?

इसके अलावा, राघव के पास समय नहीं है कि इन सब बातों की परवाह करे।'
'जाहिर है, अब वह बहुत बड़ा पत्रकार बन गया है।
मैं उससे मिला था,' मैंने अपना कप उठाते हुए कहा।
'तुम उससे मिले थे?' उसने कहा। वह अब भी अपना मिल्क शेक सिप कर रही थी, लेकिन ऐसा कहते समय उसकी भौंहें उठ गईं।
'उसने अपने पेपर के लिए मेरा इंटरव्यू लिया।'
'किसलिए?' उसने पूछा।
'वाराणसी के एक लोकल बॉय ने कॉलेज जो खोल लिया।'
'यह तो सच है। तुम्हारी बड़ी अचीवमेंट है।'
'हां, मेरे जैसे लूजर के लिए तो वाकई बड़ी अचीवमेंट है।'
'मैंने यह तो नहीं कहा,' उसने कहा। 'हे, तुम कुछ खाना चाहोगे?'
इससे पहले कि मैं कुछ कहता उसने दो चॉकलेट चिप मफिन्स ऑर्डर कर दिए। यदि आरती का बस चलता तो इस दुनिया में चॉकलेट के अलावा और कुछ खाने को नहीं होता।
'तुम्हारा जॉब-हंट कैसा चल रहा है?' मैंने पूछा।
'मुझे एक ऑफर है। लेकिन पता नहीं मुझे हां कहना चाहिए या नहीं।'
'रियली? क्या ऑफर है?'
'गेस्ट रिलेशन्स ट्रेनी, रमाडा होटल में। वे कैंटोनमेंट में होटल खोल रहे हैं।'
'फाइव स्टार, है ना?'
'हां, वे किसी काम के सिलसिले में डैड से मिलने आए थे। डैड को वैकेंसी के बारे में पता चला, मैंने अप्लाई किया, और अब वे चाहते हैं कि मैं अगले महीने से काम शुरू कर दूं।'
'कर दो। मैं तुम्हें जानता हूं, तुम घर पर बैठने वालों में नहीं हो,' मैंने कहा।
'तुम मुझे बहुत-से लोगों से बेहतर जानते हो, गोपाल,' उसने कहा, 'लेकिन ...' 'क्या?' मैंने कहा।
मफिन्स आ गए, लेकिन उसने उन्हें छुआ भी नहीं।
मैंने उसकी आंखों को देखा। वे नम हो गई थीं। फिर एक आंसू उसके गाल से होता हुआ नीचे गिर पड़ा।
'आरती, आर यू ओके?' मैंने उसे एक टिशू देते हुए कहा।
उसने अपनी आंखें पोंछीं और आईलाइनर के धब्बे वाला टिशू मुझे लौटा दिया। 'एक बार मैंने जॉइन कर लिया, तो मेरे पैरेंट्स कहेंगे कि जॉब अच्छा है, घर के पास है, तुम यहीं रहो। लेकिन यदि मैंने जॉइन नहीं किया और घर पर ही रही तो शायद वे मुझे किसी एयरलाइन के लिए ट्राय करने की इजाजत दे दें।'
मैं हंस पड़ा। 'तो इसमें आंसू बहाने की क्या जरूरत है? तुम्हें अच्छा जॉब मिला है। तुमने हॉस्पिटैलिटी में कोर्स किया है...' 'हॉस्पिटैलिटी नहीं एविएशन।'
'ठीक है, लेकिन फ्लाइट अटेंडेंट भी तो होटल स्टाफ की ही तरह गेस्ट्स को सर्व करती है। और गेस्ट रिलेशन्स ट्रेनी के पास आगे बढ़ने का अच्छा स्कोप होता है। आज ट्रेनी हैं, कल ऑफिसर, शायद किसी दिन किसी होटल के जीएम। तुम स्मार्ट हो। तुम आगे बढ़ोगी।'
उसने खुद को कंट्रोल करने के लिए कुछ गहरी सांसें लीं।
'तुम्हें ऐसा लगता है?' उसने पूछा। उसकी आंखें जब आंसुओं से भरी थीं, तब वे चमक रही थीं, लेकिन अभी वे और खूबसूरत लग रही थीं।
मैं कोई जवाब नहीं दे सका। बस उसे निहारता रह गया।
'क्या हुआ? आईलाइनर फैल गया क्या?' वह हंस पड़ी। 'मैं भी कितनी स्टुपिड हूं, बच्चों की तरह रोने लगी।'
'नहीं, तुम स्टुपिड नहीं हो। होतीं तो तुम्हें यह जॉब नहीं मिलता,' मैंने कहा।
'हां बोल दूं?'
'क्यों नहीं? यदि तुम्हें जॉब पसंद न आए तो छोड़ देना। राघव क्या कहता है?'
'कुछ नहीं।'
'मतलब?'
'ऑफर मिलने के बाद से ही मैं उससे मिली नहीं हूं। मैंने उसे कॉल किया था, लेकिन उसने कहा मेरा जो मन चाहे, वही करूं। वह एक स्टोरी के लिए इस हफ्ते किसी गांव गया है।'
'यदि तुम यहीं रहती हो तो यह तुम दोनों के लिए अच्छा होगा,' मैंने कहा।
'वेल, उसने तो ऐसा कुछ कहा ही नहीं।'
'मुझे यकीन है कि वह इस बात को समझता होगा।'
'मुझे नहीं लगता कि वह मेरे मामलों में ज्यादा दिलचस्पी लेगा, बशर्ते मैं किसी करप्शन स्कैंडल में इन्वॉल्व न हो जाऊं,' उसने कहा।
मैं मुस्करा दिया। वह भी यही चाहती थी। मैंने बिल मंगाया।
'तो, हम कॉफी फ्रेंड्स हैं ना?'
'हम फ्रेंड्स हैं,' मैंने कहा।
'कूल। होटल अभी ऑफिशियली खुला नहीं है, लेकिन मैं तुम्हें किसी दिन दिखाऊंगी। बहुत शानदार है।'
'श्योर,' मैंने कहा।
'और मैं गंगाटेक कब देख सकती हूं?' उसने कहा।
'दो हफ्ते बाद,' मैंने कहा, 'आई प्रॉमिस, कॉलेज लगभग पूरा बन चुका है।'
हम चलकर उसकी कार तक आए।
'मैं थोड़ा-सा हंसी, और मुझे थोड़ा-सा रोना भी आ गया। तुमसे मिलकर कितना अच्छा लगता है,' आरती ने कहा।
'सेम हियर, हालांकि मुझे रोना नहीं आया,' मैंने कहा।
वह फिर हंस पड़ी। उसने मुझे हग किया और आमतौर से ज्यादा समय तक मुझे पकड़े रखा।
'पुराने दोस्त तो पुराने दोस्त ही होते हैं। बॉयफ्रेंड्स वगैरह सब ठीक हैं, लेकिन वे कभी आपको उस तरह नहीं समझ सकते, जिस तरह आपके पुराने दोस्त आपको समझते हैं।'
मुझे इस 'दोस्त' शब्द से नफरत थी, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। बस उसे गुडबाय वेव कर दिया।
मेरे फोन की घंटी बजी। बेदी का फोन था।
'कुलपति ने हमें मिलने बुलाया है। डीएम का फोन कॉल काम कर गया। वे दोनों एक-दूसरे को बचपन से जानते हैं,' उसने कहा।
'हां, पुराने दोस्त तो पुराने दोस्त ही होते हैं,' मैंने कहा।

22

गंगाटेक की ओपनिंग के लिए मैंने अपने जीवन में पहली बार सूट पहना। सजावट का कामकाज मैंने ही देखा था। ओपनिंग से एक रात पहले हम मेरे ऑफिस में ही सोए थे। हमने तीन क्लासरूम्स को एडमिशन सेंटर्स बना दिया था। मैं यह सुनिश्चित करने के लिए रुका था कि हमारे पास फॉर्म्स, पेन और इन्फॉर्मेशन बुकलेट्स हों।
शुक्ला-जी ने भी अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी थी। उन्होंने ओपनिंग के लिए मुख्यमंत्री को बुलाया था। उनके साथ दो राज्यमंत्री आने वाले थे।
राजनेताओं के सुरक्षा अधिकारी एक दिन पहले ही आकर मौका मुआयना कर चुके थे। चूंकि हमारे पास अभी तक कोई ऑडिटोरियम नहीं था, इसलिए हमने स्पीचेस के लिए एक टैंट के भीतर एक मेकशिफ्ट पोडियम खड़ा कर दिया था।
'दो हजार इन्विटेशन्स भेजे गए हैं, सर, वाराणसी के हर प्रतिष्ठित परिवार में इन्विटेशन गया है,' केमिकल इंजीनियरिंग फैकल्टी अजय ने मुझे बताया।
हमने लंच भी रखा था, इसलिए हम उम्मीद कर रहे थे कि इनवाइट किए गए लोगों में से कम से कम आधे तो आ ही जाएं। दूरी को देखते हुए हमने आम जनता के लिए चार बसों का बंदोबस्त किया था।
मीडिया के लिए एक दर्जन कारें तैनात की गई थीं।
मैंने शहर के सभी बड़े अखबारों में लगातार तीन दिन तक फुल पेज विज्ञापन देने के लिए दस लाख रुपए खर्च किए। आखिर लॉन्चिंग का मौका एक बार ही मिलता है। शुक्ला-जी चाहते थे कि पूरे शहर को पता चल जाए कि उन्होंने एक इंस्टिट्यूशन बनवाया था।
काम सुबह साढ़े चार बजे खत्म हुआ था। मैं फंक्शन से पहले एक झपकी लेने के लिए ऑफिस के सोफे पर ही लेट गया। साढ़े छह बजे शुक्ला-जी के कॉल से मैं जाग गया। मैंने अपनी आंखें मसलीं। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था।
'गुड मॉर्निंग, शुक्ला-जी,' मैंने कहा।
'तुमने अखबार देखा?'
मुझे लगा उन्होंने फुल पेज विज्ञापन देखे होंगे और उत्साहित [illegible] के बाद यह दिन आया था। 'नहीं, मैं कैम्पस में हूं। अभी तक यहां

अखबार नहीं आया है,' मैंने कहा।

'ऐसा कैसे हुआ?' शुक्ला-जी ने कहा।

मैं सोचने लगा कि आखिर वे खुश क्यों नहीं लग रहे हैं। शायद सुबह के वक्त उनका मूड अच्छा न रहता हो। 'विज्ञापन अच्छे लग रहे हैं ना?'

'विज्ञापन नहीं, यू इडियट! मैं 'दैनिक' में छपे इस आर्टिकल की बात कर रहा हूं।'

शुक्ला-जी ने इससे पहले कभी मुझसे इस तरह बात नहीं की थी। निश्चित ही, मैं उनके लिए काम करता था, लेकिन उन्होंने अभी तक मुझ पर आवाज नहीं उठाई थी।

'कौन-सा आर्टिकल?' मैंने कहा। मेरा हाथ मेरे माथे पर चला गया, जो दुख रहा था।

'अखबार पढ़ो और मुझे फोन लगाओ।'

'ओके। विज्ञापन कैसे लग रहे हैं?'

मुझे जवाब में केवल फोन बंद करने की क्लिक सुनाई दी।

मैंने आवाज देकर पियून को बुलाया और उससे कहा कि वह सारे अखबार ले आए। एक घंटे में सारे अखबार मेरी डेस्क पर थे।

हर अखबार में हमारा फुल पेज विज्ञापन था। कैम्पस की तस्वीरें बहुत खूबसूरत दिख रही थीं। विज्ञापन के नीचे मुझे अपना नाम दिखाई दिया। लेकिन शुक्ला-जी के कठोर शब्द मेरे कानों में बज रहे थे।

मैं पूरा 'दैनिक' छान मारा। पेज छह पर मुझे वह आर्टिकल दिखा।

हेडलाइन थी - शहर में नया इंजीनियरिंग कॉलेज - भ्रष्टाचार के पैसों से?

'व्हाट द फक!' मैंने आर्टिकल पढ़ते हुए खुद से कहा।

राघव कश्यप, स्टाफ रिपोर्टर।

मैं विश्वास ही नहीं कर पाया कि उसने मेरे साथ ऐसा किया था। शुरू की कुछ लाइनें तो ठीक लग रहीं थीं - 'वाराणसी शहर, जिसे ज्ञान की नगरी भी कहा जा सकता है, के पास अब अपना एक और इंजीनियरिंग कॉलेज है। द गंगाटेक कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, जो लखनऊ हाईवे पर पंद्रह एकड़ के कैम्पस में बना है। इसी सप्ताहांत में वह एडमिशंस के लिए अपने दरवाजे खोलने जा रहा है।'

राघव ने निश्चित ही हमारे कॉलेज की तमाम सुविधाओं, फैकल्टी प्रोफाइल, इंजीनियरिंग की शाखाओं और चयन प्रक्रिया का जिक्र किया था। आधे पेज के उस लेख पर शुक्ला-जी और मेरा फोटो भी था। मैंने इससे पहले कभी अपना फोटो अखबार में नहीं देखा था। बहरहाल, मैं इस पल का ज्यादा मजा नहीं ले सकता था, क्योंकि मुझे आगे पढ़ना था।

'मजे की बात यह है कि विधायक रमन लाल शुक्ला गंगाटेक के ट्रस्टियों में से एक हैं। उन्होंने कॉलेज के लिए फंड जुटाने में मदद की है। शुक्ला के पास गंगाटेक कैम्पस के इर्द-गिर्द फैली जमीन की भी मिल्कियत है, जिसकी कीमत पांच से दस करोड़ आंकी जाती है। आखिर शुक्ला ने फंड कहां से जुटाया? गौर करने लायक बात यह है कि यह कॉलेज तीन साल पहले बनना शुरू हुआ था, और यही वह समय था, जब गंगा एक्शन प्लान घोटाले में उनका नाम उछला था। क्या यह कॉलेज उनके द्वारा अपनी छवि सुधारने की कोशिश है? लोग अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए गंगा में नहाने आते हैं। तो क्या शुक्ला गंगा के साथ किए गए अपने पापों को धोने की कोशिश कर रहे हैं?'

'फक यू,' आर्टिकल खत्म कर मैंने कहा।

मैंने अखबार फाड़कर फेंक दिया। हमारे साथ ऐसा नहीं हो सकता था। एडमिशंस के दिन नहीं। किसी भी दिन नहीं। शुक्ला-जी ने फिर फोन लगाया। मैं थोड़ा झिझका, लेकिन फोन उठा लिया।

'मैंने देखा,' मैंने कहा।

'आखिर ये हुआ कैसे? कौन है ये रिपोर्टर राघव?

उसने वाकई तुम्हारा इंटरव्यू लिया था?'

'वह मेरा... मेरा... स्कूली दोस्त है,' मैंने हकलाते हुए कहा। 'उसने प्रॉमिस किया था कि वह बैलेंस्ड लिखेगा।'

'यह बैलेंस्ड है? उसने मेरी ऐसी-तैसी कर दी है।'

'आई एम रियली सॉरी, शुक्ला-जी। चिंता मत कीजिए, बाकी अखबारों में यह स्टोरी नहीं है।'

''दैनिक' सबसे बड़ा और सबसे प्रभावशाली अखबार है। मुख्यमंत्री ने अपनी विजिट कैंसिल कर दी है।'

'क्या?' मैंने कहा। मैं भौंचक रह गया। 'फिर कॉलेज का लोकार्पण कौन करेगा? हमने तो पत्थर पर भी उनका नाम खुदवा दिया है।'

'मुझे नहीं पता। हमारा पियून उसका लोकार्पण कर देगा, मेरी बला से,' शुक्ला-जी ने कहा।

'प्लीज, शांत हो जाइए, शुक्ला-जी,' मैंने कहा।

'रियली, हमें अगले तीन घंटों में किसी को खोजना होगा।'

विधायक ने गहरी सांस ली। शिक्षा राज्यमंत्री आ रहे हैं। वे कर देंगे लोकार्पण।'

'और मुख्यमंत्री के नाम वाला पत्थर?'

'उस पर स्टिकर चिपका दो, गोपाल। क्या मुझे तुम्हें हर चीज बतानी पड़ेगी?'

'सॉरी, शुक्ला-जी। मैं सब ठीक कर दूंगा,' मैंने कहा।

मैंने फॉलो-अप शुरू कर दिया। अधिकतर इनवाइटीज आए थे। मुफ्त लंच के सामने भ्रष्टाचार के आरोपों की भला क्या बिसात?

'मे आई कम इन, सर?' जैसे ही मैंने एक कॉल खत्म किया, मुझे एक लड़की की आवाज सुनाई दी।

मैंने सिर उठाकर देखा। 'आरती!'

'मैं तुम्हें डिस्टर्ब तो नहीं कर रही हूं?' उसने कहा।

'मैं जल्दी आ गई हूं।'

वह शुभारंभ कार्यक्रम से एक घंटा पहले नौ बजे आ गई थी। मैं तनाव में था, इसके बावजूद मैं यह गौर करने से खुद को नहीं रोक पाया कि उसने इस मौके के मुताबिक ड्रेस पहनी थी। उसने पर्पल और गोल्ड बॉर्डर वाली बॉटल ग्रीन सलवार-कमीज पहनी थी।

मैं उसे देखता रह गया, मेरा मुंह आधा खुला रह गया। 'क्या मैं अंदर आ सकती हूं, डायरेक्टर सर?'

उसने कहा।

'हां, ऑफ कोर्स,' मैंने कहा। 'वॉव, यू लुक...' 'क्या?' उसने कहा।

'यू लुक सो फॉर्मल,' मैंने कहा। मैं कहना चाहता था - स्टनिंग।

'ओह, मैंने सोचा तुम कहने वाले हो कि मैं बहुत अच्छी लग रही हूं।'

'वह तो ऑब्वियस है, आरती।'

'क्या ऑब्वियस है?'

'तुम हमेशा अच्छी लगती हो,' मैंने कहा।

'अच्छा? मुझे तो आजकल ऐसा सुनने को ज्यादा नहीं मिलता?'

'क्यों? तुम्हारा बॉयफ्रेंड ऐसा नहीं कहता?' मैंने यह बात जरा तकलीफ के साथ कही। राघव के आर्टिकल का विचार मेरे दिमाग से नहीं जा रहा था।

उसने आह भरी। 'वह तो मुझ पर तभी ध्यान देगा, जब मैं कपड़ों के बजाय उसका अखबार पहन लूंगी।'

मैं मुस्करा दिया और स्कूल प्रिंसिपल्स की लिस्ट चेक करने लगा कि कहीं मैं किसी को चूक तो नहीं गया।

'लगता है तुम बिजी हो,' आरती ने कहा। 'मैं बाहर वेट करूं?'

मैं आरती को बाहर जाने नहीं देना चाहता था, लेकिन मुझे ढेरों फोन कॉल्स करने थे।

'तुम्हें बाहर ठीक लगेगा?' मैंने कहा।

'हां, मॉम आई हैं। डैड नहीं आ सके। वे टूर पर हैं।'

'ओह,' मैंने कहा। 'चलो कम से कम मैं उन्हें विश तो कर दूं।'

हम बाहर आए। आरती की मां आगे की कतार में बैठी थीं और वे टैंट में मौजूद शुरुआती मेहमानों में से एक थीं।

'हैलो, आंटी,' मैंने हाथ जोड़ते हुए कहा।

'कॉन्ग्रेच्यूलेशंस, गोपाल। व्हाट अ लवली कैम्पस,' उन्होंने कहा।

'लेकिन अभी यह अंडर कंस्ट्रक्शन ही है,' मैंने एक वेटर को चाय और स्नैक्स लाने का इशारा करते हुए कहा।

'हमारी फिक्र मत करो,' आरती ने कहा। 'तुम अपने कार्यक्रम पर ध्यान दो। तुम्हें तो बहुत हाई-प्रोफाइल मेहमानों को अटेंड करना होगा।'

उसने जाने से पहले मुझे हग किया। मैंने देखा कि उसकी मां की आंखें मुझ पर जमी थीं।

मैंने एक बार फिर हाथ जोड़कर नमस्कार किया और अपनी कृतज्ञता के लिए माफी मांगी।

ओपनिंग सेरेमनी आराम से निपट गई, हालांकि मुख्यमंत्री के नहीं आने से कार्यक्रम की कुछ चमक जरूर जाती रही। शिक्षा राज्यमंत्री ने कॉलेज के शिलालेख का अनावरण किया। ब्लैक ग्रेनाइट पत्थर पर खुदे मुख्यमंत्री के नाम के ऊपर उनका नाम चिपका दिया गया था। मुख्यमंत्री के नहीं आने के कारण मीडिया के लोगों में खुसफुसाहट थी।

'एक मुश्किल स्थिति निर्मित होने के कारण मुख्यमंत्री महोदय को अंतिम समय में अपनी यात्रा रद्द करनी पड़ी,' शुक्ला-जी ने मंच पर आते हुए कहा।

उन्होंने अपनी स्पीच के लिए एक मिनट से भी कम समय लिया। प्रेस के लोग उनसे सवाल पूछने के लिए एकजुट हो गए। वे सभी 'दैनिक' में छपे लेख के बारे में बात करना चाह रहे थे। लेकिन विधायक उनको झांसा देते हुए पोडियम से गेट तक चले गए।

'माफ कीजिए, आज कोई सवाल नहीं। मुझे गांवों के दौरे पर जाना है। किसानों को मेरी जरूरत है। यहां से गोपाल मिश्रा सारी जिम्मेदारी संभालेंगे।'

चंद मिनटों के भीतर वे अपनी कार में बैठकर कैम्पस से चले गए। हाईवे से उन्होंने मुझे फोन लगाया।

'मैं 'दैनिक' के बल्डी एडिटर से बात करना चाहता हूं,' उन्होंने कहा।

'श्योर, मैं उसका बंदोबस्त कर दूंगा,' मैंने कहा।

'बाय द वे, एडमिशन फॉर्म्स बहुत अच्छी तादाद में भरे जा रहे हैं।'

'क्या उन हरामजादों को पता नहीं कि हम उनके अखबारों को कितने विज्ञापन देते हैं?' उन्होंने अपनी बात जारी रखी।

'शुक्ला-जी, एडमिशन...' मैंने कहा।

लेकिन तब तक वे फोन काट चुके थे।

हम उम्मीद कर रहे थे कि किसी एड कैम्पेन की मदद से बाकी बची सीटें भी भरने में कामयाब होंगे।

'हम साल भर विज्ञापन देना चाहते हैं,' मैंने 'वाराणसी टाइम्स' के मार्केटिंग हेड से कहा। 'इसलिए हम बेहतर डिस्काउंट की उम्मीद रखते हैं।'

मैंने पूरा दिन ज्यादा से ज्यादा विज्ञापन बुक करने के लिए अखबारों के चक्कर लगाते हुए बिताया था। मैं 'वाराणसी टाइम्स' के मार्केटिंग हेड अमर त्रिवेदी के ऑफिस में बैठा था।

'आप हमें अपना मीडिया पार्टनर क्यों नहीं बना लेते?' उसने कहा।

'उससे क्या होगा?' मैंने पूछा।

'हम थोड़ी-सी एक्स्ट्रा फीस लेकर आपके कॉलेज के बारे में पॉजिटिव आर्टिकल्स छापेंगे। हमें खबरें मिलेंगी, आपकी एक इमेज बनेगी। इट इज अ विन-विन पार्टनरशिप,' उसने कहा।

'मुझे कैसे पता चलेगा कि आप पॉजिटिव खबरें ही छापेंगे?' मैंने कहा। मैं एक बार जल चुका था और अब छाछ भी फूंक-फूंककर पीना चाहता था।

'आर्टिकल्स आप लोग ही बनाकर हमें भिजवाना,' अमर ने कहा।

मैंने उससे कहा कि वह मुझे एक फॉर्मल प्रपोजल बनाकर भिजवाए।

'वाराणसी टाइम्स' के बाद मैं बस्फाटक स्थित 'दैनिक' के दफ्तर पहुंचा।

'वेलकम गोपाल-जी,' 'दैनिक' के सेल्स मैनेजर शैलेष गुप्ता ने बिल्डिंग के एंट्रेंस पर मेरा अभिवादन करते हुए कहा।

मैंने उसे एक रूखी मुस्कराहट दी। हम दोनों दफ्तर में चले आए।

'आप क्या लेंगे, सर?' उसने पूछा।

मैंने सिर हिला दिया।

'चाय? कॉफी??'

'झूठ से भरपूर आर्टिकल्स!' मैंने कहा।

'क्या?' उसने कहा।

'शैलेष, हमने आपको सबसे ज्यादा विज्ञापन दिए और आपने हमारे साथ क्या किया? और वह भी हमारी ओपनिंग के दिन?'

शैलेष समझ गया कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूं और उसने नजरें फेर लीं।

'मुझे अगले महीने विज्ञापनों पर पांच लाख रुपए और खर्च करना है। आप ही मुझे बताइए कि मुझे सारे विज्ञापन 'वाराणसी टाइम्स' को क्यों नहीं देने चाहिए?'

मैंने ट्रस्ट की चेकबुक उसके सामने लहराते हुए कहा।

'गोपाल भाई,' शैलेष ने मद्धम आवाज में कहा, 'आप क्या कह रहे हैं? हम नंबर वन अखबार हैं।'

'तो? इसका मतलब आप हमारी ऐसी-तैसी करेंगे?'

'गोपाल भाई, यह मैंने नहीं किया था।'

'हमारा कॉलेज भ्रष्टाचार के पैसों से बना है? लेकिन आपने तो हमारे कॉलेज से भी पैसे कमाए हैं!'

'यह एडिटोरियल वालों का काम है। वे बेवकूफ और नॉन प्रैक्टिकल लोग हैं,' शैलेष ने कहा।

मैंने टेबल पर मुक्का मारा।

'मैं आपके एडिटर-इन-चीफ से मिलना चाहता हूं, यदि आप चाहते हैं कि मैं आगे भी आपको विज्ञापन देता रहूं तो,' मैंने कहा।

शैलेष ने मेरी चेकबुक को देखा और उठ खड़ा हुआ।

'चलिए,' उसने कहा। मैं उसके पीछे-पीछे एडिटोरियल फ्लोर पर चला गया।

एडिटर-इन-चीफ अशोक कुमार अपने कांच के कैबिन में बैठे थे और कुछ सब-एडिटर्स की मीटिंग ले रहे थे। शैलेष भीतर गया और सभी सब-एडिटर्स बाहर आ गए। शैलेष ने मुझे भीतर आने का इशारा किया।

अशोक ने मुझे सिर से पैर तक देखा। 'आप विधायक शुक्ला के ऑफिस से आए हैं?' उन्होंने कहा।

'मैं गंगाटेक कॉलेज का डायरेक्टर हूं,' मैंने कहा और अपना हाथ आगे बढ़ाया। उन्होंने सरसरी तौर पर मुझसे हाथ मिलाया और मुझे बैठने को कहा।

'मैंने फुल-पेज विज्ञापन देखे हैं,' अशोक ने अपनी बात शुरू की। वे मुझे अपने कैबिन में देखकर थोड़े हैरान थे।

'क्या आपने अपने अखबार में वह आर्टिकल देखा, जो हमारे बारे में है?' मैंने कहा।

'निश्चित ही मैंने देखा होगा। किसने लिखा था वह आर्टिकल?' अशोक ने कहा। उन्होंने चश्मा पहना और रिपोर्टर का नाम खोजने के लिए कंप्यूटर चालू कर दिया।

'शायद सर को रिपोर्टर का नाम याद न हो,' शैलेष ने कहा। 'हम डेट से खोजें?'

'वह आर्टिकल राघव कश्यप ने लिखा था,' मैंने कहा।

'वह नया लड़का?' अशोक ने कहा। वे पहली बार कुछ उत्साहित नजर आ रहे थे। उन्होंने अपने कंप्यूटर पर जल्दी से वह आर्टिकल खोज निकाला। फिर मेरी तरफ मॉनिटर घुमाते हुए पूछा, 'यह वाला?'

मैंने सिर हिला दिया।

'मुझे रिपोर्टर को कांग्रेच्युलेट करना चाहिए। वह नया है, इसके बावजूद उसकी खबरों पर लोगों का ध्यान जा रहा है।'

'हां, यदि आप बकवास लिखेंगे तो लोगों का ध्यान आपकी ओर जाएगा ही,' मैंने कहा।

'क्या बात है शैलेष-जी। आपके क्लाइंट इतने अपसेट क्यों नजर आ रहे हैं? हमने तो उनके कॉलेज पर आधे पेज की प्रोफाइल दी है,' अशोक ने कहा।

'आखिरी के दो पैराग्राफ और हैडलाइन का क्या मतलब है?' मैंने ऐतराज भरे लहजे में कहा।

'क्या?' अशोक ने कहा और आर्टिकल पर एक बार फिर नजर दौड़ाई। 'ओह, करप्शन वाली बात। उसमें क्या बड़ी बात है?'

'इससे हमारी इमेज को नुकसान पहुंचता है,' मैंने टेबल पर अपनी हथेलियां जोरों से पटकते हुए कहा।

अशोक को मेरे द्वारा इस तरह भावनाओं का प्रदर्शन करना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने मुझे घूरकर देखा। मैंने टेबल से हाथ उठा लिया।

'यदि आपको अपनी इमेज की इतनी ही चिंता थी तो विधायक शुक्ला के साथ मिलकर कॉलेज क्यों खोला?' अशोक ने कहा।

शैलेष समझ गया कि अब बात का बतंगड़ बन रहा है।

'सर, गंगाटेक हमारा सबसे बड़ा विज्ञापनदाता हो सकता है,' शैलेष ने कहा।

'तो, क्या हम खबरों को ठीक तरह से छापना बंद कर दें?' अशोक ने कहा।

'आरोप साबित नहीं किए गए हैं,' मैंने कहा। 'तीन साल पुराने घिसे-पिटे मामले को उठाकर हमारी ओपनिंग के दिन छापा गया है। क्या यह ठीक है?'

'अशोक सर, प्लीज दो मिनट के लिए मुझसे प्राइवेट में बात कीजिए,' शैलेष ने कहा।

मैं बाहर जाकर खड़ा हो गया और वे बतियाने लगे।

मैं इधर-उधर देखने लगा। मैंने एक चपरासी से पूछा कि राघव कश्यप कहां बैठता है। उसने मुझे इशारे से बताया। मैंने उसका छोटा-सा क्यूबिकल देखा। वह मेरे ऑफिस के सोफे से भी छोटी जगह घेरे हुए था। फिर मैंने राघव को देखा। वह अपने कंप्यूटर पर पागलों की तरह कुछ टाइप किए जा रहा था और ऐसा लग रहा था, जैसे उसे दुनिया-जहान का कोई होश नहीं है।

शैलेष ने मुझे फिर बुलाया। 'डोंट वरी, हमने सब ठीक कर लिया है। अशोक सर सीधे विधायक-जी से बात करेंगे। हम मामला सुलझा लेंगे। प्लीज, हमारे साथ आपका जो

एसोसिएशन है, उन्हें जाने दीजिए,' शैलेष ने कहा।

'ओके,' मैंने कहा। 'लेकिन रिपोर्टर के बारे में क्या?'

'उसके बारे में क्या?' शैलेष ने कहा। 'वह तो ट्रेनी है।'

'मैं चाहता हूं कि वह मुझसे माफी मांगे,' मैंने कहा।

शैलेष ने अशोक की ओर देखा।

'यह तो उसी पर निर्भर करता है,' अशोक ने कहा।

उन्होंने फोन उठाया और अपनी सेक्रेटरी से कहा कि राघव को अंदर भिजवा दे।

पांच मिनट बाद राघव ने दरवाजे पर दस्तक दी।

'सर, आपने मुझे बुलाया?' राघव ने कहा। फिर उसने मुझे देखा। 'हे, गोपाल। तुम यहां?'

'आप लोग एक-दूसरे को जानते हैं?' अशोक ने कहा, उनकी एक भौंह तन गई थी।

'इसने मेरा इंटरव्यू लिया था,' मैंने कहा।

राघव मेरे रूखे-से जवाब से हैरान हुआ। वह समझ गया कि मैं ज्यादा याराना नहीं दिखाना चाहता हूं।

'क्या बात है?' उसने कमरे के गंभीर माहौल को भांपते हुए पूछा।

शैलेष ने पूरी कहानी सुनाई।

'माफी?' राघव ने कहा। 'गोपाल, तुम चाहते हो कि मैं तुमसे माफी मांगूं?'

'आप दोनों एक-दूसरे को इससे पहले भी जानते थे?' अशोक ने राघव के बात करने के लहजे से अंदाज लगाते हुए कहा।

'हम एक ही स्कूल में थे,' मैंने कहा।

'और हमने एक ही डेस्क पर बैठकर पढ़ाई की है।

हम बहुत गहरे दोस्त रहे हैं,' राघव ने कहा। 'तुम इन्हें यह क्यों नहीं बताते?'

'मैं इन्हें यह क्यों नहीं बताता कि तुमने मुझसे मेरी आरती छीन ली, यू एस-होल', मैं कहना चाहता था।

या यह कि 'तुम मेरी कामयाबी से इतना जल गए कि तुमने एक सड़ियल-सा आर्टिकल लिख मारा।'

लेकिन मैंने कहा, 'ये भ्रष्टाचार के आरोप बेबुनियाद हैं। और किसी कॉलेज की प्रोफाइल में उनका जिक्र करने की कोई जरूरत नहीं थी।'

'मुझे बैलेंस्ड लेख लिखना था,' राघव ने कहा।

'शुक्ला जाना-माना गुंडा है।'

'बकवास,' मैंने जोर से कहा।

'मिस्टर गोपाल, कृपया अपनी आवाज नीचे रखिए।

राघव, तुम्हें अपनी हर खबर में एक्टिविस्ट बनने की जरूरत नहीं है,' अशोक ने कहा।

'सर, मैंने बामुश्किल ही कुछ लिखा था। मिसाल के तौर पर कॉलेज की इमारत बनने में जो अनियमितताएं हुईं, उनका तो मैंने जिक्र तक नहीं किया।'

'कोई अनियमितताएं नहीं हुई हैं। हमारे सारे प्लान्स अप्रूव्ड हैं,' मैंने कहा।

'और शुक्ला ने ये अप्रूवल कैसे लिए? खैर, मैंने इस बारे में कुछ भी नहीं लिखा है।'

'यहां तक कि गंगा एक्शन प्लान भी अब एक पुरानी खबर है, राघव,' अशोक ने कहा। 'जब तक तुम्हारे पास नए, ठोस सबूत न हों, उसे बार-बार दोहराने का कोई मतलब नहीं है। हम इस तरह लोगों के नाम पर दाग नहीं लगाते रह सकते।'

राघव ने अनमने 'कोई ठोस सबूत नहीं मिल जाते, मैं कुछ नहीं कहूंगा। क्या मैं अब जा सकता हूं?'

'तुमने गोपाल सर से माफी नहीं मांगी,' शैलेष ने कहा। 'गंगाटेक हमारा क्लाइंट है।'

'एडिटोरियल केवल गंभीर गलतियों के लिए माफी मांगता है,' राघव ने कहा।

'या जब चीफ एडिटर माफी मांगने को कहें, तब,' शैलेष ने ठोस आवाज में कहा।

राघव ने अशोक की ओर देखा। वे चुप रहे।

'सर, आप आखिर कैसे...' राघव ने अपनी बात शुरू की।

'राघव, बात को यहीं खत्म करो। मुझे एक घंटे में अगला एडिशन छोड़ना है,' अशोक ने कंप्यूटर स्क्रीन की ओर मुड़ते हुए कहा।

तकरीबन दस सेकंड तक खामोशी छाई रही।

'आई एम सॉरी,' राघव ने ठंडी सांस लेते हुए कहा।

'इट्स ओके,' मैंने कहा, लेकिन राघव तब तक कमरे से बाहर जा चुका था।

23

'तुम्हारी राघव से बहस हुई थी?' आरती ने कहा।

उसने मुझे हमेशा की तरह देर रात फोन लगाया था।

'उसने तुम्हें बताया?' मैंने कहा।

'मैंने बस इतना ही कहा था कि हम तीनों को कहीं मिलना चाहिए और उसने तो मेरी जान ही ले ली,' उसने कहा।

'अरे नहीं! तुम्हारी जान मुझे प्यारी है,' मैंने कहा।

'होटल अगले हफ्ते खुल रही है। मैंने सोचा कि मैं परमिशन लेकर तुम दोनों को होटल खुलने से पहले ही वहां घुमा लाती। वह बेहद खूबसूरत है,' उसने कहा।

'तुम उसे अलग से भी दिखा सकती हो,' मैंने कहा।

'क्या बात है?' आरती ने कहा। 'तुम उससे मिले थे ना? आखिर मुझे कोई कुछ बताता क्यों नहीं?'

'वह काम से संबंधित बात थी। डोंट वरी। अब सब ठीक हो गया है।'

'तुम कहते हो तो मान लेती हूं। कल आ सकते हो?'

'बिल्कुल।'

'गुड नाइट, डायरेक्टर साहब!'

मैं रमाडा होटल के एंट्रेंस पर आरती का इंतजार कर रहा था। सिक्योरिटी ने मुझे भीतर नहीं जाने दिया।

आरती आई, अपना स्टाफ कार्ड दिखाया और मैं उसके पीछे-पीछे हो लिया। उसने मरून बनारसी साड़ी पहन रखी थी, जो उसकी यूनिफॉर्म थी। 'आरती प्रताप प्रधान – गेस्ट रिलेशन्स ट्रेनी,' उसके बैज पर लिखा था।

'वॉव, तुम कितनी डिफ्रेंट लग रही हो,' मैंने कहा।

'डिफ्रेंट? फॉर्मल? बस तुम इतना ही बोलना जानते हो?' उसने झूठमूठ का गुस्सा दिखाते हुए कहा।

'नहीं... यू लुक ग्रेट। लेकिन मैंने उम्मीद नहीं की थी कि तुम्हें साड़ी में देखूंगा,' मैंने कहा।

'उम्मीद क्या नहीं की थी? यही कि तुम्हारी स्टुपिड स्कूल क्लासमेट को एक जॉब भी मिल सकता है?'

उसने भौंहें उचकाते हुए कहा। उसके हाथ अपनी कमर पर थे।

'हां। तुम स्टुपिड तो हो,' मैं भी झूठमूठ में उससे राजी हो गया। उसने मजाक में मेरी बांह पर एक धौल जमाया।

हम होटल लॉबी में आ गए। कंस्ट्रक्शन वर्कर्स इटैलियन मार्बल पर पॉलिशिंग मशीनें चला रहे थे।

मशीनें बहुत शोरगुल कर रही थीं, जबकि इटैलियन मार्बल पहले ही चमचमा रहे थे। हवा में पेंट की गंध फैली हुई थी। वह मुझे रेस्टोरेंट ले गई, जहां मखमल की शानदार कुर्सियां सजी थीं।

'यह हमारा बार होगा – टॉनिक्स।'

होटल यह तय कर देना चाहता था कि भले ही लोग इस शहर में अपने पुराने पाप मिटाने आए हों, लेकिन वे नए पाप करने में भी कोताही न बरतें। हम बाकी सुविधाएं देखने के लिए होटल में घूमते रहे।

'तो, आखिर तुम लोग मुझे बताते क्यों नहीं?' उसने कहा।

'क्या?' मैंने कहा।

'वही जो राघव और तुम्हारे बीच हुआ था।'

'हमारे कॉलेज को उसके अखबार में छपी एक खबर अच्छी नहीं लगी। उसने इसके लिए माफी मांगी।

कहानी खत्म।'

फिर मैंने दो मिनट में उसे पूरी कहानी संक्षेप में सुनाई, लेकिन मैंने उसे कसम खिलाई कि वह यह राघ् व को नहीं बताएगी। उसने मुझे बताया कि उसने तो राघव को यह भी नहीं बताया है कि वह मुझसे मिल रही है, इसलिए और कुछ बताने का तो सवाल ही नहीं उठता। आखिर इंसानी रिश्ते इसी का तो नाम है – चुनिंदा लोगों से ही अपनी बातें शेयर करना और क्रेजी कन्फ्यूजन की हद तक हकीकत को छुपाना।

फिर हम एथनिक–थीम रेस्टोरेंट में चले आए।

'आगन, भारतीय भोजन के लिए,' उसने मुझे समझाया।

फिर वह मुझे जिम में ले गई। मैंने ट्रेडमिल्स देखी, जिनके साथ टीवी अटैच थीं।

'इंपोर्टेड?' मैंने पूछा।

उसने सिर हिलाकर हामी भरी। 'कभी–कभी मुझे बहुत गिल्टी फील होती है,' उसने कहा। लड़कियां एक साथ अलग–अलग विषयों के बारे में आराम से बातें कर सकती हैं।

'क्यों?'

'मैंने तुम्हारी और राघव की दोस्ती में दरार डाल दी,' उसने कहा।

'ऐसी बात नहीं है,' मैंने कहा।

वह एक बेंच–प्रेस पर बैठ गई। मैंने एक बैलेंसिंग बॉल ली और उसे स्टूल बनाकर उस पर बैठ गया।

'बचपन में हम तीनों दोस्त हुआ करते थे। अब क्या हो गया?' उसने कहा। उसकी आंखें नम होने लगी थीं।

'जिंदगी,' मैंने कहा। 'जिंदगी इसी का नाम है।'

'अगर मैं नहीं होती तो तुम दोनों के रिश्तों में आज इतनी कड़वाहट न होती,' उसने कहा।

'नहीं, यह गलत है। मैं ही तुम्हारे लायक नहीं था।

इसमें राघव का कोई दोष नहीं है,' मैंने कहा।

'ऐसी बात कभी मत कहना,' आरती ने कहा। खाली जिम में उसकी आवाज गूंज रही थी। 'ऐसा नहीं है कि तुम मेरे लायक नहीं हो। तुम बहुत अच्छे लड़के हो, गोपाल। और हम एक–दूसरे के साथ बहुत कंफर्टेबल रहते हैं।'

'लेकिन मुझे पता है, मुझे पता है कि तुम मेरे बारे में वैसा नहीं सोचतीं। अब मुझे भूख लग रही है। लंच कहां मिलेगा?'

'ऐसी बात नहीं है,' उसने कहा।

'क्या?'

'लड़कियों के साथ ऐसा नहीं होता। सवाल सही वक्त का है। और इस बात का भी है कि कौन कितनी कोशिश करता है।'

'क्या मैंने कोशिश नहीं की थी?' मैंने कहा।

'तुमने जरूरत से ज्यादा कोशिश की थी,' उसने कहा और अपनी आंखें पोंछ लीं।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसके करीब जाकर उसे मनाने की कोशिश करूं या नहीं। एक कारण तो यह था कि वह किसी और की थी, और दूसरा कारण यह था कि हम उसके वर्कप्लेस में बैठे थे।

मैंने उसे मनाने के बजाय 20 पाउंड का डंबबेल उठा लिया। वह भारी था, लेकिन आरती के सामने मैंने ऐसा दिखावा किया मानो मैं उसे आसानी से उठा पा रहा हूं। राघव शायद इससे दोगुना वजन का डंबबेल उठा सकता है, मैंने सोचा। आखिर मुझे हर बात पर राघव से तुलना करने की क्या जरूरत है?

'आई एम सॉरी,' मैंने कहा। 'आई एम सॉरी, यदि मैंने तुम पर जरूरत से ज्यादा दबाव बनाया हो तो।'

'तुम ऐसे समय कोशिश कर रहे थे, जब मैं किसी भी बात के लिए खुद को तैयार नहीं महसूस करती थी। तुम बहुत ज्यादा चाहते थे। तुम मुझ पर पूरी तरह निर्भर हो जाना चाहते थे। लेकिन मुझे नहीं लगता था कि मैं एक बहुत अच्छी मददगार साबित हो सकती हूं।'

'आज क्या है? मेरा परफॉर्मेंस इवेल्यूएशन डे?' मैंने कहा। मैंने डंबल को पांच बार उठाया और फिर नीचे रख दिया।

'मैं तो बस इतना ही कह रही हूं कि... पता नहीं।

मुझे लगा शायद मुझे बात इस बारे में करनी चाहिए थी।'

'बात करनी थी या अपनी बात सुनानी थी?' मैंने कहा।

हमने एक–दूसरे को देखा।

'हां, यही बात है। तुम मुझे कितनी अच्छी तरह से समझते हो, गोपाल?'

'जरूरत से ज्यादा अच्छी तरह से,' मैंने कहा और मुस्करा दिया।

'लंच से पहले तुम रूम्स देखना चाहोगे?' उसने कहा।

'बिल्कुल। हम लंच कहां लेंगे?' मैंने पूछा।

'स्टाफ कैंटीन में,' उसने कहा।

हम स्टेनलेस–स्टील के एलीवेटर्स की मदद से थर्ड फ्लोर पर पहुंचे। उसके पास हर रूम का मास्टर की कार्ड था।

'बाय द वे, मुझसे यह उम्मीद की जाती है कि मैं होटल में किसी को भी लेकर न आऊं,' उसने कहा।

'तो?' मैंने कहा। मैं सोचने लगा कि क्या इसका मतलब यह है कि अब मुझे यहां से चल देना चाहिए?

'मैं तुम्हें यह बताने की कोशिश कर रही हूं कि तुम कितने खास हो। मैं तुम्हारे लिए अपनी नौकरी को खतरे में डाल रही हूं।'

'यदि उन्होंने तुम्हें फायर कर दिया, तो मैं तुम्हें हायर कर लूंगा।'

हमारी आंखें मिलीं। हम एक साथ हंस पड़े। पिछले कई सालों से हमारे बीच ऐसा कोई पल नहीं आया था। स्कूल के दिनों में हम इस तरह हंसा करते थे – एक साथ और छोटी–छोटी बातों पर। हम अपनी क्लास के शैतान बच्चे हुआ करते थे। वह टीचर्स की मिमिक्री करती थी और मैं हिस्ट्री के पीरियड के दौरान सो जाने का नाटक करता था।

उसने रूम नंबर 3103 खोला। मैंने अपने जीवन में इससे ज्यादा लग्जरियस और कुछ नहीं देखा था।

'कूल,' मैंने कहा।

'है ना?' वह बड़े–से बेड पर बैठ गई, जिस पर चमकीले लाल रेशम के छह तकिये रखे थे। 'और यह बेड तो कमाल ही है! आओ, बैठकर देखो।'

'आर यू श्योर?' मैंने कहा।

'आओ ना,' उसने कहा।

हम एक–दूसरे के करीब बैठ गए। मैं बेड के कोने पर था।

'इट्स नाइस,' मैंने कहा, जैसे कि मैं कोई प्रोफेशनल मैट्रेस इंस्पेक्टर होऊं।

'इस पर लेटना तो और कम्फर्टेबल लगेगा,' उसने कहा।

मैंने हक्का–बक्का होकर उसकी तरफ देखा। उसने मेरा एक्सप्रेशन देखा तो पेट पकड़कर हंस पड़ी।

'मैंने यह नहीं कहा कि साथ–साथ लेट जाते हैं,' उसने कहा। 'तुम इतने सीरियस क्यों हो गए?'

हमने अगले बीस मिनट बिजली के स्विच और बाथरूम के नलों के साथ खेलते हुए बिताए। मैं इससे पहले कभी उसके साथ इतने अकेले स्थान पर नहीं रहा था। मुझे हवा में एक खास किस्म का तनाव महसूस हो रहा था, लेकिन शायद वह तनाव केवल मेरे दिमाग में ही था।

'चलो, अब चलते हैं।' मैंने घड़ी देखते हुए कहा।

मुझे जल्द से जल्द कैम्पस पहुंचना था।

'ओके,' उसने कहा और वॉशबेसिन का नल बंद कर दिया।

हम रूम से बाहर चले आए। चमाचम सूट पहने एक आदमी ने हमें बाहर निकलते हुए देखा।

'आरती?' उसने हैरानी से कहा।

आरती के चेहरे का रंग उड़ गया।

'सर,' उसने कहा। मैंने उसके सूट पर लगा टैग पढ़ा। विनायक शास्त्री, बैन्क्वे मैनेजर।

'तुम यहां क्या कर रही हो?' उन्होंने कहा।

'सर,' उसने कहा, 'ये मिस्टर गोपाल मिश्रा हैं। हमारे क्लाइंट।'

'लेकिन अभी तो हमारा होटल खुला भी नहीं,' उन्होंने कहा। वे अब भी संदेह से भरे हुए लग रहे थे।

'हाय,' मैंने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा। 'मैं गंगाटेक ग्रुप ऑफ कॉलेजेस का डायरेक्टर हूं।'

उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया।

'हम यहां एक कॉलेज ईवेंट करने के बारे में सोच रहे थे,' मैंने कहा।
हम एलीवेटर तक चले आए। मैं उम्मीद कर रहा था कि वे इससे आगे कुछ नहीं पूछेंगे। तभी उन्होंने पूछ लिया, 'किस तरह का प्रोग्राम?'
'हम प्लेसमेंट के लिए जिन टॉप कंपनियों को बुलाएंगे, उनके लिए डिनर,' मैंने कहा।
आरती हम दोनों से नजरें बचाती रही।
'श्योर, हमें आपको असिस्ट करके अच्छा लगेगा,' विनायक ने मुझे अपना कार्ड थमाते हुए कहा।
मैंने सोचा कि शायद अब हमें स्टाफ कैंटीन में लंच के अपने प्रोग्राम को तिलांजलि देनी होगी।
'मुझे देर हो रही है, लेकिन मेरी टीम जल्द ही आपसे कॉन्टैक्ट करेगी,' लॉबी में आते ही मैंने कहा।
आरती ने मुझे एक प्रोफेशनल स्माइल दी और रिसेप्शन डेस्क के पीछे चली गई। विनायक मेरी कार आने तक मेरे साथ रुके रहे।
'आप रूम्स क्यों देखना चाहते थे?' विनायक ने पूछा।
'हमारे कुछ गेस्ट फैकल्टी आएंगे। शायद विदेश से,' मैंने कहा। और शुक्र है कि ठीक तभी पोर्च में मेरा ड्राइवर आ गया।

24

अगले दो महीनों में हम अपनी फर्स्ट बैच की दो सौ में से एक सौ अस्सी सीटें भरने में कामयाब रहे। मैंने पहली बार शुक्ला–जी के अकाउंटेंट के पास पैसा जमा कराया। अनेक स्टूडेंट्स ने कैश में फीस भरी थी।
खासतौर पर किसानों के लड़के बोरों में भरकर पैसा लाए थे, जिसे सालों तक धीरे–धीरे जमा किया गया था।
'मेरे बेटे को इंजीनियर बना देना,' एक किसान ने हाथ जोड़ते हुए विनती की थी।
हां, इंजीनियर बनना फायदेमंद होता है, क्योंकि बी–टेक डिग्री के कारण जॉब भी आसानी से मिल जाता है और दहेज भी बहुत मिलता है। डीन श्रीवास्तव और उनकी बीस फैकल्टी की गैंग क्लासेस संभालती थी। मैं दूसरे प्रोजेक्ट्स में व्यस्त रहता था, जैसे होस्टल के मेस का बंदोबस्त, नया स्टाफ रखना और यह सुनिश्चित करना कि कंस्ट्रक्शन का बाकी बचा काम शेड्यूल पर पूरा हो जाए। मेरी सोशल लाइफ बहुत सीमित रह गई थी। मैं हफ्ते में एक बार फैकल्टी मेंबर्स के साथ डिनर करता था, जिसके दौरान आमतौर पर हम कामकाज की ही बात करते थे।
कभी–कभी मैं शुक्ला–जी के घर भी चला जाता था।
'तुम इंस्टिट्यूट के डायरेक्टर हो। तुम अपने पुराने घर में कैसे रह सकते हो?' एक दिन उन्होंने बहुत सारी व्हिस्की पी लेने के बाद कहा।
'फैकल्टी बंगला बहुत जल्द बनकर तैयार हो जाएगा। वैसे भी मैं ज्यादातर समय ऑफिस में ही सोता हूं,' मैंने कहा।
हां, लेकिन आरती जरूर मेरी जिंदगी में फिर से लौट आई थी। वह इकलौती ऐसी शख्स थी, जिसके साथ मैं समय बिताता था और मैं उससे कामकाज के बारे में बात नहीं करता था। रमाडा होटल खुल गई थी, आरती ने काम शुरू कर दिया था और वह लॉबी में गेस्ट रिलेशंस डेस्क पर बैठती थी। उसके पहले वर्किंग डे पर मैंने उसे चॉकलेट का एक बॉक्स और फूल भिजवाए। शायद मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, लेकिन मुझे लगा कि यह दिन उसके लिए बहुत मायने रखता है। हालांकि मैंने इस बात का जरूर ध्यान रखा कि बुके में केवल सफेद गुलाब हों, लाल गुलाब नहीं।
'हे, थैंक्स। रियली स्वीटेस्ट ऑफ यू!!:)' उसका एसएमएस आया।
मैंने उस मैसेज को पचास बार पढ़ा। आखिरकार मैंने एक जवाब लिखा – 'यू आर वेलकम। फॉर अ ग्रेट फ्यूचर कैरियर वूमन।'
दस मिनट बाद उसका जवाब आया – 'तुम मुझ पर इतने मेहरबान क्यों हो?'
मेरे पास इस बात का कोई जवाब नहीं था। मैंने लड़कियों की ट्रिक का इस्तेमाल किया। जब डाउट में हों तो स्माइली भेज दो।
मैंने तीन स्माइली भेज दीं। ':)))' उसने मैसेज किया – 'काम के बाद मिलोगे? 7 बजे। सीसीडी में?'
'श्योर', मैंने फौरन जवाब दिया।
मैं उससे मिलने के लिए कैम्पस से सिगरा तक गाड़ी चलाकर गया। उसने मुझे उस दिन के अपने काम के बारे में बताया। उसने होटल का चयन करने में पांच जर्मनों की मदद की थी, एक दस सदस्यीय जापानी डेलिगेशन के लिए कार का बंदोबस्त किया था और एक अमेरिकन को उसके रूम में सरप्राइज बर्थडे केक भिजवाया था। वह खुश नजर आ रही थी। मुझे नहीं लगता था कि वह एयर होस्टेस न बन पाने को मिस कर रही थी।
'तो, आज हमें मिलने का मौका मिला। वैसे तुम शामों को करते क्या हो?' उसने पूछा।
'कुछ खास नहीं। कैम्पस में रहता हूं। काम करता हूं,' मैंने कहा।
'दैट्स हॉरिबल! तुम्हारे कोई दोस्त नहीं हैं?' आरती ने कहा।
मैंने कंधे उचका दिए। 'कॉलेज में मेरे कलीग्स हैं।
उनका साथ ही बहुत है।'
उसने मेरे हाथ पर चपत लगाई। 'तुम्हारे कुछ दोस्त होने चाहिए। मुझे देखो। तुम मेरे दोस्त हो।'
'और राघव?'
'वह तो देर रात तक अखबार में काम करता है।
उसके पास समय ही नहीं है...' उसने अपना हाथ हटाते हुए कहा। उसने मुझे यह नहीं बताया कि हमारे इस तरह मिलने के बारे में राघव क्या सोचेगा। वास्तव में मैंने उससे यह पूछा भी था, जिस पर उसने जवाब दिया था कि राघव को पता ही नहीं चलेगा।
'तुम्हें काम के बाद दोस्तों से मिलना–जुलना चाहिए।' ऐसा लगा जैसे वह खुद को कंविंस करने की कोशिश कर रही हो।
'शायद मैं तुम्हें अपने होटल की कहानियां सुना–सुनाकर बोर कर दूंगी, लेकिन ..' 'तुम मुझे कभी बोर नहीं करतीं। चाहे तुम एक भी शब्द न कहो,' मैंने कहा।
और इसी के साथ काम के बाद मेरा आरती से मिलना–जुलना शुरू हो गया। हम हफ्ते में दो बार मिलते थे। कभी–कभी तीन बार। हम नए–नए रेस्टोरेंट्स में खाना खाते थे, कैफे में जाते थे, रविदास पार्क में घूमते थे और कभी–कभी फिल्में भी देखते थे।
लेकिन हमने अपने लिए कुछ अनकहे नियम भी तय कर रखे थे। हम फोन पर लंबी बातें नहीं करते थे और आमतौर पर एक–दूसरे को टेक्स्ट मैसेज करते थे। हम कभी अपने पास्ट की बात नहीं करते थे या टची विषयों को नहीं छूते थे। मैं उसे कभी नहीं छूता था, लेकिन वह जरूर कभी–कभी बातचीत के दौरान मेरी बांह थाम लेती थी। मूवी थिएटर्स में हम अलग–अलग जाते और अलग–अलग बाहर निकलते थे। वाराणसी में लड़के और लड़कियां वैसे भी ऐसा ही करते थे। जब राघव का फोन आता था तो मैं चुपचाप उससे दूर हो जाता था, ताकि मैं उनकी बातें न सुन सकूं। जब राघव का काम खत्म हो जाता था, तो वह भी चली जाती थी।
मैं समझ नहीं पाया कि मैंने उसके साथ वक्त बिताना क्यों शुरू किया। मैं उसके लिए एक बफर बन गया था, जो उसके बॉयफ्रेंड के काम से नाराज होने तक उसके काम आता था। शायद मैं अपने काम से भी थोड़ा आराम चाहता था। और वैसे भी, जब बात आरती की हो, तो मेरे होशोहवास तो गुम हो ही जाया करते थे।
'तो राघव को पता नहीं है कि हम मिलते हैं?' एक दिन मैंने उससे पूछा।
उसने सिर हिला दिया और कॉफी के मग से बनी मूंछें पोंछ डालीं।
राघव मुझसे अपनी पिछली मुलाकात के बाद से मेरी जिंदगी से दूर था। हालांकि वह अपनी हरकतों से फिर भी बाज नहीं आया।
'वाराणसी नगर निगम पैसा खाती है, बिल्डर्स धोखाधड़ी करते हैं' राघव कश्यप, स्टाफ रिपोर्टर हमारी ओपनिंग के एक महीने बाद सुबह उठते ही अखबार में मैंने यह हेडलाइन देखी। वह अक्सर राशन की दुकानों में होने वाली कालाबाजारी, एलपीजी सिलेंडर्स की गैरकानूनी बिक्री, आरटीओ अधिकारियों द्वारा रिश्वतखोरी आदि रुटीन की भारतीय चीजों के बारे में लिखता था, जिनकी कोई परवाह नहीं करता था। मैं उसके इस लेख को भी नजरंदाज कर जाता, बशर्ते उसने उसमें गंगाटेक का जिक्र न किया होता।
मैंने कुछ पंक्तियों को सरसरी तौर पर पढ़ा।
लेख में लिखा था, 'बड़ी अजीब बात है कि अनुपयुक्त अप्रूवल्स और उनके कारण होने वाले गैरकानूनी निर्माण हमारी आंखों के ऐन सामने हैं।
भ्रष्टाचार के दूसरे मामलों, जहां भ्रष्टों की करतूत छिपी हुई रहती है (जैसे गंगा एक्शन प्लान घोटाला) से उलट निर्माण के इन मामलों में खुले सबूत हमारे सामने हैं। खेती की जमीनों पर कॉलेज बना दिए जाते हैं, जो मनचाहा निर्माण करने के लिए सभी नियम–कायदों को ताक पर रख देते हैं।
जल्द ही कॉलेजों के पास में मॉल्स होंगे।
राजनेताओं का काम होता है हमारी रक्षा करना और इन तमाम हरकतों पर रोक लगाना, लेकिन अक्सर वे ही इन तमाम चीजों गैरकानूनी चीजों के पीछे होते हैं। इतना ही नहीं, शहर में नई होटलें, रहवासी टॉवर्स और दफ्तरों की इमारतें भी बन गई हैं, जिनके निर्माण से वीएनएन ने मुनाफा खाया है।
हमारे पास इस बात के सबूत हैं कि वास्तव में किस निर्माण की अनुमति दी जानी चाहिए थी और उसकी तुलना में वीएनएन ने किन निर्माणों को अनुमति दी है...' लेख के साथ लगे बॉक्स में विवादित अप्रूवल्स की सूची थी।
मैंने सूची पढ़ी: 1. वी–कॉन अपार्टमेंट बिल्डिंग। दस मंजिला।
लो–राइज जोन में निर्मित।
2. होटल वेदो, जिसका निर्माण एक बगीचे पर हुआ है।
3. गंगाटेक कॉलेज, जिसके निर्माण के लिए रहस्यमय तरीके से कृषि भूमि को [illegible] दिया गया। कॉलेज की बिल्डिंग फ्लोर–स्पेस इंडेक्स का उल्लंघन करते हुए बनाई गई है।

मैंने अखबार को दूर फेंक दिया। मैंने बहुत मुश्किल से शुक्ला–जी से अपने संबंध फिर सुधारे थे। मैंने उन्हें कह दिया था कि उस रिपोर्टर ने मुझसे माफी मांग ली है और आगे से ऐसा फिर नहीं होगा। मुझे पता था कि राघव उस दिन मुझसे बोले गए 'सॉरी' का बदला ले रहा है। उसने अपने वीएनएन के सूत्रों से गंगाटेक का बिल्डिंग प्लान हासिल कर लिया होगा।

मैंने फोन निकाला। लेकिन इससे पहले कि मैं उसे कॉल करता, शुक्ला–जी का फोन आ गया।

'पता नहीं यह कैसे हुआ,' मैंने कहा।

'ये 'दैनिक' वाले भैनचोद हैं,' शुक्ला–जी ने कहा।

'इस रिपोर्टर को रोकना अब जरूरी है...' मैंने कहा।

'यह उस रिपोर्टर का काम नहीं है, विपक्ष वाले इसके पीछे होंगे।'

'पता नहीं, सर।'

'या शायद मेरी ही पार्टी में से कोई हो? साले, मुझसे जलने वाले हरामजादे मेरा खेल बिगाड़ना चाहते हैं।'

'मुझे ऐसा नहीं लगता, सर।'

'क्या?'

'यह उस रिपोर्टर का ही किया–धरा है। मैं उसे पहले से जानता हूं। वह समाजसेवी किस्म का आदमी है। फिर चूंकि उसे मुझसे माफी मांगने को मजबूर होना पड़ा था, इसलिए शायद वह बदला ले रहा है।'

'कौन है वह?'

'राघव कश्यप, लेख में नाम लिखा है।'

'मैं उसकी ऐसी–तैसी कर दूंगा,' शुक्ला–जी ने कहा।

'मैं उसको फोन लगाऊं?'

'नहीं, रहने दो। मैं उसके सीनियर्स से खुद बात करूंगा।'

मैंने कहा, 'और इस लेख के बारे में क्या? इससे हमें कोई नुकसान होगा?'

'यदि वीएनएन वालों का फोन आए, तो मुझसे बात करा देना,' शुक्ला–जी ने कहा।

वीएनएन वालों का फोन तो नहीं आया, वे खुद मेरे ऑफिस चले आए। वे अकेले नहीं आए थे, उनके साथ दो बुलडोजर्स भी थे।

बुलडोजर्स का शोर सुनकर स्टूडेंट्स क्लासरूम की खिड़कियों से बाहर झांककर देखने लगे। मैं दौड़ता हुआ गेट पर आया।

'गेट्स खोलो, हम निर्माण तोड़ने आए हैं,' सस्ते सनग्लासेस और पीला हेलमेट पहने एक आदमी ने कहा।

'क्या?' मैंने कहा।

'हमारे पास ऑर्डर्स हैं,' वीएनएन अधिकारी ने कहा।

उसने अपनी जेब से कागज का एक मुड़ा–तुड़ा टुकड़ा निकाला।

मेरा दिल जोर–से धड़कने लगा। 'आप कौन–सा निर्माण तोड़ेंगे?'

'मेन बिल्डिंग। यहां अवैध निर्माण हुआ है,' उसने कहा। उसके लहजे से दिलेरी झलक रही थी।

सुबह की तेज धूप हमारे चेहरों को झुलसा रही थी।

'हम बात कर सकते हैं?' मैंने कहा।

उसने सिर हिला दिया।

मैंने फोन निकाला। शुक्ला–जी को फोन लगाया।

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

'यह विधायक शुक्ला का कॉलेज है। आपका नाम क्या है, सर?' मैंने कहा।

'राव। अमृत राव नाम है मेरा। तुम चाहे विधायक का नाम लो, चाहे प्रधानमंत्री का, मुझे कोई परवाह नहीं।'

मैं दस मिनट तक उसे यह कहकर मनाता रहा कि वह धैर्य रखे। मैंने पियून से कहा कि सभी के लिए आइस डालकर सॉफ्टड्रिंक लाए। इस दौरान मैं लगातार शुक्ला–जी को फोन लगाता रहा। उन्होंने आठवीं बार में फोन उठाया।

'क्या बात है, गोपाल? मुझे सीएम को फोन लगाना था। ये बेवकूफी भरे लेख भी एक नंबर का सिरदर्द हैं।'

'सर, यहां बुलडोजर्स आ गए हैं।'

'क्या?' शुक्ला–जी ने कहा।

मैंने राव को फोन थमा दिया, जिसने विधायक को भी अपने मिशन के बारे में बताया। हालांकि दूसरे छोर पर विधायक की बात सुनकर वह चुप हो गया। फिर वह बाहर गया और दस मिनट तक शुक्ला–जी से जोर–जोर से बात करता रहा।

फिर राव ने मुझे फोन थमा दिया। 'लो, शुक्ला–जी तुमसे बात करना चाहते हैं।'

'सर?' मैंने कहा। मैं अब भी भौंचक था।

'ऑफिस में कितना कैश है?' शुक्ला–जी ने पूछा।

'नॉट श्योर, सर। सेफ में दो लाख के करीब होंगे।'

'वह पैसा इन्हें दे दो। लेकिन नोट सीमेंट के खाली बोरे में रखना और ऊपर से रेत भर देना।'

'जी, सर,' मैंने कहा।

'उसके साथियों की नजर नहीं पड़नी चाहिए। उसे बहुत ईमानदार माना जाता है।'

'ओके, सर।'

'और उसे कुछ न कुछ तोड़ना पड़ेगा। वह बिना कुछ तोड़े वापस नहीं जा सकता।'

'क्या?'

'कोई ऐसी जगह है, जिसका निर्माण अभी चल रहा हो, और जिसकी तुम्हें तत्काल में जरूरत न हो?'

'सर, ये लोग कुछ भी तोड़ेंगे तो स्टूडेंट्स देख लेंगे,' मैंने कहा।

'कुछ नहीं किया जा सकता। तुम्हारे इस रिपोर्टर दोस्त ने हमारी...' 'वह अब मेरा दोस्त नहीं है, सर,' मैंने कहा।

'वह तो गया काम से। खैर, अभी तो मुझे इतना बताओ कि कौन–सा निर्माण आसानी से तोड़ा जा सकता है, जिसकी बाद में मरम्मत कराने में ज्यादा खर्च न आए?'

'मशीनिंग लैब। हम मशीनों को कहीं और रख सकते हैं,' मैंने कहा।

'ठीक है। लैब के बाहर चॉक से क्रॉस का एक निशान बना दो। बाकी काम वे खुद कर लेंगे। और हां, सीमेंट की बोरी वाली बात याद रखना,' शुक्ला–जी ने फोन रख दिया।

मैंने सिक्योरिटी गार्ड को गेट खोलने को कहा। राव ने मुझे एक चिपचिपी स्माइल दी।

25

'आज मैं कोई फिल्म नहीं देख सकती। मुझे दस मिनट में निकलना है।' आरती नाक–भौं सिकोड़ते हुए मेरी इनोवा में आ बैठी।

मैं उसे लेने उसके होटल आया था। मेरे पास 'रॉक ऑन' फिल्म के साढ़े सात बजे के शो के टिकट थे।

'तुम्हें इन टिकटों के पैसे वापस मिल जाएंगे?'

मैंने टिकट फाड़ दिए।

'गोपाल!' उसने कहा। 'क्या कर रहे हो? तुम्हें मुझसे पूछे बिना टिकट नहीं लेना चाहिए थे।'

'तुम इतनी परेशान क्यों लग रही हो?'

'राघव के कारण। मुझे अभी उसके पास जाना पड़ेगा।'

'क्या?'

'मैं राघव के बारे में बात नहीं करूं, यह नियम किसने बनाया है मिस्टर मिश्रा?'

'मैंने। लेकिन अभी मैं केवल इतना ही जानना चाहता हूं कि तुम हमारा प्लान क्यों कैंसल कर रही हो।'

'मैं तुम्हें बता दूंगी। अभी तुम मुझे घर पर छोड़ सकते हो?'

'डीएम के बंगले पर,' मैंने ड्राइवर से कहा।

'अपने तक ही रखना, ओके?' आरती ने कहा।

'उसने मुझे कहा है कि मैं किसी को नहीं बताऊं।

लेकिन मैं तुम पर भरोसा कर सकती हूं, है ना?'
'क्या मुझे इस सवाल का भी जवाब देना पड़ेगा कि तुम मुझ पर भरोसा कर सकती हो या नहीं?' मैंने कहा।
'ठीक है। तो बात यह है कि राघव की नौकरी चली गई है,' उसने कहा।
'क्या?' मैंने कहा। मेरे मन में खुशी की एक गर्म गुदगुदाहट दौड़ गई।
'आई एम शॉक्ड। 'दैनिक' वाले तो उसे अपना स्टार रिपोर्टर मानते थे,' आरती ने कहा।
'क्या उन्होंने कोई कारण बताया कि वे उसे क्यों बाहर कर रहे हैं?' मैंने कहा। कारण तो उसके पास ही बैठा हुआ था।
'पता नहीं। उसने कुछ बताया नहीं। उसने बस इतना ही कहा कि मैनेजमेंट ने उससे नौकरी छोड़ देने को कहा।'
'मंदी?' मैंने झूठमूठ की चिंता जताते हुए कहा।
'मंदी के दिनों में खर्चा कम करने के लिए इसी तरह स्टाफ में कटौती की जाती है।'
'लेकिन एक रिपोर्टर को बाहर करके कितना खर्चा घ टाया जा सकता है? और फिर 'दैनिक' तो बहुत अच्छा चल रहा था।'
कार आरती के घर पर पहुंच गई।
'क्या वह तुम्हारे घर पर है?' मैंने पूछा। वह कार से बाहर निकल गई।
उसने सिर हिलाकर इनकार किया। 'मुझे उससे मिलने जाना होगा। लेकिन मैं पहले घर आकर चेंज करना चाहती थी।'
'उसकी आवाज से क्या लग रहा था? वह अपसेट था?' मैंने पूछा।
'वह बहुत-बहुत गुस्से में था,' आरती ने कहा और बाहर चली गई।
मुझे राघव को फोन नहीं लगाना चाहिए था। लेकिन मैं आधी रात को उसे फोन लगाने से खुद को रोक नहीं पाया। मैं देखना चाहता था कि क्या अब बेरोजगार होने के बाद भी वह पहले जैसा दिलेर बना रह सकेगा। मेरे दाएं हाथ में व्हिस्की का एक बड़ा-सा गिलास था और बाएं हाथ में फोन था।
मैंने सोचा था कि वह मेरा फोन नहीं उठाएगा।
लेकिन उसने जल्द ही मेरा फोन उठा लिया।
'तुम चाहते हो कि मैं एक बार फिर माफी मांगूं?'
ये उसके पहले शब्द थे।
'हाय, राघव,' मैंने शांत आवाज में कहा। 'क्या चल रहा है?'
'बिल्कुल ठीक। तुम्हें इतनी रात गए फोन लगाने की जरूरत क्यों महसूस हुई?'
'मुझसे अपसेट मत होओ,' मैंने कहा।
'हम केवल उन लोगों के बारे में अपसेट होते हैं, जिनकी हम परवाह करते हैं,' राघव ने कहा।
'तुम अपने जॉब की तो परवाह करते थे ना?'
'बाय, गोपाल,' उसने कहा।
'मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया था कि हमारे बारे में ऊटपटांग बातें मत लिखना,' मैंने कहा।
'मुझे तुमसे पूछने की जरूरत नहीं है कि मैं अपना काम कैसे करूं।'
मैंने व्हिस्की का एक बड़ा-सा घ ूट लिया। 'अरे हां, तुम मुझसे पूछते भी कैसे? एक बीएचयू पासआउट मुझ जैसे गंवार से राय लेगा?'
वह चुप रहा। मैंने अपना गिलास भरा। व्हिस्की के कारण मैं अपने आपको इतना कॉन्फिडेंट महसूस कर रहा था, जितना पहले कभी नहीं किया था।
'सवाल एजुकेशन का नहीं है। सवाल इस बात का है कि तुम किस तरह के आदमी बन गए हो। मुझे तो भरोसा ही नहीं होता!'
'अमीर। कामयाब। तुम्हें भरोसा नहीं होता, है ना?
जबकि जिस आदमी ने जेईई क्लीयर कर लिया था, वह आज बेरोजगार है।'
'मुझे कोई न कोई नौकरी मिल जाएगी। और मैं तुम्हारे उस विधायक को बता दूंगा कि किसी अखबार के टेनी को नौकरी से बाहर करवा देने का यह मतलब नहीं होता कि वह सच पर परदा डालने में कामयाब हो जाएगा।'
'मैं तुम्हें नौकरी दे सकता हूं, राघव। मेरे लिए काम करना चाहोगे?'
मैंने जवाब में केवल फोन रखने की क्लिक सुनाई दी।
'रेवोल्यूशन 2020,' आरती ने कहा। उसने अपना चेहरा अपने हाथों में भर रखा था और उसकी कोहनियां टेबल पर टिकी थीं।
हम रमाडा होटल की कॉफी शॉप में आए थे। यह उसका ऑफ-डे था, लेकिन वह रेगुलर कपड़ों में कस्टमर की तरह रेस्टोरेंट्स में आ सकती थी। वेटर्स उसे पहचान कर मुस्करा देते और वह भी मुस्कराकर जवाब देती। राघव का जॉब छूटने के बाद से वह मुझसे ज्यादा नहीं मिल पा रही थी। आखिर, उसके वीकली ऑफ के दिन मैंने उसे मिलने के लिए राजी कर लिया।
'मतलब?' मैंने कहा।
'यह मत पूछो। 'रेवोल्यूशन 2020' – जब मैं तुमसे यह कहूं तो सबसे पहले तुम्हारे दिमाग में क्या आता है? यह क्या हो सकता है?'
वह मेरे जवाब का इंतजार कर रही थी। उसकी पलकें झपकीं। मैंने देखा कि एक सिंपल-सी ऑरेंज टी-शर्ट और काली जींस में भी वह कितनी आकर्षक लग रही थी।
'एक नया रेस्टोरेंट? रमाडा खोल रहा है?'
वह हंस पड़ी।
'इसमें हंसने वाली क्या बात है?' मैंने कहा।
'आखिर यह 'रेवोल्यूशन 2020' है क्या?'
'यह एक नया अखबार है। राघव का अखबार।'
'उसका खुद का अखबार?' मैंने हैरत से कहा।
'हां। उसने तय किया है कि अब वह और कोई जॉब नहीं करेगा।'
वैसे राघव अगर चाहता तो भी उसे वाराणसी में कोई मीडिया जॉब नहीं मिल सकता था, कम से कम टॉप के अखबारों में तो कतई नहीं। शुक्ला-जी ने सभी बड़े संपादकों को उसे नहीं लेने के बारे में कह दिया था। निश्चित ही, आरती को यह सब नहीं पता था।
उसे तो यह भी नहीं पता था कि राघव की नौकरी क्यों गई।
'राघव ने कहा कि 'दैनिक' ने उसे बिना कोई कारण बताए नौकरी से बाहर कर दिया। क्या यह ठीक है?' उसने कहा।
'हर जगह राजनीति होती है। वह धीरे-धीरे सीख जाएगा कि कैसे फिट हुआ जाए,' मैंने कहा।
'लेकिन वह फिट नहीं होना चाहता। वह जर्नलिज्म को बदलकर रख देना चाहता है। वह उसके नाखून पैने करना चाहता है,' आरती ने कहा।
हमने कॉफी ऑर्डर की। कॉफी के साथ ही वेटर्स ने हमें ताजा बेक की हुई कुकीज और मफिन्स भी दिए।
'क्या हमने यह सब ऑर्डर किया था?'
'कॉन्टैक्ट्स,' उसने कहा और मुझे देखकर आंख मार दी।
'लेकिन वह अखबार कैसे शुरू कर सकता है?' मैंने कहा। 'उसके लिए तो पैसा चाहिए।'
'सवाल पैसे का नहीं, कंटेंट का है,' आरती ने कहा और कॉफी की एक चुस्की ली। उसके होंठों पर झाग की एक हल्की-सी परत लगी रह गई।
'आरती, तुम वाकई इन बातों में यकीन करती हो?
तुम तो प्रैक्टिकल लड़की हो।'
'इट्स फाइन, गोपाल। तुमने भी तो कॉलेज खोला।
तो वह अखबार क्यों नहीं निकाल सकता?'
'मेरे पीछे कोई मेरी मदद करने वाला था। विधायक शुक्ला, जिसके पास पैसा और कनेक्शंस थे।'
'वह उससे नफरत करता है। राघव कहता है कि शुक्ला से ज्यादा भ्रष्ट राजनेता वाराणसी में कोई दूसरा नहीं हुआ,' आरती ने कहा।
'यह तो केवल अटकलबाजी है,' मैंने कहा। 'क्या दुनिया में कोई ऐसा कामयाब आदमी हुआ है, जिसकी आलोचना नहीं हुई हो? शुक्ला हाई-प्रोफाइल है और लगातार आगे बढ़ रहा है। इसीलिए लोग उसे नीचे लाने की कोशिश कर रहे हैं।'
'ओके, अब राजनीति पर बात करना बंद करते हैं।'
आरती ने कहा। 'हमारे परिवार में मेरे दादाजी के साथ ही राजनीति की परंपरा खत्म हो गई है।'
'तुम चाहो तो राजनीति जॉइन कर सकती हो,' मैंने कहा। 'लोग अब भी तुम्हारे दादाजी को याद करते हैं।'
उसने अपना हाथ उठाया और झूठमूठ में नारे लगाते हुए कहा, 'मुझे वोट दीजिए, मैं आपको कॉफी के साथ मुफ्त कुकीज दूंगी।' फिर वह मुस्करा दी। 'नो थैंक्स। मैं रमाडा में ही खुश

है।'

मैं भी मुस्करा दिया। 'एनीवे, तो आखिर वह एग्जैक्टली किस तरह अपनी रेवोल्यूशन शुरू करेगा? रेवोल्यूशन..., क्या बताया था तुमने?'

''रेवोल्यूशन 2020'। यही उसका मकसद है। उसका मकसद है कि साल 2020 तक भारत में क्रांति हो। नौजवानों के हाथ में सत्ता हो। हम भ्रष्ट सिस्टम को मरम्मत कर देंगे और एक नया सिस्टम बनाएंगे।'

'और वह इस क्रांति की शुरूआत वाराणसी से करेगा?' मैंने ज्यादा से ज्यादा अविश्वास प्रकट करते हुए कहा।

'येस, ऑफ कोर्स। बड़े शहरों के बच्चों को सिस्टम से कोई दिक्कत नहीं है। उन्हें अच्छे कॉलेज मिलते हैं, अच्छे जॉब मिल जाते हैं। ऐसे में क्रांति तो किसी छोटे शहर से ही शुरू होगी।'

'उसने कम से कम तुमको तो राजी कर ही लिया है,' मैंने कहा।

'इससे बेहतर और क्या होगा कि हम एक ऐसे शहर से शुरूआत करें, जो लोगों को तन-मन से शुण् करने के लिए जानी जाती है?' उसने कहा।

वह बहुत जोशोखरोश से बातें कर रही थी। शायद उसे राघव की यही बात अच्छी लगती थी। उसे जिंदगी के प्रति उसका जज्बाती रवैया अच्छा लगता था, फिर चाहे वह कितना ही हवा-हवाई क्यों न हो। वैसे भी लड़कियां वास्तविकता को इतना पसंद नहीं करतीं। न ही क्रयावहारिक सवालों में उनकी ज्यादा दिलचस्पी होती है।

'लेकिन यह अखबार चलेगा कैसे? क्रांति होने तक प्रिंटिंग, कागज और प्रचार का पैसा कौन देगा?'

वह बहुत जल्द गंभीर मुद्रा में आ गई। 'शुरुआत में यह एग्जैक्टली किसी अखबार जैसा नहीं होगा। यह बहुत कुछ न्यूजलेटर की तरह होगा। केवल एक बड़ी-सी शीट।'

'ओके?' मैंने उसे अपनी बात जारी रखने को कहा।

'पेपर के एक तरफ मैट्रिमोनियल्स होंगे। वाराणसी के लोग शादी तय करना बहुत पसंद करते हैं। तो वह स्थानीय वर-वधुओं के लिए वहां विज्ञापन छापेगा। शुरू में विज्ञापन मुफ्त होंगे, बाद में वह उनके लिए पैसे लेगा। शायद वह नौकरियों के कुछ विज्ञापन भी छापेगा।'

'लोग किसी स्थापित अखबार में विज्ञापन देना क्यों नहीं चाहेंगे?'

''रेवोल्यूशन 2020' के विज्ञापनों के रेट्स बहुत कम होंगे और वे पूरी तरह स्थानीय होंगे। लोग अपनी गली में भी वर-वधू की खोज कर पाएंगे।'

मैंने सिर हिला दिया।

'अखबार के दूसरी तरफ राघव स्थानीय खबरें छापेगा। और चूंकि यह कोई प्रॉपर अखबार नहीं होगा, इसलिए राघव बेधड़क होकर और स्टिंग ऑपरेशंस कर सकेगा।'

'हां, उसे यह सब करना बहुत अच्छा लगता है,' मैंने सहमति जताते हुए कहा।

'तो बस इतनी ही बात है। छपाई की लागत बहुत कम होगी, क्योंकि शुरूआत में हम केवल एक ही बड़ी शीट छापेंगे। वह शुरूआती विज्ञापनों के लिए मंदिरों से संपर्क करेगा। देखते हैं। तुम्हें नाम पसंद आया?'

मैंने कंधे उचका दिए। वह अपना मफिन कुतरने लगी।

'सभी की जिंदगी का कोई न कोई मकसद होता है, गोपाल,' आरती ने कहा। उसके मुंह में मफिन भरा हुआ था। 'तुम्हारे पास अपना कॉलेज है, उसके पास अपना यह अखबार होगा।'

'लेकिन यह अखबार कभी पैसा नहीं कमा सकेगा,' मैंने कहा।

'तो क्या हुआ?' उसने अपना मफिन मेरी ओर लहराते हुए कहा। 'पैसा सब कुछ तो नहीं होता।'

'जब हम किसी फाइव स्टार होटल में केक खा रहे हों, तब यह कहना आसान होता है,' मैंने कहा।

वह बनावटी हंस दी और अपना मफिन नीचे कर लिया।

'मुझे तो पैसा पसंद है,' मैंने कहा।

'इसमें कुछ गलत भी नहीं है। मेरी तो सीधी सोच है — चाहे पैसा हो या रेवोल्यूशन, सभी को अपने दिल की बात सुननी चाहिए।'

'कभी-कभी आपका दिल आपको मुसीबत में भी डाल सकता है,' मैंने कहा।

वह रुक गई और मेरी ओर देखा। वह मेरी बात को समझने की कोशिश कर रही थी। 'आह,' उसने चकित होने का दिखावा किया, 'नाइस, तुम फिर से तीर छोड़ रहे हो ना?'

'बिल्कुल नहीं,' मैंने कहा। मैंने बिल बुलवाया। बिल पर 20 फीसदी स्टाफ डिस्काउंट था।

हम लॉबी में चले आए। 'क्या तुम्हें जल्दी जाना है?' मैंने कहा।

'कोई बहुत जल्दी तो नहीं है। क्यों, क्या बात है?'

'मैंने साल भर से नाव की सवारी नहीं की है,' मैंने कहा।

26

अस्सी घाट के मेरे फेवरेट बोटमैन फूलचंद ने मुझे दूर से ही पहचान लिया। मुझे फॉर्मल सूट में देखकर उसे अच्छा लगा। उसने हमारे लिए नाव खोल दी। मैंने नाव पर चढ़ने में आरती की मदद की और फूलचंद को एक्स्ट्रा सौ रुपयों की टीप दी। उसने मेरे हाथ में कागज की एक छोटी-सी पुड़िया थमा दी।

'ये क्या है?'

'अच्छी चीज है। मैं इसे अघोरी साधुओं से लाया हूं। आपके पास माचिस होगी?'

मैं समझ गया कि उसने मुझे क्या दिया है। आरती भी समझ गई और मुझे देखकर अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराई। मैंने पान की दुकान से कुछ सिगरेटें और माचिस खरीदीं।

मैंने पानी में चप्पू चलाना शुरू कर दिया और आरती और मैं धीरे-धीरे घाट से दूर जाने लगे।

'कितना समय हो गया। मैं इसे बहुत मिस करती थी, राघव,' उसने कहा।

'गोपाल,' मैंने बिना उसकी ओर देखे उसकी गलती सुधारते हुए कहा।

'क्या? मैंने राघव कह दिया? ओह, सॉरी। आई एम सो सॉरी। मेरा यह मतलब नहीं था...' 'इट्स ओके,' मैंने कहा।

मैं नाव को नदी के दूसरे किनारे की ओर खेने लगा।

मुझे चप्पू चलाने में मुश्किल आ रही थी। अब मेरी बांहें उतनी मजबूत नहीं रह गई थीं, जितनी वे पहले हुआ करती थीं। पहले मैं अक्सर नाव चलाया करता था। वाराणसी के मुख्य घाट एक सिरे से दूसरे सिरे तक मंदिरों और पुरानी इमारतों से भरे पड़े हैं। नदी के दूसरी ओर मौजूद नर्म रेत के किनारे उनकी तुलना में ज्यादा अकेलेपन से भरे लगते हैं। उस तरफ चाय की एक छोटी-सी दुकान थी, जो कभी-कभार उस तरफ चले आने वाले पर्यटकों को चाय पिलाती थी। मैंने एक पेड़ के तने से नाव बांध दी। शाम के सूरज के कारण वाराणसी का आकाश नारंगी हो गया था।

'कुछ देर चहलकदमी करते हैं,' आरती ने बहती हवा को महसूस करने के लिए अपना हाथ उठाते हुए कहा।

हमने दूसरी तरफ मौजूद चहल-पहल भरे घाट को देखा। हमें वहां बहुत कुछ होता नजर आ रहा था, लेकिन हम कुछ सुन नहीं पा रहे थे। हम कुछ देर टहलते रहे और फिर चाय की दुकान में जाकर स्टूल्स पर बैठ गए।

'फूलचंद ने जो दिया है, वह पिओगे?'

'यदि तुम्हें ऐतराज न हो तो,' मैंने कहा।

उसने कंधे उचका दिए। मैंने सिगरेटों का पैकेट खोल लिया। उनमें से एक सिगरेट की तंबाकू बाहर निकाल दी और उसमें सूखी चरस डाल दी। फिर मैंने सिगरेट सुलगाई और एक कश भरा।

'मैं भी ट्राय कर सकती हूं?' उसने कहा।

मैंने सिर हिलाकर मना किया।

उसके फोन की घंटी बजी। उसने बैग से फोन निकाला। स्क्रीन पर नजर आ रहा था — राघव कॉलिंग।

'श्श्श्! चुप रहना,' उसने मुझे इशारा किया। 'हाय,' उसने फोन उठाकर कहा। फिर वह कुछ देर तक राघव की बातें सुनती रही।

'यह तो बहुत अच्छा है। ठीक है, पेपर में पंडित-जी की तस्वीरें डाल दो। वे बहुत खुश हो जाएंगे। वे तुम्हें शादी लायक सभी लड़के-लड़कियों की लिस्ट दे देंगे,' उसने कहा और खिलखिला दी।

'हां,' उसने अपनी बात जारी रखी, 'मैं अब भी होटल में ही हूं। यह बहुत खराब इंडस्ट्री है, ऑफ-डे पर भी काम करना पड़ता है... हां, पूरी बस भरकर फ्रेंच टूरिस्ट्स आ धमके हैं।' उसने बात करते-करते मुझे इशारा किया कि मैं धैर्य रखूं। मैंने सिर हिला दिया। मैं आकाश की ओर देखने लगा, जिसका रंग अब गहरा हो रहा था।

'येस, बेबी, आई मिस यू,' आरती ने कहा और फोन रख दिया। फिर वह सिगरेट का टुकड़ा ढूंढने लगी।

'क्या?' मैंने कहा।

'मुझे भी एक कश लेना है।'

'पागल हो गई हो क्या?'

'क्यों? क्योंकि मैं लड़की हूं? तुम तो बिल्कुल वाराणसी के पुरुषों की तरह बर्ताव कर रहे हो, हैं?'

'तुम्हारे मुंह से उसकी बू आएगी।'
'मैं सीधे जाकर शॉवर ले लूंगी। और फिर आखिर बनारसी पान किसलिए बने हैं? मैं घर जाने से पहले एक सुगंधित पान खा लूंगी,' उसने कहा।
मैंने उसे सिगरेट का टुकड़ा दे दिया। उसने कुछ कश लिए। 'ऐसा लगता तो नहीं कि मुझ पर इसका कोई असर हुआ हो,' उसने भुनभुनाते हुए कहा।
हमने चाय पी और उठ खड़े हुए। वह नदी के पास चली आई।
'आओ, पानी में आरती के दिये देखते हैं,' उसने कहा।
'देर हो गई है,' मैंने कहा। 'हमें अब चलना चाहिए।'
'मुझे यहां अच्छा लग रहा है। आओ ना,' उसने कहा और रेत पर बैठ गई। फिर वह धरती को थपथपाने लगी।
मैं भी उसके पास बैठ गया। 'तुम्हारा फोन फिर बज उठेगा,' मैंने कहा।
'बजने दो,' उसने कहा। 'जब वह 'दैनिक' में काम करता था, तब कभी मुझे कॉल नहीं करता था। अब चूंकि वह न्यूज़ी है, इसलिए फोन लगाता रहता है। उसका 'रेवोल्यूशन 2020' शुरू होने तक रुको।'
'क्या वह वाकई उसके बारे में सीरियस है?' मैंने अविश्वास जताते हुए कहा।
'अरे हां। दो हफ्ते बाद उसका पहला अंक छपकर आ रहा है,' उसने कहा।
मैंने अपनी सिगरेट खत्म की और पवित्र गंगा को निहारने लगा। पूरी दुनिया इस नदी में अपने पाप धोने आती है। क्या उन्होंने कभी सोचा कि वे अपने पीछे जो पाप छोड़ जाते हैं, उनके साथ वाराणसी के लोग कैसे जीते होंगे? चरस ने मुझे फिलासॉफिकल बना दिया था।
मैंने अपनी अंगुलियां चटकाईं और अपने आपको वापसी के लिए तैयार करने लगा। आरती ने मेरा दायां हाथ उठाकर अपनी गोद में रख लिया और उसे सहलाने लगी।
मैंने उसकी ओर हैरत से देखा।
'अच्छा लग रहा है ना?' उसने कहा।
मैंने कुछ नहीं कहा। एक शब्द भी नहीं। लेकिन मैंने अपना हाथ भी नहीं खींचा। आकाश में चांद उग आया था।
'पूर्णिमा की रात है,' उसने धीमे–से कहा।
हमारे नीचे रेत थी। उसका चेहरा चांदनी में चमक रहा था... अचानक वह जल्दी–जल्दी आंखें झपकाने लगी।
'यू ओके?' मैंने कहा।
उसने सिर हिला दिया, लेकिन वह अब भी अपनी आंखें झपका रही थी। रेत का एक कण उसकी आंखों में चला गया था। मैंने अपना हाथ छुड़ाया और उसके चेहरे को अपने हाथों में भर लिया।
'अपनी आंखें खोलो,' मैंने कहा।
उसने फिर सिर हिला दिया।
'आंखें खोलो आरती,' मैंने कहा। मैंने दोनों हाथों में उसका सिर थाम रखा था।
उसने अपनी दाईं आंख खोली। मैंने उसमें फूंक मार दी। 'तुम ठीक हो?' मैंने कहा।
उसने हामी भरी। उसकी आंखें फिर मुंद गईं। मैंने उसे सिसकते हुए सुना।
'तुम्हें तकलीफ हो रही है क्या?' मैंने कहा।
अब वह सुबकने लगी और मेरे कंधे पर अपना माथा टिका दिया।
'क्या बात है, आरती?'
'मुझे राघव के बारे में डर लग रहा है। कहीं वह जिंदगी में नाकाम न हो जाए।'
मैंने उसके सिर को थामे रखा था। उसने अपना चेहरा मेरे सीने में छुपा लिया। उसे उसके बॉयफ्रेंड के बारे में दिलासा देना अजीब था, लेकिन मुझे अच्छा लग रहा था कि वह मेरे इतने करीब थी।
'वह ठीक हो जाएगा। मैं उससे नफरत जरूर करता हूं, लेकिन वह काबिल लड़का है। उसे कुछ नहीं होगा।
वह बस थोड़ा–सा गैरव्यावहारिक है, लेकिन दिल का बुरा नहीं है,' मैंने कहा।
उसने अपना सिर उठाया। वह मेरी ओर भरोसे के साथ देख रही थी।
मैं उसके बालों को सहलाता रहा। 'तुम मेरी कितनी केयर करते हो। मैं यह मिस करती हूं,' उसने कहा।
हमारे चेहरे एक–दूसरे के बेहद करीब थे। मैं उसके इतने करीब होने के कारण स्तब्ध रह गया था। मैं कुछ बोल नहीं सका।
'ऐसा कोई नहीं है, जिससे मैं ऐसी बातें कर सकूं।
थैंक यू,' उसने कहा।
गंगा की बूंदें हम पर पड़ रही थीं। मैं अपने चेहरे को आगे बढ़ाने से रोक नहीं सका। हमारे होंठ मिले।
उसने मुझे नहीं चूमा। लेकिन वह पीछे भी नहीं हटी।
लेकिन जल्द ही, बहुत जल्द, उसने मुझे पीछे धकेल दिया।
'गोपाल!' उसने कहा।
मैंने कुछ नहीं कहा। कुछ हद तक मुझे यही उम्मीद थी। वास्तव में, मैं तो चाहता था कि वह मुझ पर और नाराज हो।
'आई एम सॉरी' मैंने कहा और दूसरी तरफ देखने लगा। दूर आरती के दिये नदी के पानी में डूब–उतरा रहे थे, मानो मुझे उलाहना दे रहे हों।
'चलो, अब चलते हैं। मुझे देर हो रही है,' उसने कहा। वह फौरन उठ खड़ी हुई और तेज कदमों से नाव की ओर चल पड़ी। मैंने चायवाले को पैसे दिए और उसके पीछे दौड़ा।
'मुझे तुम्हें दूसरे छोर पर लेकर जाना है। तुम इस तरह दूर नहीं भाग सकती,' मैंने कहा।
वह चुप रही। लेकिन उसने मेरी ओर देखा तक नहीं। ठीक है, मैंने गलती की, लेकिन उसे भी मेरे साथ ऐसा नहीं करना चाहिए था। कुछ पल पहले तक वह मेरा हाथ सहला रही थी और मेरे सीने में अपना चेहरा छुपाकर रो रही थी। लेकिन अभी वह नाव में मुझसे बहुत दूर बैठी थी।
मैं जोरों से चप्पू चलाकर नाव खेने लगा।
'मैं पहले ही सॉरी बोल चुका हूं,' मैंने बीच रास्ते में कहा।
'क्या हम चुप नहीं रह सकते, प्लीज?' उसने कहा।
नाववाले ने हमारा उखड़ा हुआ मूड भांप लिया।
'माल अच्छा नहीं लगा?' फूलचंद ने पूछा। मैंने कोई जवाब नहीं दिया।
आरती जाने लगी।
'कहां जा रही हो? मैं तुम्हें घर छोड़ आऊंगा,' मैंने कहा।
'मैं ऑटो ले लूंगी,' उसने कहा और मेरी नजरों से ओझल हो गई।

27

बाबा की मौत से भी मेरी नींद नहीं उड़ी थी, लेकिन आरती के अस्सी घाट से चले जाने के दो दिन बाद मैं सुबह चार बजे भी अपने दफ्तर की दीवारों को ताक रहा था। मैं इतना नर्वस था कि उसे फोन या मैसेज करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था, जबकि मैं उसके सिवा किसी और के बारे में नहीं सोच रहा था।
जेहन में बार–बार वही सब घूम रहा था – उसका चेहरा, उसकी भीगी आंखें, उसके होंठों पर मेरे होंठ... मैं अपने बनने वाले बंगले के बाथरूमों के लिए कॉन्ट्रैक्टर द्वारा दिए गए प्लान पर फोकस ही नहीं कर पा रहा था। मैं फैकल्टी मीटिंग्स के दौरान चुपचाप बैठा रहता और लगातार अपने फोन पर नजरें जमाए रहता।
'आप कोई कॉल एक्सपेक्ट कर रहे हैं, सर?' डीन श्रीवास्तव ने पूछा।
मैंने सिर हिला दिया, लेकिन एक बार फिर अपना फोन चेक करके देखा। आखिर भगवान लड़कियों को इतनी पॉवर कैसे दे सकता है? आखिर वे क़ामयाब और महत्वाकांक्षी पुरुषों को बेकार की चीज कैसे बना सकती हैं?
'सर, यदि हम अगले हफ्ते मिड–टर्म्स कंडक्ट करें तो ठीक रहेगा?' सिविल इंजीनियरिंग प्रोफेसर अनमोल ने कहा।
'हां,' मैंने जैसे–तैसे जवाब दिया, जबकि मैं केवल यही सोच रहा था कि यदि उसने आज के बाद कभी फोन नहीं लगाया तो मैं क्या करूंगा।
अपनी लगातार तीसरी उनींदी रात को दो बजे मेरा फोन बीप हुआ।
उसका मैसेज आया था – 'मुझे कॉल या मैसेज मत करना।'
आखिर उसने यह मैसेज क्यों भेजा? मैंने तो उसे कॉल नहीं किया था, न ही मैसेज भेजा था।
मैं अपना फोन थामे बैठा कि वह एक बार फिर बीप हुआ।
'कभी नहीं' – यह उसका अगला मैसेज था।

वह जाग रही है और मेरे बारे में सोच रही है – मेरा बेतुका आशावादी दिमाग जाग उठा। आखिर उसने ये मैसेज क्यों भेजे? लड़कियों की भाषा में इसका क्या मतलब होगा? क्योंकि लड़कियां हमेशा जो कहती हैं, उनका मतलब उसका उल्टा ही होता है। तो क्या इन मैसेज का यह मतलब था कि मैं उसे कॉल करूं?

'ओके', मैंने जवाब दिया। मैं एक घंटे तक इंतजार करता रहा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

जल्द ही मैं बोट राइड के सपनों में खो गया।

सुबह के अखबार में से फ्लूओरसेंट पिंक ए–3 साइज की शीट नीचे गिरी। मैं समझा कि यह किसी ट्रैवल एजेंसी या ट्यूशंस क्लासेस का फ्लायर होगा। लेकिन उस पर किसी अखबार जैसा मास्टहेड था। आहा, मैं बनावटी ढंग से मुस्करा दिया, यह तो दुनिया को बदल देने की राघव की कोशिश है।

रेवोल्यूशन 2020', उस पर बड़े बोल्ड फॉन्ट में लिखा था। नीचे संपादक का पत्र था, जिसका शीर्षक था – 'क्योंकि बहुत हो चुका।' मैं आगे पढ़ने लगा।

'एक ऐसे समाज के बारे में आपको क्या कहना है, जिसके सबसे बड़े नेता ही सबसे बड़े गुंडे हैं?

आप किसी ऐसे सिस्टम में क्या करेंगे, जहां सत्ता में बैठा लगभग हर आदमी भ्रष्ट है? भारत ने बहुत तकलीफ झेल ली है। बचपन से ही हमें बताया गया है कि भारत एक गरीब देश है। क्यों?

इस दुनिया में ऐसे भी तो देश हैं, जहां एक औसत आदमी एक औसत भारतीय की तुलना में पचास गुना अधिक कमाई करता है। पचास गुना? क्या उन देशों के लोग वाकई हमसे पचास गुना ज्यादा काबिल हैं? क्या कोई भारतीय किसान कड़ी मेहनत नहीं करता? क्या कोई भारतीय छात्र जमकर पढ़ाई नहीं करता? क्या हम जिंदगी में कुछ कर गुजरना नहीं चाहते? क्यों, फिर आखिर क्यों हम गरीब बने रहें?'

मुझे राघव की इन बातों पर हंसी आ गई। मैंने अपनी सुबह की चाय की चुस्कियां लीं और आगे पढ़ने लगा।

'यह सब रोका जाना चाहिए। हमें सिस्टम की सफाई करनी होगी। महान क्रांतिकारी चे ग्वेरा ने एक बार कहा था कि 'सत्ता कोई सेब नहीं होता, जो सीधे आपकी गोद में आकर गिरे। सत्ता को उन लोगों से छीनना पड़ता है, जो उस पर पहले ही कुंडली जमाकर बैठे हैं।' हमें भी एक क्रांति की शुरूआत करनी होगी। एक ऐसी क्रांति, जो हमारे भ्रष्ट सिस्टम को बदल दे। एक ऐसा सिस्टम बनाएं, जो लोगों के हाथ में ताकत सौंप दे और राजनेताओं को कर्मचारी मानकर चले, राजा नहीं।

'जाहिर है यह रातोंरात नहीं होगा। यह तब तक भी नहीं होगा, जब तक कि वास्तविक संघर्ष शुरू नहीं हो जाता। जैसे–जैसे भारत की युवा आबादी बढ़ती जाएगी, हमें और अच्छे कॉलेजों और अच्छे जॉब्स की दरकार होगी। जल्द ही वह वक्त आ जाएगा, जब हमारे पास पर्याप्त संख्या में कॉलेज और जॉब्स नहीं होंगे। तब लोग समझ जाएंगे कि उन्हें कौन बेवकूफ बना रहा है। इसमें दस साल लग सकते हैं। मैं इसे 'रेवोल्यूशन 2020' कहता हूं, वह साल जब यह क्रांति होगी, वह क्षण, जो आखिरकार हमारे देश की गंदगी को साफ कर देगा। जब इंटरनेट देश के सभी कॉलेजों को कनेक्ट कर देगा। जब हम हड़ताल पर चले जाएंगे, सब कुछ ठप हो जाएगा, तब तक के लिए, जब तक कि कोई रास्ता नहीं निकाल लिया जाता। जब देश के युवा अपनी क्लासेस और अपने दफ्तर छोड़कर सड़कों पर उतर आएंगे। जब भारतीयों को न्याय मिलेगा और दोषियों को सजा।

'और यह सब वाराणसी से शुरू होगा। इसीलिए, हम आपके लिए लाए हैं, 'रेवोल्यूशन 2020'।

'आपका, राघव कश्यप संपादक' जब मैंने लेख के नीचे किसी नौसिखिये द्वारा बनाया गया भारत का एक नक्शा देखा तो मुझे हंसी आ गई।

नक्शे में वाराणसी पर एक डॉट लगा था और तीर के निशान उसे दूसरे शहरों से कनेक्ट कर रहे थे। नक्शे के साथ ही एक छोटा–सा 'रेवोल्यूशन 2020 संभावित योजना' भी अटैच थी। अलग–अलग शहरों में ऐसे कॉलेजों को सूचीबद्ध किया गया था, जहां से क्रांति शुरू होनी थी।

मेरा अकाउंटेंट खातों पर मेरे दस्तखत लेने के लिए आया। मुझे मुस्कराता हुए देखकर वह सोच में पड़ गया।

'क्या हुआ, सर? जोक्स पढ़ रहे हैं?' उसने कहा।

मैंने सिर हिलाकर हामी भर दी।

फ्रंट पेज पर यह खुलासा भी किया गया था कि वाराणसी की क्रियाकर्म की सामग्री की दुकानों में चंदन की लकड़ी के नाम पर नकली लकड़ियां बेची जा रही हैं, जिन पर सिंथेटिक परफ्यूम से स्प्रे कर दिया जाता है।

मेरे अकाउंटेंट ने गुलाबी रंग का वह पेपर देखा।

'यह कोई विज्ञापन है या पोस्टर?' उसने पूछा।

'पता नहीं यह क्या है,' मैंने कहा।

मैंने 'रेवोल्यूशन 2020' को पलटा और अपनी हंसी नहीं रोक पाया। जहां फ्रंट पेज पर बड़े–बड़े धमाके किए गए थे, वहीं बैक पेज पर वैवाहिकी के विज्ञापन थे। मैं एक विज्ञापन को जोर से पढ़ने लगा।

'आवश्यकता है – पच्चीस वर्षीय वर के लिए सुंदर, सुशिक्षित, गोरी, घरेलू कुंआरी लड़की की। लड़का कायस्थ ब्राह्मण और इंजीनियर और एक स्थायी सरकारी नौकरी कर रहा है। लड़की संयुक्त परिवार में निभा सकने वाली और पारंपरिक मूल्यों का सम्मान करने वाली होनी चाहिए।'

मैंने अपने अकाउंटेंट को राघव का पेपर थमा दिया।

'आप अपने लिए कोई लड़की ढूंढ रहे हैं, सर?'

उसने कहा।

मैंने उसे इस तरह देखा, जैसे मैंने उसकी इस बात से खुद को बहुत अपमानित महसूस किया हो।

'सॉरी, सर,' उसने कहा। 'सर, हमारे पास एडमिशन के लिए कुछ और रिक्वेस्ट आई हैं,' उसने विषय बदलने की कोशिश करते हुए कहा।

'हमारी सभी सीटें भर चुकी हैं,' मैंने कहा, 'तुम यह बात जानते हो। हमें जितने स्टूडेंट्स को एडमिशन देने की अनुमति मिली है, उतने स्टूडेंट्स हमारे यहां पहले ही हो चुके हैं।'

'सर, यदि एआईसीटीई एडजस्ट कर सके तो...' मैंने गहरी सांस ली। 'और कितने स्टूडेंट्स हैं?'

'पांच, दस...' उसने कहा। 'ज्यादा से ज्यादा बीस।'

'सभी का एडमिशन कर लो,' मैंने कहा, 'वक्त आने पर मैं एआईसीटीई से मैनेज कर लूंगा।'

'जी, सर,' उसने कहा और ऑफिस से चला गया।

मैंने गुलाबी रंग का वह पेपर फिर उठा लिया, उसे फाड़ा और गोल–मोल करके डस्टबिन में फेंक दिया।

हर शुक्रवार को मैं क्लासेस के राउंड्स लेता था। इससे पहले मैं तीन दिन की दाढ़ी बढ़ाकर रखता था, ताकि कम से कम डायरेक्टर की उम्र का तो दिखूं। मैं एक क्लासरूम में घुसा, जहां मैथ्स की क्लास चल रही थी।

मुझे देखते ही प्रोफेसर ने लेक्चर देना बंद कर दिया।

चालीस स्टूडेंट्स की पूरी क्लास उठ खड़ी हुई। मुझे यह अच्छा लगता था। मैं आठ क्लासरूम में से कहीं भी जा सकता था और हर जगह ऐसा ही होता। पैसा, स्टेटस और पॉवर, लोग इन चीजों को भले कितना ही बुरा बताएं, लेकिन इन चीजों से आपको जिंदगी में सम्मान मिलता है। कुछ साल पहले मैं एडमिशन लेने के लिए कैरियर फेयर्स में मारा–मारा फिर रहा था, और आज मेरे आते ही सैकड़ों स्टूडेंट्स अटेंशन की मुद्रा में खड़े हो जाते हैं।

'गुड ऑफ्टरनून, डायरेक्टर सर,' प्रोफेसर ने कहा।

मैंने जवाब में सिर हिला दिया। फ्रंट रो में एक ऊटपटांग–सी टी–शर्ट पहने एक लड़का बैठा था।

'तुम्हारा नाम क्या है?' मैंने उससे पूछा तो वह तेजी से पलकें झपकाने लगा।

'मनोज, सर,' उसने कहा।

'कहां के हो?' मैंने कहा।

'सारनाथ, सर,' उसने कहा।

'तुम्हारे पैरेंट्स वहां क्या काम करते हैं?' मैंने कहा।

'हमारी जमीन है, सर। मेरे पिता किसान हैं।'

मैं फौरन नर्म पड़ गया। 'तुम किसान नहीं बनना चाहते?'

उसने जवाब नहीं दिया। वह सोच रहा था कि पता नहीं इस सवाल के जवाब से उसका क्या आकलन किया जाएगा। मैं समझ गया।

'यहां कोई प्रॉब्लम?' मैंने पूछा।

'नो, सर,' उसने नर्वस होते हुए कहा।

'शरमाओ नहीं, बताओ,' मैंने कहा।

'टू मच इंग्लिश, सर,' उसने कहा। 'मैं अंग्रेजी अच्छे–से समझ नहीं पाता।'

'तो सीख जाओ। नहीं तो ये दुनिया तुम्हें जीने नहीं देगी। ओके?' मैंने कहा।

उसने सिर हिला दिया।

फिर मैं प्रोफेसर की ओर मुड़ा। 'सॉरी टु डिस्टर्ब यू,' मैंने कहा।

प्रोफेसर मुस्करा दिया। उसे देखकर मुझे कोटा वाले मिस्टर पुली की याद आ गई।

जब मैं क्लासेस का राउंड लेकर लौटा तो एक दर्जन दस्तावेज मेरा इंतजार कर रहे थे। मेरे फोन ने बीप किया।

आरती ने मैसेज भेजा था – 'आर2020 देखा?'
'हां', मैंने जवाब दिया।
'कैसा लगा?' वह जानना चाहती थी।
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं अपने दस्तावेजों को देखने लगा। फोन फिर बीप हुआ।
उसने मैसेज किया था – '?'
'गुड लक फॉर द रेवोल्यूशन,' मैंने कहा।
'थैंक्स,' उसका जवाब आया।
मैं सोचने लगा कि क्या बातचीत यहीं खत्म हो गई।
'यू आर वेलकम,' फिर भी मैंने कह दिया।
'जानकर अच्छा लगा,' उसने कहा।
'क्या?' मैंने लिखा।
'यही कि मुझे अब भी वेलकम किया जा रहा है,' उसने कहा।
मुझे समझ नहीं आया कि इस बात का क्या जवाब दिया जाए। लड़कियों के सरल से सरल मैसेज भी बहुत जटिल अर्थों वाले हो सकते हैं।
मैंने एक और मैसेज लिखा – 'उस शाम के लिए आई एम सॉरी'। मैं सोच रहा था कि यह मैसेज भेजूं या नहीं कि फोन फिर बीप हुआ।
'उस शाम के लिए सॉरी,' उसका मैसेज आया।
मैं इस संयोग से हैरान रह गया। मैंने अपना मैसेज डिलीट किया और एक नया मैसेज लिखा – 'इट्स फाइन। मुझे लाइन क्रॉस नहीं करनी चाहिए थी।'
मुझे चंद ही सेकंड बाद एक जवाब मिला – 'डोंट वरी अबाउट इट।'
मैं बहुत पसोपेश में पड़ गया था, इसलिए मैंने अपना फोन रख दिया।
आखिर वह चाहती क्या है? लड़कियां कभी कुछ सीधे–सीधे क्यों नहीं बोल सकतीं? डोंट वरी अबाउट इट? क्या वह केवल फॉर्मल होने की कोशिश कर रही है? या उसका मतलब यह था कि मैंने उसे किस किया तो कोई बात नहीं और मुझे इसके लिए चिंता करने की जरूरत नहीं है? सबसे जरूरी सवाल यह था कि हमारा चैप्टर क्लोज हो गया था या एक नया चैप्टर खुल गया था?
मैं उससे इन तमाम सवालों के जवाब जानना चाहता था, लेकिन मुझमें हिम्मत नहीं थी।
लेकिन मैं यह भी नहीं चाहता था कि चीजें इसी तरह बीच में अटकी रह जाएं। एक किस और उसके बाद उसकी खामोशी ने मुझे भीतर से तोड़ दिया था।
मैं उसे केवल एक बार किस नहीं करना चाहता था। मैं उसे लाखों बार किस करना चाहता था। या मैं उसे इतनी बार किस करना चाहता था, जितनी बार कोई लड़का किसी लड़की को एक पूरी जिंदगी में किस कर सकता है। मैं नहीं चाहता था कि उससे मैसेजेस में सिमटकर बात करूं। मैं चाहता था कि वह हमेशा मेरे साथ हो।
अब मैं राघव की जरा भी फिक्र नहीं करता था।
वह वैसे भी अपने उस गुलाबी अखबार के साथ एक भूली हुई कहानी हो चुका था। आरती एक बेहतर लड़के की हकदार थी और मुझसे बेहतर और कौन हो सकता था? हमारा कॉलेज इस साल एक करोड़ रुपए कमाने जा रहा था। जबकि राघव अपनी पूरी ईमानदारी भरी क्रांतिकारी जिंदगी में भी अपने खुद के एक करोड़ रुपए नहीं देख सकता था। मेरे दिमाग में ये सारे विचार उसी तरह उड़ने लगे, जैसे पिंजरा खोल देने पर परिंदे उड़ जाते हैं।
'बहुत हुआ,' मैंने जोर से कहा और अपना फोन उठा लिया।
'आई लव यू,' मैंने मैसेज लिखा और सेंड बटन पर अपना अंगूठा रख दिया।
लेकिन फिर मैंने वह मैसेज डिलीट कर दिया और उसके बजाय एक और मैसेज लिखा – 'आई मिस यू'।
यह पहले वाले की तुलना में सॉफ्ट मैसेज था। लेकिन फिर मैंने उसे भी हटा दिया।
मैं फिर अपनी फाइलों के पास चला आया, लेकिन मैं एक वाक्य भी नहीं पढ़ पा रहा था। मैंने अपनी आंखें मूंद लीं। मुझे फौरन उसके बदन की गर्माहट याद हो आई, जब मैंने उसे बांहों में भर रखा था। मुझे हवा के कारण अपने चेहरे पर गिरतीं उसके बालों की लटें याद हो आईं। और फिर मैंने एक बार फिर उस पल की कल्पना की, जब मैंने उसे चूमा था।
मेरे फोन की घंटी बजी। उसका फोन था। मेरे भीतर का एक हिस्सा फोन नहीं उठाना चाहता था, लेकिन मैंने एक रिंग में ही फोन उठा लिया।
'हाय!' उसने कहा।
'आरती!'
'हां?' उसने कहा।
'उस दिन मैंने अपनी हद पार कर ली थी,' मैंने कहा।
'इस बात को बार–बार मत कहो।'
'क्या सब ठीक है, रियली?' मैंने कहा।
'रियली। तुम्हें पेपर कैसा लगा? ईमानदारी से जवाब देना।'
मैं हैरान था कि उसने कितनी आसानी से विषय बदल लिया।
'एक पेज पर कायस्थ ब्राह्मण वर, दूसरे पेज पर मेगा–रेवोल्यूशन। यह अजीब बात नहीं है?'
'मैंने तुम्हें पहले ही बताया था ना। पेपर इसी तरह सबकी नजर में आएगा,' उसने कहा।
'पाठकों की इस बारे में क्या प्रतिक्रिया है?' मैंने कहा।
'रिस्पॉन्स तो माइंड–ब्लोइंग है। 'दैनिक' वाले राघव के एक्स–बॉस ने उसे बधाई देने के लिए क...कॉल किया,' वह इतनी उत्साहित थी कि हकलाने लगी।
'वेल, मुझे अखबारों के बारे में भला क्या पता? यदि 'दैनिक' वाले पसंद कर रहे हैं तो अच्छा ही होगा,' मैंने सपाट तरीके से कह दिया।
'तुमने तो अभी कुछ नहीं देखा है। राघव कुछ बड़ी स्टोरीज पर काम कर रहा है।'
'ग्रेट,' मैंने कहा। मेरा लहजा अब थोड़ा नर्म पड़ा था।
'सॉरी, मैं केवल उसके बारे में बात नहीं करना चाहती थी, लेकिन पहला अंक देखकर मैं बहुत रोमांचित हो गई थी। मैंने होटल लॉबी में भी कुछ कॉपी रखी हैं,' उसने खिलखिलाते हुए कहा।
'आई एम श्योर, टूरिस्टों को यह देखकर बहुत अच्छा लगेगा कि हमारे देश की कैसी बारह बजी हुई है।'
'या शायद वे वैवाहिकी पसंद करें,' आरती ने कहा।
लगता था जैसे वह शाम अब एक दूर की याद बन गई हो। लड़कियां कितनी आसानी से ऐसा दिखावा कर लेती हैं, मानो कुछ हुआ ही न हो। क्या वे अपने दिमाग से यादों को मिटा देती हैं, उन्हें एक तरफ बुहार देती हैं या वे केवल बहुत अच्छी एक्टर्स होती हैं?
'आरती,' मैंने कहा।
'क्या?'
'क्या हो यदि मैं ..' मैंने कहा और रुक गया।
'क्या हो यदि मैं क्या?' उसने कहा।
उसने सवाल पूछ लिया था। अब यह मुझ पर था कि या तो मैं बच निकलूं या कोई ऐसी चलताऊ चीज कह दूं, जो मैं सालों से कहता आ रहा था, जैसे 'क्या हो यदि मैं कहूं कि तुम अमेजिंग हो'। या मैं किसी मैन की तरह उसे कह सकता था कि मैं वास्तव में क्या चाहता हूं, फिर चाहे ऐसा कहने के बाद वह मुझसे कभी बात न करे। मैंने दूसरा विकल्प चुना।
'क्या हो यदि मैं तुम्हें एक बार फिर किस कर लूं?'
'गोपाल।' उसने कहा। उसकी आवाज में हैरत भरी थी।
'इतनी सरप्राइज्ड मत होओ। हमने किस किया था, याद है?'
'मुझे नहीं पता क्या हुआ था,' उसने कहा। आखिर ऐसा कैसे हो सकता है कि उसे कुछ पता ही न हो क्या हुआ था?
'इस सवाल से बचने की कोशिश मत करो,' मैंने कहा।
'क्या?' उसकी आवाज में एक अजब–सी झिझक थी।
'क्या हो यदि मैं तुम्हें फिर किस कर लूं?' मैंने अपना सवाल दोहराया।
'मुझे नहीं पता,' उसने कहा।
उसने हां तो नहीं कहा था, लेकिन उसने गुस्से में आकर फोन भी नहीं रखा।
'मैं ऐसा फिर कर सकता हूं,' मैंने कहा।
'नहीं ऐसा मत करना!'

'मैंने यह नहीं कहा कि मैं करूंगा, मैंने इतना ही कहा कि कर सकता हूं।'
'क्या हम किसी और चीज के बारे में बात नहीं कर सकते?' उसने कहा।
'हम फिर मिलें?' मैंने कहा।
'कहां?' उसने कहा। एक बार फिर, उसने न ना कहा न हां। उसने यह भी नहीं पूछा कि कब। उसने केवल जगह पूछी। इसका यह मतलब था कि वह मुझसे मिलना चाहती थी, जबकि मैंने उसे चेतावनी दी थी कि मैं उसे फिर किस कर सकता हूं। मेरे दिमाग में एक दर्जन स्माइलीज तैरने लगीं।
'मैं काम के बाद तुम्हें मिलूंगा। तुम्हारा काम कब तक पूरा हो जाता है?'
'छह बजे। लेकिन आज नहीं। राघव के यहां कुछ दोस्त आने वाले हैं। पहले अंक की खुशी में।'
'पार्टी!'
'हां, पार्टी जैसा ही कुछ। सादा-सा कार्यक्रम रहेगा।
राघव के पास पार्टी करने के पैसे नहीं हैं। सब कुछ पेपर में लग गया।'
'तुम चाहती हो कि मैं उसे कुछ पैसे दूं?' मैंने इस वाक्य के एक-एक शब्द का मजा लेते हुए कहा।
'स्टॉप इट, गोपाल। तो, कल छह बजे?'
'मैं तुम्हें कॉल कर लूंगा,' मैंने कहा।
'ओके। हम कहां जाएंगे?' उसने कहा।
'किसी प्राइवेट जगह पर,' मैंने कहा।
वह एक पल के लिए रुकी।
'जहां हम बातें कर सकें,' मैंने आगे जोड़ दिया।
'अच्छा मुझे बता देना।'

28

'आप 2105 में हैं, मिस्टर मिश्रा।'
मैंने रमाडा में एक रूम बुक कराया था। मैंने एक रात बिताने के पांच हजार रुपए चुकाए थे।
'क्या हम लगेज ले जाने में आपकी मदद कर सकते हैं, सर?' रिसेप्शन पर खड़ी महिला ने मुझसे पूछा।
'मेरे पास बस यही है,' मैंने अपने बैग की ओर इशारा करते हुए कहा।
'ये आरती हैं,' रिसेप्शनिस्ट ने कहा, 'और ये आपको अपने रूम तक ले जाएंगी।'
आरती ने अपने कंप्यूटर से नजर उठाकर देखा।
उसका मुंह खुला का खुला रह गया।
'हैलो,' मैंने यथासंभव उदासीनता दिखाते हुए कहा।
'ओह, हाय.. आई मीन, गुड ईवनिंग,' उसने हड़बड़ाते हुए कहा।
'आरती, ये मिस्टर गोपाल मिश्रा हैं, गंगाटेक के डायरेक्टर। ये 2105 में रुके हैं। प्लीज, इन्हें इनके रूम तक ले जाओ।'
'श्योर, श्योर,' आरती ने कहा। वह अब भी शॉक्ड थी।
वह खड़ी हो गई। हम एलिवेटर की ओर बढ़े।
हाउसकीपिंग स्टाफ का एक सदस्य हमारे साथ एलिवेटर में दाखिल हुआ। हम बात नहीं कर सके।
सेकंड फ्लोर कॉरिडोर में जाकर ही वह कुछ कह पाई।
'गोपाल, तुम यहां क्या कर रहे हो?' उसने फुसफुसाते हुए कहा। लेकिन वह मुझसे दो कदम आगे-आगे चलती रही।
मैंने एक कहानी गढ़ रखी थी। मैं उसे यह नहीं बता सकता था कि मैंने हम-दोनों के लिए रूम बुक कराया है।
'हमारे एक सीनियर गेस्ट फैकल्टी लंदन से आने वाले थे।'
'तो?'
'उन्होंने आखिरी वक्त में अपना प्रोग्राम कैंसिल कर दिया। हम पहले ही इस रूम के लिए पे कर चुके थे।
तो, मैंने सोचा कि क्यों न मैं ही रमाडा की हॉस्पिटैलिटी के मजे लूं।'
'क्या? तुम मुझे तो बताते। मैं तुम्हें पैसा रिफंड करवा देती।'
'रहने दो। मैं इससे पहले कभी किसी फाइव स्टार होटल में नहीं रुका हूं। एक बार इसे भी आजमा लेते हैं।'
हम 2105 में पहुंचे। उसने मैग्नेटिक की कार्ड से रूम खोला। वह अपनी यूनिफॉर्म में खूबसूरत नजर आ रही थी। उसने फॉर्मल साड़ी पहन रखी थी और उसके बाल जूड़े में कसकर गुंथे हुए थे।
मैंने बेड पर अपना बैग रख दिया।
'तुम रूम के फीचर्स जानना चाहोगे?' उसने पूछा।
'नहीं,' मैंने मुस्कराते हुए कहा। 'कोई मुझे पहले ही उनके बारे में बता चुका है।'
'तुम पागल हो, गोपाल,' उसने कहा। 'एनीवे, अब मुझे चलना चाहिए।'
मैं रूम में एक सिंगल-सीटर सोफे पर बैठ गया।
'रुको ना,' मैंने कहा।
'नहीं। मैं ड्यूटी पर हूं।'
'छह बजे के बाद? साढ़े पांच पहले ही बज चुके हैं,' मैंने कहा।
'मैं गेस्ट रूम में नहीं जा सकती।'
'लेकिन तुम इस गेस्ट को जानती हो,' मैंने कहा।
'बस, दो मिनट के लिए?'
वह दरवाजे तक गई और जितना हो सकता था उसे बंद कर दिया, लेकिन उसे लॉक नहीं किया। वह डेस्क के करीब एक कुर्सी पर बैठ गई और मुझे ताकने लगी।
'क्या हुआ?' मैंने कहा।
'तुमने यह सब प्लान तो नहीं किया था ना?' उसने पूछा।
'कहाट प्लान? फैकल्टी ने ही अपना प्लान कैंसिल कर दिया,' मैंने कहा।
'फैकल्टी का नाम क्या है?' उसने पूछा।
'मिस्टर एलेन,' मैंने कहा।
'ओह, रियली? कौन-से कॉलेज से?'
'वे..' मैंने झिझकते हुए कहा।
'देखा। झूठ बोलना बंद करो,' उसने कहा।
'भला मुझे कॉलेज के बारे में कैसे पता चलेगा?
डीन को पता होगा। मुझे केवल इतना ही पता है कि हमने एक रूम बुक किया था और मैं यहां चला आया।'
उसने सिर हिलाया।
'तुम्हारा काम खत्म होने के बाद कुछ देर यहीं समय बिताते हैं,' मैंने कहा।
'लेकिन कैसे?' उसने कहा। 'यह अलाउड नहीं है।'
'तुम क्या हमेशा वे ही काम करती हो, जो अलाउड हैं?'
'नहीं तो,' उसने कहा, 'लेकिन...' 'तुममें हिम्मत नहीं है,' मैंने कहा।
'ऐसी बात नहीं है,' उसने कहा और उठ खड़ी हुई।
'तुम जानते हो।'
'किसी को पता नहीं चलेगा,' मैंने कहा। 'काम खत्म करो और यहां आ जाओ। हम खाना खाएंगे।
एकाध घंटे में चले जाना।'

'और यदि रूम सर्विस ने मुझे देख लिया तो?' उसने कहा।

'जब वे आएं तब टॉयलेट में छुप जाना,' मैंने कहा।

'यह तो बहुत अजीब होगा,' उसने कहा।

'ओके, मैं तुम्हारे आने से पहले ही ऑर्डर कर दूंगा।

सैंडविचेस लोगी?'

उसने अपना निचला होंठ चबाया और मेरे सुझाव पर कुछ देर सोचती रही। 'फाइन,' उसने सांस छोड़ते हुए कहा। 'लेकिन तुम्हें ध्यान रखना होगा कि जब मैं आऊं या यहां से जाऊं, तब स्टाफ का कोई व्यक्ति यहां न हो।'

'श्योर, मैं कॉरिडोर में ही खड़ा रहूंगा। तुम्हें फोन पर ग्रीन सिग्नल दे दूंगा।'

वह मेरे पास आई और मेरे सिर पर हल्की–सी चपत लगाई। 'तुम भी न, मुझसे कैसे–कैसे काम करवाते हो!'

उसने कहा और कमरे से चली गई।

मैंने एक क्लब सैंडविच, चॉकलेट केक और वाइन की एक बॉटल ऑर्डर की। मैंने एक शॉवर भी लिया और इतने शैम्पू और गर्म पानी का इस्तेमाल किया, जितना मैं नॉर्मली पूरे हफ्ते में करता।

उसने मुझे साढ़े छह बजे कॉल किया। 'कॉरिडोर चेक करो।'

मैं रूम से बाहर आया। 'सब ठीक है,' मैंने कहा।

साथ ही मैं अपना सिर दाएं और बाएं घुमाते हुए लगातार कॉरिडोर का मुआयना कर रहा था।

दो मिनट बाद हम कमरे में थे और दरवाजा अच्छी तरह लॉक था। शिफ्ट खत्म होने के बाद उसने चेंज करके एक सफेद बटन डाउन शर्ट और जीन्स पहन ली थी।

'तुम्हें पता है, तुम स्टुपिड हो?' उसने बिस्तर पर धम्म से बैठते हुए कहा। उसने अपना हाथ नाटकीय रूप से अपने सीने पर रख रखा था। 'मेरा दिल कितनी तेजी से धड़क रहा है!'

'रिलैक्स,' मैंने कहा।

वह हंस पड़ी। 'तुम लकी हो कि यहां अभी तक कॉरिडोर सीसीटीवी नहीं लगाए गए हैं। नहीं तो मैं यह स्टंट नहीं कर पाती।'

'तो, मेरी टाइमिंग सही थी,' मैंने कहा। 'भूख लग रही है?'

मैंने सैंडविच प्लेट का सिल्वर कवर खोला।

'भूख के मारे जान निकली जा रही है,' उसने कहा।

मैंने सैंडविच पर कुछ फ्रेंच फ्राइज और सलाद लगा दिया। 'आओ, चलो खाते हैं।'

'मैं बहुत थक गई हूं। मैं आठ घंटे तक ऐड़ियों के बल खड़ी थी। क्या मैं बिस्तर पर बैठकर खा सकती हूं?'

'श्योर,' मैंने कहा। मैंने उसकी ओर प्लेट बढ़ा दी।

फिर मैंने अपने प्याले में रेड वाइन उड़ेल दी।

'तुमने वाइन की एक पूरी बॉटल ऑर्डर की थी?'

उसने कहा।

मैंने कंधे उचका दिए।

'तुमने ड्रिंकिंग कब से शुरू कर दी?' उसने कहा।

'शुक्ला–जी ने मुझे सब कुछ सिखा दिया है,' मैंने कहा।

'तुम्हें वाइन अच्छी लगती है?'

'मैं आमतौर पर व्हिस्की लेता हूं। लेकिन मैंने सोचा कि तुम वाइन पसंद करोगी।'

'मुझे वाइन पसंद है। लेकिन मुझे अभी नहीं पीना चाहिए। यह मेरा वर्कप्लेस है।'

'एक गिलास...' मैंने जोर देते हुए कहा।

उसने धीमे–से सिर हिलाया और गिलास ले लिया।

'राघव ज्यादा नहीं पीता। कभी–कभी तो वह बहुत बोर लगता है,' उसने कहा और सिप लिया। 'नाइस, क्या है ये?'

'जैकोब्स क्रीक न्यू साउथ वेल्स ऑस्ट्रेलिया,' मैंने ऑस्ट्रेलिया के नाम पर जोर देते हुए कहा। मुझे यह बोतल दो हजार रुपयों की पड़ी थी, लेकिन मैंने कीमत का जिक्र नहीं किया।

'अच्छी है। यह मुझ पर बहुत जल्द असर करेगी।'

'चिंता मत करो। मेरा ड्राइवर तुम्हें घर छोड़ आएगा,' मैंने कहा।

उसने दोनों हाथों में कसकर अपनी सैंडविच पकड़ ली और इस तरह खाने लगी, जैसे वह किसी सूखाग्रस्त क्षेत्र से आई हो।

'धीरे–धीरे,' मैंने कहा।

उसने खाते–खाते ही जवाब दिया, 'मैंने सुबह के नाश्ते के बाद से ही कुछ नहीं खाया है।'

'जब तुम स्कूल में थी, तब भी इसी तरह अपने चेहरे पर खाना लगा लेती थीं,' मैंने उसे छेड़ते हुए कहा।

'बशर्ते तुम मेरे लिए कोई खाना छोड़ देते!'

'हे, मैंने केवल एक बार तुम्हारा टिफिन चुराया था, और वह भी आधा। मैं आज तक उस गुनाह की सजा भुगत रहा हूं,' मैंने कहा।

'ओह, रियली?' उसने कहा। 'टीचर ने तो तुम्हें केवल एक पीरियड की सजा दी थी।'

'लेकिन मैं अब भी तुम्हारे साथ अटका हुआ हूं,' मैंने उदास सूरत बनाते हुए कहा।

उसने अपनी प्लेट से एक फ्रेंच फ्राय उठाई और मुझ पर फेंक मारी। उसका निशाना चूका, वह सोफे पर जा गिरी।

'उफ्फ, उसे जल्दी से उठाओ, प्लीज। मैं अपने ही होटल को गंदा नहीं कर सकती,' उसने कहा।

29

उसने अपने जूते निकालकर फेंक दिए और बिस्तर पर क्रॉसलेग्ड बैठ गई। मैंने उसके प्याले में और वाइन उड़ेल दी।

'मैं बहक जाऊंगी,' उसने कहा, लेकिन अपना गिलास आगे बढ़ा दिया। उसने एक सिप लिया और समय देखा। बेडसाइड क्लॉक साढ़े आठ बजे का वक्त बता रही थी।

'तुम कितनी देर तक रुक सकती हो?' मैंने कहा।

'नौ बजे तक,' उसने कहा। 'आधा घंटा और।'

'दस?' मैंने पूछा।

उसने सिर हिलाकर मना कर दिया। 'मॉम पचास सवाल पूछेंगी। बशर्ते... मैं उन्हें यह न कह दूं कि मुझे डबल शिफ्ट करनी पड़ी थी,' उसने कहा।

'तो उन्हें यही कह दो,' मैंने फौरन कहा।

'लेकिन तब मुझे उसके लिए आठ और घंटे रुकना पड़ेगा यानी रात के दो बजे तक।'

'परफेक्ट,' मैंने कहा।

'पागल हो गए हो क्या?' उसने कहा। 'मैं रात दो बजे तक तुम्हारे रूम में नहीं रह सकती!'

'क्यों नहीं?' मैंने कहा। 'हमें साथ–साथ वक्त बिताने का ऐसा मौका फिर कब मिलेगा?'

'यदि मेरे बॉयफ्रेंड को पता चल जाए...' उसने कहा और चुप हो गई। फिर वह हेडबोर्ड पर झुक गई हमने आधी बोतल खत्म कर दी थी। मैंने अपने लिए थोड़ी और वाइन निकाली।

'यदि उसे पता चल जाए कि मैं इतने घंटों से किसी और के कमरे में हूं, तो वह तो मेरी जान ही ले लेगा,' उसने अपनी बात पूरी की।

'वह ऐसा करेगा?'

वह मुस्करा दी। 'सच में नहीं। लेकिन हां, वह आग–बबूला जरूर हो जाएगा। वह कुछ तोड़फोड़ कर देगा।' उसने एक पजेसिव बॉयफ्रेंड का पार्ट निभाते हुए तकिया उठाया और मुझ पर फेंक मारा।

'और अगर उसे पता चल जाए कि वह कोई और मैं हूं तब तो वह यकीनन तुम्हारी जान ही ले लेगा।'

'उसे कभी पता नहीं चलेगा,' आरती ने कहा।

मैं सोफे से उतरा और बिस्तर के करीब आ गया।

'तो तुम डबल शिफ्ट कर रही हो,' मैंने फोन की ओर इशारा करते हुए कहा।

'यू श्योर?' उसने कहा। 'मैं सुबह दो बजे तक बक–बक कर तुम्हारा दिमाग खा जाऊंगी!'

'तुम बचपन से यही तो करती आ रही हो,' मैंने कहा।

उसने एक और तकिया उठाकर मुझ पर फेंक मारा।

मैंने उसे पकड़ लिया और एक तरफ रख दिया। फिर उसने अपने होंठों पर अंगुली रखी और मुझे चुप रहने का इशारा किया। उसने अपने घर फोन लगाया था।

'मॉम?' उसने कहा। 'हां, मैं अभी तक काम पर ही हूं। डबल शिफ्ट. अब क्या करूं?'

उसकी मां कुछ सेकंड तक बोलती रही। आरती ने अपनी बात जारी रखी – 'यह शिफ्ट स्टुपिड बेला को करनी थी। लेकिन वह कोई बहाना बनाकर नहीं आई। अपनी इंगेजमेंट के बाद वह बहुत बंक मारने लगी है।'

उसकी मां ने फिर कुछ कहा। आरती झुंझलाने लगी।

'बेला ने इंगेजमेंट कर ली तो मैं भी क्यों इंगेजमेंट कर लूं? हां... एक न एक दिन कर लूंगी, मॉम... ओके, फाइन, हां, होटल की कार मुझे घर छोड़ देगी... बाय।'

उसने अपना फोन बिस्तर पर रख दिया, वह परेशान नजर आ रही थी।

'यू ओके?' मैंने कहा।

'मुझे लगता है कि एक समय के बाद इंडियन पैरेंट्स के दिमाग में कोई स्विच चालू हो जाता है। वे पढ़ाई–पढ़ाई–पढ़ाई से शादी–शादी–शादी करने लग जाते हैं।'

'तुम शादी नहीं करना चाहतीं?'

'शादी करूंगी तो सही,' उसने कहा और बिस्तर पर थपकियां देने लगी। 'लेकिन तुम किसी शो–पीस की तरह क्यों खड़े हो?'

मैं बिस्तर पर सावधानी के साथ उससे दूर बैठ गया।

'तुम इस रूम के लिए बहुत सारा पैसा खर्च कर रहे हो। प्लीज बी कंफर्टेबल।'

'अच्छा?' मैंने कहा।

'मेरा काम यही तो है – अपने मेहमानों को कंफर्टेबल महसूस कराना,' उसने कहा और मुझे एक गेस्ट–रिलेशंस स्माइल दी। उसके दांतों पर रेड वाइन के धब्बे थे, लेकिन इसके बावजूद उसकी मुस्कराहट बहुत खूबसूरत थी।

मैं अपने जूते और मोजे निकालने के लिए झुका।

'तुम्हें राघव को कॉल नहीं करना होगा?'

उसने सिर हिला दिया। 'उसे तो कोई होश ही नहीं है। वह एक बड़ी स्टोरी पर काम कर रहा है,' उसने कहा और अपने प्याले में थोड़ी–सी और वाइन उड़ेल दी।

'यदि उसने कॉल किया तो?' मैंने कहा।

उसने मेरे मुंह पर अपना हाथ रख दिया। 'यदि उसका फोन आता है तो तुम एकदम चुप हो जाना और बाकी मैं संभाल लूंगी,' उसने कहा।

उसके इस स्पर्श ने जैसे मेरे भीतर आग लगा दी।

उसने अपना हाथ हटा लिया। 'तो मिस्टर डायरेक्टर, काम, लाइफ, सब कैसा चल रहा है?'

'मेरा सब कुछ मेरा काम ही है। कॉलेज चलाना कोई आसान बात नहीं,' मैंने कहा।

'केवल काम?' उसने अपनी मां की नकल करते हुए कहा, 'क्या? तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए। तुमने अब तक शादी क्यों नहीं की?'

हम हंस पड़े और अपने गिलास आपस में टकराए।

'लेकिन मुझे तो वाकई अब जल्द से जल्द इंगेज हो जाना चाहिए,' उसने कहा। 'दबाव बढ़ रहा है।'

'राघव क्या सोचता है?' मैंने कहा।

'जाहिर है, वह अभी इसके लिए तैयार नहीं है।

लेकिन यदि मैंने जोर डाला तो वह तैयार हो जाएगा,' उसने कहा।

'तुम्हारे पैरेंट्स राघव के लिए राजी होंगे?' मैंने कहा।

'वे तो उसे बहुत चाहते हैं। मेरे पिता ने राजनीति में जाने की हमारी पारिवारिक परंपरा तोड़ी थी, इसलिए वे भी राघव के जज्बे को बहुत पसंद करते हैं।'

'वह पैसा नहीं कमाता, इसके बावजूद?'

'वह कमाएगा। एक न एक दिन वह जरूर पैसा कमाएगा,' आरती ने मनौती करते हुए कहा। 'और तुम मेरे रिलेटिव्ज की तरह क्यों बात कर रहे हो?'

उसने रिमोट उठाया और टीवी चालू कर लिया।

'दिस इज सो बोरिंग,' उसने कहा और न्यूज चैनलें बदल दीं। वह चैनल वी पर जाकर रुकी, जहां एक आइटम गर्ल एक रीमिक्स वीडियो में नाच रही थी।

'उसने निश्चित ही अपने होंठों की सर्जरी करवाई है,' उसने कहा, 'और नाक की भी, और शायद बूब्स की भी।'

'क्या?' मैंने कहा। मैं उसके शब्दों के चयन पर हैरान था।

'बूब जॉब। अपने बूब्स को ठीक करवाना, ताकि वे बड़े नजर आएं,' उसने कहा।

मैं हैरानी से उसकी ओर देखता रह गया।

'तुम मेरे बेस्ट फ्रेंड हो,' उसने कहा और मेरी बांह पर हल्के–से चपत लगाई। 'मैं तुम्हारे सामने पूरी तरह सहज हो सकती हूं।'

उसने फिर चैनल बदली और अब हम कहीं बीच से 'व्हेन हैरी मेट सैली' देख रहे थे।

'आदमी और औरत कभी दोस्त नहीं हो सकते,' बिली क्रिस्टल ने मेग रेयान से कहा। उसके मुंह में एक टूथपिक था।

'बिल्कुल हो सकते हैं। हमें ही देख लो,' आरती ने बेसब्र होते हुए कहा और वॉल्यूम बढ़ा दिया। 'मुझे यह मूवी बहुत पसंद है।'

'तुमने यह मूवी देखी है?' मैंने पूछा।

'हां। और तुमने?'

मैंने सिर हिला दिया। मैं अंग्रेजी फिल्में नहीं देखता था।

'चलो, देखते हैं। मैं तुम्हें बताऊंगी कि अभी तक क्या–क्या हो चुका है।'

मैं उसके करीब आ गया। वह मुझे संक्षेप में कहानी सुनाती रही और मैंने बेडसाइड पेनल से कमरे की लाइट मध्म कर दी। हैरी और सैली की कहानी चल रही थी, वे मिलते, आपस में झगड़ते, लेकिन उनके बीच वास्तव में कभी कुछ नहीं होता, जबकि ऐसा लगता है कि कुछ न कुछ जरूर होना चाहिए। हम चुपचाप वह फिल्म देखते रहे।

'वॉव, हमने पूरी बोतल खत्म कर दी,' उसने कुछ देर बाद कहा। फिर उसने एक तकिया उठाया, उसे मेरी गोद में रखा और उस पर अपना सिर रखकर बाकी फिल्म देखने लगी।

'तुम कंफर्टेबल हो ना?' उसने मेरी ओर देखते हुए पूछा। टीवी की लाइट में उसकी आंखें चमक रही थीं।

मैं जरा झिझका। फिर अपना हाथ धीमे–से उसके सिर पर रख दिया और उसके बालों को सहलाने लगा।

उसने कोई ऐतराज नहीं किया। मुझे उसके साथ होना बहुत अच्छा लग रहा था। मेरी जिंदगी में इससे ज्यादा खुशीभरा लम्हा इससे पहले कोई नहीं आया था।

'आरती?' मैंने कहा।

'हां?' उसने कहा। उसकी आंखें अब भी टीवी पर जमी हुई थीं।

'क्या तुम्हें इस तरह मेरी गोद में लेटना अच्छा लग रहा है?'

उसने सहमति में सिर हिला दिया, लेकिन उसकी आंखें अब भी स्क्रीन पर जमी हुई थीं।

'तुम उस शाम घाट से क्यों चली गई थीं?' मैंने पूछा।

'मैं उस बारे में बात नहीं करना चाहती। मूवी देखो, ठीक है,' उसने कहा।

'क्या तुम फिर ऐसे ही भाग जाओगी?' मैंने कहा।

मेरी आवाज भारी थी।

उसने भांप लिया कि मैं तनाव में हूं। उसने टीवी को म्यूट कर दिया और उठकर बैठ गई।

'तुम ठीक हो ना, गोपी?' उसने कहा। उसकी आवाज जरा लड़खड़ा रही थी। टीवी की लाइट हमारे चेहरों पर टिमटिमा रही थी।

'यदि तुम चाहो तो अभी जा सकती हो,' मैंने कहा।

मेरी आवाज मेरे गले से बामुश्किल ही निकल पा रही थी। 'क्योंकि यदि तुम मेरी जिंदगी में और कुछ समय रहीं और उसके बाद गईं, तो...' मैं कुछ ज्यादा ही बोल गया था। ऑस्ट्रेलिया की वाइन ने एक हिंदुस्तानी के दिल को खोलकर रख दिया था।

'शट अप,' उसने कहा और मेरे मुंह पर अपनी हथेली रख दी। 'ड्रामा क्वीन। सॉरी, ड्रामा किंग!'

लेकिन मैं ड्रामा नहीं कर रहा था। मैं वाकई उससे दूर होना बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

'मैं भी अकेली हूं, गोपाल,' उसने कहा, 'बहुत अकेली।'

'क्यों?'

'राघव के पास बिल्कुल वक्त नहीं है। मेरे पैरेंट्स समझ ही नहीं पाते कि मैं क्यों काम करना चाहती हूं।

वे समझ नहीं पाते कि आखिर डीएम की बेटी को मेहनत करके पैसा कमाने की जरूरत क्यों महसूस हो रही है। मेरी सभी फ्रेंड्स की शादी हो रही है, वे अपने किड्स की प्लानिंग कर रही हैं और मैं ऐसा नहीं कर पा रही। मैं अजीब हूं।'

'तुम सबसे अलग हो,' मैंने उसकी बात सुधारते हुए कहा।

'मैं सबसे अलग क्यों हूं? मैं नॉर्मल क्यों नहीं हो सकती – अपने घर पर संतुष्ट, पति का इन्तजार करती हुई?'

'यह नॉर्मल नहीं है। यह बैकवर्ड है।'

'राघव मुझे बहुत तनाव में डाल देता है। मैं उसकी मदद करना चाहती हूं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह अपनी जिंदगी के बारे में ठीक से सोच पा रहा है। उसने अपनी आजादी के लिए अपनी नौकरी को दाव पर लगा दिया। आखिर इस तरह वह कैसे पैसे कमा पाएगा?'

'मेरे ख्याल से तुमने कहा था कि वह एक न एक दिन जरूर पैसे कमाएगा,' मैंने कहा।

'वह तो मैंने बहादुरी दिखाते हुए कहा था। लेकिन मैं जिस बात से डरती हूं, उसके बारे में तुमसे बात कर सकती हूं, है ना?' उसने कहा।

'ऑफ कोर्स, तुम कर सकती हो,' मैंने कहा और उसके गालों को सहला दिया।

हम फिर टीवी देखने लगे। एक रात सैली बहुत अकेलापन महसूस कर रही थी। हैरी उसके घर आता है। वह उसे दिलासा देता है। वे किस करते हैं। पता नहीं इस सीन ने मुझे मोटिवेट किया या यह शराब का असर था या फिर शायद मुझे लगा हो कि मुझे अब दूसरा मौका नहीं मिलने वाला है। मैं आरती को किस करने के लिए उस पर झुका। उसने हैरत से मेरी ओर देखा। लेकिन उसने विरोध नहीं किया। वह बस देखती रही।

मैंने उसे फिर चूमा। इस बार और जोर से। दो मिनट तक कुछ नहीं हुआ, और उसके बाद वह भी मुझे चूमने लगी। हमने बार–बार किस किया। मैंने उसके होंठों, उसके गालों, उसके माथे, उसकी नाक, उसके कान और एक बार फिर उसके होंठों को चूमा। मैंने लाइट बुझा दी।

जब मैंने उसे फिर अपनी बाहों में लिया तो उसने कहा, 'यह गलत है।'

'मुझे पता है,' मैंने कहा, 'लेकिन मैं खुद को रोक नहीं सकता।' मेरे हाथ उसके शर्ट के बटन्स टटोलने लगे।

'नहीं,' उसने कहा और मेरे हाथ को कसकर पकड़ लिया।

मैंने अपना दूसरा हाथ उसके शर्ट में डाल दिया।

थैंक गॉड, हमारे दो हाथ होते हैं, वरना हम कुछ कर ही न पाते। आखिरकार मेरी हथेलियां उसके ब्रेस्ट्स पर थीं।

'गोपाल, तुम्हें पता है क्या हो रहा है?' उसने कहा।

मैंने सिर हिला दिया।

'हमें ऐसा नहीं . .' उसने कहा।

मैंने एक और किस से उसका मुंह बंद कर दिया।

वह जरा छटपटाई, लेकिन मैं उसे लगातार चूमता रहा।

अब उसने भी रिस्पॉन्स देना शुरू कर दिया। पहले धीरे, फिर मेरे साथ–साथ और फिर वह मुझसे भी आगे निकल गई।

'यह ठीक नहीं है, गोपाल,' उसने कराहते हुए कहा।

उसने मेरे निचले होंठ पर काट लिया।

मैं किसेस से जवाब देता रहा। मूवी खत्म हो चुकी थी। मैंने बैकग्राउंड में शैम्पू के विज्ञापनों की आवाज सुनी, जबकि मैं उसके टॉप को निकालने के लिए खींच रहा था।

'ऐसा मत करो, गोपाल!' उसने फुसफुसाते हुए कहा, लेकिन मेरा काम आसान बना देने के लिए अपने दोनों हाथ ऊपर कर दिए।

मैंने अपनी शर्ट निकाल दी। इस बार जब मैंने उसे अपनी बाहों में लिया तो उसकी गरमाहट और नरमाहट मेरे बदन में घुल गई।

'मैं तुम्हारी बहुत केयर करता हूं...' मैंने कहा।

'बोलना बंद करो,' उसने मुझे बीच में टोकते हुए कहा।

मैंने उसके कंधे पर धीरे–से धकेला ताकि उसे बिस्तर पर लेटा सकूं। फिर मैंने अपने बचे हुए कपड़े निकाल दिए।

वह दूसरी तरफ देखती रही।

'क्या?' मैंने कहा।

उसने मुझसे नजर मिलाए बिना सिर हिला दिया।

मैं उसकी बगल में लेट गया। वह मुझे पैशन के साथ चूमने लगी, लेकिन जब भी मैं उसकी आंखों में झांकने के लिए रुकता, वह दूसरी तरफ नजरें फेर लेती।

मैं उसकी जींस उतारने के लिए अपने हाथों को नीचे की ओर ले गया। उसने मुझे आखिरी बार रोका।

'मेरा एक बॉयफ्रेंड है,' उसने मुझे याद दिलाते हुए कहा।

'मैं इस हकीकत के साथ सालों से जी रहा हूं,' मैंने कहा।

'मैं उस तरह की लड़की नहीं हूं, गोपाल,' उसने लगभग सुबकते हुए कहा।

'तुम कमाल की लड़की हो,' मैंने कहा। मेरी अंगुली उसकी नाभि पर थी। मैं उसे वहां चूमने के लिए रुका।

'दुनिया की सबसे कमाल की लड़की।'

मैंने उसका हाथ अपने शरीर पर रख दिया और फिर से उसकी जींस उतारने की कोशिश करने लगा।

लड़कियां दुनिया की सबसे टाइट जींस पहनती हैं। मुझे लगा कि उसकी मदद के बिना उसे उतारना नामुमकिन है।

'कुड यू?' मैंने पांच मिनट तक कोशिश करने के बाद कहा।

मेरी इस रिक्वेस्ट पर वह खिलखिला पड़ी। उसने कसमसाकर अपनी जींस निकाल दी। मैं इंतजार करता रहा और फिर उसे अपने करीब खींच लिया।

'गोपाल,' उसने कहा और मुझे कसकर थाम लिया।

सालों से दबाई जा रही चाहत फूटकर सामने आ गई थी। मैं उसे काटता और चूमता रहा और हम एक हो गए।

मुझे पता था कि इसके बाद अब मेरी जिंदगी कभी पहले की तरह नहीं रह पाएगी। जो कुछ हुआ, उसके बाद उसके लिए मेरा प्यार और बढ़ गया। कहते हैं सेक्स के बाद पुरुष पीछे हट जाते हैं, लेकिन मैं उसके और करीब जाना चाहता था। मैं उसे प्यार करना चाहता था और हमेशा अपने करीब रखना चाहता था।

मैंने उसे कसकर बाहों में भर लिया और उसके सिर पर चूम लिया। वह दूसरी तरफ देखती रही। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं थे।

'तुम कयामत हो, आरती। सिर से पैर तक कयामत।'

वह जरा–सा मुस्कराई। मैं एक कोहनी के बल उठ गया।

'तुम्हें अच्छा लगा?' मैंने पूछा।

उसने सिर हिलाकर हामी भरी, लेकिन दूसरी तरफ देखती रही।

'मेरी तरफ देखो,' मैंने कहा। उसने अपनी आंखें मेरी ओर घुमाईं, लेकिन मुझसे नजरें नहीं मिलाईं।

'तुम ठीक हो?' मैंने पूछा।

उसने फिर सहमति में सिर हिला दिया।

हम फिर लेट गए। सीलिंग पर एक छोटी–सी एलईडी बीप करने लगी।

'यह क्या है?' मैंने कहा। मुझे डर लगा कि कहीं यह कोई कैमरा न हो।

'स्मोक अलार्म,' उसने कहा।

हम कुछ मिनटों तक चुप रहे।

'मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकता, आरती,' मैंने कहा।

'प्लीज, ऐसा मत करो,' उसने कहा।

'यह सच है। मैं तुम्हें प्यार करता हूं,' मैंने कहा।

'प्लीज, स्टॉप!' उसने कहा और बिस्तर पर उठ बैठी। उसने अपने आपको बेडशीट से ढाक लिया।

'क्या बात है?' मैंने उसकी बांह थामते हुए कहा।

उसका फोन बीप हुआ। उसने मैसेज देखा। उसने एक रिप्लाई किया और गहरी सांस छोड़ी।

'क्या मैं अपने कपड़े पहन सकती हूं?' उसने मुझसे दूर जाते हुए कहा।

'हां?' मैंने कहा। 'श्योर।'

उसने अपने बदन पर बेडशीट लपेट ली, अपने कपड़े उठाए और बाथरूम में चली गई। मैंने फिर लाइट जला ली। मिले–जुले इमोशंस मुझे मथ रहे थे।

जाहिर है, वह मेरी केयर करती है। नहीं तो, उसने जो कुछ किया, वह कोई लड़की नहीं करती। लेकिन इसके बावजूद वह मुझसे दूर–दूर क्यों बनी हुई थी?

क्या वह यह उम्मीद करती है कि मैं उससे कहूं कि अब मैं जिंदगी में उसका साथ दूंगा? या उसे अफसोस हो रहा है? यह घटना हमें और करीब ले आएगी या हमें दूर कर देगी।

मैं नेकेड और कन्फ्यूज्ड था। मैं अपना कन्फ्यूजन दूर नहीं कर सकता था, लेकिन मैं कम से कम कपड़े तो पहन ही सकता था। जब वह कमरे में आई तो मैं अपने शर्ट के बटन लगा रहा

था।

'अब मुझे चलना चाहिए,' उसने मन बनाते हुए कहा।

बेडसाइड क्लॉक बारह बजे का वक्त बता रही थी।

'तुम दो बजे तक नहीं रुकोगी?' मैंने पूछा।

'मैं कह दूंगी कि शिफ्ट जल्दी खत्म हो गई। वैसे भी, वे इतनी नींद में होंगे कि टाइम चेक नहीं करेंगे,' उसने कहा।

मेरे पास बैठो, मैं कहना चाहता था। मैं उससे बातें करना चाहता था। मैं उसे बता देना चाहता था कि मेरे लिए इस बात के क्या मायने थे। आखिर लड़कियां भी तो यही चाहती हैं, बातें करना?

'तुम अपने ड्राइवर को कॉल करोगे?' उसने कहा।

'पांच मिनट रुको,' मैंने मिन्नत करते हुए कहा।

'प्लीज?'

वह सोफे की ओर चली गई। मैं बिस्तर पर बैठ गया।

'तुम इतने तनाव में क्यों हो?' मैंने कहा। 'मैं तुम्हारा गोपाल हूं। तुम मेरी केयर नहीं करती?'

'तुम्हें अब भी सबूत चाहिए?' उसने कहा।

मैं उसके करीब आ गया। मैंने उसका हाथ थाम लिया। वह ठंडा-सा लग रहा था।

'मैं नहीं चाहता कि तुम इस बारे में शर्मिंदगी अनुभव करो,' मैंने कहा। 'यह बहुत स्पेशल है। हमें इस पर प्राउड फील करना चाहिए।'

'लेकिन मैं एक रिलेशनशिप में हूं,' उसने कहा।

'एक ऐसे शख्स के साथ, जो कभी तुम्हारे साथ नहीं होता?' मैंने कहा।

उसने हैरत से मेरी ओर देखा।

'मैंने कभी तुम्हारे और राघव के मामले में कोई कमेंट नहीं किया। इसका यह मतलब नहीं कि मैं कुछ समझ नहीं पाता। आरती, तुम एक बेहतर जीवनसाथी की हकदार हो। तुम जिंदगी की सभी खुशियों की हकदार हो।'

'मैं एक सिंपल लड़की हूं, गोपाल,' आरती ने अपना होंठ चबाते हुए कहा।

'लेकिन एक सिंपल लड़की को भी प्यार, सुरक्षा, केयर, सपोर्ट की जरूरत होती है, है ना?' मैंने कहा।

वह चुप रही।

'सिंपल लड़की की जल्द ही शादी हो जाएगी। उसे यह पता होना चाहिए कि उसका पति उसके साथ अपना परिवार चला पाएगा या नहीं,' मैंने कहा। मैं सालों से चुप्पी साधे हुए था। लेकिन अब जब आरती मेरे साथ थी, तो मुझमें हिम्मत आ गई थी।

'मैं थक चुकी हूं। मैं घर जाना चाहती हूं,' उसने कहा और उठ खड़ी हुई।

मैंने अपने ड्राइवर को बुलाया। मैंने उसके साथ नीचे तक चलने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उसने मना कर दिया। जाने से पहले वह मेरे करीब आई। मुझे एक किस की उम्मीद थी, लेकिन उसने मुझे बस धीरे-से हग किया। दरवाजा बंद हो गया। कमरे में उसकी खुशबू घंटों तक और मेरे दिल में अनेक दिनों तक बसी रही।

30

रमाडा में बिताई गई रात के बाद हमने दो दिन तक एक-दूसरे से बातें नहीं कीं। लेकिन फिर मैं अपने आप पर काबू नहीं रख सका और उसे कॉल किया। वह मुझसे बातें नहीं कर सकी, क्योंकि उसके पैरेंट्स उसके आस-पास थे। हालांकि, वह अगले दिन काम से पहले सीसीडी में मुझसे मिलने को राजी हो गई।

'आई एम सॉरी, मैं ठीक नहीं हूं,' उसने अपनी एक्स्ट्रा हॉट ब्लैक कॉफी की चुस्कियां लेते हुए कहा।

उसने घेरदार पर्पल स्कर्ट और व्हाइट प्रिंटेड टॉप पहन रखा था। उसके गीले बालों से पता चल रहा था कि वह अभी-अभी नहाकर आई थी। 'मेरे पास बस बीस मिनट का समय है, फिर मुझे काम पर जाना है,' उसने कहा।

'उस रात तुम्हें क्या हुआ था?' मैंने पूछा।

'वेल, तुम जानते हो क्या हुआ था,' उसने कहा।

'तुम्हें मेरे पास आना चाहिए था, आरती,' मैंने कहा और उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया।

'गोपाल!' उसने कहा, और अपना हाथ खींच लिया।

'क्या हुआ?' मैंने कहा। मैं चाहता था कि वह शर्माते हुए मेरी ओर देखे, हमारे उस एक्सपीरियंस के बारे में स्माइल करे, और मेरे हाथ को कसकर थामे रखे। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

'लोग हमें जानते हैं,' उसने कहा। हमारे बीच हमारे कॉफी के कप से उठती भाप थी। बाहर दिसंबर की सर्द सुबह थी, लेकिन कैफे के भीतर गर्माहट महसूस हो रही थी।

'तुम मुझे प्यार करती हो?' मैंने पूछा। मैं कंफर्मेशन के लिए बेचैन हो रहा था। निश्चित ही वह मुझे प्यार करती होगी। ऐसा कैसे हो सकता है कि वह मुझे प्यार न करती हो?

आरती ने झुंझलाहट में सांस छोड़ी।

'क्या बात है? कम से कम अब तो अपनी फीलिंग्स को एक्सेप्ट कर लो,' मैंने कहा।

'तुम जानना चाहते हो मैं क्या महसूस कर रही हूं?'

उसने कहा।

'हां, मैं किसी भी चीज से ज्यादा यही जानना चाहता हूं,' मैंने कहा।

'गिल्ट,' उसने कहा।

'क्यों?' मैंने लगभग विरोध दर्ज करते हुए कहा।

'क्या जो हुआ, वह अद्भुत नहीं था? क्या यह प्यार नहीं है?'

'गोपाल, तुम्हें 'प्यार' शब्द का इस्तेमाल करना बंद करना होगा, ओके?' उसने कहा।

लड़कियों को समझ पाना नामुमकिन है। कुछ समय बीता। मैं चुप रहा।

'राघव ने मेरे साथ कभी कुछ गलत नहीं किया,' उसने एक मिनट बाद खिड़की से बाहर झांकते हुए कहा।

'अच्छा तो यह राघव के कारण है ' मैं कहने लगा, लेकिन उसने मेरी बात काट दी।

'तुम कोई बात सुन सकते हो? केवल सुनना, ओके?' उसने कहा। उसकी नजरें मुझे बेध रही थीं।

मुझे उसकी बात माननी पड़ी। आखिर पुरुषों का अवतरण इस धरती पर इसीलिए तो हुआ है कि वे लड़कियों की खरी-खोटी सुनें। मैंने सहमति में सिर हिला दिया।

'वह केवल एक अच्छा काम करते हुए अपने लिए थोड़ा पैसा कमाना चाहता है। यह आसान काम नहीं है,' उसने कहा।

मैंने फिर सिर हिला दिया। मैं बुरी तरह से यह उम्मीद कर रहा था कि मेरे इस तरह सिर हिलाने को नकली नहीं समझा जाएगा।

'मुझे उससे बेवफाई नहीं करनी चाहिए थी। मैं बहुत बुरी लड़की हूं।'

मैंने फिर सिर हिला दिया।

'तुम्हें भी यही लगता है कि मैं बहुत बुरी लड़की हूं?' उसने पूछा।

मैं चुप रहा।

'कुछ तो कहो,' वह चिल्लाई।

'तुमने कहा था कि मैं केवल सुनूं,' मैंने कहा।

'तो वही करो,' उसने कहा।

'क्या?' मैंने कहा।

'कुछ तो कहो,' उसने कहा। लड़के-लड़की की आपसी बातचीतों में कुछ तो बात होती है। मुझे नहीं लगता वे एक-दूसरे की बातों को पूरी तरह समझ पाते हैं।

'आरती, तुम एक समझदार लड़की हो। तुम तब तक कोई काम नहीं करोगी, जब तक तुम ऐसा करना न चाहो।'

'तुम कहना क्या चाहते हो?' उसने कहा।

'मैं इतने सालों से कोशिश कर रहा था, लेकिन तुमने कभी हां नहीं कहा। लेकिन उस रात तुम्हें कुछ न कुछ तो जरूर हो गया था।'

'मैंने एक गलती की,' उसने कहा।

मुझे स्वीकारना होगा कि उसका ऐसा कहना मुझे बहुत बुरा लगा। जो दिन मेरी जिंदगी का सबसे स्पेशल दिन था, उसे वह अपनी गलती बता रही थी। मैंने अपने गुस्से को काबू में किया।

'क्या वाकई वह गलती थी? तुम आज मुझसे क्यों मिलने आई हो?' मैंने कहा।

'इट्स जस्ट ए फेज,' उसने कहा, लेकिन उसकी आंखों में सच्चाई नहीं थी।
'आरती, झूठ मत बोलो। कम से कम मुझसे तो नहीं।
यदि तुम्हारी फीलिंग्स बदल गई है, तो इसमें शर्मिंदा होने जैसा कुछ भी नहीं है,' मैंने कहा।
उसकी आंखों से आंसू ढुलक पड़े। मैंने एक टिशू उठाया और उसके आंसू पोंछने के लिए आगे बढ़ा।
उसने आसमान देखा और अपने आपको संभाला।
'गोपाल, हर रिलेशन में एक व्यक्ति कमजोर होता है और दूसरा व्यक्ति मजबूत होता है। कमजोर व्यक्ति वह है, जिसे दूसरे की ज्यादा जरूरत होती है।'
'सच बात है,' मैंने कहा।
'किसी रिलेशनशिप में कमजोर होना अच्छा नहीं होता। हमेशा तो कतई नहीं,' उसने कहा।
'मैं इस फीलिंग को समझता हूं,' मैंने कहा।
उसने मेरी ओर देखा।
'आई एम सॉरी। मुझे तो केवल सुनना था,' मैंने कहा।
'मेरे पैरेंट्स शादी के लिए मुझ पर दबाव बना रहे हैं और मैं लंबे समय तक उनको नहीं समझा सकती,' उसने कहा। 'राघव इस बात को समझ नहीं पा रहा है।'
'वह तुमसे शादी नहीं करना चाहता?' मैंने पूछा।
'फिलहाल तो नहीं। वह हर बार इस विषय को टाल जाता है। कभी वह कहता है कि अभी वह सेटल नहीं है, कभी कहता है कि उसका काम बहुत खतरनाक है, कभी वह बहुत बिजी रहता है। लेकिन मेरे बारे में क्या?'
मैंने सिर हिला दिया। कभी–कभी लड़कियों के सामने आप ज्यादा से ज्यादा यही कर सकते हैं कि सही समय पर सिर हिलाते रहें। मैं भी अपने सिर को जरा–सा हिलाकर यही कर रहा था।
'वह मुझे प्यार करता है, मुझे पता है। वह अक्सर मुझे बहुत स्वीट मैसेज भेजता रहता है। मुझे अच्छा लगता है।'
मैं समझ गया कि वह उन बातों को बोल रही थी, जो उसके मन में चल रही थीं। मैं सुनने का दिखावा करता रहा, लेकिन मेरा ध्यान उसके पर्पल ईयररिंग्स पर लगा हुआ था, जो उसके बोलने पर धीमे–धीमे हिल रहे थे। उसकी बात पांच मिनट में पूरी हो गई।
'मेरी बातें सुनने के लिए शुक्रिया,' उसने कहा।
'तुमने यह मेरे साथ ही क्यों किया?' मैंने कहा।
'तुम्हारा क्या मतलब है?' उसने कहा।
'तुम उस रात मेरे साथ क्यों सोई? श्योर, तुम्हें राघव से कुछ प्रॉब्लम्स रही होंगी, लेकिन मेरे साथ ही ऐसा क्यों?'
उसने मेरी ओर देखा। अपने मन की भड़ास निकालने के बाद अब वह जरा शांत हो गई थी।
'क्योंकि मैं तुम्हें पसन्द करती हूं,' उसने कहा।
'पसंद करती हो?' मैंने कहा।
'ऑफ कोर्स। और मैं जानती हूं कि मैं तुम्हारे लिए क्या मायने रखती हूं। मैं कसम खाकर कहती हूं, यदि तुम अपने लिए कोई और लड़की ढूंढ लो तो मुझे बहुत खुशी होगी।'
'मैं ऐसा नहीं कर सकता,' मैंने कहा।
'क्या नहीं कर सकते?'
'मैं किसी और लड़की के साथ नहीं जी सकता। या तो तुम या कोई नहीं,' मैंने सीधे उसकी आंखों में झांकते हुए कहा।
'तुम्हें पता है इससे मुझे कितनी गिल्टी होती है?'
उसने कहा।
'तो तुम्हें मेरे साथ सोने में गिल्टी होती है और मेरे साथ नहीं सोने में?'
वह व्यंग्यपूर्ण ढंग से मुस्करा दी। 'लड़की होना आसान नहीं है। हमें हर बात के लिए गिल्टी होती है।'
'कन्फ्यूज्ड मत होओ। मेरे पास आ जाओ,' मैंने कहा।
'और राघव का क्या होगा?' उसने कहा। 'उसे इस मौके पर मेरी जरूरत है।'
'वह जो चाहता है, वह करता है। तो तुम भी ऐसा क्यों न करो?'
'वह काम करता है। वह मुझे भी काम करने से नहीं रोकता। लेकिन यह बेवफाई है। यह अलग बात है।'
'तुम मुझे इग्नोर करती हो, आरती,' मैंने कहा। 'मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि यदि तुम मेरे साथ होओ तो मैं क्या कुछ नहीं कर गुजरूंगा। मैं अपने कॉलेज को आगे बढ़ाना चाहता हूं। हम एविएशन एकेडमी भी खोल सकते हैं। एमबीए या मेडिसिन भी।'
'यह सब करने के लिए मेरी कोई जरूरत नहीं है,' उसने कहा।
'लेकिन मेरे लिए तुम जरूरी हो। तुम्हारे बिना मेरा कोई वजूद नहीं है,' मैंने कहा। 'लोगों के ब्रेकअप होते रहते हैं, आरती। तुम लोगों ने अभी शादी नहीं की है।
हम एक–दूसरे के साथ कितने खुश रहेंगे!'
'और राघव?' उसने पूछा।
'वह भी ठीक हो जाएगा। वह अपने लिए कोई न कोई ढूंढ लेगा, कोई जर्नलिस्ट, या एक्टिविस्ट या कोई भी,' मैंने कहा।
वह हंस पड़ी।
'क्या हुआ?' मैंने कहा।
'मैं तुम्हें पसंद करती हूं, गोपाल। लेकिन तुम इतनी ज्यादा कोशिश क्यों कर रहे हो?'
'सॉरी,' मैंने रूखेपन से कहा। 'मैं हर बार तो सही नहीं हो सकता ना।'
'शट अप, यह सही होने या न होने की बात नहीं है।'
'तुम मेरी बनोगी?' मैंने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा।
'प्लीज, मुझ पर दबाव मत बनाओ।'
मैंने अपना हाथ पीछे खींच लिया।
'मैं तुम पर दबाव नहीं बना रहा हूं,' मैंने कहा।
उसने समय देखा। जाने का वक्त हो गया था। मैंने अपने ड्राइवर को बुलाया, जो धीरे–धीरे एक ब्लैक मर्सीडीज चलाते हुए ले आया।
'वॉव!' उसने कहा। 'यह तुम्हारी है?'
'नहीं, यह ट्रस्ट की है। यह शुक्ला–जी के लिए है।
हमने तो केवल डिलेवरी ली है।'
हम कार में बैठ गए। ब्लैक लेदर गर्माहट भरा महसूस हो रहा था। 'इसमें सीट हीटर्स भी हैं,' मैंने उसे कन्ट्रोल्स दिखाते हुए कहा।
'एक दिन, मिस्टर गोपाल, तुम्हारे पास भी ऐसी होगी,' होटल पहुंचने पर उसने कहा।
'कार या लड़की?' मैंने आंख मारते हुए कहा।
'दोनों, होपफुली,' उसने कहा और आंख मारकर जवाब दिया।
'हम कब मिल सकते हैं?' मैंने कहा, 'अकेले में!'
'गोपाल!'
'हमें कुछ करने की जरूरत नहीं है। डन फेक्ट, मैं कुछ भी नहीं करना चाहता।'
'हर लड़के के रटे–रटाए शब्द,' उसने कहा और होटल में चली गई।
होटल के गेट से बाहर निकलते हुए गार्ड ने ब्लैक मर्सीडीज को सैल्यूट ठोका।
'तुम्हारे पैरेंट्स कहां हैं?'
उसने अपने कमरे के पर्दे खींच दिए। 'हॉस्पिटल।
डैड के घुटनों में फिर से तकलीफ उठी है।'
आरती और मैंने मिलना जारी रखा था, हालांकि हम पब्लिक प्लेस पर कम ही मिलते थे। अधिकतर ऐसा होता था कि उसके पैरेंट्स के बाहर होने पर वह मुझे अपने घर बुला लेती थी। घर में आधा दर्जन नौकरों के होने के बावजूद उसके कमरे में प्राइवेसी थी। रमाडा में बिताई गई उस रात के बाद दो महीने बीत चुके थे।
राघव से बेवफाई करने की उसकी गिल्ट अब कम हो गई थी, या शायद वह उसे मुझसे अच्छी तरह छुपा पा रही थी। अब मैंने उससे यह पूछना बंद कर दिया था कि क्या वह मुझे प्यार

करती हैं, क्योंकि इससे हमारे बीच दूरियां बढ़ती ही थीं।

लड़कियां बहुत विरोधाभासी होती हैं। वे कहेंगी कि उन्हें बातचीत करना अच्छा लगता है, लेकिन कुछ मसलों पर वे चुप्पी साध लेंगी। यदि वे आपको पसंद करती हैं, तो वे चाहेंगी कि आप इस बात को खुद ही समझ लें, उन्हें यह कहना न पड़े।

'अंगूर खाओगे?' उसने मुझे फलों की एक ट्रे देते हुए कहा।

'मुझे अपने हाथों से खिलाओ,' मैंने उसकी आरामकुर्सी पर पसरते हुए कहा।

'शट अप,' उसने कहा और मेरी ओर ट्रे बढ़ा दी।

वह मेरे सामने एक कुर्सी पर बैठ गई। हम एक अलिखित नियम का पालन कर रहे थे – बिस्तर से दूरी बनाए रखो।

'एक बार?' मैंने कहा।

'क्या जिद है!' उसने कहा और उठ खड़ी हुई।

उसने अंगूरों का एक गुच्छा उठाया और मेरे मुंह की ओर बढ़ाया। मैंने जैसे ही अपना मुंह खोला, उसने पूरा गुच्छा मेरे मुह में भर दिया।

'राजाओं को इस तरह तो अंगूर नहीं खिलाए जाते थे,' मैंने कहा। मुझे बात करने में दिक्कत हो रही थी, क्योंकि मेरे मुंह से अंगूरों का रस बह रहा था।

'सभी लड़के एक जैसे होते है। पहले लड़की का पीछा करते है और जब वे लड़की को पा लेते हैं तो वे उस पर हुकूमत करना चाहते हैं,' उसने कहा।

'तुम मेरी रानी हो, माय डियर,' मैंने कहा।

'घटिया। बकवास। बेतुकी बात,' उसने कहा।

मैंने उसे अंगूरों के रस से भीगा हुए एक किस दिया।

'मेड्स आसपास हैं!'

'वे नॉक करके आती हैं। तुम्हें पता है,' मैंने कहा।

मै उसे एक बार फिर किस करना चाहता था, लेकिन उसने मुझे धकेल दिया।

'मैं तुम्हारे साथ बहुत खराब सलूक करती हूं ना?'

उसने कहा।

'इट्स ओके,' मैंने कहा।

'बहुत ज्यादा नजदीकियों से मेरा दिमाग उलझन में आ जाता है। तुम यह तो नहीं चाहोगे कि मैं फिर कई हफ्तों के लिए खराब महसूस करती रहूं?'

'इट्स ओके। मैं वैसे भी ऐसा नहीं चाहूंगा,' मैंने कहा।

'रियली?' उसने हैरत से कहा।

लड़के हमेशा लड़कियों के नजदीक आना चाहते हैं।

लेकिन इसके बावजूद वह जानती थी कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं। मैंने उसे कभी अपने कैम्पस में नहीं बुलाया था, जहां हम पूरी तरह से अकेले हो सकते थे।

न ही मैंने रमाडा जैसी एक और रात बिताने की कोशिश की थी।

'रियली,' मैंने गंभीरता से कहा।

'तुम नहीं चाहते?' उसने कहा। उसने एक केसरिया सलवार और सफेद कमीज पहन रखी थी। मैं उसे दुनिया की किसी भी औरत या वास्तव में दुनिया की सभी औरतों से ज्यादा चाहता था। लेकिन मेरी एक शर्त थी।

'तब तक नहीं, जब तक राघव तुम्हारी जिंदगी से बाहर नहीं हो जाता,' मैंने कहा।

'क्या?' उसने कहा।

'रमाडा की उस रात मुझे तुम्हारा शरीर मिल गया था, लेकिन मन नहीं मिला था। मैं नहीं चाहता कि ऐसा फिर हो।'

'हम रातोंरात किसी इंसान को अपनी जिंदगी से बेदखल नहीं कर सकते,' उसने कहा।

'मैं जानता हूं। लेकिन क्या तुम कोशिश कर रही हो?'

'मुझे नहीं पता,' उसने कहा। 'मैं इसे चाहे जितना झुठलाने की कोशिश करूं, लेकिन हकीकत तो यही है कि मैं लगभग रोज तुमसे मिलती हूं।'

वह मेरी कुर्सी के हत्थे पर बैठ गई।

'तो, क्या वाकई तुम उससे अपने रिश्ते खत्म करने वाली हो?' मैंने कहा।

मैंने अपनी बात पूरी की ही थी कि उसके फोन की घंटी बजी। 'उसका फोन है,' उसने कहा।

मैं चुप हो गया।

'हे,' उसने उससे कहा। वह मेरे इतने पास बैठ गई कि मैं दूसरी तरफ से बोल रहे राघव की बातें भी सुन सकूं।

'हमारी कॉपीज की तादाद पांच हजार तक पहुंच गई है,' वह कह रहा था।

'कॉन्ग्रेच्यूलेशंस!' आरती ने कहा।

'अब हमें जल्द ही विज्ञापन के लिए अच्छे बाइड्स मिलने लगेंगे। तुम क्या कर रही हो?'

'मैं आज घर जल्दी चली आई थी,' आरती ने कहा।

'पैरेंट्स?'

'मॉम डैड को अस्पताल ले गई हैं। उनके घुटनों में बहुत तकलीफ है। उन्हें दोनों घुटनों को रिप्लेस करवाना होगा।'

'यह तो बहुत बुरा होगा,' उसने कहा।

मैं आरती के बालों से खेलता रहा। उसने मुह बनाकर मुझे ऐसा नहीं करने को कहा, लेकिन मैं नहीं रुका।

'तो? शाम को कुछ कर रहे हो?' उसने कहा।

'सोमवार के खास अंक को फाइनलाइज कर रहा हूं।

बहुत कमाल का होगा,' उसने कहा।

'ओके,' आरती ने सांस छोड़ते हुए कहा। मैंने उसके चेहरे पर गिर रहे बालों को पीछे कर दिया। उसने बात करते–करते मेरा हाथ पकड़ लिया।

'मैं तुमसे रात को कॉफी के लिए मिल सकता हूं,' राघव ने कहा।

'रात को तो मुझे डैड के साथ रहना होगा। जब भी मुझे घर आने में देर हो जाती है, मॉम मेरी शादी कर देने की प्लानिंग करने लगती हैं।'

'शादी के लिए अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है!' राघव ने कहा।

'लेकिन मेरी फैमिली को कौन समझाए। मेरी ही उम्र के कजिन्स की शादी हो चुकी है,' उसने कहा।

'मैं इस बारे में फिर से लड़ाई नहीं करना चाहता,' राघव ने कहा। 'मैं थक चुका हूं।'

'लेकिन मैं नहीं थकी हूं,' आरती ने कहा।

'आई लव यू, बाय,' राघव ने स्मार्टनेस के साथ कहा।

'क्या वाकई?' आरती ने कहा।

'आरती, कम ऑन। मुझे अभी फोन रखना पड़ेगा। मैं तुमसे प्यार करता हूं। तुम भी कहो ना,' राघव ने कहा।

'लव यू, बाय,' उसने कहा।

मैंने उसके चेहरे से अपना हाथ हटा लिया।

'क्या हुआ?' उसने कहा।

'इसीलिए मैं कहता हूं कि उसे अपनी जिंदगी से बेदखल कर दो,' मैंने कहा।

'यह तो बस एक सिंपल बातचीत थी,' उसने कहा।

'तुमने कहा कि तुम उसे 'प्यार' करती हो, लेकिन जब मैं इस शब्द का इस्तेमाल करता हूं, तो तुम्हें अच्छा नहीं लगता।'

'मैं नॉर्मल रहना चाहती हूं। हम अपने कॉल्स इसी तरह खत्म करते हैं,' उसने कहा। वह खिड़की पर जाकर खड़ी हो गई और बाहर ताकने लगी।

'आई एम सॉरी, लेकिन मेरे लिए यह आसान नहीं है कि तुम्हें इस शब्द का इस्तेमाल किसी और के लिए करते सुनूं,' मैंने कहा।

'किसी से बेवफाई करना भी आसान नहीं होता,' उसने कहा और उसकी आंखों से आंसू फूट पड़े।

मैंने उसे अपनी बांहों में भर लिया।

'कभी न कभी उसे यह पता चल ही जाएगा,' आरती ने कहा। उसका चेहरा मेरे सीने में धंसा हुआ था। 'मैं खुद ही उसे सब कुछ बता देना चाहती हूं।'

'क्या तुम मेरी बनोगी?' मैंने कहा।

'जब अनट्रीटेड पानी प्लांट में पहुंचा, तो उसके अस्सी फीसदी हिस्से को वरुणा नदी में बहा दिया गया और इस तरह उसे बिना साफ किए सीधे–सीधे डंप कर दिया गया। बाकी बीस फीसदी पानी दिनापुर प्लांट के अपने एग्जिट से निकला गया और वह भी अनट्रीटेड ही था। जब इंस्पेक्टर्स ने प्लांट से पहले और बाद में इनपुट और आउटपुट मेजरमेंट्स लिए तो उनमें प्रदूषक तत्वों में अस्सी फीसदी की कमी दिखा दी गई। इधर वरुणा नदी में डंप किया गया गंदा पानी कुछ किलोमीटर चलकर गंगा नदी में आ मिला। नतीजा यह रहा है कि ट्रीटमेंट के नाम पर कुछ भी नहीं हुआ और नदी हमेशा की तरह प्रदूषित ही रही। प्रदूषण में अस्सी फीसदी की कमी दिखाकर शुक्ला ने प्लांट का क्रेडिट ले लिया। कंस्ट्रक्शन कंपनी एलीडकॉन विधायक के चाचा रोशन शुक्ला की है, जिन्होंने उन पम्पों के नकली बिल बनाए, जो कभी खरीदे ही नहीं गए थे (नीचे स्कैन कॉपी।)' 'हम इस पेपर को जड से उखाड़ फेंकेंगे,' मुझे इतने ध्यान से पढ़ते देख एक पार्टी कार्यकर्ता ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा।

पेज के निचले हिस्से में अनेक तस्वीरें थीं। इनमें 15 करोड के पम्पों की खरीद के फर्जी बिल भी शामिल थे। साथ में मौके की वास्तविक तस्वीरें लगाई गई थीं, जहां इस तरह के कोई पम्प नहीं थे। पम्प निर्माता के एक पत्र की स्कैन्ड कॉपी बता रही थी कि उन्होंने कभी कोई पम्प सप्लाई नहीं किए। एलीडकॉन की मिल्कियत का का ढांचा शुक्ला–जी के परिवार से रिश्ते बयां कर रहा था। सबसे अंत में पेपर में वरुणा नदी की एक तस्वीर दी गई थी, जिसमें एक डॉट लगाकर उस ऐन बिंदु को दिखाया गया था, जहां गंदा पानी छोड़ा जा रहा था।

'सीएम लखनऊ से आ रहे हैं,' एक पार्टी कार्यकर्ता ने कहा तो पूरे कमरे में चिंता भरी खुसफुसाहटें फैल गईं।

यकीनन, राघव ने इस खबर पर बहुत मेहनत की थी। इससे पहले उसे एक ऐसी खबर छापने का खामियाजा भुगतना पड़ा था, जिसके लिए उसके पास कोई सबूत नहीं थे। लेकिन इस बार उसने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। फर्जी बिल, ठेकेदार–विधायक की सांठगांठ और पवित्र गंगा नदी में गंदा पानी छोड़ने की हिमाकत, ये तमाम सबूत शुक्ला–जी के लिए अच्छी खबर साबित नहीं होने जा रहे थे। वाराणसी के लोगों का भड़क उठना तय था। किसी राजनेता द्वारा लूटखसोट करना बुरा है, लेकिन पवित्र नदी के हिस्से का पैसा चुरा लेना तो सबसे संगीन गुनाह था।

'यह तो 'यह तो ढंगण्से एक अखबार भी नहीं है,' शुक्लाण्जी का पीए किसी से बतिया रहा था। 'इसकी हजारण्दो हजार कॉपी छपती है। इसकी बातों पर कोई ध्यान नहीं देगा।'

'रेवोल्यूशन 2020' का कम सर्कुलेशन ही विधायक के लिए उम्मीद की इकलौती किरण थी। पार्टी कार्यकर्ता न्यूजस्टैंड से जितनी कॉपियां हटा सकते थे, उन्होंने हटा दीं। लेकिन 'रेवोल्यूशन 2020' मुफ्त बटता था, जैसे अखबारों के भीतर ब्रोशर डालकर भेज दिए जाते हैं। उसकी सभी कॉपियों को नष्ट कर देना नामुमकिन था।

आरती का कॉल आया। मैं लॉन में चला आया।

'तुमने आज का 'आर2020' देखा?' उसने कहा।

मुझे नहीं पता था कि पेपर का एक छोटा नाम भी रख दिया गया था।

'मेरे हाथों में ही है,' मैंने कहा।

उसने कुछ कहने से पहले गहरी सांस ली। 'यह बहुत ज्यादा तो नहीं हो जाएगा?' उसने कहा।

मैंने कटाक्ष किया। 'राघव कभी बहुत ज्यादा से कम कुछ करता है क्या?'

'लेकिन यह तो हैरान कर देने वाली खबर है, है ना? ये लोग गंदे पानी को कहीं और डंप कर देते हैं और दावा करते हैं कि उन्होंने उसे साफ कर दिया है!'

'वह बड़े लोगों से दुश्मनी मोल ले रहा है। उसे सावधान रहना चाहिए,' मैंने कहा।

'लेकिन वह तो सच ही बोल रहा है ना। आखिर किसी न किसी को तो सच बोलना पड़ेगा।'

'मैंने केवल इतना ही कहा है कि उसे सावधान रहना चाहिए,' मैंने कहा।

'मैं नहीं चाहती कि वह किसी खतरे में पड़ जाए,' उसने कहा। उसकी आवाज डरी हुई–सी थी।

'वो खतरों से दूर रहना भी तो नहीं चाहता,' मैंने कहा।

'तो क्या वह वाकई खतरे में है?' उसने एक–एक शब्द पर रुकते हुए कहा।

'भला मुझे कैसे पता?' मैंने कहा। मुझे घर के बाहर ट्रैफिक का शोर सुनाई दे रहा था।

'कम ऑन, गोपाल, तुम और विधायक शुक्ला...' उसने कहा और रुक गई।

'मैं किसी घोटाले में शामिल नहीं हूं, ओके?' मैंने चिल्लाते हुए कहा।

बाहर हॉर्नों का शोर होता रहा। मैं दरवाजे के करीब चला आया।

'मैंने यह तो नहीं कहा,' उसने धीमे–से कहा। 'मैं तो बस इतना ही चाहती हूं कि राघव पर किसी तरह का कोई खतरा न हो। मैं भले ही उसके लिए वफादार नहीं रही हूं, लेकिन मैं इतना जरूर चाहती हूं कि उसे कोई तकलीफ न हो।'

'एक सेकंड रुको, आरती,' मैंने कहा।

मैं गेट पर चला आया। बाहर का नजारा देखकर मेरी आंखें फैल गईं। घर के बाहर अलग–अलग टीवी चैनलों की छह वैन पार्क हुई थीं। गार्ड्स रिपोर्टर्स को अंदर नहीं आने देने के लिए जूझ रहे थे, जबकि वे विधायक के घर को बैकग्राउंड में लेकर लाइव टेलीकास्ट करने लगे थे।

'क्या बात है?' मैंने एक गार्ड से पूछा।

'वे अंदर जाना चाहते हैं,' गार्ड ने कहा। 'उन्हें पता चल गया है कि मुख्यमंत्री आ रहे हैं।'

'सब ठीक तो है ना?' फोन पर आरती ने घबराहट में पूछा।

'हां, अभी तक तो।'

'मुझे प्रॉमिस करो कि राघव को कुछ नहीं होगा।'

'यह मेरे हाथ में नहीं है, आरती,' मैंने झल्लाते हुए कहा। 'मुझे तो यह भी नहीं पता कि अब क्या होगा। उसका अखबार छोटा–सा है। शायद उसकी खबर पर कोई ध्यान ही न दे।'

'नहीं, ऐसा नहीं होगा,' उसने कहा।

'क्या?'

'सभी बड़े अखबार और चैनल अभी 'रेवोल्यूशन 2020' के ऑफिस में हैं,' उसने कहा।

'बेड़ा गर्क,' मैंने कहा। सफेद एंबेसेडर कारों का एक कारवां घर की ओर बढ़ रहा था। फोटोग्राफर्स बेकाबू हो गए और हर चीज की तस्वीरें उतारने लगे। मेरी भी।

'राघव को तो कुछ नहीं होगा ना? प्रॉमिस मी?'

'आरती, अभी मुझे जाना पड़ेगा।'

फिर मैं चहलकदमी करते हुए घर में चला आया।

32

सीएम के घर में आते ही सभी अटेंशन की मुद्रा में खड़े हो गए। विधायक के बंगले के एक–एक इंच में सत्ता का आभामंडल महसूस किया जा सकता था।

शुक्ला–जी दौड़ते हुए आए और हाथ जोडकर मुख्यमंत्री को नमस्कार किया।

'यहां मीडिया को किसने बुलाया?' सीएम ने सधी हुई आवाज में पूछा।

'क्या?' शुक्ला ने कहा। कमरे में मौजूद हर व्यक्ति की तरह उन्हें भी कुछ पता नहीं था।

'अंदर चलते हैं,' सीएम ने कहा। दोनों नेता विधायक शुक्ला के ऑफिस में चले गए। हॉल में सीएम के चमचे और विधायक के चमचे आपस में बतियाने लगे। चमचों के बीच भी ऊंच–नीच का भेद था। जहां सीएम के चमचे सिर उठाकर खड़े थे, वहीं विधायक के चमचे फर्श को ताक रहे थे। मैं इनमें कहीं भी फिट नहीं बैठता था।

मैं कमरे में एक कोने में लकड़ी की एक कुर्सी पर बैठ गया।

'गोपाल,' शुक्ला–जी की तेज आवाज से मैं चौंक गया। मैंने ऊपर देखा। उन्होंने मुझे भीतर बुलाया।

मेरे भीतर जाते ही विधायक ने दरवाजा बंद कर लिया।

'गोपाल, सर। मेरा कॉलेज यही चलाता है। मेरा भरोसेमंद आदमी है। ब्राइट एंड...' 'तुम उस आदमी को जानते हो, जिसने यह सब किया है?' सीएम ने मुझसे पूछा। उन्हें मेरे गुणों और मेरी काबिलियत में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

'राघव कश्यप, सर। कभी मेरा दोस्त हुआ करता था, अब नहीं है।'

'तुम उसका मुंह बंद नहीं करा सके?' सीएम ने कहा।

'हमने उसे 'दैनिक' से निकलवा दिया तो उसने अपना खुद का पेपर शुरू कर लिया,' मैंने कहा।

'लेकिन उसका पेपर कोई नहीं पढ़ता है।'

'मीडिया को भनक लग गई है। उसका पेपर भले ही दो कौड़ी का हो, लेकिन यदि वह सभी जगह जाकर बातें करता है या मीडिया को सबूत दे देता है, तो बहुत बुरा होगा।'

'उसने पहले ही यह सब करना शुरू कर दिया है,' मैंने कहा।

उन दोनों ने मेरी ओर इस तरह देखा, मानो इसके लिए मुझे दोषी ठहरा रहे हों।

'मेरे सोर्सेस ने मुझे बताया। मैं तो उसके संपर्क में नहीं हूं,' मैंने

'पर हम उसे हैंडल नहीं कर सकते?' सीएम ने पूछा। 'तुम लोग को हैंडल किए बिना जेल कैसे सोच सकते हो?'
मैं समझ गया कि 'हैंडल करने' से उनका क्या मतलब था।
'उसे खरीदा नहीं जा सकता, सर,' मैंने कहा। एक पल को मुझे राघव पर गर्व हुआ। मुझे लगा यह एक अच्छी बात थी – एक ऐसा व्यक्ति होना, जिसे खरीदा न जा सके।
'खरीदा नहीं जा सकता से तुम्हारा क्या मतलब है?
हर आदमी की एक कीमत होती है,' सीएम ने कहा।
'उसकी ऐसी कोई कीमत नहीं है,' मैंने कहा। 'मैं उसे कालेज से जानता हूं। वह पागल है।'
'वेल, तब तो इसका यह मतलब है कि वह जीना नहीं चाहता, क्यों?' शुक्ला–जी ने कहा। मैंने देखा कि उनकी आंखें लाल हो गई हुई थी।
मैंने सीएम की ओर देखा। उन्होंने सिर हिलाया।
'शुक्ला–जी का दिमाग अभी ठिकाने नहीं है,' उन्होंने कहा।
'नहीं, सीएम सर, मैं ऐसा नहीं ..' शुक्ला–जी ने अपनी बात शुरू की।
'चुप हो जाइए, शुक्ला–जी,' सीएम ने कहा। उनकी आवाज तेज थी। 'आपको कुछ पता भी है क्या हो गया है?'
विधायक ने गर्दन झुका ली।
'आपने प्लांट तक नहीं बनाया? दस फीसदी इधर–उधर हो जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता। आपने क्या सोचकर वरुणा नदी में गंदा पानी डंप कर दिया?
यह गंगा मैया का सवाल है। लोग हमें जान से मार डालेंगे,' सीएम ने कहा।
मैंने कमरे से बाहर जाना चाहा, लेकिन सीएम ने मुझे वहीं रुकने को कहा।
'अगले साल चुनाव है। रमन, मैंने कभी तुम्हारे मामलों में दखल नहीं दिया। लेकिन यह मामला हमें ले डूबेगा।'
'मैं सब ठीक कर दूंगा, सीएम सर,' शुक्ला ने कहा, 'मैं प्रॉमिस करता हूं।'
'लेकिन कैसे? जर्नलिस्ट को जान से मारकर?'
'मैंने यह गुस्से में कह दिया था,' शुक्ला–जी ने कहा। उनका बात करने का लहजा माफी भरा था।
'गुस्से में आदमी बहुत–सी ऐसी चीजें कर जाता है, जिसकी उससे उम्मीद नहीं की जा रही थी। गुस्से में आकर लोग सरकार उलट देते हैं। मुझे पता चल जाता है कि किसी घोटाले की खबर में दम है या नहीं। इस खबर में दम है।'
'आप ही बताएं मैं क्या करूं, सर,' शुक्ला–जी ने कहा, 'आप जो कहेंगे, मैं वही करूंगा।'
'इस्तीफा दे दो,' सीएम ने कहा और उठ खड़े हुए।
'क्या?' शुक्ला–जी ने कहा। उनका चेहरा कुछ इस तरह सफेद पड़ गया, मानो उसे ब्लीच किया गया हो।
'यह कोई पर्सनल मामला नहीं है। इस्तीफा देकर अपनी नाक कटने से बचाओगे तो बाद में तुम्हें वापसी का भी मौका मिलेगा।'
'नहीं तो?' विधायक ने कुछ देर रुककर कहा।
'मुझे तुम्हें बर्खास्त करने को मजबूर मत करो, शुक्ला। तुम मेरे दोस्त हो,' मुख्यमंत्री ने कहा। 'लेकिन पार्टी दोस्ती से बढ़कर होती है।'
शुक्ला–जी समझ गए कि वे किस मुसीबत में फंस चुके हैं। उन्होंने गुस्से में मुट्ठियां भींच लीं।
'यदि तुम अभी इस्तीफा दे देते हो, तो तुम्हें बाद में वापस लाने की जिम्मेदारी मेरी,' सीएम ने कहा।
इतना कहकर वे धीरे–धीरे अपने चमचों के साथ बाहर निकल गए। बाहर प्रेस सीएम के बयान का इंतजार कर रही थी। मैं भी उनके पीछे–पीछे गेट पर चला आया।
'मैं यहां एक रूटीन विजिट के सिलसिले में आया था,' सीएम ने पत्रकारों से कहा।
'टिमनापुरा प्लांट घोटाले के बारे में आप क्या सोचते हैं?' एक पत्रकार ने जोरों–से चिल्लाते हुए कहा।
'मुझे इस बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं है। लगता है यह हमें बदनाम करने की साजिश है। हमारी पार्टी का भ्रष्टाचार को लेकर साफ रुख है। यदि हमारे किसी नेता पर आरोप भी लगते हैं, तो हम उससे इस्तीफा ले लेते हैं।'
सीएम पत्रकारों को धकेलते हुए आगे बढ़े और अपनी कार में बैठ गए।
'तो क्या विधायक शुक्ला इस्तीफा देंगे?' पत्रकारों में से एक ने जैसे–तैसे सीएम के चेहरे से अपना माइक सटा दिया।
'यह फैसला तो उन्हें ही करना है,' सीएम ने कहा।
उन्होंने इशारों ही इशारों में बता दिया कि विधायक को इस्तीफा देना ही पड़ेगा।
सीएम की कार चली गई। मैं सोचने लगा कि अब मेरे गंगाटेक का क्या होगा। मैं शुक्ला–जी के कमरे में चला आया।
'हम उस अखबार के दफ्तर को तहस–नहस कर देंगे,' एक कार्यकर्ता ने शुक्ला–जी से कहा।
शुक्ला–जी ने कोई जवाब नहीं दिया।
'हमें बताइए, क्या करना है। सीएम सर ने क्या कहा?' एक और चमचे ने पूछा।
'मुझे अकेला छोड़ दो,' शुक्ला–जी ने कहा।
कार्यकर्ता समझ गए कि उन्हें क्या करना है। कुछ ही सेकंड में वे तितर–बितर हो गए। जल्द ही उनके बड़े–से घर में केवल मैं और वे ही बचे रह गए थे।
'सर,' मैंने कहा। 'क्या मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूं?'
शुक्ला–जी ने मेरी ओर देखा। उनकी चिर–परिचित दबंगई अब नदारद हो चुकी थी। वे कुर्सी में आगे झुककर बैठे थे। उनकी कोहनियां कुर्सी के हत्थों पर टिकी थीं और चेहरा हथेलियों में छुपा हुआ था।
'मुख्यमंत्री भैनचोद है!' उन्होंने कहा।
मैं चुप रहा।
'जब उसको अपने चुनाव के लिए फंडिंग की जरूरत थी, तो वह मेरे पास आता था। उसके सारे उटपटांग काम मैं करता था। पूरे राज्य में दारू मैं बांटता था। अब वह मुझे ही ठिकाने लगा रहा है।'
'आप हमेशा की तरह इन हालात का सफलता से सामना करेंगे, शुक्ला–जी।'
'किसी को गंगा की सफाई से मतलब नहीं है। उस प्लान से सभी ने पैसा कमाया। तो फिर अकेला मैं ही इस्तीफा क्यों दूं?'
मेरे पास इस सवाल का कोई जवाब न था। मुझे जरा–सी गिल्ट महसूस हुई। शायद राघव ने शुक्ला–जी के साथ ऐसा इसलिए किया, क्योंकि वह मुझसे हिसाब बराबर करना चाहता था। या शायद यह सब मेरी कल्पना थी। राघव किसी को भी एक्सपोज कर सकता था।
'तुम गंगाटेक को ढंग से चलाना, ओके? मैं नहीं चाहता कि यहां से कोई कीचड़ वहां तक पहुंचे,' उन्होंने कहा।
'ऑफ कोर्स, सर,' मैंने कहा। 'आप तो हमारे साथ हैं ही, सर। हमने विकास की बड़ी योजनाएं बनाई हैं।'
'वे लोग मुझे बंद कर देंगे,' उन्होंने धीमे–से कहा।
राजनीति में इतने साल बिताने के बाद वे इतने समझदार तो हो ही गए थे कि आने वाली घटनाओं का पहले से अनुमान लगा सकें।
'क्या?' मैंने हैरत से कहा।
'इस्तीफा देने के बाद मेरे पास कोई पॉवर नहीं होगी। जीएपी घोटाले से अनेक विधायकों ने पैसा कमाया है। इससे पहले कि यह बात फैले, वे लोग मुझे जेल में बंद करवा देंगे, ताकि यह दिखा सकें कि उन्होंने कुछ कार्रवाई की है।'
'आप विधायक हैं, शुक्ला–जी। पुलिस आपको छू भी नहीं सकती,' मैंने कहा।
'यदि सीएम का हुक्म हो तो पुलिस मुझे बड़ी आसानी से छू सकती है। मुझे कुछ समय जेल में रहना होगा।'
अपने मेंटर के जेल जाने की बात सोचकर ही मैं बेचैन होने लगा। दुनिया में बहुत कम लोग ऐसे थे, जिन्हें मैं अपना कह सकता था। शुक्ला–जी उन्हीं में से एक थे।
'यहां रुको,' शुक्ला–जी ने कहा और उठ खड़े हुए।
वे अपने बेडरूम में गए और चाबियों का एक गुच्छा लेकर लौटे।
'इसे रख लो,' उन्होंने कहा। 'मेरा ऐसी चमक–दमक की चीजों के साथ देखा जाना अच्छा नहीं होगा।'
मैंने चाबियां उठा लीं। ये ब्लैक मर्सीडीज की चाबियां थीं।
'आपकी नई कार? नहीं, मैं इसे नहीं ले सकता।'
मैंने चाबियां फिर से टेबल पर रख दीं।
'मेरे लिए रख लो। तुम मेरे बेटे जैसे हो। मैं ट्रस्ट को भी कुछ पैसा दे दूंगा। कॉलेज में चार चांद लगा देना।'
'अकेले? मैं ऐसा अकेले कैसे कर सकता हूं?' मैंने भर्राए गले से कहा। 'आप तो मेरे घर पर भी नहीं आए।'
'अब मैं यहां से बाहर नहीं निकल सकता। मेरे भाई–बंधु बाहर कैमरा लिए खड़े हैं,' उन्होंने कहा।

शुक्ला–जी अगले एक घंटे तक मुझे अपने अलग–अलग रास्तों और धंधों के बारे में बताते रहे। उनके आदमी हर जगह बैठे हुए थे, लेकिन इसके बावजूद वे किसी इमरजेंसी की स्थिति से बचने के लिए मुझे सब कुछ बताए दे रहे थे। 'गंगाटेक मेरा सबसे बेदाग बिजनेस है। एक दिन वही मेरी वापसी में मददगार साबित होगा।'

उन्होंने मेरे सामने अपना इस्तीफा लिखा और मुझे उसे लखनऊ फैक्स करने को कहा।

ट्रांसमिशन शुरू होते ही फैक्स मशीन ने बीप किया।

'उसने हमारी ऐसी–तैसी कर दी है, है ना?' शुक्ला–जी ने कहा।

'कौन?' मैंने कहा।

'तुम्हारा दोस्त। मैंने उसे नौकरी से बाहर करवा दिया, उसने मुझे नौकरी से बाहर करवा दिया।'

'उसने मेरी जिंदगी बर्बाद करने की कोशिश की है, मैं उसकी जिंदगी बर्बाद करने की कोशिश करूंगा,' मैंने कसम खाते हुए कहा।

33

अगली सुबह वाराणसी के हर अखबार ने दिमनपुरा प्लाट घोटाले की खबर अपने फ्रंट पेज पर लगाई।

शुक्ला–जी के इस्तीफे की खबर लोगों तक पहुंच चुकी थी। वे अब इस शहर के लिए विलेन बन गए थे और उनका नया हीरो बन गया था राघव कश्यप। सभी उसके स्टुपिड पिंक पेपर की बहुत तारीफ कर रहे थे।

लोकल टीवी चैनलों ने घोटाले को घंटों तक कवर किया।

मैं अपने नए फोर्टी इंच एलसीडी टीवी पर चैनल बदलता रहा। एक चैनल पर राघव का इंटरव्यू देखकर मैं रुक गया।

'हमें घोटाले के लिए सभी जरूरी सबूत जुटाने के लिए दो महीने तक चुपचाप काम करना पड़ा। सभी को पता था कि विधायक गलत काम कर रहे हैं, लेकिन उनके खिलाफ कोई सबूत नहीं थे। हमारी टीम ने यही किया। उसने जरूरी सबूत जुटा लिए,' राघव ने आत्मसंतोष के साथ कहा। वह दुबला हो गया था।

उसके चेहरे पर दाढ़ी बढ़ी थी और उसके बाल बिखरे हुए थे। वह शायद ठीक से सोया भी नहीं था। लेकिन इसके बावजूद उसकी आंखों में चमक थी।

'आपकी टीम में कौन–कौन है?' रिपोर्टर ने उससे पूछा।

'वेल, हम 'रेवोल्यूशन 2020' नाम का एक छोटा–सा अखबार निकालते हैं। उसमें मेरे सहित चार लोग काम करते हैं। हमें ज्यादा अनुभव नहीं है, लेकिन हममें कुछ कर गुजरने का जज्बा है।'

'क्या कर गुजरने का जज्बा?'

'बदलाव करने का। देश को बेहतर बनाने का। हम इसीलिए जी रहे हैं,' राघव ने कहा।

'क्या यह सच है कि आपको लगता है वर्ष 2020 में भारत में एक क्रांति होगी?'

'हां, लेकिन उसके लिए हम सभी को मिलकर काम करना होगा और कुर्बानियां देनी होंगी।'

'क्रांति का मकसद क्या होगा?'

'एक ऐसा समाज बनाना, जिसमें सत्ता से ज्यादा सच, न्याय और समानता का सम्मान हो। ऐसे समाज ही सबसे ज्यादा तरक्की करते हैं।'

'क्या आप थोड़ा एक्सप्लेन करेंगे?'

'जो समाज सत्ता की बुनियाद पर चलते हैं, वे जानवरों की दुनिया की तरह होते हैं। जंगल के जानवरों पर यह नियम लागू होता है कि जो सबसे ताकतवर है, वही सही है। लेकिन जानवर कभी तरक्की नहीं करते, इंसान करते हैं।'

मैंने टीवी बंद कर दी। मैं उसकी बकवास को ज्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं कर सकता था। न ही शुक्ला–जी के आदमी उसे सहन कर सकते थे।

उनकी पार्टी के एक कार्यकर्ता नितेश ने मुझे सुबह फोन लगाया।

'तुमने क्या तोड़ दिया?' मैंने उससे पूछा।

'उसका इकलौता कंप्यूटर अब टुकड़े–टुकड़े हो चुका है। हमने हथौड़ों से उसकी प्रिंटिंग प्रेस भी तोड़ डाली।'

'किसी ने तुम्हें देखा तो नहीं?'

'हम रात को गए थे। हमने उसका ऑफिस तहस–नहस कर दिया। हरामजादा! उसका काम अब खतम।'

मैं काम के लिए तैयार हो गया। बाहर मर्सीडीज खड़ी थी। घर से ऑफिस केवल 300 गज के फासले पर था, इसके बावजूद मैं अपनी नई कार में बैठकर वहां जाना चाहता था।

मैंने राघव के बारे में सोचा। कल उसे इतनी तारीफ मिली, सभी लोगों का ध्यान उसकी तरफ था, लेकिन आज उसके पास केवल एक टूटा हुआ ऑफिस है, और कुछ नहीं।

उसके पास जॉब नहीं था, बिजनेस नहीं था और जैसे ही यह खबर पुरानी पड़ जाएगी, कोई भी उसके पेपर की परवाह नहीं करेगा।

'कहां चलना है, सर?' ड्राइवर ने कहा।

'ऑफिस,' मैंने कहा।

मैं मन ही मन सोचने लगा कि यदि मुझे राघव से कुछ कहना पड़े तो मैं क्या कहूंगा।

'मामूली आदमी–सा नजर आने वाला भोंदू गोपाल मिश्रा, जिसे तुमने यह हिदायत दी थी कि 'तुम अगले साल फिर कोशिश कर सकते हो,' आज एक मर्सीडीज कार में बैठा है, जबकि तुम्हारे पास केवल एक टूटी हुई प्रिंटिंग प्रेस है। और तुम्हें लगता है कि तुम हैंडसम हो, है ना? वेल, जल्द ही तुम्हारी गर्लफ्रेंड भी मेरी बाहों में होगी। वह, जिसे तुमने मुझसे छीन लिया था।'

'सर,' ड्राइवर ने कहा। हम ऑफिस पहुंच चुके थे।

मैं ऑफिस में दाखिल हुआ, चमड़े की कुर्सी में धंस गया और आंखें मूंद लीं। मैं कल्पना करने लगा कि जब मैं राघव को बताऊंगा कि 'आरती अब मेरी है', तो उसके चेहरे पर क्या भाव आएंगे। वह अद्भुत नजारा होगा। मैंने सब प्लान कर रखा था। मैं उसके ऑफिस में जाऊंगा। उसकी टेबल पर मर्सीडीज की चाबियां रखूंगा। मैंने यह भी सोच रखा था कि मैं उससे क्या कहूंगा।

'यह बात हमेशा याद रखना कि कभी–कभी लूजर्स भी जिंदगी की दौड़ में आगे निकल जाते हैं,' मैंने प्रैक्टिस करते हुए जोर से कहा।

लेकिन मैं अभी तक यह नहीं सोच पाया था कि आरती और मेरे बारे में उसे किस तरह बताऊं। मैंने कुछ पंक्तियां आजमाने की कोशिश की।

'मेरे दोस्त, मुझे यह कहते हुए बहुत अफसोस हो रहा है, लेकिन अब आरती मेरी है,' मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

लेकिन मुझे लगा कि इस डायलॉग में मर्दानगी का अहसास कम है।

'आरती और मैं कपल हैं। मैंने सोचा कि तुम्हें बता दूं,' मैंने एक कैजुअल डायलॉग बोलने की कोशिश की, लेकिन इससे भी काम नहीं बना।

आखिर हम उस वाक्य को इतनी आसानी से कैसे बोल सकते हैं, जिसे हम सालों से कहना चाह रहे हों?

मैं चाहता था कि मेरे शब्द उसे बम के धमाके की तरह लगें। उसे ऐसा लगे जैसे उस पर किसी ने जानलेवा हथियार से हमला किया हो। मैं उसे बता देना चाहता था कि उसके कारण मैंने अपनी पूरी जिंदगी अपने को कितना छोटा महसूस किया है। मैं चाहता था कि मेरी कार, मेरी कामयाबी को देखकर वह जल–भुन जाए। उसे यह जानकर गहरी ठेस पहुंचे कि जिस लड़की को उसने मुझसे छीन लिया था, वह भी अब उसके साथ नहीं है। वास्तव में मैं उसे बिना कहे ही यह कह देना चाहता था – 'आई एम बेटर देन यू, एसहोल!'

आरती के कॉल ने मेरे विचारों में खलल डाला।

'उन लोगों ने उसके ऑफिस को तहस–नहस कर दिया है,' उसने कहा। उसकी आवाज से लग रहा था कि वह बहुत परेशान है।

'अच्छा?' मैंने अनजान बनने का अभिनय किया।

'अब 'रेवोल्यूशन 2020' नहीं छप सकता। प्रेस भी तोड़ दी गई है,' उसने कहा।

मैंने अपनी डेस्क पर रखी फाइलों पर नजर दौड़ाई।

मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह स्टुपिड अखबार छपता है या नहीं छपता है।

'तुम मेरी बात सुन रहे हो?' आरती ने कहा।

'विधायक शुक्ला को जेल जाना पड़ सकता है,' मैंने कहा।

'उसे जेल जाना ही चाहिए, है ना? उसने जनता का पैसा चुरा लिया और नदी को गंदा कर दिया।'

'तुम उसकी तरफ हो या मेरी तरफ?' मैंने झुंझलाते हुए आरती से कहा।

'क्या? इसमें किसी की तरफ होने वाली क्या बात है?' उसने कहा।

'तुम मेरे साथ हो?' मैंने कहा।

'क्या?' उसने कहा।

'तुम मेरे साथ हो?'

'हां। लेकिन क्या हमें राघव के सेटल हो जाने तक इंतजार नहीं करना चाहिए?'

'क्या वह अपनी जिंदगी में कभी सेटल हो पाएगा?'

वह चुप हो गई।

'मेरे घर आओ,' मैंने कहा।

'तुम्हारे घर?' उसने कहा। 'तुम मुझे फाइनली अपना नया घर दिखाओगे?'

'हां।'

'कल कैसा रहेगा? मेरी मॉर्निंग शिफ्ट है। तीन बजे तक काम पूरा हो जाएगा।'

'मैं अपनी कार भिजवा दूंगा,' मैंने कहा।

मेरी एक नजर टीवी पर थी और दूसरी पोर्च पर जमी हुई थी। मैं अपनी मर्सीडीज के आने का इंतजार कर रहा था, जिसमें बैठकर आरती आ रही थी। दोपहर को हुई बारिश के कारण ट्रैफिक की रफ्तार धीमी पड़ गई थी। इसी कारण कार को आने में सामान्य से ज्यादा समय लग रहा था। टीवी पर शुक्ला–जी की गिरफ्तारी की तस्वीरें दिखाई जा रही थीं।

'मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है। मुझे यकीन है कि मैं जल्द ही रिहा हो जाऊंगा,' उन्होंने एक चैनल से बात करते हुए कहा। उन्होंने लोगों की सहानुभूति जीतने के लिए समय से पहले ही खुद को गिरफ्तार करवा दिया था। जेल जाने से पहले उन्होंने मुझे कॉल किया था। वे रिलैक्स नजर आ रहे थे। शायद उन्होंने अपनी पार्टी से कोई सौदा कर लिया था। पर शायद उन्हें पता नहीं था कि पार्टी ने उन्हें बलि का बकरा बना दिया है।

'जेल इतनी बुरी नहीं है। यदि मुझे इसके लिए पैसा चुकाना पड़े तो यह किसी होटल की तरह होगी,' उन्होंने मुझसे कहा था।

मैंने काली कार को आते देखा। मेरा दिल जोरों–से धड़कने लगा। मैं दौड़कर बाहर पहुंचा।

34

वह कार से बाहर निकली। वह अपने काम की यूनिफॉर्म यानी साड़ी में आई थी।

'वॉव, तुम तो अब बंगले वाले हो गए हो!' उसने कहा। 'यह 'मेरा' नहीं 'हमारा' है', मैं उससे कहना चाहता था, लेकिन नहीं कहा।

उसने मुझे हग किया, लेकिन वह गंभीर नजर आ रही थी।

'सब ठीक तो है?' मैंने पूछा।

'राघव की खबर ने बहुत उथलपुथल मचा दी है।

यहां तक कि मेरे परिवार पर भी इसका असर पड़ा है,' उसने कहा।

'क्या हुआ?' मैंने कहा। 'लेकिन यह क्या है, पहले भीतर तो आओ!'

वह भीतर आई। उसने सिल्क के नए कार्पेट पर कदम रखा, जो मैंने उसके लिए बिछाया था। उसने बड़ी–सी टीवी, वेलवेट के सोफे और आठ सीटों वाली डायनिंग टेबल देखी। एक पल को वह राघव के बारे में सबकुछ भूल गई।

'तुम्हारा कॉलेज इतना अच्छा चल रहा है!' उसने कहा। उसकी आंखें फैल गई थीं।

'यह तो केवल शुरुआत है,' मैंने कहा और उसे बांहों में भर लेने के लिए आगे बढ़ा। 'अगर तुम मेरा साथ दो तो देखना मैं इस कॉलेज को कहां से कहां ले जाऊंगा। तीन साल के भीतर मैं इसे यूनिवर्सिटी स्टेटस दिलवा दूंगा।'

'तुम तो बड़े आदमी बन गए हो, गोपाल,' उसने कहा।

मैंने अपना सिर हिलाया। 'लेकिन तुम्हारे लिए, मैं वही पुराना गोपी हूं,' मैंने कहा। फिर मैंने उसका माथा चूम लिया।

मैं उसे अपना घर दिखाने लगा। हम ऊपर गए और तीनों बेडरूम्स को देखा। मेरे रूम में एक किंगसाइज बेड था, जिस पर बारह इंच मोटा मैट्रेस बिछा था। बेड के पास मैंने एक आरामकुर्सी रखी थी, जो बाबा की आरामकुर्सी से मिलती–जुलती थी।

मैं उसे घर दिखाता रहा, लेकिन वह चुप रही। मैं जब भी उसे कोई चीज दिखाता, जैसे मार्बल टाइल्स या स्प्लिट एयर कंडीशनर, वह हैरत से उसे देखती रहती। लेकिन शायद उसे मेरे घर से ज्यादा दिलचस्पी मेरे चेहरे पर झलक रहे उत्साह को देखने में थी।

मैं बिस्तर पर पसर गया। वह आरामकुर्सी पर बैठ गई। हमने खिड़की की ओर देखा, जिसके शीशों पर बारिश का पानी तड़ातड़ बरस रहा था।

'बारिश हो रही है,' उसने उत्साह के साथ कहा।

'यह अच्छा शगुन है। तुम पहली बार हमारे घर आई और बारिश होने लगी,' मैंने कहा।

उसकी एक भौंह तन गई।

'यह हमारा घर है, मेरा नहीं। यह मैंने हम दोनों के लिए बनाया है,' मैंने कहा।

'शट अप। जब कंस्ट्रक्शन शुरू हुआ था, तब तुम्हें नहीं पता था कि हम साथ–साथ होंगे,' उसने कहा और खिलखिलाकर हंस पड़ी।

मैं मुस्करा दिया। 'करेक्ट। लेकिन मैंने यह सब हम दोनों के लिए ही किया है। नहीं तो मुझे इतने बड़े घर की भला क्या जरूरत थी?'

'तुम डायरेक्टर हो। डायरेक्टर होना कोई मजाक नहीं होता,' उसने कहा।

'तुम राघव के बारे में बात करना चाहती हो?' मैंने कहा। मुझे लगा कि शायद उसे इसकी जरूरत थी।

'हमें उस बारे में बात करने की जरूरत नहीं है,' उसने कहा और एक साहसी मुस्कराहट के साथ अपना सिर हिला दिया।

'यहां आओ,' मैंने बिस्तर पर थपकी देते हुए कहा।

वह झिझकी, लेकिन मैंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। उसने मेरा हाथ थाम लिया। मैंने उसे आहिस्ते–से खींच लिया। मैंने उसे किस किया और उसने भी बदले में मुझे किस किया। उसकी आंखें मुंदी हुई थीं। यह आवेशपूर्ण और कामुक चुंबन नहीं था, यह पवित्र और शुद्ध चुंबन था, अगर इस तरह का कोई चुंबन मुमकिन होता हो तो। खैर, हमने एक–दूसरे को बहुत देर तक चूमा। हम एक–दूसरे को इतने आहिस्ते–से चूम रहे थे, जितने आहिस्ते–से खिड़की पर बारिश गिर रही थी।

मैंने अपने गालों पर उसके आंसू महसूस किए। मैं रुक गया और उसके कंधों को थाम लिया। उसने मुझे बांहों में भर लिया और मेरे सीने में अपना चेहरा छुपा लिया।

आरती हमेशा ऐसा ही करती थी और मुझे ऐसा बहुत अच्छा लगता था। इससे मैं खुद को प्रोटेक्टिव महसूस करता था।

'क्या हुआ, माय लव?' मैंने उससे कहा।

'मैं तुम्हारी कामयाबी के लिए बहुत खुश हूं, गोपाल, रियली।'

'तुम्हारी नहीं हमारी कहो,' मैंने कहा।

उसने अपने आंसू निगलते हुए सिर हिला दिया।

'मैं हम दोनों के लिए खुश हूं और मैं नहीं चाहती कि तुम अपने इन कीमती लम्हों को मुझे अपना घर दिखाने में ही गंवा दो।'

'इट्स फाइन,' मैंने कहा।

'तुमने यहां तक पहुंचने के लिए बहुत मेहनत की है। तुम इस सबके लायक हो,' उसने कहा।

'तुम किस बारे में बात करना चाह रही थी?' मैंने कहा।

उसने सिर हिलाया और खुद को संभालने की कोशिश करने लगी। मैं उसके बोलने का इंतजार करता रहा।

'मैं ठीक हूं। लड़कियां इमोशनल होती हैं। तुम जल्द ही मेरी ड्रामेबाजी के आदी हो जाओगे,' उसने कहा।

'मैं तुम्हारी इन ड्रामेबाजियों के लिए ही जी रहा हूं,' मैंने कहा।

वह मुस्करा दी।

'राघव कैसा है?'

'उन लोगों ने उसका ऑफिस तहस–नहस कर दिया है,' उसने कहा।

'पॉलिटिशियंस बहुत कमीने होते हैं। उसे तो कुछ नहीं हुआ ना?' मैंने कहा।

'नहीं, थैंक गॉड। लेकिन कम्प्यूटर और मशीनें टूट गई हैं। वह पेपर छापना चाहता है, लेकिन उसके पास पैसा नहीं है।'

'उसे पैसा चाहिए? वह मुझसे कह सकता है,' मैंने कहा। मैं चाहता था कि वह घुटनों के बल आए और मेरे सामने गिड़गिड़ाए।

'तुम जानते हो वह ऐसा कभी नहीं करेगा। वह तो मुझसे भी पैसे नहीं लेगा।'

'तो?' मैंने कहा।

'वह कुछ न कुछ करने की कोशिश कर रहा है।'

'क्या तुम अब भी मेरे साथ हो?' मैंने कहा।

'गोपाल!' उसने कहा।

'क्या हुआ?'

'नहीं तो आज मैं यहां तुम्हारे बेड पर नहीं बैठी होती, तुम यह जानते हो...' 'ओके, ओके,' मैंने कहा। मैंने एक तकिया उठाया और उसकी आरामकुर्सी के हत्थे से टिककर बैठ गया। वह मेरे सामने थी।

'तुम्हें मुझसे इतने सारे सवाल पूछने बंद कर देने चाहिए। प्लीज अंडरस्टैंड, यह मेरे लिए बहुत मुश्किल है,' उसने कहा।

'क्या?' मैंने कहा।

उसको बेदखल करना। खासतौर पर इस समय। और तुम चाहते हो कि उसे यह खबर तुम सुनाओ।'

'जिंदगी इसी का नाम है, आरती,' मैंने कहा। मैं अगले हफ्ते राघव से मिलने की प्लानिंग कर रहा था।

'तुम्हें सेंसेटिव होना चाहिए,' उसने कहा।

'जब मैं लगातार दो साल तक अपने एंट्रेंस एग्जाम क्लीयर नहीं कर पाया, तब तो कोई मेरे लिए सेंसेटिव नहीं था। जब बाबा की मौत हुई, तब तो किसी ने कोई परवाह नहीं की। मुझे उन हालात से अकेले ही जूझना पड़ा, आरती। वह भी जिंदगी का मुकाबला करना सीख जाएगा।'

'तुम लड़के भी... तुम लोग इतने कॉम्पिटिटिव क्यों होते हो?' उसने कहा।

'मैं? अब राघव मेरे मुकाबले में कुछ भी नहीं है। मैं भला क्यों उससे कंपीट करूंगा?'

'फिर भी हम कुछ महीने वेट कर सकते हैं...' उसने कहा, लेकिन मैंने उसकी बात काट दी।

'मैं तुम्हें किसी और की गर्लफ्रेंड की तरह देखना बर्दाश्त नहीं कर सकता,' मैंने कहा। मेरी आवाज तेज थी।

'रिलैक्स,' उसने मेरे गाल पर थपकी देते हुए कहा।

'एक पल के लिए भी नहीं,' मैंने कहा।

मैंने उसकी साड़ी का पल्लू थाम लिया और उसे अपनी ओर खींच लिया। हमने फिर किस किया। बारिश तेज हो गई थी और वह खिड़की पर लय के साथ बरस रही थी। हम एक-दूसरे को चूमते रहे और स्वाभाविक रूप से मेरे हाथ उसके ब्लाउज में चले गए।

'मिस्टर डायरेक्टर,' वह मुस्करा दी, 'मैंने ख्याल से आपसे कहा था कि जब तक वह मेरी जिंदगी से बेदखल नहीं हो जाता, तब तक आप यह सब नहीं करेंगे।'

'क्या वह तुम्हारी जिंदगी से बेदखल नहीं हो चुका है?' मैंने कहा।

'तकरीबन,' उसने अपनी आंखें बंद करते हुए कहा।

'ठीक, शायद इसके बाद वह पूरी तरह तुम्हारी जिंदगी से बेदखल हो जाएगा,' मैंने कहा और उसके होंठों को फिर चूम लिया।

मैं उसे बेतरह चूम रहा था, ठीक वैसे ही, जैसे खिड़की पर बारिश बेतरह गिर रही थी। हमने इस बार पिछली बार से ज्यादा कॉन्फिडेंस के साथ अपने कपड़े उतारे।

'ये मेरे वर्किंग के कपड़े हैं, प्लीज उन्हें ध्यान से रखना,' उसने कहा। मैं उसकी साड़ी को फोल्ड करने की नाकाम कोशिश करने लगा।

कई मौकों पर हमारे नंगे बदन गर्म और खुशनुमा लग रहे थे। हम रजाई में सरक गए और एक-दूसरे को घंटों तक प्यार करते रहे। बारिश रुक-रुककर फिर शुरू होती रही। वह मेरे करीब आना चाहती थी, शायद इस बात को जस्टिफाई करने के लिए कि वह अब राघव से दूर हो जाना चाहती है। मैं भी उसे बता देना चाहता था कि वह मेरे लिए क्या मायने रखती है। मैं उसके लिए काम, पढ़ाई, कॉलेज सब कुछ छोड़ सकता था।

इस बार जब उसने मेरे सामने आत्मसमर्पण किया, तब वह सीधे मेरी आंखों में देख रही थी।

फिर हमारी झपकी लग गई।

'आठ के ऊपर बज गए हैं,' उसने साइड-टेबल पर रखा अपना मोबाइल देखते हुए कहा।

'दस मिनट और,' मैंने उसके कंधे से सटते हुए कहा।

'ओके, ओके, बाबा,' उसने कहा। 'और मुझे भूख लग रही है। इतना बड़ा घर है और खाने को कुछ भी नहीं!'

मैं उठ बैठा। मेरा शरीर अब भी अलसाया हुआ था।

मैंने कहा, 'खाना है ना। कुक ने तुम्हारे लिए बहुत सारी चीजें बनाई थीं। चलो, नीचे चलते हैं।'

35

कमरे में गर्म समोसे, जलेबियां, मसाला चीज टोस्ट और गर्म चाय तैयार थी।

'यह हेल्दी फूड नहीं है,' आरती ने कहा। हम एक-दूसरे के सामने डाइनिंग टेबल पर बैठे थे।

'हां, लेकिन अगर बारिश हो रही हो तो इसका कोई जवाब नहीं,' मैंने कहा।

मैंने लाइट जला दी, क्योंकि शाम घिर आई थी। वह चुपचाप खाती रही। वह खाने के साथ ही उस सब को भी अपने भीतर आराम से उतारने की कोशिश कर रही थी, जो अभी-अभी हुआ था। मैं दोपहर के बारे में बात करना चाहता था, लेकिन अपने आपको रोक लिया। लड़कियां इंटिमेट मोमेंट्स के बारे में बात करना पसंद नहीं करतीं, खासतौर पर तब, जब उनसे इस बारे में पूछने की कोशिश की जाए। लेकिन यदि हम उन लम्हों को बिलकुल ही नजरअंदाज कर दें, तो भी वे अपसेट हो जाती हैं।

'अमेजिंग, वंडरफुल,' मैंने कहा।

'समोसे?' उसने कहा, हालांकि वह जानती थी कि मेरा इशारा किस ओर है।

'नहीं, जलेबियां,' मैंने कहा।

उसने इस लज्जतदार मिठाई का एक टुकड़ा मुझ पर फेंक मारा।

'यह मेरी जिंदगी की सबसे खूबसूरत दोपहर थी,' हमारी हंसी थमने के बाद मैंने कहा।

'सभी लड़के यही तो चाहते हैं,' उसने कहा।

मैं समझ गया कि अब मुझे इस बारे में बात नहीं करनी चाहिए, नहीं तो उस पर फिर से वही गिल्ट हावी हो जाएगी।

'हे, तुमने कहा था कि राघव के कारण तुम्हारी फैमिली को भी दिक्कतें आ रही हैं?' मैंने कहा।

'वेल, तुम जानते ही हो कि सीएम ने शुक्ला को हटा दिया है, है ना? उसने अपनी इच्छा से इस्तीफा नहीं दिया है, जैसा कि वह कहता है। पार्टी ने उसे इस्तीफा देने को कहा था,' उसने कहा।

'हां, मैं जानता हूं,' मैंने कहा।

उसने अपने लिए चाय का दूसरा प्याला तैयार किया।

मैं कल्पना करने लगा कि मानो वह मेरे साथ इसी घर में रहती है। कैसा हो अगर हम सुबह उठें और बेड टी पीएं। या शायद, बेड के बजाय टेरेस में चाय पीना ज्यादा बेहतर होगा। या लॉन में। मैं कल्पना करने लगा कि हम बांस की कुर्सियों पर बैठे हैं और घंटों तक बतिया रहे हैं। फिर मैं सोचने लगा कि वह गंगाटेक कॉलेज ऑफ हॉस्पिटैलिटी की प्रिंसिपल है। चूंकि वह अब तक की सबसे क्यूट प्रिंसिपल है, इसलिए स्टूडेंट्स उसके साथ फ्लर्ट करते हैं। मैं तो यह भी उम्मीद कर रहा था कि वे... 'ध्यान किधर है?' उसने चम्मच पर अपने कप को बजाकर पूछा।

'हूं?' मैंने कहा। 'सॉरी। हां, पार्टी ने ही शुक्ला-जी से इस्तीफा लिया है। तो?'

'अगले साल चुनाव के लिए पार्टी के पास कोई और स्ट्रॉन्ग कैंडिडेट नहीं है,' आरती ने कहा।

'उन्हें कोई न कोई जरूर मिल जाएगा,' मैंने कहा।

मैंने अपनी चाय पूरी की और टेबल पर खाली कप रख दिया। उसने मेरे कप में थोड़ी और चाय उड़ेल दी।

मैं लगभग फिर से एक और ड्रीम सीक्वेंस में जा रहा था, लेकिन मैंने खुद पर काबू किया और उसकी बात सुनने लगा।

'उन्हें एक ऐसा कैंडिडेट चाहिए, जो जीत सके। वे इस शहर को नहीं गंवा सकते। इस सीट से पार्टी की प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है,' उसने कहा।

'लेकिन इससे तुम्हें क्या फर्क पड़ता है?'

'वे चाहते हैं कि डैड कैंडिडेट बनें,' आरती ने कहा।

'ओह!' मैंने कहा। मैं पार्टी से आरती के दादाजी के कनेक्शन के बारे में भूल गया था। वे तीस साल तक लगातार इस सीट से जीतते रहे थे।

'हां। अब हमारे घर पर रोज दर्जनों लोग आते हैं और उनसे मिन्नतें करते हैं कि प्रधान-जी, प्लीज चुनाव लड़ने को राजी हो जाइए।'

'वे चुनाव नहीं लड़ना चाहते?'

आरती ने सिर हिला दिया।

'क्यों?' मैंने कहा।

'उन्हें राजनीति पसंद नहीं है। फिर, उनकी हेल्थ की भी प्रॉब्लम है। घुटनों की तकलीफ के कारण वे ज्यादा देर तक चल नहीं सकते या खड़े नहीं रह सकते। वे चुनाव प्रचार कैसे करेंगे और इतनी सारी रैलियों में कैसे बोलेंगे?' आरती ने कहा।

'सही है।'

'नहीं, बात केवल इतनी ही नहीं है,' आरती ने कहा, 'तुमने सबसे ऊटपटांग सुझाव तो अभी सुना ही नहीं।'

'क्या?'

'वे लोग तो यह भी कह रहे हैं कि मैं चुनाव लड़ूं,' आरती ने कहा और जोरों से हंस पड़ी, मानो उसने कोई बहुत बड़ा जोक सुनाया हो, लेकिन मुझे तो इसमें मजाक जैसा कुछ नहीं लगा।

'हां,' मैंने कहा, 'इस बारे में जरूर कुछ सोचा जा सकता है।'

'पागल हो गए हो क्या?' आरती ने कहा। 'मैं और राजनीति? [illegible] अच्छी तरह जानते हो। मेरे घर वाले पहले ही मेरे पंखों को काटकर मुझे ग्लाइड

अटेंड्ट से गया मिलकर बात पूछे है और अब न जानते हैं कि गांव की गैर कम और सत्तर साल के बूढ़ों के साथ दिनभर बैठी रहूं?'

'यह पॉवर है, आरती,' मैंने कहा। 'इस देश में पॉवर की बहुत अहमियत है।'

'मुझे पॉवर की परवाह नहीं। न ही मुझे उसकी जरूरत है। मैं खुश हूं,' आरती ने कहा।

मैंने उसकी आंखों में झांक कर देखा। उसकी बात सच्ची लग रही थी।

'क्या तुम मेरे साथ खुश हो?'

'खुश रहूंगी। हमें कुछ मसले सुलझाने होंगे, लेकिन मुझे पता है मैं तुम्हारे साथ खुश रहूंगी,' उसने कहा।

ऐसा लगा, जैसे उसने यह बात मुझसे ज्यादा खुद से कही है।

इसके कुछ ही समय बाद वह चली गई। उसके घर पर कुछ लोग आए थे। पार्टी के कुछ और रसूखदार लोग, जो आरती से भी मिलना चाहते थे। मैं उसे घर छोड़ने गया, ताकि मुझे उसके साथ थोड़ा और समय बिताने का मौका मिले।

'यहां से लौटते समय तुम अकेले रहोगे,' आरती ने कहा।

मैंने कंधे उचका दिए।

'थैंक्स फॉर अ लवली डे,' घर पहुंचने पर उसने कहा।

'माय प्लेजर,' मैंने कहा। 'अब तुम्हें नेताओं के साथ भी डिनर करने का मौका मिलेगा।'

'ओह, प्लीज। इससे तो अच्छा होगा कि कोई मुझे गोली से उड़ा दे,' उसने कहा। हम दोनों कार से बाहर निकले। वह अपने घर की ओर जाने लगी, मैं गाड़ी के बोनेट पर झुक गया।

'आर यू श्योर कि तुम विधायक नहीं बनना चाहती?' मैंने पीछे से कहा।

वह मेरी ओर मुड़ी। 'नो वे,' उसने कहा। 'शायद मेरा हसबैंड विधायक बन सकता है, यदि वह चाहे तो।'

अपने घर में घुसने से पहले उसने मुझे आंख मारी।

मैं वहीं खड़ा था। मुझे हैरानी हुई थी। क्या वह कुछ जताने की कोशिश कर रही थी? क्या वह चाहती है कि मैं विधायक बनूं? इससे भी खास बात यह कि क्या वह यह चाहती है कि मैं उसका हसबैंड बनूं?

'आरती, तुमने क्या कहा?' मैंने कहा।

लेकिन तब तक वह भीतर जा चुकी थी।

मुझे नहीं पता था कि बनारस सेंट्रल जेल में प्राइवेट कमरा भी थे। मैं शुक्ला-जी के सेल में उनसे मिलने गया। जैसा कि उन्होंने कहा था, मैं उनके लिए फलों के तीन बॉक्स, जॉनी वॉकर ब्लैक लेबल की दो बोतलें और एक-एक किलो नमकीन काजू और बादाम ले गया था। सुरक्षा कारणों से मेरी जांच करने वाले पुलिस वाले ने मुझसे यह सारा सामान लिया और उसे शुक्ला-जी तक पहुंचाने का वादा किया। मैंने सोचा था कि विधायक मुझसे वेटिंग एरिया में मिलेंगे, लेकिन मुझे सीधे उनके सेल तक जाने दिया गया।

वे अपने कमरे में बैठे एक छोटी-सी कलर टीवी पर कुछ देख रहे थे और स्ट्रॉ से कोला पी रहे थे।

'नॉट बैड, क्यों?' उन्होंने कहा। उन्होंने अपना पंद्रह बाय दस फीट का सेल दिखाने के लिए अपने हाथ फैला दिए। उसमें एक बेड था, जिस पर साफ चादरें बिछी थीं। एक डेस्क और कुर्सी, क्लोसेट और टीवी भी थी। यकीनन, यह कोई बुरी जेल नहीं थी। वह जेल से ज्यादा गवर्नमेंट गेस्टहाउस लग रही थी। बहरहाल, शुक्ला-जी के आलीशान बंगले से उसकी कोई तुलना नहीं थी।

'यह तो बहुत बुरा है,' मैंने कहा।

वे हंस पड़े।

'तुम्हें मुझसे पहले मिलना चाहिए था, जब मैंने राजनीति शुरू की थी,' उन्होंने कहा। 'मैं रेलवे प्लेटफॉर्मों पर सोया हूं।'

'मुझे बहुत बुरा लग रहा है,' मैंने लकड़ी की एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

'ज्यादा से ज्यादा छह महीने,' उन्होंने कहा। 'फिर, यहां मुझे किसी बात की कमी नहीं है। तुम्हें ताज गंगा का खाना खाना है?'

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।

'कार कैसी है?' उन्होंने कहा।

'बेजोड़,' मैंने कहा।

'कॉलेज?' उन्होंने कहा।

'बढ़िया चल रहा है। हालांकि हमारी रफ्तार कुछ धीमी पड़ी है। हमारे पास पैसा नहीं है,' मैंने कहा।

'पैसों का बंदोबस्त तो मैं करवा दूंगा,' शुक्ला-जी ने कहा।

'कोई बात नहीं, शुक्ला-जी। अभी किसी बात की जल्दी नहीं है,' मैंने कहा।

उन्होंने टीवी बंद कर दी। 'यह सब तुम्हारे दोस्त का ही किया-धरा है,' उन्होंने कहा।

'वह मेरा दोस्त नहीं है। दूसरे अब उसका काम तमाम हो चुका है। और आप जल्द ही वापसी करेंगे,' मैंने कहा।

'अगली बार मुझे टिकट नहीं मिलने वाला,' उन्होंने उदास मन से कहा।

'हां, मैंने सुना,' मैंने कहा।

'किससे?' शुक्ला-जी हैरान थे।

आरती ने मुझे जो बताया था, वह मैंने उन्हें बता दिया। हालांकि मैंने राघव से आरती के संबंधों के बारे में उन्हें नहीं बताया, न ही हमारे आपसी रिश्तों के बारे में कुछ बताया।

'ओह, तुम उसे बहुत समय से जानते हो ना?'

उन्होंने कहा।

'स्कूल फ्रेंड,' मैंने कहा।

'तो उसके पिता चुनाव नहीं लड़ेंगे?' शुक्ला-जी ने कहा।

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया। 'और न ही उनकी बेटी चुनाव लड़ेगी। वह पॉलिटिक्स से नफरत करती है।

तो शायद आपके पास अब भी एक मौका है,' मैंने कहा।

'नहीं अभी नहीं,' शुक्ला-जी ने मेरी बात खारिज करते हुए कहा। 'मुझे जेल से छूटने के बाद इंतजार करना होगा।'

'तो क्या वे किसी और की तलाश करेंगे?'

'डीएम प्रधान की फैमिली निश्चित ही जीत जाएगी,' उन्होंने कहा। 'लोग उन्हें चाहते हैं।'

'लेकिन उन लोगों की तो कोई दिलचस्पी नहीं है,' मैंने कहा।

'तुम उस लड़की के कितने करीब हो?' उनके इस तीखे सवाल ने मुझे दुविधा में डाल दिया।

मैं शुक्ला-जी से कभी झूठ नहीं बोलता था। लेकिन मैं उन्हें आरती और मेरे रिश्तों के बारे में भी नहीं बताना चाहता था।

मैं चुप रहा।

'तुम उसे पसंद करते हो?' उन्होंने पूछा।

'छोड़िए, शुक्ला-जी। आप तो जानते ही हैं मेरा पूरा ध्यान अपने काम में लगा हुआ है,' मैंने विषय बदलने की कोशिश करते हुए कहा।

'मैं काम की ही बात कर रहा हूं, यू सिली बॉय,' शुक्ला-जी ने कहा।

'क्या?' मैंने कहा। मैं हैरान था कि जेल में होने के बावजूद शुक्ला-जी की राजनीति में कितनी दिलचस्पी बरकरार थी।

'तुम उससे शादी कर लो। यदि वह टूटे पुरजों वाला डीएम चुनाव लड़ नहीं सकता और उसकी बेटी चुनाव लड़ना नहीं चाहती, तो दामाद ही सही।'

'क्या? आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?'

'मैंने राजनीति में पच्चीस साल बिता दिए हैं, बच्चू।

जाहिर है, वे लोग क्या करेंगे। देखते जाओ। वे जल्द ही उनकी बेटी की शादी कर देंगे।'

'हां, उसके पैरेंट्स उस पर शादी के लिए दबाव तो बना रहे हैं।'

'तुम उससे शादी कर लो। चुनाव लड़ो और जीतो।'

मैं चुप रहा।

'तुम्हें कुछ अंदाजा है यदि तुम विधायक बन गए तो तुम्हारा गंगाटेक कहां से कहां पहुंच जाएगा? मैं भी देर-सबेर राजनीति में लौट आऊंगा। शायद किसी दूसरे विधानसभा क्षेत्र से चुनाव जीतकर। और यदि हम दोनों पॉवर में रहे, तो हम इस शहर पर राज करेंगे। शायद इस राज्य पर भी। उसके दादा-जी तो वैसे भी मुख्यमंत्री रह चुके हैं!'

'मैंने अभी तक शादी के बारे में सोचा नहीं है,' मैं झूठ बोल गया।

'सोचो मत, कर डालो। तुम्हें लगता है वह तुमसे शादी करेगी?' उन्होंने पूछा।

मैंने अपने कंधे उचका दिए।

'उसकी मां को अपनी कार और दौलत दिखाओ।

दहेज की मांग मत करो। यदि बेटी राजी नहीं हुई तो भी मां तो राजी हो ही जाएगी।'

'शुक्ला–जी? मैं और राजनीति?'

'हां। पॉलिटिशियन, बिजनेसमैन और एजुकेशनिस्ट – पॉवर, मनी और रिस्पेक्ट – परफेक्ट कॉम्बिनेशन। तुम्हारे भाग्य में ही बड़ा आदमी बनना लिखा है। जिस दिन तुम मेरे ऑफिस में आए, उसी दिन मैं यह समझ गया था,' उन्होंने कहा।

शुक्ला–जी ने दो गिलासों में कुछ ब्लैक लेबल व्हिस्की उडेली। उन्होंने गार्ड से कुछ आइस मांगी। मैं चुप रहा। वे ड्रिंक तैयार करते रहे और मैं सोच में डूबा रहा। यकीनन, भारत में पॉवर हमेशा अच्छी चीज ही होती है। कोई भी काम करवाने के लिए पॉवर चाहिए।

पॉवर का मतलब है कि लोग मुझे हंसते–हंसते पैसे दे देंगे, मुझे अपना काम कराने के लिए उन्हें पैसे नहीं देना होंगे। यदि मेरे पास पॉवर हो तो गंगाटेक दस गुना बड़ा संस्थान बन सकता था। फिर, मैं आरती को तो वैसे भी प्यार करता ही था। मुझे उससे शादी करना ही थी। तो अभी क्यों नहीं? फिर उसने भी तो इस ओर इशारा किया था। मैंने एक गहरी सांस छोड़ी।

मैं अपने आपसे जूझ रहा था। 'इट्स ओके, गोपाल', मैंने खुद से कहा, 'तुम्हें जिंदगी में बड़े काम करने हैं।

तुम एआईईईई रैंक हासिल नहीं कर पाए, तुम मोलीक्यूलर फॉर्मूला याद नहीं कर पाए, इसका यह मतलब नहीं कि तुम जिंदगी में बड़े काम नहीं कर सकते।' आखिर, मैंने एक कॉलेज खोला था, मैं एक बड़े–से घर में रहता था और मेरे पास महंगी कार थी।

शुक्ला–जी ने मुझे अपनी ड्रिंक थमा दी।

'मैं शादी के लिए तैयार हूं,' मैंने कहा।

'बधाई हो, दामाद–जी!' शुक्ला–जी ने अपना गिलास उठाया।

36

'बिजी?' मैंने कहा।

मैंने आरती के होटल पर फोन लगाया था। एक टूरिस्ट उस पर चिल्ला रहा था, क्योंकि उसके रूम में पर्याप्त पानी नहीं था। आरती ने मुझे होल्ड पर रखा, जबकि उसका गेस्ट फ्रेंच में उसे कोसे जा रहा था।

'मैं बाद में लगाता हूं,' मैंने कहा।

'इट्स फाइन। हाउसकीपिंग वाले उनकी प्रॉब्लम दूर कर देंगे। मेरे तो कान बजने लगे हैं!' आरती ने शोरगुल से तंग आकर कहा।

'एक दिन तुम्हारा अपना कॉलेज होगा। तब तुम्हें यह सब करने की जरूरत नहीं होगी।'

'इट्स ओके, गोपाल। मुझे अपना काम पसंद है। बस कभी–कभी हमारा सामना अजीबो–गरीब लोगों से हो जाता है। खैर, क्या चल रहा है?'

'डिनर कैसा रहा?'

'बोरिंग। जब लगातार पांचवीं बार मुझे बताया गया कि पार्टी के लिए प्रधान परिवार को क्या करना चाहिए तो मुझे तो टेबल पर ही झपकी आ गई।'

'टिकट वाले मामले में कोई नतीजा निकला?'

'यह राजनीति है, डायरेक्टर सर। इसमें चीजें इतनी जल्दी तय नहीं होतीं। वैसे भी, चुनाव अगले साल हैं।'

'बाय कहते समय तुमने कुछ कहा था,' मैंने कहा।

मैं लगभग उसकी मुस्कराहट सुन सकता था। 'क्या मैंने कुछ कहा था?' उसने कहा।

'तुम्हारे हस्बैंड के विधायक बनने के बारे में कुछ?'

'हो सकता है, क्यों?' उसने कहा। उसकी आवाज में बच्चों–सा चुलबुलापन था।

'मैं सोच रहा था कि क्या मैं अप्लाई कर सकता हूं?' मैंने कहा।

'हसबैंड की पोस्ट के लिए या एमएलए की पोस्ट के लिए?' उसने कहा।

'पता नहीं। जिसकी वेटलिस्ट ज्यादा छोटी हो, उसके लिए,' मैंने कहा।

वह हंस पड़ी।

'हसबैंड वाली पोस्ट के लिए तो क्यू जरा लंबी है,' उसने कहा।

'मुझे क्यू जंप करना आता है,' मैंने कहा।

'हां, वो तो है,' उसने कहा। 'ओके, बाद में बात करें? एक और टूरिस्ट गेस्ट आया है।'

'मैं जल्द ही राघव से मिलने जाऊंगा।'

'मैंने उससे बातें करना बंद कर दिया है,' उसने कहा। उसने मेरे राघव से मिलने का विरोध नहीं किया।

मैंने इसे उसकी रजामंदी मान लिया।

'जान–बूझकर?'

'हां, हमारी कुछ कहा–सुनी हुई थी। नॉर्मली सुलह के लिए मैं पहल करती हूं। लेकिन इस बार मैंने कोशिश नहीं की।'

'गुड,' मैंने कहा। 'तो तुम्हारे नए टूरिस्ट क्या कह रहे हैं?'

'एक जापानी टूरिस्ट है, लेकिन जापानी लोग विनम्र होते हैं। वह तब तक इंतजार करती रहेगी, जब तक कि मैं अपनी बात नहीं पूरी कर लेती।'

'उसे कह दो कि तुम फोन पर अपने हसबैंड से बतिया रही हो।'

'शट् अप। बाय।'

'बाय,' मैंने कहा और फोन को किस कर लिया।

फिर मैंने अपनी डेस्क में रखा कैलेंडर खोला और अगले शुक्रवार को मार्क कर दिया। इसी दिन मुझे राघ्‌व से मिलना था।

मैंने अपनी गर्दन, कलाइयों और दोनों कलाइयों पर गुच्ची परफ्यूम को पांच बार स्प्रे किया। मैंने इस मौके के लिए एक नया ब्लैक शर्ट और एक कस्टम–मेड सूट पहना था। फिर मैंने रे–बैन के सनग्लासेस पहन लिए और आईने में अपनी सूरत देखी। सनग्लासेस गैरजरूरी नजर आ रहे थे, इसलिए मैंने उन्हें उतारकर अपने शर्ट की जेब में रख लिया।

मैंने शुक्रवार को छुट्टी ली थी। डीन सर मुझे फर्स्ट टर्म में स्टूडेंट्स की एक एकेडमिक परफॉर्मेंस रिपोर्ट दिखाकर बोर करने वाले थे। वैसे भी मुझे बाहर जाने के लिए किसी बहाने की दरकार थी।

'ऑल द बेस्ट। कोशिश करना कि उसे हर्ट न करो।'

आरती ने मुझे यह मैसेज किया था।

मैंने उसे भरोसा दिलाया कि मैं सिचुएशन को अच्छी तरह हैंडल करूंगा। वह अपनी ओर से राघव को यह मैसेज कर चुकी थी कि हमें बात करनी चाहिए, जिस पर राघव ने यह जवाब दिया था कि बातें करने के लिए यह ठीक समय नहीं है। यह ठीक वैसा ही व्यवहार था, जिसके कारण वह पहले से ही राघव से नाराज थी।

मैंने अपने ड्राइवर से नदेशर रोड चलने को कहा, जहां राघव का वर्कप्लेस था।

ऑटो रिपेयर शॉप्स की भीड़ में 'रेवोल्यूशन 2020' के ऑफिस को बड़ी आसानी से नजरअंदाज किया जा सकता था। राघव ने एक गैरेज रेंट पर ले रखा था।

ऑफिस में तीन एरियाज थे – भीतर प्रिंटिंग प्रेस थी, बीच में उसका क्यूबिकल था और एंट्रेंस पर स्टाफ और विजिटर्स के लिए एक कॉमन एरिया था।

'मे आई हेल्प यू?' एक टीन–एजर लड़के ने मुझसे पूछा।

'मैं राघव से मिलने आया हूं,' मैंने कहा।

'वे कुछ लोगों के साथ हैं,' लड़के ने कहा। 'क्या काम है?'

मैंने गैरेज के भीतर झांककर देखा। राघव के ऑफिस में एक ग्लास पार्टिशन भी था। वह अपनी डेस्क पर बैठा था। उसके सामने पगड़ी बांधे एक देहाती और एक दुबला–पतला–सा लड़का बैठा था। दोनों बाप–बेटे गरीब–बेसहारा नजर आ रहे थे। राघव दोनों की बातों को ध्यान से सुन रहा था। उसकी कोहनियां डेस्क पर टिकी थीं।

'इट्स पर्सनल,' मैंने उस टीन–एजर लड़के से कहा।

'क्या उन्हें आपके आने के बारे में पता है?'

'नहीं, लेकिन वह मुझे अच्छी तरह से जानता है,' मैंने कहा।

तभी राघव ने मुझे देख लिया और वह अपने केबिन से बाहर निकल आया।

'गोपाल?' राघव ने कहा। वह हैरान नजर आ रहा था। अगर वह मुझसे अपसेट भी था तो उसने यह जाहिर नहीं होने दिया।

राघव ने एक टी–शर्ट पहन रखी थी, जिस पर उसके अखबार का लोगो था। नीचे उसने एक पुरानी–सी जींस पहन रखी थी। वह मुश्किल दौर से गुजर रहा था, लेकिन उसे देखकर इसका अंदाजा लगा पाना कठिन था।

'क्या हम बात कर सकते हैं?' मैंने कहा।

'क्या हुआ?' राघव ने कहा। 'तुम्हें एमएलए शुक्ला ने भेजा है?'
'नहीं,' मैंने कहा। 'एक्चुअली, पर्सनल बात है।'
'तुम मुझे दस मिनट का समय दे सकते हो?' उसने कहा।
'मुझे ज्यादा लंबी बात नहीं करनी है,' मैंने कहा।
'आई एम रियली सॉरी। लेकिन ये लोग मुझसे मिलने के लिए सौ किलोमीटर दूर से आए हैं। उनके साथ बहुत बुरा हुआ है। मैं ये गया और ये आया।'
मैंने उसके ऑफिस पर नजर दौड़ाई। अब वह देहाती बच्चा अपने पिता की गोद में बैठ गया था। वह बीमार लग रहा था।
'ओके है,' मैंने कहा और समय देखा।
'थैंक्स। अंकित तुम्हारी देखभाल करेगा,' उसने कहा।
टीन-एजर लड़का मुझे देखकर मुस्कराया। राघव भीतर चला गया।
'प्लीज, बैठ जाइए,' अंकित ने खाली कुर्सियों की ओर इशारा करते हुए कहा। मैं एक कुर्सी पर बैठ गया।
समय काटने के लिए मैं अंकित से बतियाने लगा।
'यहां और कोई नहीं है?' मैंने कहा।
'यहां दो और स्टाफ मेंबर्स थे,' अंकित ने कहा, 'लेकिन यहां तोड़फोड़ होने के बाद वे चले गए। उनके पैरेंट्स को लगा कि यह जगह उनके लिए सुरक्षित नहीं है। फिर, सैलेरी भी नहीं मिल रही थी।'
'तो तुमने काम क्यों नहीं छोड़ा?' मैंने कहा।
अंकित ने अपना सिर हिलाया। 'मैं राघव सर के साथ काम करना चाहता था,' उसने कहा।
'क्यों?' मैंने कहा।
'क्योंकि वे बहुत अच्छे इंसान हैं,' अंकित ने कहा।
मैं मुस्करा दिया, जबकि उसके शब्दों से मुझे भीतर तक ठेस पहुंची थी।
'ऑफिस तो इतना बुरा नजर नहीं आ रहा है,' मैंने कहा।
'हमने इसकी सफाई की है। हालांकि हमारी प्रेस टूट चुकी है। हमारे पास कंप्यूटर भी नहीं है।'
'तुम लोगों ने बहुत बड़ी स्टोरी की थी,' मैंने कहा।
'तुम लोगों के ही कारण विधायक को इस्तीफा देना पड़ा।'
अंकित ने मेरी ओर देखा। 'मीडिया हमारी खबर को ले उड़ा, क्योंकि तब उन्हें उसकी जरूरत थी। लेकिन हमारी परवाह कौन करता है?'
'फिर अभी तुम लोग कैसे काम कर रहे हो?' मैंने पूछा।
अंकित ने डेस्क की एक दराज खोली। उसने कागज की एक बड़ी-सी शीट निकाली, जिस पर हाथ से कुछ लिखा हुआ था।
'ये आर्टिकल्स सर लिखते हैं। मैं मैट्रिमोनियल्स लिखता हूं। हम इनकी फोटोकॉपी करते हैं और जितनी हो सकती है, उतनी बांटते हैं।'
'कितनी?' मैंने पूछा।
'चार सौ कॉपियां। वे हाथ से लिखी और फोटोकॉपी की हुई होती हैं। जाहिर है, बहुत-से लोग पेपर के इस रूप को पसंद नहीं करते।'
मैंने ए-3 शीट पर नजर दौड़ाई। राघव ने वाराणसी की राशन की दुकानों में हो रही कालाबाजारी पर आर्टिकल्स लिखे थे। उसने हाथ से ही एक टेबल भी बनाई थी, जिसमें बताया गया था कि असल कीमतें क्या हैं, कालाबाजार की कीमतें क्या हैं और इसके चलते दुकानदार कितना पैसा कमा रहे हैं। मैंने पन्ना पलटाया। उस पर लगभग पचास मैट्रिमोनियल्स थे। सभी सधे हुए हाथ से लिखे गए थे।
'चार सौ कॉपी? इतने कम सर्कुलेशन के बाद तुम्हें विज्ञापन कैसे मिल पाते होंगे?'
अंकित ने कंधे उचका दिए और कोई जवाब नहीं दिया। 'मुझे फोटोकॉपी शॉप पर जाना है। यदि आपको अकेले बैठकर इंतजार करना पड़े, तो ऐतराज तो न होगा?'
'नो प्रॉब्लम। आई विल बी फाइन,' मैंने आराम से बैठते हुए कहा। मैंने अपना फोन देखा। आरती का एक मैसेज आया था – 'तुम जो भी करो, उसके साथ अच्छे-से पेश करना।'
मैंने फोन फिर अपनी जेब में रख लिया। मुझे सूट में गर्मी लग रही थी। मुझे अहसास हुआ कि फैन नहीं चल रहा था।
'फैन का स्विच कहां है?' मैंने अंकित से पूछा।
'बिजली नहीं है। सॉरी। उन लोगों ने कनेक्शन भी काट दिया था,' अंकित ने बाहर जाते हुए कहा।
मैंने अपनी जैकेट निकाली और शर्ट के ऊपर के दो बटन खोल दिए। मैंने सोचा कि इस जगह इंतजार करने से तो बेहतर है कि मैं अपनी कार में बैठकर वेट करूं। लेकिन अब ड्राइवर को वापस बुलाना बहुत पेचीदा होता। मैं एयर कंडीशंड माहौल का जरूरत से ज्यादा आदी हो चुका था। इस गर्म कमरे ने मुझे बाबा के साथ बिताए अपने शुरुआती दिनों की याद दिला दी।
पता नहीं क्यों, लेकिन दूसरे कमरे में अपने पिता की गोद में सो रहा बच्चा भी मुझे बाबा और अपनी याद दिला रहा था।
मैंने अपनी आंख के कोने से फिर भीतर देखा।
किसान की आंखों से आंसू बह रहे थे। मैं उसकी बात सुनने के लिए झुका।
'मैं अपना एक बच्चा और बीवी को गंवा चुका हूं।
मैं नहीं चाहता कि अपने परिवार के किसी और सदस्य को गंवाऊं। अब बस मेरे परिवार में यह बच्चा ही रह गया है,' वह हाथ जोड़कर कह रहा था।
'बिश्नु-जी, मैं आपकी बात समझता हूं,' राघव ने कहा। 'मेरे पेपर में दिमनापुरा प्लांट घोटाले के बारे में बड़ी खबर छपी थी। उसी वजह से उन लोगों ने मेरा ऑफिस भी तहस-नहस कर दिया।'
'लेकिन आप आकर मेरे गांव रोशनपुर की हालत देखिए। हर तरफ गंदगी मची हुई है। गांव के आधे बच्चे बीमार पड़ चुके हैं। छह की पहले ही मौत हो चुकी है।'
'रोशनपुर में एक और प्लांट है। शायद वहां भी किसी ने सरकार को धोखा दिया है,' राघव ने कहा।
'लेकिन कोई भी इसकी शिकायत नहीं कर रहा है।
अधिकारी कुछ नहीं कर रहे हैं। आप ही हमारी एकमात्र उम्मीद हैं,' किसान ने कहा। उसने अपनी पगड़ी उतारी और राघव की डेस्क पर रख दी।
'ये आप क्या कर रहे हैं, बिश्नु-जी?' राघव ने उस लाचार आदमी को उसकी पगड़ी लौटाते हुए कहा।
'मेरी कोई हैसियत नहीं है। मेरा अखबार बंद होने वाला है। हम हाथ से लिखी चंद कॉपियां बांटते हैं, जिनमें से अधिकतर तो रद्दी की टोकरी में चली जाती हैं।'
'मैंने अपने बेटे से कहा था कि आप इस शहर में सबसे बहादुर और सबसे ईमानदार आदमी हैं,' बिश्नु ने कहा। उसकी आवाज कांप रही थी।
राघव निराशा से मुस्करा दिया। 'लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है?' उसने कहा।
'कम से कम सरकार ही हमारे बच्चों के लिए डॉक्टर्स भिजवा देती। हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दोषियों को सजा मिलती है या नहीं,' उसने कहा।
राघव ने गहरी सांस छोड़ी। उसने कुछ कहने से पहले अपनी गरदन खुजाई। 'ठीक है, मैं आपके गांव आऊंगा और एक खबर लिखूंगा। अभी तक हमारा सर्कुलेशन कम है, लेकिन यदि हमारा अखबार बचा रहा तो हम बाद में एक बार इस पर बड़ी खबर भी करेंगे। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो मैं आपसे कोई वादा नहीं कर सकता, ठीक है?'
'धन्यवाद, राघव-जी!' उसने कहा। उसकी आंखों में उम्मीद की चमक थी। मैं उसे नजरअंदाज नहीं कर सका।
'और मेरे एक दोस्त के पिता डॉक्टर हैं। मैं उनसे बात करके देखता हूं कि वे आपके गांव जा सकते हैं या नहीं।'
राघव उठ खड़ा हुआ। वह व्यक्ति भी खड़ा हो गया। उसका बेटा जाग गया। वह राघव के पैर छूने के लिए आगे झुका।
'अरे, ऐसा मत करो,' राघव ने कहा। 'मुझे अभी एक व्यक्ति से मिलना है। उसके बाद आज ही तुम्हारे गांव चलते हैं। यहां से कितनी दूर है?'
'एक सौ बीस किलोमीटर। आपको वहां तक पहुंचने के लिए तीन बसें बदलनी होंगी,' किसान ने कहा।
'इसमें कम से कम पांच घंटे लगेंगे।'
'ठीक है। तो प्लीज, थोड़ी देर इंतजार कीजिए।'
राघव उन दोनों को ऑफिस से बाहर ले आया।
'यहां बैठ जाइए, बिश्नु-जी,' राघव ने कहा और मेरी ओर देखा। 'दो मिनट गोपाल? मैं अपना ऑफिस साफ कर लेता हूं।'
मैंने सिर हिला दिया। राघव भीतर गया और अपनी डेस्क पर बिखरे कागजों को जमाने लगा।
किसान अंकित की कुर्सी पर मेरे सामने बैठ गया।
हम एक-दूसरे को देखकर सरसरी तौर पर मुस्कराए।
'इसका नाम क्या है?' मैंने बच्चे की ओर इशारा करते हुए कहा, जो फिर से उसकी गोद में सोने लगा था।
'केशव,' किसान ने अपने बेटे के माथे पर थपकियां देते हुए कहा।
मैंने सिर हिलाया और चुप हो गया। मैं अपने फोन के साथ खेल रहा था और उसे ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे फ्लिप कर रहा था। मैं अपनी पैंट की जेब में मर्सीडीज की डुप्लिकेट चाबी

टटोलने लगा। मैं उसे इस खास मौके के लिए लाया था।

'बाबा, क्या मैं भी मर जाऊंगा?' केशव ने अपनी पतली–सी आवाज में कहा।

'बेवकूफ लड़का। क्या बकवास कर रहे हो?'

किशान ने कहा।

मुझे उस बच्चे पर तरस आने लगा, जो शायद बड़ा होने पर अपनी मां को याद भी नहीं कर पाएगा, मेरी तरह। मैंने अपनी जेब में रखी चाबी को कसकर पकड़ लिया, मानो इतने भर से मैं अच्छा महसूस करने लगूंगा।

राघव अपनी डेस्क और कुर्सी की धूल झाड़ रहा था। उसका अखबार एक हफ्ते में बंद हो सकता था और उसके पास बिल्कुल पैसा नहीं था। इसके बावजूद वह इन लोगों की मदद करने के लिए इतनी दूर बसे गांव को जाने के लिए तैयार था। उन लोगों ने उसका ऑफिस तो तहस–नहस कर दिया था, लेकिन वे उसका हौसला नहीं तोड़ पाए थे।

मैंने चाबी को और कसकर पकड़ लिया, ताकि खुद को यह दिलासा दे सकूं कि यहां मैं ही सबसे बेहतर स्थिति में हूं।

मैंने पाया कि वह लड़का एकटक मेरी ओर देख रहा था। मुझे अजीब लगने लगा। मुझे लगा जैसे वह मुझसे कोई सवाल पूछ रहा है, जिसका मेरे पास कोई जवाब नहीं है।

'तुम क्या बन गए हो, गोपाल?' मेरे दिमाग में एक आवाज गूंजी।

मैंने बेचैनी के साथ अपनी जेब से सनग्लासेस निकाले और उन्हें घुमाने लगा। मैंने पाया कि उस लड़के केशव की आंखें सनग्लासेस के साथ घूम रही थीं। मैं उसे दाएं ले जाता तो उसकी आंखें भी दाएं चली जातीं। मैं उसे बाएं ले जाता तो उसकी आंखें भी बाएं चली जातीं। मैं उसे देखकर मुस्करा दिया।

'क्या हुआ?' मैंने अपने फैंसी चश्मे की ओर इशारा करते हुए पूछा। 'तुम्हें ये चाहिए?'

केशव उठ खड़ा हुआ। वह कमजोर हो गया था, लेकिन उसका उत्साह बरकरार था। हालांकि उसके पिता लगातार ना करते रहे, लेकिन मुझे उसे अपना चश्मा देकर थोड़ी राहत मिली।

'चश्मा बड़ा है,' लड़के ने उसे पहनने की कोशिश करते हुए कहा। बड़े चश्मे में उसका चेहरा और भी दयनीय लगने लगा था।

मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं। कमरे में बेहद गर्मी थी। मुझे लगा जैसे मैं भी बीमार पड़ रहा हूं। राघव अब फोन पर बात कर रहा था।

मेरे दिमाग में बातें चलती रहीं। 'तुम यहां किसलिए आए थे? क्या तुम यहां उसे यह दिखाने आए थे कि तुम बड़े आदमी बन गए हो और वह बरबाद हो चुका है? क्या यही तुम्हारी जिंदगी का हासिल है? तुम्हें लगता है कि तुम उससे बेहतर इंसान हो, क्योंकि तुम्हारे पास कार और अच्छा सूट है?'

'गोपाल!' राघव ने पुकारा।

'हुंह?' मैंने आंखें खोलते हुए कहा। 'क्या?'

'अंदर आ जाओ,' राघव ने कहा।

मैं उसके ऑफिस में चला गया। मेरे हाथ अपनी जेब में ही थे, चाबियों को कसकर भींचे हुए। प्लान के मुताबिक, मुझे बैठने से पहले उसकी टेबल पर कैजुअली कार की चाबी रख देनी थी। लेकिन, मैं ऐसा नहीं कर पाया।

'जेब में क्या है?' राघव ने कहा। उसने देख लिया था कि मेरा हाथ जेब से बाहर नहीं निकल रहा है।

'ओह, कुछ नहीं,' मैंने कहा और चाबी छोड़ दी। मैं उसके सामने बैठ गया।

'तो तुम 'रेवोल्यूशन 2020' का रास्ता कैसे भूल गए? क्या हमने तुम्हारे बॉस लोगों को फिर नाराज कर दिया?' राघव ने दबी हुई हंसी के साथ कहा। 'ओह वेट, तुमने कहा था कि पर्सनल बात है।'

'हां,' मैंने कहा।

'क्या?' राघव ने कहा।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूं। मैंने अपनी पूरी स्पीच प्लान कर रखी थी। मैं उसे कहना चाहता था कि आरती एक बेहतर जीवनसाथी की हकदार है और वह मैं हूं। या यह कि कैसे मैं जिंदगी में कामयाब हो गया, जबकि वह नाकाम रह गया। या यह कि किस तरह वह लूजर है, मैं नहीं। और इसके बावजूद, मुझे लग रहा था कि यदि मैंने ये तमाम बातें कहीं तो लूजर मैं ही साबित होऊंगा, वो नहीं।

'पेपर का काम कैसा चल रहा है?' मैंने कहा, ताकि इस अजीब–सी खामोशी को तो तोड़ सकूं।

उसने अपने हाथ हिलाते हुए कहा। 'तुम खुद देख सकते हो।'

'यदि पेपर बंद हो गया तो तुम क्या करोगे?' मैंने कहा।

राघव मुस्कराया नहीं। 'मैंने अभी इस बारे में कुछ नहीं सोचा। शायद पहले दौर का अंत।'

मैं चुप रहा।

'उम्मीद करता हूं कि मुझे कोई इंजीनियरिंग जॉब न करना पड़े। शायद मुझे अप्लाई करना पड़े...' राघव की थकी हुई–सी आवाज खामोश हो गई।

मैं समझ गया था कि उसने अभी तक इतनी दूर का नहीं सोचा है।

'आई एम सॉरी, गोपाल,' राघव ने कहा, 'यदि मैंने तुम्हें कभी हर्ट किया हो तो। तुम चाहे जो सोचो, लेकिन मेरी तरफ से कुछ पर्सनल नहीं था।'

'तुम यह सब क्यों करते हो, राघव? तुम स्मार्ट हो।

तुम हम सभी की तरह पैसा क्यों नहीं कमाते?'

'किसी न किसी को तो कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा, गोपाल। नहीं तो चीजें कैसे बदलेंगी?'

'पूरा सिस्टम ही सड़ा–गला है। एक अकेला आदमी क्या कर सकता है?'

'पता है।'

'तो?'

'हम सभी को अपना–अपना छोटा–मोटा काम तो करना ही होगा। बदलाव के लिए हमें एक रेवोल्यूशन की जरूरत है। एक वास्तविक रेवोल्यूशन केवल तभी होगी, जब लोग खुद से यह पूछना शुरू कर देंगे कि मैंने क्या कुर्बानी दी है?' 'यह तो तुम्हारे अखबार की टैगलाइन लगती है,' मैंने मजाक उड़ाते हुए कहा।

वह चुप हो गया। मैं जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

वह मुझे बाहर तक छोड़ने आया। मैंने तय किया कि मैं अपनी कार नहीं बुलाऊंगा, बल्कि गली के बाहर तक पैदल चलकर जाऊंगा और वहीं अपनी कार में सवार हो जाऊंगा।

'तुम आए किसलिए थे?' राघव ने कहा। 'मुझे यकीन नहीं होता कि तुम यहां केवल मेरा हाल–चाल पूछने आए थे।'

'मुझे इस इलाके में कुछ काम था। मेरी कार को सर्विसिंग की जरूरत थी। मैंने सोचा कि जब तक मेरी कार दुरुस्त होती है, तुमसे मिल आता हूं।'

'तुमसे मिलकर अच्छा लगा। ऐसे ही कभी आरती से भी मिल लिया करो,' उसने कहा।

मैं उसका नाम सुनकर चौंक गया।

'हां। वह कैसी है?' मैंने कहा।

'मेरी भी उससे कुछ समय से मुलाकात नहीं हुई, लेकिन लगता है वह भी तनाव में है। मुझे उससे बात करनी होगी। तुम्हें भी उससे बात करनी चाहिए। उसे अच्छा लगेगा,' उसने कहा।

मैंने सिर हिलाया और उसके ऑफिस से बाहर चला आया।

37

मैं रात को अपने आरामदेह बिस्तर में लेटा रहा। लेकिन मेरी आंखों से नींद कोसों दूर थी। आरती के तीन मिस्ड कॉल्स थे। मैंने कॉल बैक नहीं किया। मैं नहीं कर सका।

मुझे नहीं पता था कि मैं उससे क्या कहता।

'कैसा रहा?' उसने मुझे मैसेज किया।

मैं समझ गया कि यदि मैंने उसे कुछ बताया नहीं तो वह लगातार पूछती रहेगी। मैंने उसे कॉल किया।

'तुम फोन क्यों नहीं उठा रहे थे?' उसने कहा।

'सॉरी, घर पर डीन आए थे। वे बस अभी गए हैं।'

'तुम राघव से मिले?' उसने पूछा। वह बेसब्र हो रही थी।

'हां,' मैंने ठंडी सांस छोड़ते हुए कहा।

'तो?'

'उसके ऑफिस में बहुत सारे लोग थे। मैं उससे उस बारे में बात ही नहीं कर पाया,' मैंने कहा।

'गोपाल, आई होप तुम इस बात को समझ रहे हो कि जब तक मेरा उससे ब्रेकअप नहीं हो जाता, तब तक मैं उससे चीटिंग कर रही हूं। क्या मैं उससे बात करूं?'

'नहीं, नहीं, वेट। मैं उससे अकेले में मिलूंगा।'

'और मुझे अपने पैरेंट्स से भी बात करनी पड़ेगी,' उसने कहा।

'किस बारे में?'

'अगले हफ्ते एक के बाद एक तीन लड़के वाले मुझे देखने आ रहे हैं। सभी राजनीतिक परिवारों से हैं।'

'क्या तुम्हारे पैरेंट्स अपने होश–हवास गंवा बैठे हैं?' मैं बिफर गया।

'जब बात बेटियों की आती है तो पक्के भारतीय पैरेंट्स अपने होशो–हवास गवा बैठते हैं,' उसने कहा।

'मैं उन्हें टाल सकती हूं, लेकिन ज्यादा समय तक नहीं।'

'ठीक है, मैं कुछ करता हूं,' मैंने कहा।

मैंने दो तकिए अपने पास खींच लिए।

'देखो, सेक्स के बाद यही होता है। भूमिकाएं बदल जाती हैं। अब लड़की को लड़के का पीछा करना पड़ता है।'

'ऐसी कोई बात नहीं है, आरती। मुझे दो दिन का समय दो।'

'ओके। नहीं तो मैं खुद राघव से बात कर लूंगी।

और इन केस यदि वह कुछ पूछता है तो याद रखो, हमारे बीच कुछ भी नहीं हुआ है।'

'तुम्हारा क्या मतलब है?' मैंने कहा।

'मैंने उसे धोखा नहीं दिया। हमने एक–दूसरे का साथ चुना है, लेकिन केवल उससे ब्रेक–अप के बाद।

ओके?'

'ओके,' मैंने कहा।

कभी–कभी मुझे लगता है कि लड़कियां अपनी जिंदगी को उलझा देना पसंद करती हैं।

मैंने फोन रखा और बिस्तर में लेट गया। मैं थककर चूर हो रहा था।

अंतिम संस्कार के लिए पहने जाने वाले झक–सफेद कपड़ों के कारण मेरी आखें चुंधियाने लगीं। मैंने उन लोगों के चेहरे देखे। मैं उनमें से किसी को पहचान न पाया।

'यह किसकी शवयात्रा है?' मैंने अपने पास खड़े एक आदमी से पूछा।

हम घाट पर खड़े थे। मैंने देखा कि लाश छोटे आकार की लग रही थी। वे उसे सीधे गंगा में प्रवाहित करने के लिए ले गए।

'वे उसका दाह संस्कार क्यों नहीं कर रहे हैं?' मैंने पूछा। और पूछते ही मैं समझ गया क्यों। वह किसी बच्चे की लाश थी। मैं लाश के करीब गया और उसकी चादर हटाई। वह एक छोटा बच्चा था।

स्नगलरोल पहने हुए।

'इसे किसने मारा?' मैं चिल्लाया, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे शब्द मेरे हलक से निकलने को तैयार न हों।

मैं चीखता हुआ जाग गया। मुझे ऊपर अपने बेडरूम की सफेद सीलिंग नजर आ रही थी। कमरे में तेज रोशनी थी, क्योंकि मैं बत्तियां बुझाना भूल गया था।

रात के तीन बज रहे थे। केवल एक बुरा सपना था, मैंने खुद से कहा।

मैं बिस्तर में करवटें बदलता रहा, लेकिन फिर मुझे नींद नहीं आई।

मैंने राघव के बारे में सोचा। वह पूरी तरह से खत्म हो चुका था। उसका पेपर जल्द ही बंद होने वाला था।

उसके लिए एक नया जॉब तलाशना मुश्किल साबित होता, खासतौर पर वाराणसी में। और वह जहां भी जाता, यह खतरा हमेशा उसके सिर पर मंडराता रहता कि शुक्ला के आदमी उस पर फिर हमला बोल देंगे।

फिर मैंने आरती के बारे में सोचा। मेरी आरती। मेरी जिंदगी का मकसद। अगले हफ्ते मेरी उससे इंगेजमेंट हो सकती थी। तीन महीने बाद शादी हो सकती थी। एक साल बाद मैं विधायक बन सकता था। मेरे एक इशारे पर मुझे यूनिवर्सिटी की अप्रूवल मिल सकती थी। मैं किसी भी फील्ड में अपना काम बढ़ा सकता था – मेडिसिन, एमबीए, कोचिंग, एविएशन। भारत में एजुकेशन के लिए लोगों की चिंता को देखते हुए मेरे सामने संभावनाओं का पूरा आकाश था। आरती स्टीवर्ड अटेंडेंट बनना चाहती थी, लेकिन मैं उसे एक प्लेन खरीदकर दे सकता था। यदि मैं ठीक से अपना काम करूं तो मैं पार्टी रैंक्स में भी आगे बढ़ सकता था। मैंने अपनी जिंदगी तनहाई में बिताई थी, लेकिन अब मेरा एक परिवार हो सकता था। आरती और मेरे प्यारे–प्यारे बच्चे हो सकते थे। वे भी बड़े होकर मेरा बिजनेस और राजनीतिक साम्राज्य संभाल सकते थे। भारत में लोग इसी तरह कामयाबी का सफर तय करते हैं। मैं भी बहुत बड़ा आदमी बन सकता था।

'लेकिन राघव का क्या होगा?' केशव मुझसे पूछ रहा था। पता नहीं, वह अभी जिंदा था, या मर चुका था। 'मुझे परवाह नहीं', मैंने उससे कहा। 'यदि वह नाकाम होता है तो वह उसकी अपनी बेवकूफी की वजह से होगा। यदि वह स्मार्ट होता तो उसे बहुत पहले यह समझ आ जाता कि इस तरह की बेवकूफियां करने से वह कुछ नहीं बन पाएगा। इस देश में 2020 तक कोई रेवोल्यूशन नहीं होगी। यह भारत है। यहां कभी कुछ नहीं बदलता। फक यू, राघव।'

लेकिन केशव इतनी जल्दी चुप नहीं होने वाला था।

'तुम किस तरह के राजनेता बनना चाहते हो, गोपाल?'

'मैं तुम्हारे सवालों का जवाब नहीं देना चाहता। तुम मुझे डरा रहे हो। चले जाओ यहां से,' मैंने जोर से कहा, हालांकि मेरे कमरे में कोई नहीं था। मैं अच्छी तरह जानता था कि कमरे में कोई नहीं है।

'आरती का क्या होगा?' मेरे भीतर एक आवाज फुसफुसाई।

'मैं उससे प्यार करता हूं!'

'लेकिन उसके बारे में क्या? क्या वह भी तुमसे प्यार करती है?'

'हां, वह भी मुझे चाहती है। हमने एक–दूसरे के साथ प्यार भरे लम्हे बिताए हैं। वह चाहती है कि मैं उसका हसबैंड बनूं,' मैं अपने आप से बातें कर रहा था।

'लेकिन अगर उसे तुम्हारी असलियत पता चल जाए, तब भी वह तुम्हें प्यार करेगी? क्या हो अगर वह जान जाए कि तुम एक भ्रष्ट और चालाक इंसान हो?' 'मैं खूब मेहनत करता हूं। मैं एक कामयाब आदमी हूं,' मैंने फिर जोर से कहा। मैं अपनी ही आवाज से चौंक जा रहा था।

'लेकिन क्या तुम एक भले आदमी हो?'

घड़ी पांच बजे का समय बता रही थी। भोर हो रही थी।

मैं कैम्पस में वॉक करने निकल पड़ा। सुबह की ताजी हवा से मेरा दिमाग थोड़ा शांत हुआ। ओस भीगे पेड़ों की टहनियों पर छोटी–छोटी चिड़ियाएं चहचहा रही थीं। उन्हें पैसे, मर्सीडीज और बंगले की कोई परवाह नहीं थी। वे अपना गीत गा रही थीं, क्योंकि यही उनकी जिंदगी थी। और उनका गाना बहुत खूबसूरत था। पहली दफे मुझे अपने कैम्पस के पेड़ों और पंछियों के लिए गर्व का अनुभव हुआ।

मैं समझ गया कि केशव सपनों में मेरा पीछा क्यों कर रहा था। एक समय था, जब मैं खुद केशव जैसा हुआ करता था – भोला, मासूम और दुनिया से बेखबर। लेकिन जिंदगी के थपेड़ों से मेरा सामना हुआ तो मैंने अपने भीतर के केशव को मार डाला, क्योंकि दुनिया के मन में मासूमियत की कोई कद्र नहीं थी। तो फिर मैंने कल राघव को गुमराह देने का मौका क्यों गवां दिया? 'शायद, मेरे भीतर का केशव अभी पूरी तरह से मरा नहीं है', मैंने खुद से कहा। 'शायद, हमारे भीतर का वह भोला, भला, मासूमियत भरा हिस्सा कभी मरता नहीं है, बस हम ही कुछ वक्त के लिए उसे भूल जाते हैं।'

मैंने आकाश की ओर देखा, इस उम्मीद से कि ईश्वर मुझे कोई रास्ता दिखाएगा। या शायद मां या बाबा मेरी मदद करेंगे। मेरी आंखों से आंसू बहने लगे।

मैं फफक–फफककर रो पड़ा। मैं एक पेड़ के नीचे बैठ गया और एक घंटे तक रोता रहा। बस यूं ही।

कभी–कभी हमारे लिए जिंदगी का मतलब यह नहीं रह जाता कि हम क्या बनना चाहते हैं, बल्कि यह हो जाता है कि हमें क्या करना चाहिए।

शुक्ला–जी जेल के बरामदे में सेब खा रहे थे। एक कांस्टेबल उनके पास बैठा था और सेब छीलकर उन्हें दे रहा था।

'गोपाल, मेरे बच्चे, आओ, आओ,' शुक्ला–जी ने कहा। उन्होंने कलफदार सफेद कुर्ता–पायजामा पहन रखा था, जो सुबह की रोशनी में चमक रहा था।

मैं फर्श पर बैठ गया। 'मैं आपसे एक मदद चाहता था,' मैंने कहा।

'हां, हां, बोलो,' उन्होंने कहा।

मैंने कांस्टेबल की ओर देखा। 'ओह, यह। यह धीरज है। मेरे गांव का ही है। धीरज, मुझे अपने बच्चे से जरा बात करनी है।'

कांस्टेबल बाहर चला गया।

'मैंने उसे कह दिया है कि मैं उसका प्रमोशन करवा दूंगा,' शुक्ला–जी ने कहा और मुस्करा दिए।

'मैं एक अजीब–सी बात कहने के लिए आया हूं,' मैंने कहा।

'सब ठीक तो है?'

'शुक्ला–जी, क्या आप कुछ... कुछ कॉलगर्ल्स मुझे हायर करवा देंगे? आपने बहुत पहले उनका जिक्र किया था।'

शुक्ला–जी इतने जोर से हंसे कि उनके मुह से सेब का रस टपकने लगा।

'आई एम सीरियस,' मैंने कहा।

'मेरा बच्चा अब बड़ा हो गया है। तो, तुम्हें औरतें चाहिए?'

'मेरे लिए नहीं।'

शुक्ला–जी ने मेरा पुराना पराधपाय" और अर्थपूर्ण ढङ्ख्ख् चच्ख्झ 'अगले हफ्ते मैं चौबीस साल का हो जाऊंगा,' मैंने कहा।
'ओह, तो तुम्हारा बर्थडे आने वाला है?' उन्होंने कहा।
'हां, 11 नवंबर को,' मैंने कहा।
'यह तो बहुत अच्छी बात है। तुम वाकई बड़े हो गए हो। शरमाओ मत,' उन्होंने कहा, 'हम सभी यह करते हैं।'
'सर, यह इंस्पेक्टर्स के लिए है। अगले हफ्ते उनकी हमारे यहां विज़िट है,' मैंने कहा। 'मैं अपनी फीस बढ़वाना चाहता हूं। फैसला उन्हीं के हाथों में है।'
उनकी त्यौरियां चढ़ गईं। 'उनके लिए लिफाफे काफी नहीं होंगे?'
'यह वाला इंस्पेक्टर औरतों का शौकीन है। मुझे कानपुर के कुछ दूसरे प्राइवेट कॉलेजों से पता चला है।'
'अच्छा, ठीक है,' शुक्ला–जी ने कहा। उन्होंने अपने पायजामे की एक सीक्रेट पॉकेट से एक सेलफोन निकाला। अपने कॉन्टैक्ट की सूची देखी और मुझे एक नंबर दिया।
'इसका नाम विनोद है। इसे फोन लगाओ और मेरा नाम लो। उसे बताओ कि तुम क्या चाहते हो। वह काम कर देगा। तुम्हें कब जरूरत है?'
'अभी मेरे पास एग्जैक्ट तारीख नहीं है,' मैंने कहा और उठने लगा।
'सुनो,' शुक्ला–जी ने मेरे हाथ खींचकर मुझे फिर बैठाते हुए कहा। 'तुम भी मजे लो। शादी के बाद बहुत मुश्किल हो जाती है। उससे पहले ही मौज–मस्ती कर लो।'
मैं अनमने ढंग से मुस्करा दिया।
'डीएम की बेटी से तुम्हारा चक्कर कैसा चल रहा है?'
'बढ़िया,' मैंने कहा। मैं इस बारे में उन्हें कम से कम जानकारी देना चाहता था।
'तुम उसके पैरेंट्स से बातें करोगे या उससे प्यार करने का स्वांग रचोगे?'
'मैंने अभी इस बारे में सोचा नहीं है,' मैंने कहा।
'अब मैं चलता हूं, शुक्ला–जी। आज अकाउंट्स मीटिंग है।'
शुक्ला–जी समझ गए कि मेरी उनसे बातें करने में दिलचस्पी नहीं है। वे मुझे छोड़ने जेल के गेट तक आए।
'जिंदगी ऐसा मौका बार–बार नहीं देती,' उन्होंने मुझे विदा करते हुए कहा।
हमारे बीच लोहे का एक बड़ा–सा दरवाजा झनझनाते हुए बंद हो गया।

38

कैलेंडर 10 नवंबर की तारीख दिखा रहा था। 23 साल की उम्र में यह मेरा आखिरी दिन था। मैंने सुबह का वक्त अपनी डेस्क पर बिताया था। स्टूडेंट्स रिप्रजेंटेटिव मुझसे मिलने आए थे। वे एक कॉलेज फेस्टिवल करवाना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि वे चाहें तो फेस्टिवल कर सकते हैं, बशर्ते वे अपने लिए स्पॉन्सर्स जुटा लें। स्टूडेंट्स से मिलने के बाद मेरा पाला एक मुसीबत से पड़ा। दो क्लासरूम्स की दीवारों से पानी रिस रहा था। मुझे एक घंटे तक कॉन्ट्रैक्टर पर चिल्लाना पड़ा, तब जाकर उसने कुछ लोगों को उसकी मरम्मत करवाने भिजवाया।

दोपहर को घर से मेरा लंच–बॉक्स आया। मैंने भिंडी, दाल और रोटियां खाईं। इसके साथ ही मैंने आरती को एक कॉल किया। उसने फोन नहीं उठाया। लंच के बाद मेरी लगातार दो मीटिंग्स थीं। मैं उससे बाद में बात नहीं कर पाता। मैंने एक बार फिर कोशिश की।

'हैलो,' एक अनजान–सी आवाज ने कहा।
'कौन बोल रहा है?' मैंने पूछा।
'दिस इज बेला, गेस्ट रिलेशंस से आरती की कलीग। तुम गोपाल हो ना? मैंने तुम्हारा नाम फ्लैश होते देखा था,' उसने कहा।
'हां, क्या आरती वहां है?'
'वह एक गेस्ट को अटेंड करने गई है। मैं उसे तुम्हें फोन लगाने को कहूं?'
'हां, प्लीज,' मैंने कहा।
'ओह, और हैप्पी बर्थडे इन एडवांस,' उसने कहा।
'तुम्हें कैसे पता चला?' मैंने कहा।
'वेल, वह तुम्हारा गिफ्ट तैयार करने के लिए बहुत मेहनत कर रही है... ऊप्स!'
'क्या हुआ?'
'शायद मुझे यह तुम्हें बताना नहीं था,' बेला ने कहा। 'मेरा मतलब है, वह सरप्राइज है। वह तुम्हारे लिए बर्थडे गिफ्ट बना रही है। इट्स सो क्यूट। उसने एक केक भी ऑर्डर किया है... सुनो, यदि उसे पता चल गया कि मैंने तुम्हें यह सब बता दिया है तो वह तो मेरी जान ही ले लेगी।'
'रिलैक्स, मैं उसे कुछ नहीं बताऊंगा। लेकिन यदि तुम मुझे प्लान बताओ, तो मैं भी उसके लिए कुछ प्लान कर सकता हूं।'
'यू गाइज आर स्वीट। तुम दोनों बचपन के दोस्त हो ना?' उसने कहा।
'हां, तो प्लान क्या है?'
'वेल, वह तुम्हें कहेगी कि वह तुम्हारे बर्थडे पर तुमसे नहीं मिल सकती। जाहिर है, तुम बहुत नाराज हो जाओगे, लेकिन वह काम का बहाना करेगी। लेकिन काम के बाद वह दोपहर को एक केक और गिफ्ट लेकर तुम्हारे यहां चली आएगी।'
'अच्छा किया जो तुमने बता दिया। मैं उस समय घर पर ही रहूंगा, मीटिंग में नहीं,' मैंने कहा।
'तुम अपने बर्थडे के दिन भी काम करोगे?' उसने कहा।
'मैं पूरे समय काम करता रहता हूं,' मैंने कहा। 'क्या वह आ गई है?'
'अभी तो नहीं। मैं उसे तुम्हें कॉल करने को कह दूंगी,' उसने कहा। 'लेकिन प्लीज उसे कुछ मत बताना। ऐसा जताना जैसे तुम्हें कुछ पता ही न हो।'
'श्योर,' मैंने कहा और फोन रख दिया।
यही सही समय था। मैंने विनोद को कॉल किया।
'विनोद?' मैंने कहा।
'कौन बोल रहा है?' उसने कहा।
'मैं गोपाल हूं। मैं विधायक शुक्ला के साथ काम करता हूं,' मैंने कहा।
'अच्छा, अच्छा, बताइए क्या काम है?' उसने कहा।
'मुझे कुछ लड़कियां चाहिए,' मैंने कहा।
उसने फोन काट दिया। मैंने फिर फोन लगाया, लेकिन उसने उठाया नहीं। मैंने अपना फोन एक तरफ रख दिया।
दस मिनट बाद एक अनजाने लैंडलाइन नंबर से मुझे एक कॉल आया।
'विनोद बोल रहा हूं। आपको लड़कियों की जरूरत थी?'
'हां,' मैंने कहा।
'रात भर के लिए या घंटों के लिए?'
'हूंह?' मैंने कहा। 'दोपहर। एक दोपहर के लिए।'
'दोपहर के लिए हैप्पी–आॅवर प्राइसेस हैं। कितनी चाहिए?'
'एक?' मैंने कुछ सोचते हुए कहा।
'दो ले लीजिए। अच्छा सौदा रहेगा। एक के साथ दूसरी हाफ रेट पर मिलेगी।'
'लेकिन एक से काम चल जाएगा।'
'मैं दो भेज देता हूं। यदि तुम्हें दो चाहिए, तो दोनों को रख लेना। नहीं तो उनमें से कोई एक चुन लेना।'
'डन। कितना लगेगा?'
'किस तरह की लड़की चाहिए?'
मुझे नहीं पता था उसके पास किस तरह की लड़कियां थीं। मैंने इससे पहले कभी किसी कॉल गर्ल का 'ऑर्डर' नहीं दिया था। क्या उसके पास कोई मेनु था?
'कोई... कोई नाइस लड़की?' मैंने बिल्कुल किसी कच्चे खिलाड़ी की तरह कहा।
'अंग्रेजी बोलने वाली? जीन्स वगैरह पहनने वाली?'
उसने कहा।
'हां,' मैंने कहा।
'इंडियन, नेपाली या गोरी?' उसने कहा। वाराणसी नेपाल बॉर्डर से ज्यादा दूर नहीं

'तुम्हारे पास गोरी लड़कियां भी हैं?' मैंने कहा।
'यह टूरिस्ट टाउन है। कुछ लड़कियां काम–धंधे के लिए यहीं रुक जाती हैं। उन्हें ढूंढना मुश्किल है, लेकिन हम ऐसा कर सकते हैं।'
'मुझे दिखने में अच्छी–भली इंडियन लड़कियां भेज दो। ऐसी लड़कियां, जो कॉलेज कैम्पस में लोगों का बहुत ध्यान न खींचें।'
'कॉलेज?' विनोद ने हैरत से कहा। 'हम नॉर्मली होटलों में लड़कियां भिजवाते हैं।'
'कॉलेज मेरा ही है। इट्स ओके।'
गंगाटेक के बारे में बताने के बाद विनोद मान गया।
मैंने उसे समझा दिया कि उसे किस तरह डायरेक्टर के बंगले तक लड़कियां पहुंचानी हैं।
'तो आपको उसकी जरूरत कब है?'
'दो बजे के बाद। पूरी दोपहर। शाम छह बजे तक,' मैंने कहा।
'बीस हजार लगेंगे,' उसने कहा।
'आर यू क्रेजी?'
'और वह भी शुक्ला–जी के रेफरेंस पर। आमतौर पर मैं विदेशियों से एक लड़की के इतने पैसे लेता हूं।'
'दस।'
'पंद्रह।'
मुझे दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी।
'डन। कल दो बजे। लखनऊ हाईवे पर गंगाटेक कॉलेज में,' मैंने फुसफुसाते हुए कहा और फोन रख दिया।
'फैकल्टी मीटिंग,' श्रीवास्तवा ने दरवाजे पर खड़े होकर कहा।
'ओह, ऑफ कोर्स,' मैंने कहा। 'प्लीज कम इन, डीन सर।'
मैंने पियून से कहा कि हमारे बीस फैकल्टी सदस्यों के लिए और कुर्सियां लगवाए।
'स्टूडेंट्स ने मुझे बताया कि कल आपका बर्थडे है, डायरेक्टर गोपाल,' डीन ने कहा। फैकल्टी को जैसे ऑर्गेज्म हो गया हो। बॉस होना भी बढ़िया होता है, सभी आपकी लल्लो–चप्पो करने को तैयार बैठे रहते हैं।
'जस्ट अनादर डे,' मैंने कहा।
'लेकिन स्टूडेंट्स आपके लिए केक काटना चाहते हैं,' डीन ने कहा।
'प्लीज, ऐसा मत कीजिए। मैं ऐसा नहीं कर सकता।'
मैंने कहा। दो सौ लोगों के सामने केक काटने का सोचकर ही मैं शर्मिंदा हो गया था।
'प्लीज, सर,' एक युवा फैकल्टी मेंबर जयंत ने कहा। 'स्टूडेंट्स आपको बहुत मानते हैं। यह उनके लिए बहुत बड़ी बात होगी।'
मैं सोचने लगा कि यदि स्टूडेंट्स को विनोद से हुई मेरी बात के बारे में पता चल जाए, क्या तब भी वे मेरा बहुत मान–सम्मान करेंगे?
'वे आपके लिए पहले ही दस किलो के एक केक का ऑर्डर दे चुके हैं, सर,' श्रीवास्तवा ने कहा।
'अच्छा, कार्यक्रम जल्दी से निपटा देना,' मैंने कहा।
'बस दस मिनट लगेंगे। एक बजे क्लासेस खत्म होने के फौरन बाद,' डीन ने कहा।
फैकल्टी मीटिंग शुरू हुई। सभी ने मुझे अपने कोर्स प्रोग्राम के बारे में बताया।
'अब जल्द से जल्द प्लेसमेंट्स की तैयारियां शुरू कर दो,' मैंने कहा, 'इसके बावजूद कि हमारी पासिंग आउट बैच को अभी दो साल का समय है।'
'जयंत प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर हैं,' डीन ने कहा।
'सर, मैंने पहले ही कॉर्पोरेट्स से मिलना शुरू कर दिया है,' जयंत ने कहा।
'रिस्पॉन्स कैसा है?' मैंने पूछा।
'चूंकि हम नए हैं, इसलिए अभी थोड़ी मुश्किल होगी। कुछ एचआर मैनेजर्स यह भी जानना चाह रहे हैं कि उन्हें कितना हिस्सा मिलेगा,' जयंत ने कहा।
'डायरेक्टर गोपाल, जैसा कि आप जानते ही हैं...' डीन ने कहना शुरू किया, लेकिन मैंने उन्हें बीच में ही टोक दिया।
'यदि एचआर मैनेजर्स हमारे कॉलेज से हायर करते हैं तो उन्हें इसके ऐवज में अपना हिस्सा चाहिए, करेक्ट?' मैंने कहा।
'जी, सर,' जयंत ने कहा।
प्राइवेट कॉलेज चलाने के हर पहलू से घूसखोरी जुड़ी हुई थी, तो फिर प्लेसमेंट्स कैसे बच सकते थे?
लेकिन दूसरे मेंबर्स इस बात से हैरान लग रहे थे।
'पर्सनल पेआउट?' मैकेनिकल इंजीनियरिंग की प्रोफेसर मिसेज अवस्थी ने दम लेते हुए कहा।
जयंत ने सिर हिला दिया।
'लेकिन ये लोग तो बड़ी कंपनियों के मैनेजर्स होंगे,' उन्होंने कहा। वे अब भी हैरान थीं।
'मिसेज अवस्थी, यह आपका डिपार्टमेंट नहीं है।
बेहतर होगा अगर आप मुझे अपने कोर्स अप्लाइड मैकेनिक्स के बारे में बताएं,' मैंने कहा।
मेट्स ने तीन सब्जियों, दाल और रोटी का लजीज खाना बनाया था। लेकिन मैंने उसे छुआ तक नहीं। मैं बिस्तर में लेटा रहा और अपना फोन चेक करता रहा।
आरती ने दिनभर से मेरे फोन का जवाब नहीं दिया था।
मैंने भी उसे फिर कॉल नहीं किया।
मैंने एक बार फिर अपने प्लान के बारे में सोचा।
आधी रात को आरती का फोन आया।
'हैप्पी बर्थडे टु यू,' आरती ने गुनगुनाते हुए कहा।
'हे, आरती,' मैंने कहा, लेकिन उसने नहीं सुना।
'हैप्पी बर्थडे टु यू,' वह अपनी आवाज की पिच बढ़ाते हुए गुनगुनाती रही, 'हैप्पी बर्थडे डियर गोपाल, हैप्पी बर्थडे टु यू।'
'ओके, ओके, अब हम बच्चे नहीं हैं,' मैंने कहा।
लेकिन उसने गाना जारी रखा।
'हैप्पी बर्थडे टु यू। यू वर बॉर्न इन द जू। विद मंकीज एंड एलीफेंट्स, हू ऑल लुक जस्ट लाइक यू,' वह मेरे लिए उसी तरह गा रही थी, जैसे प्राइमरी स्कूल में गाया करती थी।
शायद, यह सब बहुत बचकाना था, लेकिन मेरी आंखों में आंसू आ गए। मैं यकीन ही नहीं कर पाया कि मैंने वैसा कोई प्लान बनाया था।
'कोई बहुत खुश है,' मैंने कहा।
'ऑफ कोर्स, आज तुम्हारा बर्थडे जो है। इसीलिए मैंने पूरे दिन तुम्हें कॉल या मैसेज नहीं किया।'
'ओह,' मैंने कहा।
'ओह क्या? तुमने ध्यान नहीं दिया क्या?' वह चिढ़ गई थी।
'बिल्कुल, ध्यान दिया था। यहां तक कि मेरा स्टाफ भी सोच रहा था कि आज मेरे फोन ने एक बार भी बीप क्यों नहीं किया।'
मैं बिस्तर से उठा और बत्तियां जला दीं।
'एनीवे, मैंने खूब सोचा कि तुम्हें क्या दूं, लेकिन तुम्हारे पास तो सब कुछ है।'
'और?'
'मैं कुछ सोच ही न पाई।'
'ओह, दैट्स ओके। मुझे वैसे भी कुछ नहीं चाहिए।'
'शायद, जब हम मिलें, तब मैं तुम्हें कुछ खरीदकर दे सकती हूं,' उसने कहा।
'हम कब मिल रहे हैं?' मैंने कहा, हालांकि बेला मुझे उसके प्लान के बारे में बता चुकी थी।
'देखो, कल मिलना तो बहुत मुश्किल होगा, मेरी डबल शिफ्ट है।'
'तुम मेरे बर्थडे के दिन मुझसे नहीं मिलोगी?' मैंने कहा।
'क्या करें?' उसने कहा। 'आधा नूट ऑफिस स्टाफ गायब है। सर्दियां क्या आईं, सभी वायरल फीवर का बहाना बनाने लगे हैं।'
'ओके,' मैंने कहा। यह तो कहना ही पड़ेगा कि वह बहुत अच्छी एक्टिंग कर लेती थी। मैं उसकी बात को लगभग सच ही मान बैठा।

'हैप्पी बर्थडे अगेन, बापू' उसने कहा।
मेरा इनबॉक्स ' शुक्ला-जी का मिला। उनका फोन आया था।
'तुम जियो हजारों साल,' उन्होंने कहा।
'शुक्रिया, आपको याद था' मैंने जवाब दिया।
'तुम मेरे बेटे जैसे ही हो,' उन्होंने कहा।
'थैंक यू, शुक्ला-जी, एंड गुड नाइट,' मैंने कहा।
मैंने बत्तियां बुझा दीं। कल मेरी जिंदगी का अहम दिन था और उससे पहले मैं कुछ देर सो जाना चाहता था।

39

'बस, बस, बहुत हुआ,' दसवें स्टूडेंट द्वारा मुझे केक खिलाए जाने पर मैंने कहा।
हम मेन कैम्पस बिल्डिंग के एक कमरे में जमा हुए थे। स्टाफ और स्टूडेंट्स मुझे विश करने आए थे।
फैकल्टी ने मुझे गिफ्ट के तौर पर एक टी-सेट दिया था। स्टूडेंट्स मेरी लंबी उम्र के लिए प्रार्थना गा रहे थे।
'सर, हम उम्मीद करते हैं कि आपके अगले बर्थडे पर कैम्पस में एक मिसेज डायरेक्टर भी होंगी,' फर्स्ट ईयर के एक चुलबुले-से स्टूडेंट ने सभी के सामने कहा, जिसका सभी ने तालियों के साथ स्वागत किया।
मैं मुस्करा दिया और वक्त देखा। दो बज गए थे। मैंने सभी को हाथ जोड़कर शुक्रिया कहा।
मैं घर जाने के लिए मेन बिल्डिंग से बाहर निकल पड़ा।
'हैप्पी बर्थडे' – आरती का मैसेज आया।
'तुम कहां हो?' – मैंने पूछा।
'डबल शिफ्ट अभी शुरू हुई है :(', उसने जवाब दिया।
सवा दो बजे मुझे विनोद का फोन आया। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था।
'हाय,' मैंने नर्वस होते हुए कहा।
'लड़कियां सफेद टाटा इंडिका में हैं। वे हाईवे पर हैं और पांच मिनट में कैम्पस पहुंच जाएंगी।'
'मैं गेट पर इनफॉर्म कर देता हूं,' मैंने कहा।
'तुम कैश दोगे?'
'हां। क्या तुम लोग क्रेडिट कार्ड्स लेते हो?' मैंने कहा।
'हां, फॉरेनर्स से। लेकिन कैश इज बेस्ट,' विनोद ने कहा।
मैंने मेड्स से उनके क्वार्टर में जाने को कहा। साथ ही मैंने उन्हें यह भी कह दिया कि चार घंटे तक मुझे डिस्टर्ब न करें। फिर मैंने गार्ड-पोस्ट को कॉल किया और उसे कहा कि वह सफेद इंडिका को भीतर आने दे। मैंने उसे यह भी कहा कि यदि कोई और मुझसे मिलने आता है तो मुझे इन्फॉर्म कर दे।
जल्द ही दरवाजे की घंटी बजी। मैंने दरवाजा खोला।
एक अजीब-सा दिखने वाला आदमी मेरे सामने खड़ा था। उसके पीछे दो लड़कियां थीं। उनमें से एक ने एक चीप लेपर्ड-प्रिंट टॉप और जीन्स पहन रखी थी। दूसरी ने पर्पल लेस कार्डिगन और ब्राउन पैंट्स पहन रखी थी।
मैं उन्हें देखते ही कह सकता था कि वे लड़कियां इन वेस्टर्न कपड़ों में कम्फर्टेबल नहीं थीं। लेकिन शायद इससे उन्हें अपनी ज्यादा कीमत मिल जाती थी।
आदमी ने चमकदार ब्लू शर्ट और व्हाइट ट्राउजर्स पहन रखे थे।
'ये लड़कियां चलेंगी?' उसने मुझसे पूछा।
मैंने लड़कियों की ओर देखा। दोपहर का वक्त देखते हुए उन्होंने जरूरत से ज्यादा मेकअप कर रखा था।
खैर, मेरे पास कोई चॉइस नहीं थी।
'चलेंगी,' मैंने कहा।
'पेमेंट?'
मैंने पैसा अपनी जेब में तैयार रखा था। मैंने नोटों का एक बंडल उसे दे दिया।
'मैं कार में वेट कर रहा हूं,' उसने कहा।
'कैम्पस के बाहर, प्लीज,' मैंने कहा। वह आदमी चला गया। मैंने लड़कियों को मेरे पीछे आने को कहा।
हम भीतर जाकर सोफों पर बैठ गए।
'मैं रोशनी हूं। तुम्हीं क्लाइंट हो?' लेपर्ड प्रिंट वाली लड़की ने कहा। दोनों में से वह ज्यादा कॉन्फिडेंट लग रही थी।
'हां,' मैंने कहा।
'हम दोनों के लिए?' रोशनी ने पूछा।
'हां,' मैंने कहा।
रोशनी ने मेरा कंधा पकड़ लिया।
'स्ट्रॉन्ग मैन,' उसने कहा।
'इसका नाम क्या है?' मैंने पूछा।
'पूजा,' पर्पल लेस वाली लड़की ने खुद ही कह दिया।
'ये तुम्हारे असली नाम नहीं हैं, राइट?' मैंने कहा।
रोशनी और पूजा, या वो लड़कियां जो खुद को रोशनी और पूजा बता रही थीं, खिलखिलाकर हंस पड़ीं।
'इट्स ओके,' मैंने कहा।
रोशनी ने आसपास देखा। 'तो हम कहां करेंगे?'
'ऊपर, बेडरूम में,' मैंने कहा।
'तो चलो,' रोशनी ने कहा। वह अपने काम पर बहुत फोकस्ड थी।
'ऐसी भी क्या जल्दी है?' मैंने कहा।
पूजा दोनों में से कम बोलती थी, लेकिन रोशनी के इंस्ट्रक्शंस का रास्ता देखते समय उसके चेहरे पर मुस्कराहट चस्पा रहती थी।
'लेकिन रुके तो भी किसलिए?' रोशनी ने पूछा।
'मैंने पूरी दोपहर के लिए पैसा दिया है। सही वक्त आने पर हम ऊपर चलेंगे,' मैंने कहा।
'लेकिन हम तब तक क्या करेंगे?' रोशनी ने कहा।
उसकी आवाज में जरा आशंका थी।
'बैठो,' मैंने कहा।
'हम टीवी देख सकती हैं?' पूजा ने निरीह भाव से पूछा। वह स्क्रीन की ओर इशारा कर रही थी। मैंने उसे रिमोट दे दिया। उन्होंने एक लोकल केबल चैनल लगा ली, जिस पर सलमान खान की 'मैंने प्यार किया' चल रही थी। हम चुपचाप बैठकर पिक्चर देखते रहे।
हीरोइन ने हीरो से कहा कि फ्रेंडशिप में न तो कोई सॉरी होता है, न थैंक्यू। पता नहीं इस बात का क्या मतलब था। कुछ देर बाद हीरोइन एक गाना गाने लगी और कबूतर से हीरो तक चिट्ठी पहुंचाने को कहने लगी। रोशनी उसके साथ-साथ गुनगुनाने लगी।
'नो सिंगिंग, प्लीज,' मैंने कहा।
मुझे ऐसा लगा जैसे रोशनी को मेरी इस बात से ठेस पहुंची है। लेकिन मुझे कोई परवाह नहीं थी। मैंने उसकी सिंगिंग स्किल्स के लिए पैसे नहीं चुकाए थे।
'क्या हम यहीं बैठे रहेंगे?' साढ़े तीन बजे उसने कहा।
'इट्स ओके, दीदी,' पूजा ने कहा। जाहिर है, वह सलमान की दीवानी थी। कुछ देर बाद उन्हें जो कुछ करना था, उसके मद्देनजर मुझे यह सुनकर हैरानी हुई कि पूजा ने अपनी को-वर्कर को दीदी कहकर बुलाया था।
चार बजे पिक्चर खत्म हो गई।
'अब क्या?' रोशनी ने कहा।
'चैनल बदलो,' मैंने सुझाव दिया।

साढ़े चार बजे लैंडलाइन फोन बजा। मैं दौड़कर फोन उठाने गया।

'सर, सिक्योरिटी गेट से राजू बोल रहा हूं। एक मैडम आपसे मिलने आई हैं,' उसने कहा।

'नाम क्या है?' मैंने पूछा।

'वे नाम नहीं बता रही हैं, सर। लेकिन उनके हाथ में कुछ पैकेट्स हैं।'

'उसे दो मिनट में भेज दो,' मैंने कहा। मैंने हिसाब लगाया कि पांच मिनट में वह यहां पहुंच जाएगी।

'ओके, सर,' उसने कहा।

मैं दौड़कर बाहर गया और मेन गेट और फ्रंट गेट को खुला छोड़ दिया। फिर मैं लड़कियों की ओर मुड़ा।

'चलो, ऊपर चलें,' मैंने कहा।

'क्या? तुम अब मूड में आए हो?' रोशनी खिलखिला दी।

'हां अभी!' मैंने अंगुलियां चटकाते हुए कहा। 'और तुम भी, पूजा, या जो भी तुम्हारा नाम हो।'

मेरे लहजे से हैरान होकर लड़कियां फौरन उठ खड़ी हुईं। हम तीनों ऊपर पहुंचे। फिर हम बेडरूम में घुसे और बेड पर गए।

'तो, यह कैसे करते हैं?' मैंने कहा।

'क्या?' रोशनी ने कहा। 'यह तुम्हारा फर्स्ट टाइम है?'

'बातें कम, काम ज्यादा,' मैंने कहा। 'मेरा मतलब है कि तुम लोग पहले क्या करते हो?'

रोशनी और पूजा ने एक-दूसरे की ओर देखा। वे मन ही मन मुझ पर हंस रही थीं।

'अपने कपड़े निकालो,' रोशनी ने कहा।

मैंने अपनी शर्ट निकाल दी।

'तुम भी,' मैंने उन दोनों से कहा। वे एक सेकंड को हिचकिचाईं, क्योंकि मैंने दरवाजा कुछ-कुछ खुला छोड़ दिया था।

'घर पर कोई नहीं है,' मैंने कहा।

लड़कियों ने अपने कपड़े उतारे। मैं इतना तनाव में था कि किन्हीं डिटेल्स पर ध्यान नहीं दे पाया। लेकिन रोशनी निश्चित ही ज्यादा भरे बदन वाली थी, उसकी तुलना में दुबली-पतली पूजा कुपोषित लग रही थी।

'बिस्तर में जाओ,' मैंने हुक्म सुनाया।

वे दोनों मेरे लहजे से हैरान होकर भीगी बिल्लियों की तरह बिस्तर में सरक गईं।

'तुम चाहते हो कि हम दोनों सब कुछ करें?' रोशनी ने हालात को भांपने की कोशिश करते हुए कहा।

'लेस्बियन सीन?'

'रुको,' मैंने कहा। मैं बेडरूम की खिड़की तक गया। बाहर लाल लाइट वाली एक सफेद एंबेसेडर कार पार्क हुई थी। उसमें से आरती बाहर निकली और उसने घंटी बजाई। जब किसी ने जवाब नहीं दिया तो वह लॉन में आ गई। उसके हाथ में एक बड़ी-सी स्क्रैपबुक और रमाडा बेकरी का एक बॉक्स था। जैसे ही वह घर में घुसी, वह मेरी नजरों से ओझल हो गई।

40

'तुम बड़े अजीब कस्टमर हो,' रोशनी ने टिप्पणी की।

'श्श्श!' मैंने कहा और दोनों नंगी लड़कियों के बीच जाकर लेट गया।

रोशनी फौरन मेरी गर्दन पर चूमने लगी, जबकि पूजा मेरा बेल्ट खोलने के लिए झुकी।

मैंने अपनी सांसें गिनना शुरू कर दीं। पचासवीं सांस पर मैंने कदमों की आहट सुनी। तब तक लड़कियां बहुत अच्छी तरह से मेरा बेल्ट निकाल चुकी थीं और अब मेरी जीन्स निकालने की तैयारी में लगी थीं।

साठवीं सांस पर दरवाजे पर दस्तक की आवाज सुनाई दी। पैंसठवीं सांस पर एक साथ तीन लड़कियों के चीखने की आवाज आई।

'हैप्पी बर्थ... ओह माय गॉड!!!' आरती की आवाज कमरे में गूंज रही थी।

रोशनी और पूजा मारे डर के हक्की-बक्की रह गईं और बेड-शीट से अपने चेहरे ढंक लिए। मैं बिस्तर पर बैठ गया। मैं सिचुएशन के मुताबिक हैरान नजर आ रहा था। लेकिन आरती को काटो तो खून न था। दोनों लड़कियां इस तरह की परिस्थितियों की आदी थीं, लिहाजा वे उठीं और बाथरूम में चली गईं।

'गोपाल!' आरती ने जोर से कहा। वह यकीन नहीं कर पा रही थी।

'आरती,' मैंने कहा और बिस्तर से बाहर निकला।

जब तक मैं अपनी जीन्स के बटन लगाता और शर्ट पहनता, तब तक वह दौड़कर कमरे से बाहर जा चुकी थी।

मैंने सीढ़ियों तक उसका पीछा किया। लेकिन वह तेजी से भाग रही थी। उसने गिफ्ट्स के पैकेट बीच रास्ते में ही फेंक दिए। मुझे उस तक पहुंचने के लिए जमीन पर बिखरे केक बॉक्स और स्क्रैपबुक को पार करना पड़ा। वह मेन डोर तक पहुंचती, उसके पहले ही मैंने उसकी कोहनी पकड़ ली।

'मेरा हाथ छोड़ दो,' आरती ने कहा, लेकिन उसके मुंह से आवाज नहीं निकल पा रही थी।

'आई कैन एक्सप्लेन, आरती,' मैंने कहा।

'मैंने कहा डोंट टच मी,' उसने कहा।

'जैसा तुम सोच रही हो, वैसा नहीं है,' मैंने कहा।

'तो फिर कैसा है? मैं यहां तुम्हें सरप्राइज देने आई तो तुम्हें इस हालत में देखा। कौन जानता है... मैंने अपनी पूरी जिंदगी में इससे, इससे ज्यादा वाहियात और कुछ नहीं देखा,' आरती ने कहा और रुक गई। वह अपना सिर हिला रही थी। उसे शब्द नहीं सूझ रहे थे।

फिर वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

'इन लड़कियों को विधायक शुक्ला ने भेजा था, बर्थडे गिफ्ट के तौर पर,' मैंने कहा।

उसने मेरी ओर देखा। वह अब भी अपना सिर हिला रही थी, जैसे कि उसने अभी-अभी जो देखा और सुना, उस पर वह भरोसा ही न कर पा रही हो।

'ज्यादा नाराज मत होओ। अमीर लोग ऐसा ही करते हैं,' मैंने कहा।

चटाक! उसने मुझे जोरों से एक तमाचा मारा। लेकिन उस तमाचे की चोट से ज्यादा उसकी आंखों से झलक रही निराशा ने मुझे तकलीफ पहुंचाई।

'आरती, ये तुम क्या कर रही हो?'

उसने कुछ नहीं कहा, बस मुझे एक और तमाचा जड़ दिया। मेरे हाथ अपने गालों पर चले गए। तीन सेकंड के भीतर वह घर से बाहर जा चुकी थी। दस सेकंड बाद मैंने कार का दरवाजा बंद होते सुना। पंद्रह सेकंड बाद उसकी कार मेरे पोर्च से जा चुकी थी।

मैं सोफे में धंस गया। ऐसा लग रहा था, जैसे मेरे घुटनों में कोई जान न रह गई हो।

पूजा और रोशनी पूरे कपड़े पहनकर एक-एक कर नीचे आईं। पूजा ने सीढ़ियों से केक बॉक्स और स्क्रैपबुक उठाई और मेरे सामने टेबल पर रख दी।

'जब तुमने हमारे साथ ही कुछ नहीं किया तो तीसरी लड़की को क्यों बुलाया?' रोशनी जानना चाहती थी।

'यहां से चली जाओ,' मैंने कहा। मेरी आवाज धीमी थी।

उन्होंने अपने साथी को फोन लगाया। चंद मिनटों बाद मैं अपने घर में अकेला था।

मैं वहां दो घंटे तक बैठा रहा, जब तक कि बाहर अंधेरा न हो गया। मेड्स लौट आईं और बत्तियां जला दीं। उन्होंने मुझे वहां बैठे देखा तो मुझे डिस्टर्ब नहीं किया।

स्क्रैपबुक का कवर लाइट में चमक रहा था। मैंने उसे उठा लिया।

'एक नॉटी बॉय और एक नॉट-सो-नॉटी गर्ल की कहानी,' उसके काले कवर पर लिखा था, जिस पर सफेद रंग से हैंड-पेंटिंग की गई थी। उस पर एक लड़के और लड़की की स्माइली बनी थी और दोनों आंख मार रहे थे।

मैंने स्क्रैपबुक को खोला।

'एक समय की बात है। एक नॉटी बॉय ने एक गुड गर्ल का बर्थडे केक चुरा लिया था,' उसके पहले पन्ने पर लिखा था। इसके साथ ही मुझे डांटती हुई टीचर और रोती हुई आरती का चित्र बना था।

मैंने पेज पलटाया।

'लेकिन उसके बाद नॉटी बॉय गुड गर्ल का दोस्त बन गया। उसके बाद वह उसकी हर बर्थडे पार्टी में शामिल होने आता,' उस पर लिखा था। इसके बाद एल्बम में उसकी दस से सोलह साल तक की सालों बर्थडे पार्टीज की तस्वीरें थीं, जिनमें मैं शामिल हुआ था। मैंने देखा कि हम एक-एक कर किस तरह बड़े होते जा रहे थे। उसकी हर बर्थडे पार्टी में एक न एक तस्वीर ऐसी जरूर थी, जिसमें फोटो में केवल हम दोनों थे।

इसके अलावा आरती ने बहुत मेहनत करके स्कूल की छोटी-मोटी यादगारें भी सजोई थीं। उनमें बारहवीं क्लास का टाइमटेबल था, जिसमें उसने मैथ्स क्लासेस के ऊपर सींगों का निशान बनाया था। उसमें नौवीं क्लास के स्कूल के फंक्शन की टिकटें [illegible] गए थे। उसने उस दिन का बिल उसमें चिपकाया था। उसने

आठवीं क्लास की अपनी स्क्रैपबुक से एक पेज भी फाड़कर लगाया था, जिसमें उसने अपने बेस्ट फ्रेंड के रूप में मेरा नाम लिखा था। स्क्रैपबुक इन शब्दों के साथ खत्म होती थी – 'तुम्हारे साथ अब तक जिंदगी का सफर बहुत खुशगवार रहा है। तुम्हारे साथ बिताए जाने वाले आने वाले कल का इंतजार है – मेरे हमसफर। हैप्पी बर्थडे, गोपाल!'

अब मैं स्क्रैपबुक के अंत तक पहुंच चुका था। बैक कवर पर उसने कैलीग्राफी करते हुए बड़े अक्षरों में 'जी' और 'ए' लिखा था।

मैं फौरन उसे कॉल करना चाहता था। मैं उसे बताना चाहता था कि मुझे उसका तोहफा कितना अच्छा लगा है। शायद, उसने इसे तैयार करने के लिए हफ्तों तक मेहनत की थी।

मैंने केक बॉक्स खोला।

चॉकलेट केक का आकार कुछ–कुछ बिगड़ चुका था, लेकिन मैं उसकी लिखावट पढ़ सकता था – 'चोरी हो गया – पहले मेरा केक और फिर मेरा दिल,' उस पर सफेद आइसिंग से लिखा था और उसने नीचे छोटे अक्षरों में 'हैप्पी बर्थडे, गोपाल' लिखा था।

मैंने केक बॉक्स को दूर सरका दिया। घड़ी ने बारह बजाए।

'तुम्हारा बर्थडे पूरा हुआ, गोपाल,' मैंने कमरे में मौजूद अकेले शख्स से जोर से बतियाते हुए कहा।

हालांकि मैंने खुद से वादा किया था कि आरती को फोन नहीं लगाऊंगा, इसके बावजूद मैंने अगले दिन उसे कॉल किया। लेकिन, उसने फोन नहीं उठाया।

मैंने पूरे हफ्ते अनेक बार उसे कॉल करने की कोशिश की, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।

एक बार उसने गलती से फोन उठा लिया।

'तुम कैसी हो?' मैंने कहा।

'प्लीज, मुझे फोन करना बंद कर दो,' उसने कहा।

'मैं कोशिश कर रहा हू,' मैंने कहा।

'थोड़ी और कोशिश करो,' उसने कहा और फोन रख दिया।

मैं झूठ नहीं बोल रहा था। मैं पूरी कोशिश कर रहा था कि उसके बारे में न सोचूं। खैर, अभी मेरा प्लान पूरा नहीं हुआ था।

मैंने 'दैनिक' के संपादक अशोक को फोन लगाया।

'मिस्टर गोपाल मिश्रा?' उसने कहा।

'आपका पेपर कैसा चल रहा है?' मैंने कहा।

'बहुत अच्छा। मैं देख रहा हूं कि आप हमें बहुत विज्ञापन दे रहे हैं। उसके लिए बहुत धन्यवाद।'

'मुझे आपसे एक मदद की दरकार है,' मैंने कहा।

'क्या?' उसने कहा। शायद वह सोच रहा होगा कि मैं उससे किसी खबर को दबाने की बात कहूंगा।

'मैं चाहता हूं कि आप एक व्यक्ति को नौकरी पर रख लें,' मैंने कहा। 'वह बहुत अच्छा काम करता है।'

'कौन?'

'राघव कश्यप।'

'वही ट्रेनी, जिसे हमने बाहर कर दिया था?' उसने कहा। 'आपके विधायक शुक्ला ने ही तो हमें उसे बाहर करने को मजबूर किया था।'

'हां, अब उसे फिर से नौकरी पर रख लो।'

'क्यों? उसने तो अपना खुद का पेपर निकाला था।

उसने उसमें दिमनापुरा प्लांट की बड़ी–सी खबर भी लगाई थी। सॉरी, हमें भी वह खबर छापनी पड़ी थी, क्योंकि सभी उसे कवर कर रहे थे।'

'इट्स ओके,' मैंने कहा। 'क्या आप उसे फिर से काम पर रख सकते हैं? उसे मेरा नाम मत बताइएगा।'

संपादक सोच में डूब गया। 'मैं उसे रख तो सकता हूं, लेकिन वह बहुत जोशीला पत्रकार है। मैं नहीं चाहता कि आप फिर से उसे लेकर अपसेट हो जाएं।'

'उसे एजुकेशन सेक्टर से कुछ दिनों तक दूर रखना, या बेहतर तो यही होगा कि उसे घोटालों की खबरों से ही दूर रखना।'

'मैं कोशिश करूंगा,' संपादक ने कहा। 'लेकिन क्या वह जॉइन करेगा? उसका खुद का एक पेपर है।'

'उसका पेपर अब लगभग बरबाद हो चुका है।

उसके पास कोई और जॉब भी नहीं है,' मैंने कहा।

'ठीक है, मैं उसे बुलाता हूं,' संपादक ने कहा।

'तब तो आपका एक विज्ञापन बनता है। अगले संडे के लिए गंगाटेक के विज्ञापन के लिए फ्रंट पेज बुक कर लीजिए,' मैंने कहा।

'थैंक यू। मैं मार्केटिंग को बता देता हूं।'

मेरे बर्थडे के एक हफ्ते बाद बेदी दो कंसल्टैंट्स के साथ मेरे ऑफिस आया। उनके पास एक बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज कोर्स खोलने का प्रपोजल था। साथ में डीन श्रीवास्तवा भी आए थे।

'एमबीए की खासी डिमांड है। लेकिन वह तो ग्रेजुएशन के बाद की बात है। क्यों न ग्रेजुएशन से पहले कुछ ऑफर करें?' बेदी ने कहा। कंसल्टैंट ने मुझे अपने लैपटॉप पर एक प्रजेंटेशन दिखाया। स्लाइड्स में एक कॉस्ट–बेनेफिट एनालिसिस था, जिसमें हमारे द्वारा ली जाने वाली फीस और फैकल्टी के खर्च की तुलना की गई थी।

'बिजनेस मैनेजमेंट स्टडीज (बीएमएस) बेस्ट है।

आप इंजीनियरिंग जितनी ही फीस ले सकते हैं, लेकिन आपको लैब्स जैसी सुविधाएं नहीं मिलेंगी,' एक कंसल्टैंट ने कहा।

'फैकल्टी भी आसान काम है। किसी भी एम–कॉम या सीए टाइप को रख लो। इस तक के ढेरों अवेलेबल हैं,' दूसरे ने कहा।

लेकिन मेरा मन उचटा हुआ था। अब मैं अपना काम नहीं फैलाना चाहता था। मुझे हर साल एक्स्ट्रा करोड़ रुपए कमा लेने में अब कोई तुक नहीं नजर आती थी। मैं तो ऑफिस आना भी नहीं चाहता था।

'एक्साइटिंग है ना?' बेदी ने कहा।

'हुंह? हां, लेकिन क्या हम इस बारे में फिर कभी बात करें?' मैंने कहा।

'क्यों?' बेदी ने कहा। फिर उसने मेरा लटका हुआ चेहरा देखा।

'ठीक है, हम बाद में चले आएंगे,' वह मान गया।

'अगले हफ्ते कैसे रहेगा? या जब तुम चाहो।'

बेदी और उसके संगी–साथी कमरे से बाहर चले गए।

'डायरेक्टर गोपाल, आपकी तबीयत तो ठीक है?'

डीन ने कहा।

'मैं ठीक हूं,' मैंने कहा।

'सॉरी टु से, लेकिन आप पूरे हफ्ते ठीक नहीं नजर आए हैं। हालांकि मुझे आपके मामले में नहीं बोलना चाहिए, लेकिन फिर भी मैं आपसे बड़ा हूं। क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हू?'

'पर्सनल मैटर है,' मैंने कहा। मेरी आवाज ठोस थी।

'आपको अब शादी कर लेनी चाहिए, सर। उस स्टूडेंट की बात बिल्कुल सही थी,' उन्होंने मुंह दबाकर हंसते हुए कहा।

'आपकी बात पूरी हो गई?'

उनके चेहरे से मुस्कराहट नदारद हो गई। वे फौरन उठ खड़े हुए और वहां से चल दिए।

मेरा सेलफोन बीप हुआ। 'दैनिक' के मार्केटिंग हेड शैलेष का मैसेज था – 'राघव ने हमारा ऑफर एक्सेप्ट कर लिया है। वह कल जॉइन कर लेगा।'

'ग्रेट, थैंक यू वेरी मच,' मैंने जवाब दिया।

'उम्मीद करता हूं आप इसी तरह हमारा साथ देते रहेंगे। संडे की बुकिंग के लिए थैंक यू,' शैलेष ने मैसेज किया।

41

'दैनिक' के दफ्तर में ब्लैक मर्सीडीज पहुंचने से गार्ड्स में थोड़ी चहल–पहल मची। बड़ी कार हमेशा लोगों का ध्यान खींचती है। मैं उसमें से बाहर निकला और अपने नए सनग्लासेस पहन लिए। फिर मैं लॉबी में रिसेप्शनिस्ट के पास गया।

'मैं राघव कश्यप से मिलने आया हूं,' मैंने कहा और उसे अपना बिजनेस कार्ड दिया।

रिसेप्शनिस्ट यह पता नहीं लगा पाई कि राघव अभी कहां है। शैलेष ने मुझे ऊपर से देखा और दौड़ते हुए नीचे आया।

'गोपाल भाई? आपको मुझे इंफॉर्म कर देना चाहिए था। आप यहां किसका वेट कर रहे हैं?'

'मैं राघव से मिलना चाहता हूं,' मैंने कहा।

'ओह श्योर,' उसने कहा, 'प्लीज मेरे साथ आइए।'

हम राघव के क्यूबिकल तक पहुंचे। उसकी डेस्क के नीचे आईटी का एक लड़का घुसा हुआ था और उसका कंप्यूटर सेट कर रहा था। कनेक्शंस चेक करने के लिए राघव भी झुका हुआ था।

'तुमने यहां फिर जॉइन कर लिया है?' मैंने कहा।

राघव घूमा। 'गोपाल?' उसने कहा और उठ खड़ा हुआ।

'मैं मार्केटिंग डिपार्टमेंट में आया था, लेकिन तुम दिख गए।' फिर मैं शैलेष की ओर मुड़ा। 'थैंक यू, शैलेष।'

'ओके,' शैलेष ने कहा। 'सी यू, गोपाल भाई।'

उसके जाने के बाद राघव ने कहा, 'अजीब बात थी। खुद संपादक ने मुझे फोन करके बुलाया। मेरे पास यूं भी पैसा नहीं था। मैंने सोचा कि मैं तब तक के लिए रिजॉइन कर लेता हूं, जब तक कि मेरे पास 'रेवोल्यूशन 2020' को रिलॉन्च करने के लिए पर्याप्त पैसा इकट्ठा नहीं हो जाता।'

'क्या हम एक कप चाय पी सकते हैं?' मैंने कहा।

'श्योर,' उसने कहा।

हम सेकंड फ्लोर पर स्टाफ कैंटीन तक चलकर गए।

दीवारों पर अखबार के पुराने अंकों की फ्रेम्ड कॉपीज टंगी थीं। वहां दर्जनों पत्रकार अपने डिक्टाफोन और नोटबुक्स के साथ बैठे थे और शाम के नाश्ते का मजा ले रहे थे। मैं समझ गया था कि यहां पर राघव असहज महसूस कर रहा था।

'अब मुझे छोटे ऑफिस की आदत हो गई है, 'दैनिक' का दफ्तर तो बहुत बड़ा है,' उसने कहा।

उसने दो प्लेट समोसे और चाय ली। मैंने पैसे देना चाहा, लेकिन उसने मना कर दिया।

'बड़े ऑफिस में अपने आपको छोटा महसूस कर रहे हो ना?' मैंने कहा।

'बात केवल इतनी ही नहीं है। 'रेवोल्यूशन 2020' में हमने जिस तरह की खबरें कीं, वैसी मैं यहां कभी नहीं कर पाऊंगा,' मैंने कहा।

मैं उसे कहना चाहता था कि उसने 'रेवोल्यूशन 2020' में जो कुछ किया, उसकी वजह से वह लगभग दिवालिया हो चुका था। लेकिन मैं उसे यहां नीचा दिखाने नहीं आया था।

'लेकिन एक जॉब का होना अच्छा है। फिर तुम्हें जर्नलिज्म अच्छा भी लगता है,' मैंने कहा।

'इसीलिए मैंने हां कह दिया। अभी तो केवल छह महीने के लिए ही यहां ट्रायल पर रहूंगा।'

'केवल छह महीने?'

'वे लोग चाहते हैं कि मैं दूसरों की खबरों को एडिट करूं। हो सकता है इससे मैं अपने आपको ज्यादा सीनियर महसूस करूं, लेकिन मुझे रिपोर्टिंग करना पसंद है। देखते हैं क्या होता है।'

'यदि जॉब है तो हम बिल्स भी पे कर सकते हैं।

जाहिर है, यदि तुम शादी करना चाहो तो जॉब से मदद मिलती है,' मैंने कहा।

राघव हंस पड़ा। हमने कई सालों से पर्सनल बातें नहीं की थी। हालांकि इस बार उसे मेरी नेक मंशा पर शक नहीं था। राघव के साथ यही बात थी। एक तरफ वह बड़े से बड़े घोटालों का खुलासा कर सकता था, तो दूसरी तरफ बड़ी आसानी से लोगों पर भरोसा कर लेता था।

'किसकी शादी हो रही है?' राघव ने कहा। वह अब भी हंस रहा था।

'तुम और आरती, और कौन?' मैंने कहा। मैंने खुद को याद दिलाया कि मुझे हंसते-हंसते ये बातें करनी हैं।

राघव ने मेरी ओर देखा। मैंने इससे पहले कभी उससे आरती के बारे में बात नहीं की थी। वास्तव में, पिछले कई सालों से मैंने उससे किसी भी बारे में बात नहीं की थी।

'आई होप मैं तुमसे एक दोस्त की तरह बात कर सकता हूं। किसी जमाने में हम दोस्त ही तो हुआ करते थे, है ना?' मैंने कहा। मैंने समोसे का एक बाइट लिया और पाया कि वह बेहद तीखा था।

राघव ने गहरी सांस छोड़ते हुए सिर हिलाया। 'मेरे और आरती के बीच अभी सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है।'

'रियली?' मैंने चौंकने का अभिनय किया।

'मैंने हफ्तों से उससे बात नहीं की है।'

'क्या हुआ?' मैंने कहा।

राघव ने अपने समोसे पर टोमैटो सॉस डाला।

'गलती मेरी है। जब पेपर शुरू हुआ, तो मैंने उसे पर्याप्त समय नहीं दिया। धीरे-धीरे हमारे बीच की दूरियां बढ़ने लगीं। पिछले कुछ महीनों से तो वह मुझसे बहुत कटी-कटी-सी रही है,' राघव ने कहा।

'क्या तुम लोगों ने कभी इस बारे में बात की?' मैंने कहा।

'नहीं, हमने प्लान तो किया था, लेकिन बात नहीं कर पाए,' उसने कहा।

'वह तुम्हें बहुत चाहती है,' मैंने कहा।

'पता नहीं,' राघव ने कहा। वह अपने समोसे को खाए बिना उसे सॉस में घुमाता रहा।

'नहीं, वह वाकई तुम्हें चाहती है। मैं उसे बचपन से जानता हूं, राघव। तुम हमेशा से उसके लिए सब कुछ थे।'

राघव हैरान था। 'क्या वाकई?'

'वह तुमसे शादी करना चाहती थी, है ना?'

'हां, लेकिन तब समय ठीक नहीं था। मेरी ओर देखो। आज मैं अपने कैरियर में किसी मुकाम पर नहीं हूं,' राघव ने कहा।

'तुम्हारा कैरियर दूसरे लोगों से अलग है। तुम इसे पैसों में नहीं तौल सकते। जहां तक लोगों की मदद करने का सवाल है, तो तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो।'

'लेकिन मैंने वह मौका भी तो गंवा दिया,' राघव ने कहा।

'यू आर फाइन। तुम अब भी एक बड़े अखबार में सब-एडिटर हो। और यदि तुम आरती से शादी कर लो तो तुम और आगे जा सकते हो।'

'क्या मतलब?'

'तुम्हें पता है कि आरती के परिवार पर राजनीति में शामिल होने का दबाव है?' मैंने कहा।

राघव चुप रहा।

'तुम्हें पता है ना?'

'हां, मैंने सुना तो है,' वह फुसफुसाया।

'आरती के पिता राजनीति में जा नहीं सकते और आरती जाएगी नहीं। तो शायद, दामाद?'

राघव ने ऊपर देखा। वह हैरत में था। 'तुम कितनी दूर तक का सोच लेते हो, मैन!'

मैंने अपनी आंखें घुमाईं। 'चूंकि मैं स्मार्ट नहीं हूं, इसलिए मुझे दूसरे तरीकों से इसकी खानापूर्ति करनी पड़ती है।'

'तुम और स्मार्ट नहीं?' उसने कहा।

'तुम उसे चाहते हो?' मैंने कहा।

'हमारे बीच सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है,' उसने स्वीकारा।

'मुझे पूरा यकीन है कि तुम सब ठीक कर सकते हो। आखिर इससे पहले भी तुम उसका दिल जीतने में कामयाब रहे थे,' मैंने कहा।

राघव ने एक शाय स्माइल दी।

'उसे कॉल मत करो। उसके होटल में जाकर उससे मिलो। उसके साथ एक पूरा दिन बिताओ। वह बस इतना ही चाहती है, तुम्हारा वक्त और तुम्हारी तवज्जो।

उसके बाद वह तुम्हें दस गुना ज्यादा प्यार करेगी,' मैंने दाएं-बाएं देखते हुए कहा।

राघव चुप रहा।

'प्रॉमिस करो, तुम ऐसा ही करोगे,' मैंने कहा और अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

उसने मुझसे हाथ मिलाया और सिर हिला दिया। मैं उठ खड़ा हुआ और शुक्ला-जी की बात दोहरा दी।

'हो सकता है, जिंदगी तुम्हें फिर यह मौका न दे।'

राघव मेरी कार तक चलकर आया। हालांकि उसने कार पर कतई ध्यान नहीं दिया।

'तुम मेरे लिए यह क्यों कर रहे हो?' उसने पूछा।

मैं कार में बैठ गया। मैंने खिड़की का शीशा रोल-डाउन किया। 'क्योंकि आरती मेरे बचपन की दोस्त है, और...' 'और क्या?' राघव ने कहा।

'हर किसी को अपनी तरफ से कुछ न कुछ तो करना ही चाहिए,' मैंने कहा। मेरे ड्राइवर ने कार चला दी।

उसके बाद मैं राघव के टच में नहीं रहा। उसने कई बार फोन लगाया। मैंने या तो फोन उठाया नहीं, या उठाया तो बिजी होने का बहाना बना दिया। एक बार जब मेरी उससे बात हुई,

तब उसने मुझे बताया था कि आरती और उसके बीच बातचीत फिर शुरू हो गई है।

लेकिन मैंने कहा कि मेरे ऑफिस में इंस्पेक्टर्स आए हुए हैं और फोन रख दिया।

मैंने कसम खाई थी कि आरती को कभी कॉल नहीं करूंगा। उसने भी मुझे कभी कॉल नहीं किया। हां, एक बार रात दो बजे उसका एक मिस्ड कॉल जरूर आया था। मैंने उसे कॉल बैक किया, क्योंकि तकनीकी रूप से कॉल की शुरुआत मैंने नहीं की थी। लेकिन उसने फोन नहीं उठाया।

लड़का–लड़की के बीच मिस्ड कॉल और कॉल–बैक के ड्रामे का अपना ही एक यूजर मैन्युअल होना चाहिए। मैं समझ गया कि उसने किसी कमजोर लम्हे में मुझे कॉल कर दिया होगा, इसलिए मैंने उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

मैंने बीएमएस प्रोग्राम डॉक्स के लिए बोरिंग कंसल्टेंट्स को बुलाया। प्लान में दम था। हमने बिजनेस स्टडीज में अपना काम बढ़ाने की प्रक्रिया शुरू कर दी।

अब हमारा सामना नए सरकारी अधिकारियों से था, जिन्हें हमारा प्लान अप्रूव करना था। इसका मतलब था कि हमें कुछ नई जेबें गर्म करनी थीं। हमें पता था कि यह मुनाफेदार बिजनेस साबित होगा। हर साल लाखों बच्चे टेस्ट देते हैं, रिजेक्ट होते हैं और एजुकेशन सिस्टम से बाहर निकल जाते हैं। हमें बस अपना जाल इतना मजबूत रखना था कि उन्हें फांस सकें।

मैं कॉलेज फैकल्टी के साथ ज्यादा समय बिताने लगा। मैं उन्हें अक्सर शाम को अपने घर बुलाता। चूंकि वे मेरे लिए काम करते थे, इसलिए वे मेरे जोक्स पर ठहाके लगाकर हंसते थे और हर दस मिनट में मेरी तारीफ करते थे। मैं उन्हें दोस्त तो नहीं कह सकता था, लेकिन वे कम से कम मेरे घर का अकेलापन तो दूर करते थे।

तीन महीने बीत गए। हमने बीएमएस प्लान लॉन्च किया और अच्छी मार्केटिंग के कारण चंद हफ्तों में सीटें भर गईं। मैं कभी–कभार ही कैम्पस से बाहर निकलता था और कभी निकलता भी था तो केवल अधिकारियों से मिलने। इस दौरान शुक्ला–जी का केस बिगड़ता चला गया। उन्होंने मुझे बताया कि मुकदमे में सालों लग सकते हैं। उन्होंने जमानत की अर्जी दी, लेकिन कोर्ट ने अर्जी खारिज कर दी। शुक्ला–जी को लगा कि सीएम ने उन्हें दगा दिया है, क्योंकि पार्टी अक्सर यह कहती थी कि यदि वे राजनीति छोड़ दें तो जेल की चहारदीवारी से बाहर आ सकते हैं। मैं हर महीने उनसे मिलने जाता था। मेरे हाथों में गंगाटेक ट्रस्ट अकाउंट्स की कॉपी हुआ करती थी।

एक दिन, जब मैं घर पर था, राघव का फोन आया।

मैंने फोन नहीं उठाया। राघव लगातार कोशिश करता रहा। मैंने फोन साइलेंट कर दिया और उसे एक तरफ रख दिया।

उसने मुझे मैसेज भेजा – 'गोपाल तुम कहां हो? मैं कब से कोशिश कर रहा हूं।'

मैंने पहले–पहल तो जवाब नहीं दिया, लेकिन फिर मैंने सोचा कि कहीं वह किसी मुसीबत में तो नहीं फंस गया, जैसे कि उसने किसी नए घोटाले का खुलासा कर दिया हो, वगैरह–वगैरह।

मैंने उसे मैसेज किया – 'मीटिंग में हूं। क्या बात है?'

उसके जवाब से मुझे गहरा झटका–सा लगा।

'आरती और मैं सगाई कर रहे हैं। अगले संडे पार्टी है। मैं तुम्हें इनवाइट करना चाहता हूं।'

मैं इस मैसेज को देखता रह गया। मैं चाहता था कि ऐसा ही हो, लेकिन इसके बावजूद मुझे बहुत तकलीफ हो रही थी।

'अनफोर्चुनेटली, मैं अभी शहर से बाहर हूं। लेकिन कॉन्ग्रेच्युलेशंस!!!' मैंने जवाब भेजा। मैं सोच रहा था कि कहीं मैंने एक एक्सक्लेमेशन मार्क ज्यादा तो नहीं लगा दिया।

राघव ने मुझे फिर कॉल किया। मैंने उसे नजरअंदाज कर दिया। उसने दो बार फिर कोशिश की। आखिर मुझे फोन उठाना ही पड़ा।

'ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम हमारी इंगेजमेंट में न आओ?' उसने कहा।

'हे, मैं अभी एक फैकल्टी मीटिंग में हूं,' मैंने कहा।

'ओह, सॉरी। सुनो, तुम्हें आना ही होगा,' राघव ने कहा।

'मैं नहीं आ सकता। मैं एक ज्वाइंट वेंचर के सिलसिले में सिंगापुर जा रहा हूं,' मैंने कहा।

'क्या? और तुम कभी कॉल बैक क्यों नहीं करते?

यहां तक कि मैं जब आरती से भी तुम्हारे बारे में पूछता हूं तो वह कहती है कि तुम बहुत बिजी हो।'

'आई एम रियली सॉरी। मैं वाकई बिजी हूं। हम अगले दो सालों में अपने स्टूडेंट्स की तादाद दोगुनी करने जा रहे हैं,' मैंने कहा।

'यानी तुम अपनी बेस्ट फ्रेंड की इंगेजमेंट मिस कर दोगे? क्या वह अपसेट नहीं होगी?'

'मेरी तरफ से उससे माफी मांग लेना,' मैंने कहा।

राघव ने एक गहरी सांस छोड़ी। 'ठीक है। लेकिन दो महीने बाद हमारी शादी है। पहली मार्च को। प्लीज, तब इस शहर में ही रहना।'

'ऑफ कोर्स, मैं यहीं रहूंगा,' मैंने कहा और अपने कैलेंडर में उस तारीख पर गोला लगा दिया।

'और अब तुम फिर से अपनी मीटिंग में मसरूफ हो सकते हो। टेक केयर, बडी,' राघव ने कहा।

मैंने फौरन आरती को एक 'कॉन्ग्रेट्स!' मैसेज भेज दिया। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

मैंने अपने बड़े–से घर की ओर देखा, जो मेरी आत्मा की तरह खाली था।

42

मार्च की पहली तारीख को मैंने ताज गंगा में एक रूम बुक कराया। फोर्थ फ्लोर पर मौजूद इस रूम में एक छोटी–सी बालकनी थी, जहां से होटल के पूल और लॉन्स का नजारा दिखता था। दो दिन पहले मैंने अपने फोन का सिम कार्ड बाहर निकाल लिया था। मैंने अपने स्टॉफ से कह दिया था कि मैं जरूरी काम से बाहर जा रहा हूं। मैं दिनभर होटल में अपने रूम में बैठा रहा। शाम को आठ बजे मैं बालकनी में आया। शाम की बुझती हुई रोशनी में मैंने वह कार्ड फिर पढ़ा।

मिसेजएंडमिस्टरअनिलकश्यप

अपसमभीकोसादरआमंत्रितकरतेहैं

अपनेबेटे

राघव

के

आरती

(सुपुत्री: मिसेजएंडमिस्टरप्रताप(ब्रजमोहन)प्रधान,डीएम)

केसाथशुभविवाहमें

शामआठबजे

1मार्च2010

पुलसाइडलॉन्स,

ताजगंगा,वाराणसी

मैं नीचे वेडिंग वेन्यू देख सकता था। समूचा गार्डन एरिया फूलों से सजा था और रोशनी में नहाया हुआ था। मेहमान आने लगे थे। एक कोने में डीजे डांस फ्लोर सेट कर रहे थे और म्यूजिक ट्रैक्स टेस्ट कर रहे थे। लॉन के एक तरफ फूड काउंटर्स थे। एक छोटे–से स्टेज पर दो सजी–धजी कुर्सियां थीं, जिन पर बच्चे उछलकूद कर रहे थे। ये दूल्हा–दुल्हन की कुर्सियां थीं।

शादी का पांडाल, जहां सभी रस्में होनी थीं, गेंदे के फूलों से सजा था।

मैं वहां चुपचाप खड़ा रहा। चौथे फ्लोर पर होने के कारण मेरे कानों में शहनाई की बहुत धीमी आवाज ही आ पा रही थी।

नौ बजे बारात आई। राघव घोड़ी पर बैठा था। डीजे ने म्यूजिक का वॉल्यूम बढ़ा दिया। राघव के नाते–रिश्तेदार घोड़ी के सामने नाच रहे थे। राघव ने क्रीम कलर का बंद–गला सूट पहन रखा था। हालांकि मुझे यह स्वीकार करते हुए अच्छा नहीं लगेगा, लेकिन वह इतनी दूर से देखने पर भी हैंडसम नजर आ रहा था। यदि उसकी जगह मैं होता तो और महंगी पोशाक पहनता, लेकिन इसके बावजूद मैं इतना अच्छा नहीं दिख सकता था। मैंने राघव से फिर अपनी तुलना करने के लिए खुद को घुड़क दिया।

साढ़े नौ बजे आरती आई। वह धीरे–धीरे स्टेज की ओर बढ़ रही थी। लोग हैरान रह गए। उन्होंने इससे खूबसूरत दुल्हन शायद कभी नहीं देखी थी।

वह परियों–सी नजर आ रही थी। उसने हल्के लाल रंग का लहंगा पहन रखा था, जिस पर सिल्वर रंग के सितारे थे। और इसके बावजूद कि मेरे पास दूरबीन नहीं थी, मैं बता सकता था कि वह एकदम परफेक्ट दिख रही है। सेरेमनी के दौरान राघव और आरती के कजिन्स उनके इर्द–गिर्द जमा हो गए। उन्होंने उन दोनों को उठा लिया, जिस कारण उनके लिए एक–दूसरे को फूलमाला पहनाना कठिन हो गया था।

जयमाला समारोह के बाद मैं और देख न सका। मैं केवल आरती को दुल्हन के रूप में देखना चाहता था, मुझे पूरी वेडिंग लाइव देखने की कोई जरूरत नहीं थी।

मैं अपने कमरे में चला आया, दरवाजा लगा दिया और परदे खींच दिए। मैंने टीवी को फुल वॉल्यूम में चला दिया, ताकि नीचे से आ रही हर आवाज को अनसुना कर सकूं।

मैंने अपने फोन में सिम कार्ड फिर लगा लिया। फोन चालू होते ही एक के बाद एक ढेरों मैसेजस आने लगे।

मुझे फैकल्टी की ओर से चालीस मैसेज आए थे, जिनमें से दस तो अकेले डीन की ओर से आए थे। वे सभी कॉलेज की विभिन्न समस्याओं के बारे में बात कर रहे थे। राघव ने मुझे पांच मैसेज भेजे थे और वह पूछ रहा था कि मुझे कार्ड मिला या नहीं। पता नहीं उसने मुझे कितने कॉल किए होंगे। लेकिन एक मैसेज ने मुझे सबसे ज्यादा चौंकाया। यह आरती का मैसेज था। उसमें लिखा था –

'शादी में आना। लेकिन यदि तुम आना चाहो तो ही।'

मैंने रिप्लाई करने के बारे में सोचा, लेकिन फिर मुझे ख्याल आया कि वह स्टेज पर फोन कैसे चेक करेगी।

मैंने डीन को फोन लगाया।

'आप कहां है, डायरेक्टर गोपाल?' डीन ने ऊंची आवाज में कहा। 'हम सब कितनी फिक्र कर रहे थे!'

'डीन श्रीवास्तवा... डीन श्रीवास्तवा...' 'गोपाल!' उन्होंने मेरी आवाज में पैठे तनाव को भांपते हुए कहा।

'मुझे यहां से ले जाओ,' मैं पूरी तरह टूट चुका था।

'लेकिन आप है कहां? कहां है आप?'

'ताज गंगा, 405... मैं यहां नहीं रहना चाहता।'

'मैं आ रहा हूं,' उन्होंने कहा।

एक घंटे बाद मैं डीन की कार में उनके पास बैठा था और कैम्पस की ओर बढ़ रहा था।

'तो, आखिर बात...' उन्होंने कहना शुरू किया, लेकिन चुप हो गए। वे मेरी ओर एक नजर डालकर समझ गए थे कि मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

'डीन श्रीवास्तवा, मैं खूब काम करना चाहता हूं।

चलो, गंगाटेक को नई ऊंचाइयों पर ले जाते हैं। मैं एजुकेशन की हर फील्ड में अपनी मौजूदगी दर्ज कराना चाहता हूं। मुझे व्यस्त रखिए। इतना व्यस्त कि मेरे पास सोचने तक का समय न हो।'

'लेकिन आप तो पहले ही बहुत व्यस्त हैं, सर,' वे परेशान नजर आ रहे थे।

'उससे भी ज्यादा। हम कोचिंग की फील्ड में क्यों नहीं हैं?' मैंने कहा। 'उसमें खूब पैसा है। मुझे इंजीनियरिंग और एमबीए कोचिंग के लिए प्रपोजल चाहिए। ओके?' मैंने कहा। मेरी आवाज गूंज रही थी।

'आप ठीक तो हैं, डायरेक्टर गोपाल?' डीन ने कहा।

'आप मेरी बात सुन रहे हैं या नहीं? मुझे प्रपोजल चाहिए,' मैंने कहा। मैं इतनी जोर से चिल्लाया कि हमारा ड्राइवर भी असहज महसूस करने लगा।

'यैस, डायरेक्टर,' डीन ने कहा।

उन्होंने मुझे घर छोड़ा। मैं सीधे अपनी डायनिंग टेबल के पास बने बार पर गया और ब्लैक लेबल व्हिस्की की नई बोतल खोल ली, जिसे हम इंस्पेक्टर्स के लिए लाए थे। मैंने एक पूरा गिलास भरकर व्हिस्की निकाली।

नीट। मेड्स भीतर आई।

'आप कहां थे, साहब?' उन्होंने पूछा।

'मुझे काम था,' मैंने कहा। व्हिस्की बहुत कड़वी लग रही थी, लेकिन मैं उसे पूरी गटक गया।

'डिनर?'

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया। मेड्स बाहर चली गई। मैं बुकशेल्फ की ओर बढ़ा और स्क्रैपबुक निकाल ली।

मैंने एक और गिलास बनाया। मैं एक ही घूंट में आधा गिलास पी गया, लेकिन जब मेरा शरीर जवाब दे गया, तो मुझे उसे बाहर थूकना पड़ा।

मैं फर्श पर गिर पड़ा। मैंने स्क्रैपबुक को अपना तकिया बनाया और वहीं सो गया।

उपसंहार

मैंने समय देखा। अस्पताल की घड़ी छह बजा रही थी।

'तो ज्यादा शराब पीकर बेसुध हो जाना तुम्हारी हैबिट है,' मैंने कहा।

गोपाल अर्थपूर्ण ढंग से मुस्करा दिया।

'नहीं ऐसा केवल एक बार ही हुआ था,' उसने कहा। 'आज वाली घटना से पहले, ऑफ कोर्स।'

मैंने गोपाल के चेहरे की ओर देखा। वह किसी स्टूडेंट की ही तरह यंग दिख रहा था। लेकिन इसके बावजूद उसके चेहरे पर उसके अनुभव की इबारतें पढ़ी जा सकती थीं। जिंदगी ने उसे जो कड़वे सबक सिखाए थे, उन्होंने उसे वक्त से पहले ही बड़ा बना दिया था।

'तो, आरती और राघव की शादी आज से एक साल पहले हुई थी?' मैंने कहा।

'हां, एक साल और बीस दिन पहले,' उसने कहा।

'उसके बाद क्या हुआ?' मैंने कहा।

'शुक्ला–जी अब भी जेल में हैं। मैं उनसे हर महीने मिलता हूं। मैं अपनी कमाई से कॉलेज में उनका शेयर खरीद रहा हूं, ताकि वह कॉलेज पूरी तरह से मेरे हाथ में आ जाए। उन्हें भी अपने दूसरे कामों के लिए पैसों की दरकार है। देखते हैं।'

'और राघव और आरती का क्या हुआ?' मैंने पूछा।

'मैं उनके टच में नहीं हूं। मैं अपने कॉलेज के काम में लगा रहता हूं। दो महीने बाद चुनाव हैं। उनमें वह भी शामिल होगा।'

'मतलब?'

'राघव चुनाव लड़ रहा है। पूरे शहर में लगे चुनावी पोस्टरों पर उसकी तस्वीर है,' गोपाल ने कहा।

'उसकी जगह तुम भी हो सकते थे। तुम्हें इस बारे में कैसा महसूस होता है?' मैंने कहा।

गोपाल ने कंधे उचका दिए। 'वह मुझसे बेहतर विधायक साबित होगा। मैं विधायक बनकर भी क्या करता? और ज्यादा पैसे कमा लेता। लेकिन उसके पास एक मौका होगा कि वह समाज में कुछ बदलाव करके दिखाए।'

'यह तो तुम्हारी उदारता है,' मैंने कहा।

गोपाल सीधा उठ खड़ा हुआ और उसे पहनाई गई चादरें बेचैनी से हटा दीं। 'लेकिन मैं अब भी एक अच्छा इंसान नहीं हूं, है ना?' उसने कहा।

'मैंने ऐसा तो नहीं कहा,' मैंने कहा।

'मैंने आपको पहले ही कहा था, मैं आपकी कहानी का हीरो बनने के लायक नहीं हूं,' गोपाल ने कहा।

मैं चुप रहा।

'मैं विलेन जरूर हो सकता हूं,' गोपाल ने कहा।

उसकी आंखें चमक रही थीं।

'यह मैं पाठकों पर छोड़ देना चाहता हूं कि वे तुम्हारे बारे में क्या सोचते हैं। मैं केवल लोगों के बारे में लिखता हूं। मैं उन्हें हीरो या विलेन बनाकर पेश नहीं करता,' मैंने कहा।

'राघव एक अच्छा इंसान है। मैं उससे आधा भी अच्छा इंसान नहीं हूं,' गोपाल ने कहा।

'अपने को जज करना बंद करो,' मैंने कहा।

'चेतन–जी, अपने दिल पर हाथ रखिए और कहिए, क्या मैं अच्छा इंसान हूं?'

मैं समझ गया कि मेरी हां उसके लिए बहुत मायने रखती है। लेकिन, इसके बावजूद मैं सही जवाब देना चाहता था। मैंने कुछ देर सोचा।

'रहने दीजिए, सर। इस सवाल का जवाब मत दीजिए। चलिए, कुछ देर टहलते हैं।'

वह बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। अब वह काफी बेहतर लग रहा था। हम अस्पताल के लॉन्स में सुबह की चहलकदमी करने लगे।

'मुझसे प्रॉमिस करो कि आज के बाद कभी इतनी ड्रिंक नहीं करोगे,' मैंने कहा।

उसने सिर हिला दिया। 'मैं यह प्रॉमिस तो नहीं कर सकता।'

'तुम उसे मिस करते हो?' मैंने पूछा।

वह चुप रहा।

'क्या तुम उसकी शादी के बाद उससे मिले थे?'

उसने सिर हिलाकर मना कर दिया। अब मैं समझा कि वह मुझे रमाडा ड्रॉप करने में क्यों झिझक रहा था।

मैंने फिर समय देखा। दो घंटे बाद मेरी फ्लाइट थी।

मुझे दौड़कर होटल जाना था, पैकअप करना था और फिर सीधे एयरपोर्ट जाना था।

'अब मैं चलता हूं,' मैंने कहा। उसने सिर हिला दिया। वह मुझे कार तक ड्रॉप करने बाहर तक आया।

'रेवोल्यूशन तो जरूर होगी,' गोपाल ने कहा। 'एक दिन हमारा देश बेहतर बनेगा।'

'मुझे पता है,' मैंने कहा।

'आप भी इस बारे में लिखिए। अगर गंगाटेक बहुत बड़ा इंस्टिट्यूट बन गया तो मैं भी अपनी ओर से कोशिश करूंगा। मैं लोगों को लिफाफे बांटते हुए थक चुका हूं।'

'हमें कुछ बदलाव करना ही होगा,' मैंने कहा।

'इसके लिए सभी को कोई न कोई कुर्बानी देनी होगी,' गोपाल ने कहा।

'येस, आई एग्री,' मैंने कहा। ड्राइवर ने कार स्टार्ट की।

'बाय, सर,' गोपाल ने मुझे विदा करते हुए कहा।

मैं दौड़कर अपने रूम पर पहुंचा और तेजी से पैकअप किया। फिर मैं चेकआउट करने के लिए नीचे होटल लॉबी में आया।

'डिड यू हैव अ गुड स्टे, सर?' एक प्यारी–सी लड़की ने मुझसे पूछा। उसने साड़ी पहन रखी थी।

'हां, यादगार रहा,' मैंने कहा।

मैंने उसकी नेमप्लेट देखी। उस पर लिखा था – 'आरती कश्यप, गेस्ट रिलेशन ऑफिसर।'

वह मुस्करा दी। 'यह सुनकर अच्छा लगा, सर।'

मेरी कार कैंटोनमेंट एरिया से बाहर चली गई। ट्रैफिक सिगनल पर मैंने एक राजनीतिक दल का बड़ा–सा होर्डिंग देखा। दूरी होने के कारण मैं कुछ पढ़ नहीं पाया, लेकिन उसमें मुझे एक युवा उम्मीदवार की तस्वीर नजर आ रही थी। मैंने गोपाल को फोन लगाया।

'सब ठीक तो है ना, सर। आप समय पर फ्लाइट पकड़ तो लेंगे?'

'हां .. गोपाल?'

'क्या?' उसने कहा।

'तुम एक अच्छे इंसान हो,' मैंने कहा।

एक समय की बात है। भारत के एक छोटे-से कस्बे में दो इंटेलीजेंट लड़के रहते थे।
एक अपनी इंटेलीजेंस का इस्तेमाल कर अमीर बनना चाहता था, दूसरा रेवोल्यूशन करना चाहता था।
लेकिन प्रॉब्लम यह थी कि वे दोनों एक ही लड़की को प्यार करते थे।

रेवोल्यूशन 2020 में आपका स्वागत है। यह बचपन के तीन दोस्तों, गोपाल, राघव और आरती की कहानी है, जो वाराणसी में सफलता, प्यार और खुशी तलाशने की जद्दोजहद करते हैं। बहरहाल, भ्रष्टों को आगे बढ़ाने वाले अन्यायपूर्ण समाज में ये सब हासिल कर पाना आसान नहीं है। गोपाल इस सिस्टम का हिस्सा बन जाता है, लेकिन राघव सिस्टम से संघर्ष करता है। आखिर जीत किसकी होगी?

फाइव पॉइंट समवन, वन नाइट @ द कॉल सेंटर, द थ्री मिस्टेक्स ऑफ माय लाइफ और *2 स्टेट्स* के बेस्टसेलिंग लेखक की कलम से निकली एक और दिलचस्प दास्तान। क्या आप रेवोल्यूशन के लिए तैयार हैं?

चेतन भगत
चेतन के बारे में
और जानने के लिए
विज़िट करें
www.chetanbhagat.com
या इस पते पर ई-मेल करें
info@chetanbhagat.com

अनुवाद: सुशोभित सक्तावत